युगप्रवर्तक
महाराजा छत्रसाल

कुञ्ज बिहारी 'सिंह'

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल

[वी० सं० 1706 - 1788 A.D.)]

लेखक:

कुञ्ज बिहारी 'सिंह' एम.ए., धर्मभूषण

प्रकाशक:

सन्त शिरोमणि श्रीपाद श्री सदानन्द जी महाराज

श्री कृष्ण प्रणामी जन-कल्याण समिति रोहिणी, दिल्ली - 110085

वी० संवत् : 2058

ईस्वी संन् : 2001

बुद्धजीशाका : 324

@लेखक सम्पादवाधीन सुरक्षित

प्रथम बार : 1,000 प्रतियां

न्यौछावर : 100/-

प्राप्ति स्थान :

- श्री प्राणनाथ मिशन, 72 सिद्धार्थ एंक्लेव, रिंग रोड, नई दिल्ली - 110014

  फोन: 6845230

- श्री प्रणामी मन्दिर, मालरोड, हकीकत नगर, दिल्ली-9, फोन: 7658111
- श्री कृष्ण प्रणामी जन कल्याण समिति रोहिणी, सैक्टर-7, दिल्ली-85
- जिलेदारसिंह शाक्य,प्रणामी भवन, 41, विजयनगर, इटावा (उ.प्र.) 206001
- श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर, आनन्दपुरी-जटियापुर, प्रो० (कानपुर) - 209125

मुद्रक:

वैलकम प्रैस

ए - 3/1, नारायणा, फेस-1

नई दिल्ली-110028

फोन: 5790926

महमति वाणी के प्रेमी

नम्र विद्वान

सन्त शिरोमणि

ब्रम्हलीन

पूजपाद श्री गोपालदास महाराज

श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर,भाण्डेर, म.प्र.

को

सादर

समर्पित

विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक महमति श्री प्राणनाथ जी की

383वीं जयन्ती के पावन अवसर पर प्रकाशित

दो शब्द

उत्तरमध्यकाल का भारतीय इतिहास मदान्ध औरंगज़ेब की अमानवीय यातनाओं से भरा पड़ा है। यही कारण है कि मुग़ल सत्ता की धर्मांध राजनीति के प्रति विरोध की भावना जनमानस में विपुल रूप से पनपी थी। मुग़ल सत्ता के कृत्यों से समूचा जनमानस पीड़ित था, अतैव मुग़ल सत्ता के प्रति उठ रहे विरोध के स्वर संगठन का रूप बनाकर जन सेना के रूप में उभरने लगे थे। 17-18वीं शताब्दी का यह मुग़ल सत्ता से मुक्ति का यह अभियान हर दिशा में गति पकड़ रहा था। उत्तर में पंजाब भूभाग पर गुरु गोविंदसिंह, पश्चिम में राजस्थान पर दुर्गादास राठौर, दक्षिण में महाराष्ट्र भूभाग पर वीर शिवाजी मुग़ल सत्ता से संघर्ष कर रहे थे। उसी समय मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड भूभाग पर चम्पत सुत छत्रसाल मुग़ल सत्ता से जन सेना का संगठन करके संघर्षरत हुये। देश में कई भागों से औरंगज़ेब के अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी, जिसने महादावानल का रूप धारण कर लिया और औरंगज़ेब की सत्ता को खोखला कर डाला। आज हमारे देश में पंजाब में गुरु गोविंदसिंह और महाराष्ट्र में वीर शिवाजी तथा झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के विद्रोही संघर्ष को इतिहास में काफी महत्वपूर्ण स्थान मिला है और इनकी जन जाग्रति भी इस सम्बंध में कोई कम नहीं है, परंतु किन्हीं कारणों से बुन्देलखण्ड में महाराजा छत्रसाल के प्रचण्ड विद्रोही संघर्ष को आज तक न तो इतिहासकारों ने ही पूर्ण रूप से आँका है और न ही जनता जनार्दन में ही इसके बारे में अधिक जानकारी है। शायद करोड़ों पढ़े-लिखे लोग भी ऐसे होंगे जिन्होंने ऐसे दिल्ली ढाहनहार : छत्रसाल का नाम तक सुना न होगा। इसके सम्बंध में अनेकों सटीक कारण विध्यमानहैं जो इस भूभाग की भयंकर भूलों में से मुख्य हैं। अतैव इतना कहना पर्याप्त होगा कि हिन्दू जनमानस की शान्ति प्रिय उन्मुक्त लोकनीति के कारण ही हम उतने असहाय नहीं जितना हमें समझ लिया जाता है। महाराजा छत्रसाल जी की शौर्य पूर्ण गाथा को युग कभी भूल नहीं पायेगा।

विश्वास है कि युग प्रवर्तक-महाराजा छत्रसाल के परिवेश में प्रस्तुत ग्रंथ से समूची मानव-जाति को नीरक्षीरवत ज्ञान प्राप्त होगा। - प्रकाशक

---

1. *तत्कालीन राष्ट्रकवि भूषण ने महाराजा छत्रसाल के प्रचण्ड विद्रोह के संघर्ष की सफलता का परिणाम निम्न काव्य पंक्ति में मुखरित किया है- छत्ता न होतो तो सुन्नत होती सबन की।*

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

महाराजा अधिपति भए, महाराजा छत्रसाल।

राजन में राजा भए, असुरन केरे काल॥

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व को गौरान्वित करने, उज्ज्वल मार्ग प्रशस्त करने तथा जीवन को उत्कृष्ट बनाने हेतु अनेक पुण्य और दिव्य आत्माओं ने इस पुनीत भारत भूमि पर जन्म लेकर इस धरा को गौरान्वित किया है। कहते हैं कि भगवान के 24 अवतार इस पुण्य भूमि पर ही हुए हैं। जिन्होंने अपने पावन चरित्र से विश्व के लोगों को सन्मार्ग देकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। इन्हीं दिव्य आत्माओं के अवतरण में राम, कृष्ण, शंकराचार्य, देवचंद्र, प्राणनाथ, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द आदि महापुरुष हुए हैं। जिनमें कुछ भगवान के रूप में अवतरित होकर जन जन के कल्याण हेतु अपने को समर्पित कर गए। ऐसे ही महापुरुष मध्ययुगीन काल में अवतरित हुए, जिनमें महाराजा छत्रसाल को एक वीर, साहसी बुन्देलखण्ड राज्य के संस्थापक के रूप में ही नहीं अपितु भारतवर्ष के एक बहुत बड़े भाग के लोग एक अवतार के रूप में भी मानते हैं और उन्हें अवतार मानकर उनकी पूजा अर्चना करते हैं।

श्री कृष्ण प्रणामी निजानन्द संप्रदाय में उन्हें अक्षरातीत परमात्मा की शक्ति से सम्पन्न सकुण्डल सखी का अवतार माना जाता है। प्रणामी मंदिरों में पूजा अर्चना के समय इनके नाम की जयध्वनि भी बोली जाती है।

अगर इन तथ्यों को कसौटी पर परखा जाये, तो समालोचन की दृष्टि से यह तथ्य की छत्रसाल महाराजा एक अवतार थे, उचित और समीचीन प्रतीत होता है। महाराजा छत्रसाल के गुरु महामहिम श्री प्राणनाथ जी को कल्कि अवतार माना जाता है। अतैव इन्हें भी परमात्मा की शक्ति का अवतार कहा जाता है। महाप्रभु प्राणनाथ का सानिध्य पाकर छत्रसाल ने न केवल बुन्देलखण्ड को बचाया अपितु राज्य संचालन के लिए पन्ना की हीरे की खां पाकर धन वैभव इकट्ठा कर सम्पूर्ण हिन्दू समाज की रक्षा की। तभी भूषण के मुख से निकल पड़े थे, ये शब्द–

छत्ता न होतो तो सुन्नत होती सबन की

अवतार को यदि विश्लेषित किया जाये, तो राम कृष्ण, बुद्ध, महावीर स्वामी, मुहम्मद साहब, ईसा मसीह आदि इस धरा पर अवतरित होकर निम्न कार्य कर गये।

(1) उन्होंने आततताइयों से मानव की रक्षा की।
(2) प्राणियों के दुखों का निवारण किया।
(3) प्राणियों को सन्मार्ग पर न केवल चलाया, अपितु चलकर रास्ता बताया।
(4) आदर्श साम्राज्य की स्थापना की।
(5) स्वयं कष्ट सहे पर अन्य प्राणियों की रक्षा की।

उपरयुक्त कार्यों को करके इस धरा पर जन्म लेने पर सभी प्राणी यदि अवतार बन गये, तो महाराजा छत्रसाल भी इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। उन्हें एक अवतार मानना, समीचीन प्रतीत होता है। महाराजा छत्रसाल ने औरंगज़ेब जैसे आतताई से बुन्देल भूमि की रक्षा करने हेतु 252 लड़ाइयाँ लड़ीं। बुन्देलखण्ड को आपने कभी परतंत्र नहीं होने दिया और हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन नहीं होने दिया। महाराजा छत्रसाल गौ, ब्राह्मण, वेद रक्षक, उदार हृदय, दानी, शूरवीर, सहृदय, उदारमना, कला-काव्य प्रेमी थे। कवि हृदय होने के कारण ही तत्कालीन राष्ट्रकवि भूषण जब इनके राज्य में पधारे, तो इन्होंने श्रद्धा एवं आदर के साथ उनकी पालकी में अपना कंधा लगा दिया था।

छत्रसाल पर विजयभिनंदन बुद्ध महमति प्राणनाथ की ठीक उसी प्रकार कृपा थी जिस तरह वीर शिवाजी पर समर्थ गुरु रामदास की कृपा थी। महमति प्राणनाथ के कारण ही महाराजा छत्रसाल के द्वारा बुन्देलखण्ड का सर्वन्तोन्मुखी विकास हुआ और सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में हिन्दू वैष्णव धर्म को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। विधर्मियों से धर्म की रक्षा हुई। ये सब गुण छत्रसाल को महाराजा छत्रसाल तथा एक अवतारी महापुरुष ही प्रकट करते हैं।

छत्रसाल के द्वारा आदर्श और नीतिपरक भाष्य कविता के रूप में प्रस्तुत हुआ है, जो न केवल सशक्त अभिव्यक्ति मात्र है अपितु आचरणीय एवं जन मानस द्वारा माननीय है। एक उदाहरण देखिये–

लाख घटै कुल साख ने छोड़िये, वस्त्र फटै प्रभु औरहु दैहैं।

द्रव्य घटै घटता नहिं कीजिये, दैहैं न कोऊ पै लोक हसैहैं॥

भूप छता जलराशि को पैरिबो, कौनिहु बेर किनारे लगैहै।

हिम्मत छोड़ें तै किस्मत जायेगी, जायगो काल कलंक न जैहै॥

कहना न होगा कि महाराजा छत्रसाल एक परम उदात्त यशस्वी, प्रजापालक, भगवदभक्त, शूरवीर, धर्मनिष्ठ, कविहृदय, सद्चारित्र स्वातंत्र्य चेता के धनी शासक थे। आज देश को ऐसे ही महान शासक के रूप में किसी अवतारी, किसी व्यक्ति की आवयशकता है।

महाराजा छत्रसाल के सम्पूर्ण जीवन चरित्र को एक सूत्र में पिरोने का कठिन और दुरुह कार्य उदारमना कविहृदय, विद्वान, धर्मानुरागी श्रद्धयेकुञ्जबिहारी 'सिंह'धर्मभूषण' ने सफल कर दिखाया है। जैसे ओस कणों को संकलित करना बिना श्रमसाध्य के असम्भव

---

1. इतिहास कारों ने माना है कि यदि औरंगज़ेब ने किसी से हार मानी है तो सिर्फ वीर शार्दूल बुन्देले छत्रसाल से। महाराजा छत्रसाल से वीरोचित शौर्य की गाथा तत्कालीन कवि भूषण ने गायी है जो तिकवापुर (कानपुर) के मूल निवासी थे, आज संयोग की ही बात है महाराजा के रचित गीतों का संकलन (सम्पादन) धर्मभूषण जी कर रहे हैं, जो जटियापुर (कानपुर) के मूल निवासी हैं।- अथ श्री छत्रसाल काव्यांजलि।

है, वैसे ही अथक कठिन परिश्रम के बिना इस वृहद ग्रंथ का प्रादुर्भाव असंभव था। यह सम्पूर्ण ग्रंथ कुल (३) भागों व एकादश (11) अध्यायों में विभक्त होकर एक बड़े शोधग्रंथ का रूप ले चुका है। महाराजा छत्रसाल की जन्मभूमि की जन्मभूमि के परिचय से लेकर बुन्देलखण्ड राज्य बुन्देलवंश का परिचय (भाग प्रथम में) तथा छत्रसाल के संघर्ष काल तक की लेखक ने विशद व्याख्या दी है। इसके पश्चात् पांचवें अध्याय में लेखक ने 9 वर्ष तक महाराजा छत्रसाल द्वारा अपने संघर्ष काल में सीखे अनुभवों को देशोत्थान एवं उसके विकास हेतु कार्यान्वित किया है। इसका विषद वर्णन है। छठे अध्याय में महाराजा छत्रसाल द्वारा लड़े गये 252 युद्धों का वर्णन है जिसमें उन्होंने धर्मद्रोही यवनों का दमन किया है और छत्रसाल के अपराजित कालजयी रूप का दिग्दर्शन लेखक ने इस अध्याय में (भाग द्वितीय में) कराया है। सातवें और आठवें अध्याय में महाराजा छत्रसाल के व्यक्तित्व और कृतित्व का चित्रण किया गया है। नवें अध्याय विभूती खण्ड में उन विभूतियों का परिचय दिया गया है, जिनके सम्पर्क में महाराजा छत्रसाल आये और जिनका प्रभाव छत्रसाल के जीवन पर पड़ा। दशवें अध्याय में महाराजा छत्रसाल के कविहृदय की अनुपम झांकी दिखाई गई है। उनकी भावुकता, नीति, धर्म, लोक जीवन में व्यवहार आदि सुंदर छटा उनके कवित्तों में देखने को इस अध्याय में मिलेगी और समकालीन व परवर्ती कवियों के द्वारा महाराजा छत्रसाल के परिवेश में किये गये प्रशस्ति गायन को भी इसमें (भाग तृतीय में) संजोया गया है। और अंतिम अध्याय जोकि ग्यारहवां है, ऐसा जान पड़ता है कि लेखक ने इस पूरे ग्रन्थ को जिस ढंग से सजाया संवारा है, वह परिपूर्ण अध्ययन जिन ग्रंथों में किया गया है, वह लेखक ने परिशिष्ट भाग में सम्पूर्ण ग्रंथावली का समांकलन किया है, जोकि लेखक का स्तुत्य कार्य है। जिससे कि यह जीवन साहित्य का शोध ग्रन्थ बन जाता है। पुनश्च लेखक को इतने अच्छे साहित्य सृजन एवं उनके अथक परिश्रम के लिए मेरा नमन।

इस सम्पूर्ण जीवन चरित्र जो श्री कुन्जबिहारीसिंह धर्मभूषण जी द्वारा अपने श्रोतों से विभिन्न ग्रंथों को लिखकर व इकट्ठा कर उनका अध्ययन कर तथा महत्वपूर्ण अंशों को लिपिबद्ध कर जो इस ग्रन्थ में प्रकट हुआ है। वह सुधी पाठकों को एक महत्वपूर्ण शोध ग्रन्थ के रूप में प्राप्त हुआ है। ऐसा मेरा विश्वास है। पाठक इसका अध्ययन कर अवश्य लाभ प्राप्त करेंगे।

इसके प्रकाशन की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

इति शुभम्

--डा० मोहन गुप्त

एम. ए, एम. एड., एम फिल., पी.एच.डी.

रीडर: तिलक महाविद्यालय औरेया, जनपद औरेया (उ.प्र.) - 206122

*दि. 25.5.2001, गुरूवार **श्री छत्रसाल जयन्ती, 2055 संवत्

प्राक्कथन

भारत माता का वक्ष: स्थल बुन्देलखण्ड भारतीय जनमानस में एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस भूखण्ड में विशाल राष्ट्रीय सम्पदा विद्यमान है। इसका अतीत गौरवमयी गाथाओं से ओतप्रोत है। वर्तमान समय में यह भूभाग राष्ट्रीय सम्पदा एवं संस्कृति के लिए भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस भूभाग की अनदेखी करके न तो राष्ट्र की समृद्धि संभव है और न ही राष्ट्रीय संस्कृति व पुनर्चेतना की अभिवृद्धि। एक ओर पन्ना में निर्गत में निर्गत हीरे राष्ट्रीय सम्पदा के रूप में राष्ट्र के लिए बूढ़े व्यक्ति की लाठी है, वहीँ दूसरी ओर इस भूभाग को अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर प्रकाशमान करने वाले देवपुरुष छत्रसाल के प्राकट्य से प्रेरणा लेकर भारतीय जनमानस स्वर्णयुग की वापसी ला सकता है। अतैवमहाराज छत्रसाल के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना नितान्त अपेक्षित है।

बुन्देलखण्ड के महान दम्पत्तियों में चम्पत - सारन्धा का नाम बड़े आदर और श्रद्धा से लिया जाता है। महाराजा छत्रसाल इन्हीं के सन्तान थे। छत्रसाल के जन्म समय में दिल्ली तख्त पर शाहजहां और ओरछा (बुन्देलखण्ड की तत्कालीन राजधानी) में पहाड़सिंह का शासंन् था। ये दोनों ही चम्पतराय के दुश्मन थे। निम्न कवित्त तत्कालीन परिवेश पर व्यापक प्रकाश डालता है।

रानी के उदर मांझ भई जब गर्भ पीर, होय के अधीर लगी कृष्ण को मनावने।

इतने में आय एक नेवला धर गयो लाय, रानी के निकट पांच मोहरें दृग सामने

इते भये प्रगट बुलाये उत चम्पतराय, लगे सुघर कामिन सों नरा छिनवावने।

भूषण भनत, तौलों आई है यवन सैन, देख के कामिन मन लगी डरपावने॥

दौरो है आय ककर कंचन के हार में, चम्पतराय नाहर सो विकट रोष खायके।

दाव नहीं निकरे को देखो द्विभूषण जब, कीन्हों है तब उपाय धीरज मन लायके॥

रानी को कन्धे चढ़ाय, पुत्र को हिये लगाय, झपट के कामिनी की बाहं गयी धायके॥

मारके छलांग अधर कूद चले चम्पतराय, मोर की पहाड़ियों से गये मोर से उड़ायके॥

राष्ट्रकवि भूषण ने उक्त कवित्तों में चम्पतराय की दयनीय स्थिति एवं यवन सेना के अत्याचारों का दिग्दर्शन कराया है, वि.सं. 1706 ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया सोमवार की गोधूलि बेला में जन्मे इस बालक के ग्रहगोचर का चित्रण निम्न कवित्त से मिलता है–

उदय में राजे अग्र मंगल विराजे, जहाँ बल को शुक्र शनि सहित विहार है।

*बुद्ध अरि*नाशे रवि राहु प्रजा को प्रकाशे, लाभ करें सुर गुरु अमित अपार है॥

सत्रह से छ: को विलंबी नाम सम्वत जेठ, तिथि तीज सित पक्ष सितवार है।

शिव के नक्षत्र में बख्तबली छत्रसाल, लीन्हों नारायन आय के अवतार है॥

महाराजा छत्रसाल ने अबोधावस्था से लेकर बाल्यावस्था तक माता-पिता के साथ रहकर युद्ध की विभीषिका अपनी आँखों से देखी। अतैवउनका हृदय बाल्यकाल से ही भयमुक्त हो गया था। चमप्तराय ने वि.सं. 1713 में दारा का विरोध करके शामूगढ़ युद्ध में, जिस औरंगज़ेब ने एहसान-फरामोसी करके वि.सं. 1718 (6 नवंबर 1661) में मोरन गांव के निकट चम्पत-दम्पत्ति को मौत के घाट उतरवा दिया था। चम्पतराय के साले ने ही उनका कटा सिर दिल्ली दरबार में पेश किया था। कुमार छत्रसाल ने सर्वप्रथम अपने इसी मामा लोकपालसिंह को वि.सं. 1728 में जमीन में गढ़वा दिया था। छत्रसाल ने सर्वप्रथम बुन्देलखण्ड के विरोधियों का सफाया किया था। अतैववे बुन्देली जनमानस की आंखों के तारा बनकर उभरे थे।

कुमार छत्रसाल अपने बल पौरुष से बुन्देलखण्ड के अधिपति बने। उन्होंने अपने जीवनकाल में छोटे बड़े हजारों युद्धों के अलावा 252 बड़ी लड़ाइयां जीती थी। बाकी खां और फौजेमियां जैसे महावीरों को अपनी मानवीय नीतियों के फलस्वरूप औरंगज़ेब के विरुद्ध खड़ा करने में सफलता प्राप्त की थी। उनकी मानवीय नीतियों के कारण ही हजारों मुग़ल सैनिकों ने पाला बदलकर छत्रसाल की सेना में रहना स्वीकार किया था। औरंगज़ेब की हिन्दू फूटनीति असफल हो गयी थी। फलतः उसे दिल्ली से दूर दक्षिण भारत में 27 वर्षों तक रहना पड़ा। मुग़ल साम्राज्य सिकुड़कर रह गया था। तत्कालीन लालकवि, जोस्यवं एक योद्धा थे, ने अपने ग्रन्थ छत्रप्रकाश में नीतियों, परिस्थतियों का चित्रण निम्न प्रकार किया है–

बाकी खां सौं मिल छता, दयी द्वंद की नीव।

लंक सेन को राम ज्यों, मिले जाय सुग्रीव॥

युद्धोन्मत्त महाबाहुबली परम पराक्रमी महाराजा छत्रसाल ने, फिदाई खां, सैयद बहादुर खां, खालिक खां, रनदुलह मुहम्मद खां, हासिम खां, मुनउवर खां, बसालत खां, खांजहां, मु० अफजल, शमशेर खां, शेर अफगन, जालुद्दीन, जलाल खां, खां दिलावर, रणमस्त खां आदि औरगंज़ेब के सेनापतियों का युद्धों में सामना किया और उन्हें या तो मार दिया या फिर क्षमा याचना करने पर चौथ लेकर छोड़ दिया।

महाराजा छत्रसाल क्षिप्रबुद्धि भी रखते। सुना जाता है कि एक बार औरंगज़ेब ने उनकी हत्या करने की नियत से महाराजा छत्रसाल को आगरा बुलवाया। छत्रसाल जैसे ही दुर्ग में पहुंचे, त्यों ही उन्हें औरंगज़ेब के छल का आभास हो उन्होंने तुरन्त क्षिप्रगति से घोड़े को एड़ लगाई। घोड़े की दोनों अग्र टापें औरंगज़ेब के सिंहासंन् के मध्य जा पहुंचीऔर छत्रसाल के भाले की नोंक औरंगज़ेब की छाती पर।छत्रसाल ने क्रोधित मुद्रा में गर्जकर औरंगज़ेब से कहा, अहसान फरामोस, बता तुझे विशवासघात करने के लिए क्या सजा दूँ?

तभी रनिवास से क्षमादान के लिए वेदना के स्वर उभरे। यथा–

मानो पिया बात रार ठानों न, प्रबल प्रताप तेज तपत उजागरौ।

जानो जीव काल हुको विकराल महा, विक्रम विशाल छत्रसाल नर नागरौ॥

व्यास कहै जो पै कहूं पलक उघार दैहै, तो पै कर छार दैहै छुद्र छल छागरौ।

खलबल पार दैहै गजब गुजार दैहै, जार दैहै दिल्ली उजार दैहैं आगरौ॥

श्री छत्रसाल महाराज का दयाभाव देखिये, कि उन्होंने रानी की विनय पर औरंगज़ेब को क्षमा करते हुए अभयदान दे दिया। उनकी दयालुता के सम्बन्ध में लालकवि द्वारा रचित छत्रप्रकाश में निम्न पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

दान दया घमासान में, जिनके हिये उछाह।

सोई वीर बखानिये, जो छत्ता छितिनाह॥

महाराज छत्रसाल की वीरता अद्वितीय थी।यथा–

भे चम्पद विख्यात हुए सुत छत्रसाल से।

शत्रुजनों के लिए हुए जो सिद्धकाल से॥

जिन्हें देख वर वीर उपासक कविवर भूषण।

भूल गये थे शिवा बावनी के आभूषण।

बुन्देलखण्ड के चप्पे-चप्पे में, छत्रसाल महाराजा की अप्रतिम वीरता के सम्बन्ध में जनमानस की जबान पर निम्न लोकोक्तियाँ रची-बसी थीं–

छत्ता तेरे राज में धक धक धरती होये।

जित-जित घोड़ा मुंह करे, तित तित फत्ते होये॥

इत जमुना उत नर्मदा, इत चम्बल उत टौंस।

छत्रसाल सों लरन की रही न काहू हौंस॥

महाराजा छत्रसाल महान वीर होने के साथ साथ काव्यप्रेमी भी थे। उन्होंने हमेशा कवियों को सम्मान दिया। कवियों के प्रति उनकी श्रद्धा का भाव एक घटना से समझ सकते हैं– एक बार भूषण कवि उनके यहाँ पधारे, छत्रसाल महाराजा ने स्वयं अपना कंधा, भूषण कवि की पालकी में लगाया और सम्मान सहित श्रद्धापूर्वक उन्हें महल में ले गये। कवियों के प्रति ऐसा श्रद्धा भाव अन्यत्र मिलना सम्भव नहीं है। तभी तो भूषण कवि ने लिखा है–

शिवा को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को। उनकी लेखनी ही अगाध श्रद्धा का प्रमाण है। यथा–

आवत आप कृपा करिके, छत्रसाल कहें उठ आदर कीजे।

शारद कंठ बसे जिनके, तिनके ढिंग बैठ सुधारस पीजे॥

तार जराय जवाहर दै, गज वाजन दै संन्मानहि कीजे।

कीरति के बिरवा कवि हैं, इनको कबहूं कुम्हलान न दीजै॥

xi

महाराजा छत्रसाल से अपने काव्य के द्‌वारा न्याय, प्रेम, दया, नीति, व्यवहार, अध्यात्म, भक्ति आदि का पाठ जनमानस को पढ़ाया। उनके द्‌वारा रचित गीतों का संकलन सर्वप्रथम श्री वियोगीहरि ने वि.सं. 1983 में किया था और उसका प्रकाशन कराया था। तत्पश्चात वि.सं. 2055 में अथ श्री छत्रसाल काव्यांजलि काव्यांजलि के रूप में एक वृहद्‌ संकलन धर्मभूषण कुञ्जबिहारीसिंह द्‌वारा किया गया है। जिसका अवलोकन करने से विदित होता है कि महाराजा छत्रसाल की नीति, आध्यात्म, भक्ति, प्रेम उपदेश आदि में कितनी विशिष्टता है और वे कितने बड़े युगद्रष्टा थे। उन्हें सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक कवियों की उच्चकोटि में प्रतिष्ठित करना सर्वथा उचित है। उनमें राष्ट्रभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी, इसीलिए वे सदैव राष्ट्र के महानायक के रूप में हमेशा जनमानस में पूजे जाते रहेंगे।

महाराजा छत्रसाल मानव धर्म के महाराक्षक थे। महामति श्री प्राणनाथ जी द्‌वारा धर्म जाता रे कोई दौड़ो का उद्‌घोष करने पर महाराजा छत्रसाल सर्वप्रथम आगे आये, और उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने अपना तन, मन, धन सब कुछ निछावर कर दिया।इसी धर्मपरायणता के कारण समकालीन कवि भूषण ने लिखा था कि, छत्ता न होतो तो सुन्नत होती सबन की। निसन्देह वे धर्मावतार एवं युगप्रवर्तक थे। जीवन पर्यन्त उन्होंने धर्म का पुनरोत्थान किया।उनके धर्मावतार युगप्रवर्तक स्वरूप को देखकर ही किसी अज्ञात कवि ने लिखा है–

ज्ञानी लेत ध्यानी लेत पण्डित पुरानी लेत,

लेत बढ़े दौलत, घटे दिन काल कौ।

संक्षेप में, हम कहा सकते हैं कि प्रस्तुत ग्रन्थ युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल में प्रतिपाध्य विषय सिद्‌ध करते हैं कि महाराजा छत्रसाल राजा भोज के समान गुण ग्रहण करने की क्षमता रखते थे, वे कर्ण के समान दानी, राजा वीर विक्रमादित्य के समान न्यायकारी, भीष्म पितामाह के समान दृढ़-प्रतिज्ञ, राजा हरिश्चंद्र के समान सत्यवादी थे, भारत मां के अनन्य पुजारी और धर्म के महाराक्षक थे। ऋषि मुनियों के समान वे अपने समग्र जीवन में निस्पृह बने रहे। लेखक महाभाग के अपूर्व प्रयास से सुविज्ञ पाठकों की महाराजा छत्रसाल से सम्बन्धित सभी जिज्ञासाएं पूर्ण होंगी।

--जिलेदारसिंह **शाक्य**

सहायक पोस्टमास्टर,

प्रधान डाकघर इटावा–206001

Xii

श्री महाराजा छत्रसालाय नमः

भूमिका

सूर्य चन्द्र गृह नक्षत्र यावत् विराट ब्रह्माण्ड की निधियां किसी भी धर्म जाति वर्ग आदि से सम्बन्धित नहीं होती हैं। यह सब तो सचराचर जगत् में हरेक प्राणी की निधियां हैं। इन सबको कोई भी जन किसी भी संकीर्ण दायरे में बांध नहीं सकता। सूर्य हर प्राणी को अपना प्रकाश प्रदान करता है, उसके अन्दर यह विचार नहीं है कि किसी वर्ग विशेष के साथ पक्षपात करे। उसकी किरणें तो सभी जगज्जीवों को पथप्रदर्शन व जीवन तत्व प्रदान करती हैं। हां, नेत्रहीन व्यक्ति उसका लाभ अवश्य नहीं ले सकता। इसके लिए सूर्य का कोई दोष नहीं है तथा जो प्राणी सूर्य के प्रकाश द्वारा पथ निर्देशन नहीं चाहते हैं -- इसके लिए भी सूर्य का कोई दोष नहीं है। परन्तु खेद इतना जरूर है कि लाभ न लेने वाला मानव वंचित रह जाता है, सूर्य की दैवीय शक्ति से- फिर भी सूर्य परोक्ष रूप से बहुत कुछ देता रहता है–

उल्लू न चाहे उग्या सूर्य, जिन अंधों का दुसमन नूर। महामतिप्राणनाथ

अर्थात् उगे हुए सूर्य को उल्लू नामक निशाचर पक्षी प्रकाश ग्रहणहीन शक्ति के कारण नहीं चाहता है वैसे ही अज्ञानी पुरुषों को दिव्य प्रकाश (ब्रह्मतत्व) शत्रुवत् लगता है। ऐसे प्राणियों के लिए विश्व ब्रह्माण्ड की अमूल्य निधियां व्यर्थ है, औचित्यहीन हैं? कदापि नहीं। परम सत्य तो यहाँ है कि जिस प्रकार से सूर्य चंद्रादि विश्व ब्रह्माण्ड की निधियां हर प्राणी के जीवनमूल्यों से जुड़ी हैं उसी प्रकार से ब्रह्मातत्व हर जिज्ञासुजनों की जीवन स्वासें हैं, इसके अभाव में जीवन तत्व की कल्पना संभव नहीं है।

धराधाम पर जीवन तत्व का दिग्दर्शन कराने का धर्मोत्थान हेतु अवतार व दिव्य आत्मायें आती हैं। इनके सन्देश युगों युगों तक हम सभी के बीच विद्यमान रहते हैं और जगज्जीवों को मार्गदर्शन कराते हुए अपने प्राकट्य का हेतु बनाये रखते हैं। ये अवतार व दिव्य आत्माएं सूर्य चंद्रादि की भांति किसी भी जाति धर्म वर्ग आदि से सम्बंधित नहीं होती अपितु ये सभी सचराचर जगत् के हरेक प्राणी की अमूल्य निधियां हैं, इन सबको कोई भी किसी संकीर्ण परिधि में नहीं बांध सकता।

पावन बुन्देलभूमि में अवतरित महाराजा छत्रसाल एक अवतार हैं, दिव्य आत्मा हैं, पथ प्रदर्शक एवं जीवन शक्ति हैं। इन्हें किसी भी संकीर्ण धर्म, जाति व वर्ग विशेष की

धारणा में विभक्त नहीं किया जा सकता। वह तो सूर्य के रूप में नभमण्डल में दिव्य ज्योत्सना के आगार हैं। निःसन्देह महाराजा छत्रसाल के पावन-चरित्र को हर व्यक्ति विशेष को अन्तःकरण में धारण करना चाहिए। अन्यथा यह कहना– कि महाराजा छत्रसाल से हमारा कोई सरोकार नहीं है, नितान्त अज्ञानता का सूचक है और आत्मघाती है। वह महमानव थे- उन्हें हिन्दू मुस्लिम ईसाई फारसी के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता। उन्हें विश्व के सचराचर जगत्के हर प्राणी से समभाव था। उन्होंने अपने जीवन कार्यों से यह सिद्ध कर दिया था कि वह मानवीय मूल्यों की रक्षा करने आए हैं और अमानवीय तत्वों का सम्पूर्ण विध्वंस। उन्होंने स्वयं कहा है–

तुम गिरधारी, हम कृष्ण व्रतधारी।

तुम-दनुज प्रहारे, हम यवन प्रहारे॥

निःसन्देह, दीन दुःखी साधु सन्त सभी की रक्षा का ध्येय था, उनका। प्रजापालकमहाराजा छत्रसाल जी इसी कारण से महाराजाओं के भी महाराज कहलाये। महाराजा छत्रसाल के जीवन-चरित्र में मानव-जीवन के हर मानवीय तत्व विद्यमान हैं। अतैव उन्हें संसार ने बहुआयामी व्यक्तित्व से परिपूर्ण दिव्य आत्मा-आत्मा वाला अवतार माना है। उनके जीवन चरित्र से हर प्राणी मनोनुकूल शिक्षा ग्रहण कर सकता है[1]- चाहे वह उद्धयमी बनना चाहता हो, चाहे वीतरागी...आदि। उनके जीवन तत्व में जगती तल का ऐसा कोई तत्व अवशेष नहीं है, जिसका अभाव लगता हो। उसमें सचराचर जगत् को धारण करने की क्षमता परिलक्षित होती है, अतैव उन्हें भूमापुरुष कहा जाता है। संसारी प्राणी उन्हें भगवान मानकर पूजते हैं, परमात्मा की शक्ति से ओत प्रोत हैं वह। ऐसे तथ्य इतिहास ग्रन्थों एवं श्री कृष्ण प्रणामी: निजानन्द सम्प्रदाय के दर्शन में दिग्दर्शित होते हैं। वास्तव में, ऐसी उपलब्धि से परिपूर्ण अवतारी पुरुष देशकाल, समाज-जाति आदि की सीमाओं से ऊपर होते हैं, अतैव ऐसी विभूति को कोई शक्ति संकीर्ण परिधि में नहीं बांध सकता है।

युगावतार विजयाभिनंदन बुद्ध निष्कलंक महामाति श्री प्राणनाथ जी ने पूज्य श्रीमुखवाणी: कुलजम स्वरूप मेंमहाराजा छत्रसाल अली बादशाह की संज्ञा दी है। जो जन महाराजा छत्रसाल को एक सीमित संदर्भ में देखते हैं उन्हें प्रस्तुत ग्रन्थ का आद्धोपान्त अन्तः कारण से अवलोकन कर चिंतन-मनन करना चाहिए। ऐसा मेरा विनम्र अनुरोध है। मुझे पूर्ण आशा है कि महाराजा छत्रसाल को सीमित संदर्भ में देखने की धारणा निर्मूल सिद्ध होगी। वस्तुतः इस ग्रन्थ का हेतु यही है।

प्रतिपाध्य विषय महासागर है, उसका अति उल्लेख करना यहाँ उपयुक्त नहीं है। मैं ग्रन्थ के प्रकाशक परमपूजनिय प्रातः स्मरणीय सन्तशिरोमणि श्रीपाद श्री सदानन्द जी

---

1. समुद उतारि उद्दीदम ते जैये, उद्दीदम ते परमेसुर पैये।

महाराज के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं। जनकल्याण समिति रोहिणी, जागनी प्रसारक विदुषी विमला मेहता (श्री प्राणनाथ मिशन, दिल्ली) डा० बुद्धिप्रकाश वाजपेयी (कानपुर), डा० मोहन गुप्त रीडर (प्रस्तावना लेखक), श्रीयुत जिलेदारसिंह शाक्य (प्राक्कथन लेखन), सन्त ज्ञानदास महाराज (इकदिल), पं. राजशरणशर्मा (पन्ना) तथा श्रीमंत अशोक कुमार मिड्ढा (वेल्कमप्रेस दिल्ली) के प्रति बहुत आभारी हूं, जिनके पूर्ण सहयोग से यह कार्य सम्भव हो सका है। इस कार्य को साकार करने में मुझे अपने पारिवारिक परिवेश एवं श्री कृष्ण प्रणामी धर्म परिषद जनपद द्वय इटावा, औरैया उ.प्र. (रजि.) आदि से भी प्रोत्साहन एवं दिशा बोध मिला है। मैं सभी के प्रति सदा आभारी रहूँगा।

दृष्टिदोष एवं प्रेसगत त्रुटियों के लिए मैं सभी से क्षमा चाहता हूं।

प्रणाम

--कून्जबिहारीसिंह

जटियापुर सिकन्दरा

(कानपुर) -209125

(संवत् 2055)

विषय - सूची

भाग प्रथम विशेष प्रवेश

1. बुन्देलखण्ड परिचय 3
- प्रस्तावना..........4
- विराट ब्रह्मांड..........5
- बुन्देलखण्ड..........6
- बुन्देलखण्ड की अचल धरोहर..........7
- उपसंहार..........8

2. बुन्देलवंश - वंश परिचय

प्रस्तावना

गहिरवंशीय क्षत्रिय

बुन्देला वंश

ओरछा की प्रथम जागीर : नूना महिवा

ओरछा राज्य वंश के चन्देरी राज्य की राजा परंपरा

ओरछा राज्य वंश : दतिया के राजा गण

अनुशीलन

भाग द्वितीय: जीवन वृत्त

1. आविर्भाव खण्ड

छत्रसाल का प्रादुर्भाव

छत्रसाल का बचपन

छत्रसाल की बचपन भक्ति

माता-पिता का वियोग

अपने हुए पराए

परायो का संबल

2. नौ वर्ष का संघर्ष काल

विद्रोही ज्वाला

शिवा छत्ता - मिलाप

बुन्देलखण्ड वापसी

धूम घाट विजय

स्वच्छंद कार्य योजना

संघर्ष काल के उतार-चढ़ाव

3. विकास काल

(अ) कार्यान्वयन काल (वि.सं. 1728-1739)

शोध लग्न

पाँच सवार पच्चीस सैनिक

शहीदी चौपड़ा

अतिथियों से युद्ध

(ब) स्थापना काल (वि.सं. 1739-1744)

सतगुरु प्राणनाथ मिलाप

राज तिलक

यवन सेनापतियों से युद्ध

4. युद्ध-खण्ड

प्रस्तावना

धर्म द्रोही हिंदुओं से युद्ध

औरंगज़ेब

मुग़ल सत्ता से युद्ध

बंगश से युद्ध

उपसंहार

भाग तृतीय कृतित्व और व्यक्तित्व

1. राज्य व्यवस्था

न्याय व्यवस्था

युद्ध-नीति

राज्य विस्तार

राज्य-कोष

सैन्य-गतिविधि

सैन्य संसाधन

संधि की राजनीति

राज्य बंटवारा

महाराजा छत्रसाल के राज्य काल का जनजीवन

2. व्यक्तिगत चित्रण

प्राक्कथन

महाराजा छत्रसाल का चरित्रानुशीलन

जितेन्द्रिय छत्रसाल

धर्मदूत छत्रसाल

विदेह राज छत्रसाल

कालजयी छत्रसाल

छत्रसाल लोकोक्तियां

बुन्देली लोकोक्तियों में छत्रसाल

देव पुरुष के रूप में उपास्य छत्रसाल

क्यों न याद रखें इतिहास

महाराजा छत्रसाल का मुस्लिम प्रेम

काव्य प्रतिभा के धनी महाराजा छत्रसाल

शास्त्रार्थ महारथी छत्रसाल

3. विभूति-खण्ड

प्रस्तावना

श्री निजानन्द स्वामी

महाप्रभु प्राणनाथ जी

महाराजा चम्पतराय

रानी लाड़कुंवरि

सारवाहन

कुं. हिरदैशाह (हृदयशाह)

कुं. जगतराज

राव पदमसिंह

दीमान भारतीचंद्र

महाराजा सभासिंह

बलदीवान

देवकरन

महारानी देवकुंवरि

मझली रानी

वीरांगना जैतकुंवरि

सुजानसिंह

छत्रपति शिवाजी

महाबली

राममनिदौवा

फौजदार मांधाता चौबे

कुंवर खांजहां

फौजे मियां

बाकी खां

सवाई जैसिंह

बाजीराव पेशवा

रावधुरमंगद

भले भाई

4. कवि मंडल

(अ) प्रस्तावना

कवि भूषण जी

लाल कवि

कवि मुरलीधर

दानकवि

(ब) प्राक्कथन

स्वामी लालदास

स्वामी नवरंग

स्नेहसखी

स्वामी बृजभूषण

बक्सी हंसराज जी

(स) श्रीमुखवाणी में महाराजा छत्रसाल

(द) परवर्ती कवियों द्वारा प्रशस्ति गायन

परिशिष्ट

प्रस्तावना

1. ऐतिहासिक प्रमाणावली और छत्रसाल के अंश
2. औरंगज़ेब काल का चित्रण
3. सेक्युलर नेताओं की समझ
4. भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता
5. इतिहासकारों की तरकीबें

उपसंहार

सहायक ग्रंथों की सूची

भाग प्रथम

विषय प्रवेश

1. बुन्देलखण्ड परिचय
2. बुन्देलवंश परिचय

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(1)

बुन्देलखण्ड परिचय

विराट -जगत् के अन्दर चौदह लोक हैं, जिसके मध्य में भूलोक अर्थात मृत्युलोक है। मृत्युलोक के अन्दर सात द्वीप हैं, जिनमें जम्बूद्वीप अति उत्तम है। जम्बूद्वीप के मध्यमें भरतखण्ड है,जो नवखण्डों में और अवतारों की लीला भूमि है। भरतखण्ड में यमुना एवं नर्मदा (अनुगंगा) तथा टौंस एवं चम्बल नदी से घिरे भूभाग को बुन्देलखण्ड कहा जाता है। इसी पावन भूभाग का प्रस्तुत अनुभाग में परिचय कराया जा रहा है।

श्री राज परमात्मने नमः

(1)

बुन्देलखण्ड परिचय

बंदौ निजश्रीकृष्णको, परमधाम रस राज।
प्राणनाथ सुरचन्द्रप्रभु, छत्रसाल महाराज

चित्रकूट ओरछौ कालिंजर उन्नाव तीर्थ,
पन्ना खजुराहो जहाँ कीर्ति झुक झूमी है।
जमुन पहूज सिन्ध बेतवा धसान केन,
मंदाकिनी पयस्विनी का प्रेम पाय घूमो है॥
पंचम नृसहिं राव चम्पतरा छत्रसाल,
लाल हरदौल भाव चाव चित चूमी है।
अमर अभिनन्दनीय असुर निकन्दनीय,
वन्दनीय विश्व में बुन्देलखण्ड भूमि है॥

प्रस्तावना :- दृश्यमान जगत् की संरचना के पूर्व में असत नहीं था,सत भी नहीं था, परमाणु भी न थे और परम सूक्ष्म आकाश भी नहीं था। अगाध और गहन जल भी न था। मृत्यु भी न थी। तब केवल परब्रहम परमात्मा अपने अनन्त असीम अखण्ड परधाम में अनन्त शक्तियों के साथ बिहार कर रहा था।

---

1. (i) नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परी यत्
किमावरीव: कुहकस्य शर्मन्नम्भ: किमासीद गहनं गंभीरम १
न मृत्युरासीदमृतं न तहिं न रात्रा अह आसीत् प्रकेत:
आनीदवातं स्वाधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न पर: किंचनास २ (ऋग्वेद नासदीयसूक्त १०/१२१)
इयं विसृष्टि आवभूत यदि वा दधे यदि वा न
यो अस्याध्यक्ष: परमे व्योमन् त्सो अंग वेद वा न वेद ७ (ऋग्वेद नासदीयसूक्त १०/१२१)

(ii) अब सुनियो मूल वचन प्रकार जब नहीं उपजा योर मोह अहंकार
नाही निराकार नाही सुन ना निर्गुण ना निरंजन
ईश्वर न मूल प्रकृति ता दिन की कहूं आप आप बीती (महामती प्राणनाथ प्रकाश हिं० ३७)

परब्रह्म परमात्मा के परधाम में अनन्त ब्रहम आत्माओं (अग्नियों-शक्तियों) के परिसम्वाद२ का भी वेदों में उल्लेख मिलता है और परमात्मा ने इन्हीं आत्माओं (ब्रहमप्रियाओं) को जगदलीलादिखाने के लिए स्व-अंश भगवान अक्षरब्रहम के मन में खेल-विलास की वृत्ती संचारित कर दी थी। वेदादि आप्त ग्रन्थों३ में अक्षरब्रहम के केवल एकांश से सचराचर विश्व का प्राकट्य होना बताया गया है।4

विराट ब्रहमाण्ड :- पूर्णब्रहम परमात्मा का अक्षर ब्रहम के ऊपर इच्छावरण पड़ते ही अक्षर द्वारा अनन्त विराट ब्रहमाण्ड की रचना होने लगी। अक्षर-ब्रहम ही विराटब्रहमाण्डों के उदय-लय के कारण हैं5। अतएव अक्षरब्रहम ही सृष्टिरचना के मूल संचालक6 हैं–कारण कि, परमात्मा द्वारा भगवान पर इच्छा का आवरण पड़ते ही उनके हृदय में सुमंगला नामक शक्ति से मोह रूप निद्रा7 प्रगट हुई–जो अंडाकार8 थी। सुवर्ण वर्ण का यह अंडा हिरण्यगर्भ- एक सहस्त्र वर्ष पर्यन्त जल में तैरता रहा। अक्षर ब्रहम की सुरता के प्रवेश से वह अंडा फूटा और उससे महाविष्णु विराट पुरुष आदिनारायण प्रकट हुए, फिर तीन गुण (सत-रज-तम), पञ्च तत्त्व, (छिती, जल,पावक,गगन और समीर), चौदह लोक9 आदि चर अचर वस्तुएं उत्पन्न हुईं। इन सबका प्रलय में नाश होना बताया गया है, अतैव क्षर ब्रहमाण्ड प्रलय में लय हो जाता है। क्षर पुरुष के अन्दर आदि नारायण, महा विष्णु, सात शून्य, महतत्त्व (निरंजन-निराकार), गायत्री, प्रणव ॐ (ज्योति स्वरूप),अष्ट-आवरण युक्त यह दृशय वैराट एवं गर्भोदक समुद्र में शेषशायी नारायण का निवास है।

2. यत्रा वदेते अवरः परश्च यगन्योः कतरो नौ विवेद
   आशकुरित्सधमादं सखायो नक्षन्त यज्ञ का इदं विवोचत
   (निरुक्त दैव०अ० 7 पाद 7 खण्ड 31 मं० 17)
3. तदाहुरक्षरं ब्रहम सर्वकारण कारणम। (श्रीमदभागवत: 3/11/41)
4. बिष्टभ्याहमिहं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्। (गीता)
5. यदुन्मेष निमेषाभ्यां ब्रहमाण्ड-प्रलयौदयौ।
6. इत अक्षर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदह भुवन।
   यामें महाविष्णु मन-मनथे त्रिगुण,ताथे थिर चर सब उत्पन्न॥
   या विध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार॥ 1/19/11 प्रगटवाणी
7. नींद का खेल खेलत सब नींद में, जाग के किने न देखाया॥3॥
   सुपन की सृष्ट वैराट सुपन का, झूठे सांच ढन्पाया॥4॥ (किरन्तन: प्रकरण 3)
8. जिस समय यह जगत ज्ञान और प्रकाश से शून्य तथा अंधकार से परिपूर्ण था, उस समय एक बड़ा अंडा उत्पन्न हुआ और वही समस्त प्रजा की उत्पत्ति का कारण बना। वह बड़ा ही दिव्य और ज्योतिर्मय था।
   श्रुति उसमें सत्य, सनातन, ज्योतिर्गमय भ्रम का वर्णन करती है (महाभारत: आदि पर्व)

चौदह लोक:-1 सात अधोलोक एवं 2. सात ऊर्ध्वलोक

1. अधोलोक- अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल
2. ऊर्ध्वलोक- भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सत् लोक

जगत्:- इस दृश्य विराट में अष्टावरण के अन्दर सात अधोलोक एवं सात ऊर्ध्वलोक हैं।ऊर्ध्वलोक में भूलोक है जिसे मृत्युलोक कहा जाता है, इसी में जगत् के समस्त प्राणी निवास करते हैं।मृत्युलोक के अंतर्गत सात द्वीप और आठ सागर (पौराणिक-मतानुसार) कहे गए हैं। वर्तमान भूलोक में सात महाद्वीपों10 और छः महासागरों11 के रूप में मृत्युलोक का ज्ञान कराया गया है।

मृत्युलोक :- मृत्युलोक में सात द्वीपों के नाम निम्न प्रकार हैं:

1. जम्बू द्वीप   2. प्लक्ष द्वीप
3. शाल्मली द्वीप   4. कुश द्वीप
5. क्रौंच द्वीप   6. शाक द्वीप
7. पुष्कर

जम्बू द्वीप:- मृत्युलोक के अंतर्गत जम्बू द्वीप में नवखण्ड हैं,जो निम्न प्रकार हैं:-

1. भरतखण्ड   2. किंपुरुष   3. हरिवर्ष
2. इलावर्त   5. हिरण्यवर्ष   6. रम्यखण्ड
3. कुरुवर्ष   8. भद्राश्व   9. केतुमाल

भरतखण्ड :- मृत्युलोक के अंतर्गत जंबुद्वीप के मध्य स्थित भरतखण्ड, सब खण्डों से उत्तम है, इसी भूभाग पर सभी अवतार हुए हैं। इसी कारण सचराचर जगत् में इस खण्ड को परम-पावन माना जाता है।12 भरतखण्ड, अखण्ड भारतवर्ष के नाम से अतीत में पुकारा जाता था, परंतु अब इसकी सीमाएं घटकर भारत देश के रूप में रह गयी हैं। भारत माँ का वक्ष:स्थल, देश का गुरुत्व केंद्र है। इस भूभाग को बुन्देलखण्ड के नाम से जाना जाता है। आजकल यह भूभाग प्रशासनिक स्तर पर दो प्रान्तों में विभक्त है– उत्तर प्रदेश का दक्षिणी भूभाग और मध्यप्रदेश का उत्तरी भूभाग। इस भूभाग पर बुन्देलवंश वंश का शासंन् रहा है, अतैव इन्हीं के नाम से यह आँचल बुन्देलखण्ड के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इस पावन भूमि पर अनेकों वीर पुरुष एवं ऋषि मुनिगण हो गए हैं। कलियुग में अखण्ड मोक्ष देने वाली श्री पद्मावतीपुरी यहीं स्थित है, यहीं कल्किअवतार

---

10. सात महाद्वीप निम्न प्रकार हैं:-

1. एशिया महाद्वीप   5. उत्तरी अमेरिका महाद्वीप
2. यूरोप महाद्वीप   6. दक्षिण अमेरिका महाद्वीप
3. अफ्रीका महाद्वीप   7. अंटार्कटिका महाद्वीप
4. ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप   (एशिया महाद्वीप के अंतर्गत भारत देश है।)

11. छः महासागर:- 1.हिंद महासागर 2. उ० प्रशांत महासागर, 3. द० प्रशांत महासागर

4. आर्कटिक महासागर, 5. उ० अटलांटिक महासागर, 6. द० अटलांटिक महासागर

12. गायन्ति देवा किलगीतिकानि, धन्यास्तु ये भारत भूमि भागे।

निष्कलंक **प्रभु प्राणनाथ** जी ने एकादश वर्ष [वि.स. 1740-1751 (A.D. 1683-1694)] पर्यन्त सहस्त्रों ब्रह्ममुनियों सहित विहार किया है।निष्कलंकप्रभु प्राणनाथ जीके नादपुत्र (शिष्य) चम्पत सुअन महाराजा **महाराजा छत्रसाल** जैसे युगपुरुष ने जन्म लेकर बुन्देलखण्ड को जो गरिमा एवं महिमा प्रदान की है वह युगों-युगों तक अक्षुण्य रहेगी।

बुन्देलखण्ड

भारत के मानचित्र में यमुना, बेतवा, चम्बल, टौंस, केन, किलकिला, धसान, सोन कुंवारी, पहुज, नर्मदा आदि नदियों से घिरा एक वृहद भूभाग है। इस भूभाग के झांसी, पन्ना, नागौद, छत्रप्रकाश,दमोह, सागर, दतिया, चन्देरी, ललितपुर, बांदा, हमीरपुर, जालौन, महोबा, चित्रकूट, टीकमगढ़, रीवा, जबलपुर, विदिशा, ग्वालियर, भिण्ड के भूभागों तथा इटावा के कुछ भागों को मिलाकर बना भूखण्ड-बुन्देलखण्ड कहलाता है1। दो प्रान्तों (उ.प्र., म. प्र.) के मध्य स्थित होने के कारण वर्तमान समय में इस भूभाग की प्रथक पहिचान अभी अन्तर्राष्ट्रीय एवं विश्व स्तर पर नहीं है जबकि अतीत में बुन्देलखण्ड एक सुदृढ़ स्वतंत्र राज्य के रूप में विख्यात था2।

इस भूभाग पर प्राचीन काल में शिशुपाल का राज्य रहा, भतृहरी ने यहीं राज्य करते हुए वैराग्य धारण किया था। यहाँ विक्रमादित्य का शासंन् रहा। समय-समय पर नाग, कछवाहा, परिहार, चन्देल आदि वंशधारों का भी राज्य रहा है और काशी के गहिरवंशी क्षत्रियों का तत्पश्चात शासंन् स्थापित हुआ। तब राजा पंचम यहाँ के 11वीं शताब्दीमें शासक हुए। इन्हीं गहिरवंशीय क्षत्रिय राजपूत राजा पंचम3 से बुन्देल वंश का प्रादुर्भाव हुआ और बुन्देला राज्य की नींव पड़ी। कालान्तर में बुन्देला राजाओं के कारण इस भुखण्ड को बुन्देलखण्ड4 नाम से पुकारा जाने लगा। इन्हीं बुन्देली राजाओं की परम्परा में चम्पत सुअन महाराजा छत्रसाल कावि.स. 1706 (26.05.1649 ई.) में हुआ। इनका शासंन्काल बुन्देलखण्ड में स्वर्णयुग के नाम से पुकारा जाता है।

बुन्देलखण्ड की गौरवशाली समृद्धि एवं प्रजा में सुख-शान्ति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अंग्रेजी काल में पेट भरने के लिए विदेश जाने वाले भारतीय इस भूभाग के नहीं थे, वे सभी उ.प्र., बिहार व बंगाल प्रान्त के थे। इतना ही नहीं अंग्रेजों

---

1. इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस।

   छत्रसाल सों लड़न की. रही न काहू हौंस (लोकोक्ति)

2. बादर की छांहि लौं, उसेल पातसाही सर्व,

   फैलि रहो घाम सो, प्रताप छत्रसाल को। (लालकवि)

3. गहीर वंशीय राजा हेम करण ने 5 बार देवी विंध्यवासिनी के भक्ति पूर्ण मां अनुष्ठान किए थे, इसी कारण वह पंचम बुन्देला के लाए थे।
4. कर्करेखा-26 डिग्री उ. अक्षांश तथा 77 डिग्री -81.5 पू. देशांतर के मध्य स्थित

ने बड़ी मुश्किल से सेना व विश्वासघात के सहारे बुन्देलखण्ड में अधिकार जमाया था, फिर भी कुछ भूभाग उनकी पहुँच से दूर बना रहा जबकि देश के शेष भागों में वे सरलता से प्रवेश पा गये थे।

यह भूभाग यवन दासता से प्राय: मुक्त रहा है, ज्ञातव्य हो कि औरंगज़ेब के शासंन्काल में जब मुग़ल सत्ता अपने चरमोत्कर्ष पर थी उसी समय छत्रसाल जैसे साधन विहीन राजकुमार ने बुन्देलखण्ड के समग्र भूभाग से औरंगज़ेब की स्थापित हो रही सत्ता को उखाड़कर उसके स्थान पर सुदृढ़ स्वायत्त-सत्ता की लोकमांगलिक स्थापना की थी।

महाराजा अधिपति भये, महाराजा छत्रसाल।

राजन में राजा भये, असुरन केरे काल॥

महाराजा छत्रसाल के सान्निध्य से बुन्देलखण्ड भूमि हरितयुग में प्रवेश कर गयी थी। कुओं, तालाबों, झीलों (सागरों) के निर्माण कार्य से समग्र बुन्देलखण्ड सिंचित होने लगा था। बुन्देलखण्ड की परिभाषा भी जनमानस नवीन रूप से करने लगा था–भारतवर्ष के मध्य भाग में नर्मदा के उत्तर और यमुना के दक्षिण में–विंध्याचल पर्वत की शाखाओं से समकोण और यमुना नदी की सहायक नदियों के जल से सिंचित अवनि सौंदर्य कृत जो खण्ड है–उसे बुन्देलखण्ड कहते हैं। वस्तुतः बुन्देलखण्ड में जल सिंचन की योजना पर प्राथमिकता का रुख रहा है, तालाब यहाँ की संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। निम्न लोकोक्ति धनधान्य से समृद्ध एवं देव राज्य युक्त बुन्देलखण्ड के वैभव को आज भी मुखरित कर रही है।

तालन में भीमताल और सब तलईयां,

राजन में छत्रसाल और सब रजईयां॥ (लोकोक्ति)

बुन्देलखण्ड के चौमुखी विकास में जलाशय और महाराजा छत्रसाल–ये दो ध्रुव माने गये हैं। महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड के पर्याय हैं, बुन्देलखण्ड की संस्कृति एवं समृद्धि के वे पुरोधा हैं।

बुन्देली वैभव

बुन्देलखण्ड का चप्पा-चप्पामहाराजा छत्रसाल की पग-धूल से पावन हो चुका था। अनेक ग्राम, कस्बा, नगर एवं स्थल आज भी महाराजा छत्रसाल के पावन चरित्र का यशोगान कर रहे हैं, इतना ही नहीं बुन्देलखण्ड के बाहर भी उनकी यशोपताका अनेक स्थलों पर उनकी उपस्थिती का अहसास करा रही

है। अतएव महाराजा छत्रसाल के परिवेश को जीवन्त बनाये रखने हेतु एवं बुन्देलखण्ड की अमूल्य थाती को उजागर बनाये रखने के लिए यहाँ के ग्रामों, कस्बों, नगरों एवं स्थलों का नामोच्चारण करना समीचीन एवं पुनीत कृत्य है।

महाराजा छत्रसालकालीन स्थलों का उल्लेख प्रामाणिक रूप से तत्कालीन समय में लिखे गये ऐतिहासिक पत्रों में मिलता है। इन पत्रों में जिन नगरादि का विवरण उपलब्ध है, उनका ऐतिहासिक महत्व है, जिनके उल्लेख से बुन्देलखण्ड की संस्कृति एवं महाराजा छत्रसालके अपार बल पौरुष का दिग्दर्शन होता है।स्थलों की जानकारी किए बिना बुन्देली वैभव एवं युग पुरुष कहे गये कालजयी छत्रसालमहाराजा के इतिहास के साथ न्याय न हो सकेगा।

बुन्देलखण्ड की अचल धरोहर

किसी भी भूभाग की अचल धरोहर वहाँ के गाँव, कस्बे, नगर एवं स्थल होते हैं। भूभाग का अक्षुण रहना ही अचल धरोहर की कीमत है, जब भूभाग दासता से मुक्त हो तथा न्याय धर्म से संचालित हो।

महाराजा छत्रसालके इतिहास को मुखरित कर रहे बुन्देलखण्ड[2] के गाँवों, कस्बों, नगरों एवं स्थलों का नाम-दिग्दर्शन निम्नप्रकार है:-

प्रथम खण्ड

(अ) अजयगढ़, अजनार के पहाड़, अलौन (अलौना), अमुआ (अमवा) परगना, आसेनि।

अजयगढ़:- पन्ना के उत्तर में 27 कि.मी. दूर नैसर्गिक छ्टा से युक्त एक नगर, (तहसील-परगना)।

---

1. जा चमकी करबाल सी, छत्रसाल की बांकी,

घूम घूम भर-भूम, मैंढ़ बुन्देलखण्ड की टांकी।

जा के कन-कन की दमकन में, जोत भवानी की है,

हौंस हठीली देश हेत, झांसी की रानी की है। (द्वारिकेश)

2. बुन्देल भूमि बुन्देलों की,रणखेलों की यह रही अवनि,

वीर भूमि चंदे लो की यह,नहीं जानता इसे कवन।

तपोभूमि यह तपियों की,ऋषि-मुनियों ने कीन्हों विश्राम,

ऋषभदेव रिरुवा में आश्रम, पाराशरी पराशन ग्राम।

किया भजन जन्मदग्नि जमौड़ी, याज्ञवल्क्य जिटकिरीमुकाम,

विश्वामित्र था घाट नगारा, श्रृंगीमुनि खेरला ठाम।

बाल्मिक बबीना के,चन्नौट निवासी ऋषि च्यवन,

बुन्देलखण्ड बुन्देलों की, रणखेलों की यह रही अवनि॥

कपिलदेव जी रमे कालपी, राव नंदनी किनारे जान,

कर्दम ऋषि ग्राम कहटा में, करते रहे हरि-गुण-गाना।

वशिष्ठ जी ग्राम बसरिया में, कश्यप किया कुरौन ध्यान,

आज देखलो नदी बेतवा, बने हुए सबके स्थान।

धन्य भाग उस मम्मी का है, जहां ऋषियों ने किया रमन,

बुन्देलखण्ड बुन्देलों की, रणखेलों की यह रही अवनि॥ (स्व. पं. मनबोधन)

(आ) आंतरीगाँव:- ग्वालियर से बारह मील दक्षिण में एवं डबरा से पन्द्रह मील दूरी पर स्थित एक गांव। महाराजा छत्रसाल की सेना का प्रमुख सैनिक पहाड़सिंह का बेटा भगवन्तसिंह यहीं बलिदान हुआ था।

(इ) इचौली:-बांदा से दस मील दूर स्थित। संवत् 1783-84 में तृतीय बंगश युद्ध में बंगश के दो सेनापति भूरेखां और दिलावर खाँ यहीं मारे गए थे।

इन्द्ररखी:- ग्वालियर के निकट स्थित। यहां का जमींदार पहाड़सिंह गौड़ था, जो बाद में महाराजा छत्रसाल का अभिन्न साथी बना था।

(उ) उयदयपुर:- महाराजा छत्रसाल जी जब जसौधियों को परास्त करके फतेहपुर होकर उयदयपुर आये, तब उन्होंने उदयपुर में कब्जा किया था।

(ए) एरच:- झाँसी के उत्तर पूर्व में 69 कि. मी. दूर वेतवा नदी के किनारे स्थित एक पौराणिक एवं ऐतिहासिक कस्बा। यहां भक्त प्रहलाद का जन्म हुआ था। संवत् 1778 के बैसाख मास में यहीं महाराजा छत्रसाल के पुत्रों ने बंगश को रौंदा था। बंगश जान बचाकर भाग निकला था।

(ओ) ओरछा (राजधानी), ओकासी परगना (औगासी),

ओरछा:- गढ़कुंडार नरेश महाराजा रुद्रप्रताप ने संवत् 1564 में ओरछा नगर की नींव डाली थी, जो कालान्तर में बुन्देलों की एक समृद्धिशाली राजधानी सिद्ध हुई।

(औ) औंडेरा:- सिरौंज से 20 मील उत्तर पूर्व में स्थित एक गांव। महाराजा छत्रसाल का सेनापति बाकी खां यहीं का निवासी था। महाराज ने इसके पुत्र कु. खांजहाँ को अपना मुंह बोला बेटा माना था।

औरंगाबाद :- यहां महाराजा छत्रसाल के ककाजात भाई बलदाऊ रहते थे, इन्होंने बुन्देलखण्ड के स्वतन्त्रता अभियान में महाराज का साथ देने का वादा निभाया था। वह बाद में बलदिवान के रूप में प्रसिद्ध हुए थे।

क वर्ग

(क) ककरेड़ी, कनार1, करगुवां, करैरा, कटेरा, कालपी2, कालिंजर3, कुटरो,

---

1. कनार-: कनार परगना। पंचनदा के मुहाने से लेकर कालपी और जालौन तक इलाके को कनार कहते हैं। महाराजा छत्रसाल नेवि.सं. 1743-44 (1686- 1687 A.D.) में अपनी दिग्विजय यात्रा के दौरानउत्तर पश्चिम में कालपी-अनार से लेकर भांडेर एरच तक फैली बची कुची मुग़ल सल्तनत को धराशाई कर सर्वत्र अपनी पताका पर आई थी। निष्कलंक प्रभु श्री प्राणनाथ जी ने युद्ध भूमि में इस समय सैनिकों के उत्साह को बढ़ाया था।
2. कालपी:- यमुना तट पर बसी एक पौराणिक नगरी, भगवान वेदव्यास की जन्म स्थली। संवत् 1743 में कल्कि अवतार श्री प्राणनाथ जी ने यहां पधार कर कतर ज्ञान का खुलासा किया था, जिसकी खबर औरंगज़ेब तक पहुंची थी और उसने आक्रमण पर जा रहे अपने सेनापति शरण मस्त को वापस बुला लिया था। 7 कोस के दौरन दौरे-छत्रप्रकाश, के अनुसार महाराजा छत्रसाल यहां से 1 दिन में भांडेर होकर ग्वालियर पहुंचे थे।
3. कालिंजर: बांदा से दक्षिण पूर्व की ओर 50 किलोमीटर पर स्थित; महाराजा छत्रसाल ने इस पर अधिकार जमा कर मांधाता चौबे को किलेदार बनाया था। इस दुर्ग का निर्माण 12 वीं शताब्दी के पूर्व हुआ था।

कुलपहाड़4, कोंच (परगना), कोटरा5 (परगना), कुरई (परगना) कर्बी।

(1) खंडौत, खरैला, ख्ग्टौनी, खटोला, खगसीस (परगना). खेरागढ़6, खैलार7, खिमलासा (परगना)।

(2) गढ़कुंडार8, गढ़ाकोटा, गढ़पहरा (परगना), गडरौला (परगना), ग्वालियर, गैराहा, गोलकुंडा, कस्बा गडोरा, गौहरा।

ककरेडी:- यह पहाड़ियों के बीच बसा है, ज़ो सतना के उत्तर में तथा बांदा जनपद में मानिकपुर के आस पास है। महाराजा छत्रसाल ने डांग में स्थित इस गाँव के लोगों का मन जीता था, विहंगम रास्तों के कारण यह नगर उपेक्षित रहता था, परंतु महाराजा छत्रसाल ने यहां आकर अपनी आत्मीयता दर्शायी थी। ऊबड़-खाबड़ यातायात को निम्न कहावत में, जो यहां प्रचलित है, दर्शाया गया है–

बिस माहुर काहे को खाय, दिना चार ककरेड़ी जाय।

कोंच (परगना):- संवत् 1710 (1653 A.D.) में यहां की जागीर चम्पतराय से छीनकर दाराशिकोह के कहने पर शाहजहाँ ने ओरछा नरेश पहाड़सिंह को 3 लाख में दी थी,अतैव चम्पतराय ने इसी कारण शामूगढ़ के युद्ध संवत् 1713(1656 A.D.) में दारा का साथ न देकर औरंगज़ेब की सैन्य सहायता की थी। इस युद्ध में दारा का वध हुआ था और औरंगज़ेब दिल्ली के तख्त पर बैठा था, तब यहां जागीर पुनः संवत् 1715 (1658 A.D.) मेंचम्पतराय के हाथों में आ गयी थी। इस कोंच परगना ने ही दाराशिकोह को भारत सम्राट बनने से रोक दिया था, परंतु भविषय चम्पतराय के भी विपरीत चला गया था। संवत् 1743-44 (1686-87 A.D.) की दिग्विजयी यात्रा में महाराजा छत्रसाल यहां आये थे।

ग्वालियर:- झांसी आगरा के मध्य स्थित एक ऐतिहासिक नगर। बुन्देलखण्ड आने वाली मुग़ल सेनाएं इसी नगर के आस-पास से गुजरती थीं। बुन्देलखण्ड में प्रवेश हेतु

---

4. **कुलपहाड़:-** यह राठ- महोबा मार्ग पर स्थित है। (हमीरपुर से 90 किलोमीटर दक्षिण की ओर), इसे महाराज पुत्र जगतराज ने बताया था। इनके पौत्र केशरीसिंह ने यहां एक भव्य किला बनवाया था। कहा जाता है की इनके पुत्र परीक्षित एवं पुत्रवधू रानी राजमाला स्वतंत्रता के इतिहास में अमर हैं।

5. **कोटरा:-** एक सामरिक स्थल, हमीरपुर कालपी के बीच स्थित। यहां के मुग़लफौजदार सैयद लतीफ को महाराजा छत्रसाल जी ने कालपी से लौटते समय बंदी बनाया था।

6. **खेरागढ़:-** दक्षिण में मालवा का एक नगर, यहां महाराजा छत्रसाल ने शेख अनवार को बंदी बनाया था।

7. **खैलार:-** झांसीसे 8 मील दक्षिण में, वि.सं. 1667(1640 A.D.) मैं यही सार वाहन की मृत्यु एक युद्ध में हुई थी।

8. **गढ़कुंडार:-** झांसी से पूर्वोत्तर दिशा में 48 किलोमीटर दूर स्थित; बुंदेलों ने खंगारों से राज्य छीनकर महौनी के स्थान पर यहां अपनी राजधानी स्थापित की थी। और अच्छा से पहले बुंदेलों की यही राजधानी थी।

पश्चिमी द्वार है। राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण इस नगर पर महाराजा छत्रसाल की दृष्टि हमेशा रही है। बुन्देलखण्ड की पावनभूमि हल्दी घाटी धूमघाट इसी के पास पूर्व में स्थित है।

गढ़ाकोटा:- सागर और दमोह के बीच, सागर से 30 कि.मी. पूर्व में स्थित एक ऐतिहासिक नगर। महाराजा छत्रसाल ने इसे जीतकर प्रारम्भ में यहां धाक जमाई थी। यहां के दुर्ग को अंग्रेज जनरल पाटसंन् ने अक्टूबर 1818 में शाहगढ़ के राजा से छीना था।

च वर्ग

(च) चंडौत, चन्देरी, चवर्ण, चरखारी1, चित्रकूट1, चित्रकूट, चंदरापुर, चौरागढ़।

(छ) छ्तरपुर2, छपरा, छाई कुआं3।

(ज) जगमन्नत पुर4, जतहरा, जमुहा, जलालपुर (परगना), जमौड़ी, जसौंधी5, जतारा, जिगनी, जिटकिरी, जैतपुर, जुगटौन, जोरपहार।

(झ) झारखण्ड,झांसी।

चन्देरी:- बेतवा तट पर बसा एक सुरम्य नगर। यहाँ जौहर का तालाब, एक ऐतिहासिक महत्व का है। बुन्देलों की एक शाखा यहाँ पल्लवित हुई थी,वि.सं. 1673 (1616 A.D.) में गेंदालाल नामक सूबेदार को हराकर भारतसिंह चन्देरी के प्रथम राजा बने थे।महाराजा छत्रसाल के राज्य-तिलक का विरोध तत्कालीन चन्देरी नरेश राजदुर्गसिंह [संवत् 1720-1744 (1663-1687 A.D.)] ने भी किया था।

---

1. **चरखारी:-** महोबा के उत्तर पश्चिम में20 किलोमीटर दूर स्थित; इसे महाराजा छत्रसाल के पुत्र कुं जगतराज ने बताया था। यहां बुन्देली ठसक देखने को मिलती है। कुं. जगतराज को यह स्थान प्रिय था। यहां पर अंतिम बुन्देली राजा अरिमर्दनसिंह हुए।
2. **छत्रप्रकाश:-** महाराजा छत्रसाल (छत्ता) ने इसे अपने नाम पर बताया था- कार्तिक शुक्ल पक्ष गुरुवार, पुष्यनक्षत्र, संवत् है 1764 के दिन। यहां पर महाराजा छत्रसाल की विशाल स्टैचू है। यह नगर उत्तर एवं दक्षिण भारत के लिए प्रवेश द्वार कहा जाता है। यहां का छत्र साली चबूतरा प्रसिद्ध है।
3. **छाई कुआं:-** दतिया के उत्तर- पूर्व और भांडेर नगरी के समीपस्थ एक गांव। संवत् है 1746 में इस गांव के निवासी सुखदेव मिसिर कढ़ीयारे को आसपास के 120 गांवों की जागीर महाराजा छत्रसाल ने भेंट थी।यह जागीर डेढ़ लाख की थी। इन्हीं सुखबीर मिसिर ने बचपन में छत्रसाल को चम्पतराय से बिछड़ जाने पर मुग़ल सेना के चुंगल से, अपना बालक कहकर बचाया था। तब इस बालक के साथ उन्हें कड़ी रोटी खानी पड़ी थी। तभी से यह लोग कढ़ीयारे नाम से पुकारे जाते हैं।
4. **जगमन्नपुर:-** पचनदा के पूर्व- दक्षिण में स्थित गांव राजा वीर ने मुग़ल सत्तारखां हेलो को यहीं पर संवत् है 1128 में पराजित करके महौनी को राजधानी बनाकर सर्वप्रथम बुन्देली शासंन् चलाया चलाया था।
5. **जसौंधी:-** (जसौंधिया) भाट जनों का एक गांव। महाराजा छत्रसाल ने इस गांव पर पूर्ण अधिकार कर जागीर जसौंधियों को सौंपी थी।

जलालपुर :- चिल्लातारा (जमुना नदी का घाट) बांदा-फतेहपुर मार्ग के लगभग चार मील दूरी पर बसा एक ऐतिहासिक गांव। महाप्रभु प्राणनाथ जी चित्रकूट जाते समयवि.सं. 1643 (1686 A.D.) में यहां पधारे थे। तभी महाराजा छत्रसाल की दिग्विजयी यात्रा का स्वागत चित्रकूट से आकर राजा बसन्त सुर्खी ने यहीं इसी समय किया था। बीतक ग्रंथ में इसकी विशद चर्चा है।

जिगनी :- हमीरपुर जिले में धसान और बेतवा के संगम तट पर स्थित, (पन्ना केन्द्र से उत्तर-पश्चिम दिशा में डेढ़ सौ कि.मी. की दूरी पर स्थित एक जागीर)। जिगनी की जागीर महाराजा छत्रसाल ने संवत् 1745 में अपने पुत्र कुं. राव पद्मसिंघ को दी थी, जो साढ़े तीन लाख की थी। कोटरा दुर्ग इसी के पास है। भौगोलिक दृष्टि से यह नगर उत्तरी बुन्देलखण्ड का अति महत्वपूर्ण स्थान है अतैव महाराजा छत्रसाल ने इसी कारण से अपने पुत्र को यह जागीर सौंपी थी।

जैतपुर :- कुलपहाड़-नौगांव मार्ग पर, कुलपहाड़ से लगभग 13 कि.मी. दूर (दक्षिण)स्थित एक विशिष्ट नगरी। इस नगर की स्थापना, महाराजा छत्रसाल के पुत्र कुँ. जगत्राज ने अपनी वीरांगना पत्नी जैतकुंवरि के नाम पर की थी। यहां एक भव्य किले का निर्माण भी हुआ था। महाराज जगत्राज ने यहां (जैतपुर-गादी) पर 27 वर्ष राज्य किया था। महाराजा छत्रसाल ने राज्य बंटवारे में कुँ. जगत्राज को जैतपुर की गद्दी दी थी।

झारखण्ड :-गरौठा सेदक्षिण-पश्चिम की ओर लगभग 15 कि. मी. की दूरी पर गढ़ा कस्बे के निकट धसान नदी के तट पर स्थित: एक गाँव सामरिक दृष्टि से महाराजा छत्रसाल ने इसे विशेष स्थान दिया था।

झाँसी :-ओरछासे पश्चिमोत्तर दिशा में 15 कि. मी. दूर स्थित बुन्देलखण्ड (उ.प्र.) का एक अति प्रसिद्ध नगर। इस नगर की नींव ओरछा महाराज वीरसिंहजू देव ने संवत् 1668 में किले के रूप में डाली थी। ओरछा नगर की समृद्धि क्षीण होने पर इसका विकास हुआ था। महाराजा छत्रसाल ने राज्य का तीसरा हिस्सा बाजीराव पेशवा को दिया था, गलत है झांसी भूभाग बुंदेलों के बजाय पेश हवाओं के हाथ चला गया था।

ट वर्ग

(ट) टीकमगढ़:- ओरछा नरेश विक्रमजीतसिंह (कुं. दुल्हाजू 1817-1874 संवत्) ने अपनी राजधानी ओरछा से स्थानान्तरित करके वि.सं. 1840 (1783A.D.) में टीकमगढ़ स्थापित की थी। टीकमगढ़ का क़िला (संवत् 1835-1844) के मध्य में बनकर तैयार हुआ था।

त वर्ग

(त) तरहुवां (तरौहा)1, तैन्दुवा, तोरा-तीरी।

तोरा-तीरी:-महाराजा छत्रसाल जी आंडेर जीत कर यहां पर आये थे, छत्रप्रकाश के अनुसार

मारि फौज औंडेरहि आए, तोरा-तोरी पर उठि धाए।

लूट गांव कीने मनभाए, पकर पटेल जैत को लाए॥

(थ) थून:-जूड़ामनजाटका दुर्ग। इस दुर्ग कोमहाराजा छत्रसाल ने जीता था। जूड़ामन जाट की मृत्यु संवत् 1779 (19.4.1722A.D.) में हुई थी।

थाला (परगना):- बुन्देलखण्ड का एक परगना।

(द) दससैंडा2, दतिया3, देवगढ़4, दैलवाड़ा, दमोह।

दैलवाड़ा:-चम्पतराय का एक अति विश्वासी साथी महाबली, जो दैलवाड़ा का ही निवासी था तथा महाराजा छत्रसाल के अभिन्न सहायक योद्धा भानु भट्ट की भी यह जन्म स्थली है। रानी सारन्धा नेदैलवाड़ा के महाबली के यहां अपनी थाती (जेबरात) धरोहर में छत्रसाल के लिए सुरक्षित राखी थी।

(ध) धमौनी:- झांसी से 100 मील दक्षिण में एवं सागर से 24 मील उत्तर में स्थित।

धूमघाट:- बुन्देलखण्डका कुरुक्षेत्रव बुन्देलखण्ड की हल्दी घाटी, ग्वालियर में सिंधु नदी के पास (डबरा स्टेशन के समीपस्थ) की युद्ध स्थली, जो कि झांसी से 34 मील उत्तर में स्थित पहाड़ियों के बीच एक सकरा लम्बा मैदान।

(न) नरवर:- बुन्देलखण्ड के पश्चिमी भूभाग अर्थात ग्वालियर के दक्षिण पश्चिम में स्थित एक नगर।

---

1. **तरहुंवा (तरौहा):-** इलाहाबाद (प्रयाग) से 35 कोस दूर एक प्राचीन नगर, जिसके खण्डहर कर्वी- चित्रकूट के बीच में अभी भी विद्यमान हैं। दिग्विजय यात्रा में यहां के सुरक्षित राजा ने महाराजा छत्रसाल की पूर्ण अधीनता स्वीकार की थी। यही के राजा ने तिकवांपुर (कानपुर) के परम आनंद त्रिपाठी (महाकवि भूषण) को कवि भूषण की उपाधि प्रदान की थी।

2. **दससैंडा:-** राजापुर,सिन की सड़क से 5 मील हटकर पश्चिम की दिशा में स्थित बागे नदी के किनारे बसा एक ऐतिहासिक कस्बा, जो कि बुन्देलखण्ड का परगना भी रहा।

3. **दतिया:-** झांसी से 25 किलोमीटर पश्चिमोत्तर में वह भांडेर (धामी बगिया) से 30 किलोमीटर पश्चिम में स्थित। **झांसी गले की फांसी, दतिया गले का हार। ललितपुर तब तक रहो, जब तक मिले उधार॥** ॥ कहावत॥

4. **देवगढ़:-** (1) ललितपुर से 34 किलोमीटर दूर बेतवा तट पर बसा एक नगर, कई मील लंबे चौड़े क्षेत्र में यह अवस्थित स्थल जहां हजारों मूर्तियां अभी भी असुरक्षित अवस्था में विखंडित पड़ी हैं। यहां की नाहर घाटी में अनेक मंदिरों की श्रृंखलाएं हैं, स्थल सुरम्य व नैसर्गिक छटा परिपूर्ण है।

(2) एक दूसरा देवगढ़ भी है, जो गोंडवाने में स्थित है।

निवाड़ी:- ओरछा की एक बड़ी रियासत,गढ़कुंडार नरेश मलखांसिंह (1525-1558 संवत्) ने देवीसिंह को यहाँ का जागीरदार बनाया था।

धामौनी:- बुन्देलखण्ड और मालवा के मध्य में दक्षिण की दिशा में स्थित। यहाँ एक सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण गौड़ लोगों द्वारा करवाया गया था। दक्षिणी बुन्देलखण्ड में यह अति महत्वपूर्ण सामरिक स्थल है, जो एक राजनैतिक रूप में भी महत्व का रहा है। महाराजा छत्रसाल ने खालिक खां को संवत् 1729 में पराजित किया था, यह उनकी प्रारम्भिक अति महत्वपूर्ण विजय थी। औरंगज़ेब ने इस दुर्ग को एक बार पुनः कूटनीति के सहारे छत्रसाल से छीना था, परन्तु महाराजा छत्रसाल ने पुनः धामौनी दुर्ग पर फतह कर विजय पताका फहराई थी। महाराजा छत्रसाल ने पुत्र कुँ. जगत् राज को इस दुर्ग पर विजय के संस्मरण कई पत्रों में लिखे थे। धामौनी फतै करी बायस हजार फौज वहां की मारी गई, बा हमारे बहुत घाव आए, रही धामौनी के जीते से कछु नहीं खवायौ (खोया) वा हथवार बान वगैरा बहुत हमने पाए.... ***सो खालिक धामौनी फौज लेके आ गयो, जमने ऊसे लड़ाई करी, धामौनी फतै करी वा अपनो थानो जमायौ***

धुबेला और धुबेला संग्रहालय:- म० प्र० के जनपद छत्रप्रकाश के मध्य स्थित–धुबेला में एक ऐतिहासिक राजकीय संग्रहालय है, जो खजुराहो- झांसी राजमार्ग से दो किलोमीटर दूर मऊ सहानियां गाँव के पास है। महाराजा छत्रसाल द्वारा बनाये गए महलों, स्मारकों और खूबसूरत धुबेला ताल के तट पर बने तीन सौ वर्ष पुराने धुबेला भवन के दरबारी हाल में संग्रहालय स्थित है। इस राजकीय संग्रहालय में महाराजा छत्रसाल की शौर्यपूर्ण गाथाओं से सम्पृक्त बहुमूल्य वस्तुएं हैं। उनका नौ फुट लम्बा अंगरखा, मुकुट, तलवारें व अस्त्र-शस्त्र यहाँ देखने को मिलते हैं। इस धुवेला ताल के आसपास छ: किलोमीटर के घेरे में पुरातत्व महत्त्व की अनेकों इमारतें विद्यमान हैं। मऊ-महेवा (छत्रप्रकाश)) गांव भी आसपास ही है, जहाँ महाराजा छत्रसाल के पुत्रों के लिए बने बावनिया महल खण्डहर के रूप में देखने को मिटे हैं। धुबेला ताल के समीप ही तिदुनी दरवाजा है, जहाँ पर श्री प्राणनाथ और छत्रसाल जी का मिलाप हुआ था। यहीं पर महाराजा छत्रसाल का निवास स्थल बादल महल, मऊ दरवाजा, दीवान कीरतसिंह की गढ़ी, महारानी कमला का स्मारक और छोटा मकबरा जिसे महाराज के मुंहबोले बेटे बाजीराव पेशवा ने बनवाया था। यह भी यहीं (मऊ मुकुरवा में) स्थित है।

धूमघाट:- जिसकी रज रखने माथे पर, उस घाटी में धूम मची है।

आर्य संस्कृति जिससे अक्षुण्य, वह रज रची बसी घाटी है॥

अरे जगो भरतवंशी तुम! पावन धरा आज राक्षिति किम्।

ए धूमघाट हल्दी घाटी है, कुरुक्षेत्र सम जग बन्दिती जिम॥

आओ लौटें इस घाटी में, तन मन प्राण निछावर इसमें।

रखी लाज धूमघाटी ने, लाखों वीर निछावर जिसमें॥

ये घाटी हिन्दुआन लाज, करो प्रणाम सदभाव सतति॥

धूमघाट की धूम गयी यदि, मानो गई विखर संस्कृति॥

घाटी घाटी रक्त मणी, बनी बुन्देली रण भूमि यह।

छत्रसाल छत्ता बन झूमें, चमके रविसम धूमघाट जह॥

जय बोलो सब धूमघाट की, बोलो जय छत्रसाल बलि तुम।

यवनों का संहार किया है, धन्य! हिदुआन बचाया तुम॥

अरे भूलते तुम क्यों इसको, धूमघाट जग आन सान।

जिससे कहलाए हिन्दुवान आज, दे रहा सबन को आज मान॥

जय धूमघाट जय छत्रसाल, है यवनों का महाकाल।

जय बुन्देले जय शत्रुसाल, शुभ धूमघाट माटी विशाल॥

(धूमघाट खण्डकाव्य से)

निःसन्देह, धूमघाट की माटी अति पावन एवं प्रेरणादायी है। भारतवर्ष में सनातन धर्म की रक्षा करने वाली यह पावन धरा धूमघाटी जन जन द्वारा बंदित है। इसका महातम्य कुरुक्षेत्र (हरियाणा) और हल्दी घाटी (राजस्थान) से कम नहीं है। कुरुक्षेत्र में एक परिवार का महाभारत था, हल्दीघाटी में बादशाह (अकबर) और राणा (प्रतापसिंह) की लड़ाई थी, परन्तु धूमघाट में देवों और यवनों का महासंग्राम था। जो अनेकों बार हुआ। देव-मंदिरों को ध्वस्त करने के शाही फरमानों को ओरछा में लागू करने आ रहीं यवनों की भयंकर टोलियों का इसी स्थल पर सर्वनाश हुआ। बुन्देली-हिन्दू सल्तनत को ख़त्म करने के लिए आये यवन सिपहसालार यहीं काल कवलित हुए थे। महाराजा छत्रसाल के देव राज्य को उखाड़ने के लिए यवन औरंगज़ेब द्वारा भेजी गई अनेक फौजें यहीं दफन हुई। यह घाटी युद्धों की रणभूमि है, सैंकड़ों युद्ध यहाँ लड़े गये। घाटी में युद्धों की धूम मची रही, फलतः यवनों को मौत के घाट उतारने वाली इस घाटी में मची धूम ने इसे धूमघाटी व धूमघाट नाम से प्रसिद्धि दिलायी। यह स्थल सिन्धु घाटी नदी की संकरी घाटियों के बीच है जो डबरा (ग्वालियर) स्टेशन के समीपस्थ है। ग्वालियर-झांसी के बीच स्थित यह स्थल झांसी से 50-55 कि.मी. उत्तर पश्चिम में है।

हिन्दूधर्म के रक्षार्थ धूमघाट की माटी ने, जो वीरों को प्रेरणा, उत्साह एवं दृढ़ संकल्प दिया है, वह आज भी यहाँ की पहाड़ियों के बीच रचा बसा है। महाराजा छत्रसाल के ऐतिहासिक पत्रों में इस पावन

भूमि धूमघाट का विवरण विद्यमान है। महाराजा छत्रसाल ने इस वीर भूमि को अनेक बार हर्षित किया है। धूमघाट और छत्रसाल एक दूसरे के

पूरक हैं। वि.सं. 1727 (1670 A.D.) में चमकी उनकी तलवार ने घूमघाट के कण-कण को युगप्रवर्तक-पुरुष के प्राकट्य का अनुभव कराया था।

छत्रसाल का पत्र: जगत्राज के नाम

आपर जब हमसे वा आलमगीर बादशाह से मन बिगरौ बादशाह को मन रहै के कौनऊ तरा से छत्रसाल से लड़ाई हौवे वा मारे जावैं, बादशाह ने हुकम दयौ कै जितने मंदिर हैं जिनको हिन्दू मानत हैं गिरवा दए जावैं और फिदाई खां सूबा को हुकम लड़बे कौ दयों कै जो काऊँ मंदिर ना गिरवायै ऊको पकरो वा लड़ो, सो बादसाह सै सिवाय हमारे और राजा को भिर सकत हतें हमने कह पठवाई कै जितने मंदिर सब जघा हैं वे ना गिरवाये जावैं फिदाई खां ने ना मानी और जैसी बनै (उसे) आई तैसी बात कह पठवाई कै हम छत्रसाल को का समझै, बनको भारी होवे तो आकर लड़ें हमें मंदिर खुदवा डालने हैं हम मऊ से चले, छयालीस हजार फौज वा सवार वा तोपें लेकर गुवालियर के येंगर (निकट) एक बड़ी भारी नदी है वहां (घूमघाट) फिदाई खां से लड़ाई भई, खूब हथियार भयी, सतरा हजार फौज मारी गई, और जीत हो गई, वा तोपे छुड़ालई ऊ भग कै बादसाह के पास गयो मंदिर गिरवावो हमने बंद करा दए, कुंवार सुदी....1787 मऊ।

छत्रसाल का पत्र: जगत्राज के नाम

आपर मुनउवर खां से लड़ाई भई, धूमघाट में डंका बजावत भए, फौज लड़....आयो, बड़ी तेजी से लड़ाई भई, आखिरकार मुग़ल पठानन के ऊपर हमने खूब हथयार करो, मार के भगादयौ, सहर के भीतर घुस आये किले वै गोला लगाय..... वहां हमने नवे लाख.....फिर गुवालियर को लूटो....वैशाखसुदी 8 सं. 1787 मु. महेबा

पं. प्रतापनारायणसिंह ने वीर बुन्देले भाग-2 (विजय ही विजय) पृ. 24-29 में फिदाई खां से धूमघाट में हुए युद्ध का वर्णन (जनशक्ति की राजशक्ति पर विजय) में लिखा है:- ....धूमघाट की संकरी घाटी में जन सेना ने मोर्चा लगाया। झांसी से लगभग 34 मील की दूरी पर यह स्थान था।....फिदाई खां की फ़ौज ने घाटी में प्रवेश किया।....युवकों का शौर्य और पराक्रम तो देखने ही लायक था।....मुग़लों की प्रशिक्षित सेना को उन्होंने अच्छी तरह से मज़ा चखा दिया था। मुहानों पर खड़ी मौत को देखकर शत्रु प्राण बचाकर पीछे अन्दर लौटता तो बंदूकों से निकली गोलियां उनके सीने से आर पार हो जातीं। वे धराशायी हो जाते।....गाँव-गाँव में घूम-घूमकर धर्म की रक्षा हेतु सन्नद्ध होने को प्राणनाथ प्रभु ने जो चेतना जगाई थी यह उसी का था,

सुपरिणाम।..... बुन्देलखण्ड की धरती का ये सौभाग्य ही था की छत्रसाल ऐसे ठीक समय पर दक्षिण से वहां पहुँच गये थे।.....उन्होंने स्वाराज्य अभियान का बिगुल बजा दिया।

वास्तव में धूमघाट की पावन रज, मस्तक पर धारण करने योग्य है। इसकी माटी में देश प्रेम की सुगंध रची बसी है। बलिदानी वीरों की हुँकार कण-कण में समाई है। विजयी वीरों की किलकारियां घाटी की माटी में एवं उन्नत शिखरों में समाहित है।

पावन धूमघाट की रज-कण की खुशबू सारे जगत् में बिखरे, तभी सभी की धूमघाट के प्रति श्रद्धाएं साकार होगी।

प वर्ग

(प) पन्ना1, पराइछे, पटना, पहाड़ी, पनवारी, पवई, पहाड़िया (गढ़ी), पाली, पिछोर, पेछा परगना (बेंदाश), पैलानी, पथरिया,पुरन्दर, पुरइनिगांव,पृथ्वीपुर, पंचनदा (पचनद)।

पहाड़ी:- राजापुर और चित्रकूट के बीच एक गांव, (राजापुर के जमुना तट से 9 मील दक्षिण में स्थित) महाराजा छत्रसाल ने यहाँ मोरादखां को परास्त किया और कालिंजर दुर्ग पर जाकर विजयध्वज फहराया था, तभी से यह गांव कालिंजर विजय का प्रवेश द्वार कहा जाता है।

पनवारी:- (परगना) राठ-महोबा मार्ग पर राठ से 18 कि.मी. दूर स्थित, महाभारत काल में यह पान्डुपुरी कहलाती थी। महाराजा छत्रसाल ने महाप्रभु प्राणनाथ जी को साथ में लेकर वि.सं. 1743 (1686 A.D.) में यहीं से होकर दिग्विजय यात्रा की थी।

पंचनद:- जमुना, चंबल, कुंवारी, पहूज, और सिंधु नदियों का क्षेत्र है। यह स्थल अजीतमल के दक्षिण में, जनपद औरेया, इटावा एवं जालौन की सीमा पर विद्यमान है।

जमुना नदी में उक्त चारों नदियों का संगम हुआ है, अतैव इस क्षेत्र को पंचनद कहा जाता है। पंचनद क्षेत्र का पंचनदा (संगम स्थल) उ.प्र. का पौराणिक स्थल है। महाराजा छत्रसाल और महाप्रभु प्राणनाथ के गुनगान करते सन्त-साधु, परमहंस व तपस्वी जन यहां विचरण करते रहते हैं। सिद्ध पुरुषों की भी यही स्थली कही गयी है। पंचनद संगम के उत्तर में श्री राजाजनमेजय की यज्ञस्थली के अवशेष अद्द्यावधि विद्ध्मान हैं।

---

1. **पन्ना** (पद्मावती पुरी) पौराणिक नाम, इस पावन नगरी की स्थापना क्षत्रिय कुल शिरोमणि महाराजा छत्रसाल के सद्गुरु निष्कलंक बुध कल्कि अवतार श्री प्राणनाथ प्रभु द्वारा वि.सं. 1740 1682 A.D. में नवरात्रि के शुभ मुहूर्त में हुई थी। श्री प्राणनाथ प्रभु की संसद श्री गुम्मट जी का यह प्रथम निर्माण हुआ। इसी पावन संसद में संवत्

1740 को महाराजा छत्रसाल जी की 34 वी वर्षगांठ पर उनका राजतिलक महाराजा बुन्देलखण्ड पति के रुप में श्री प्राणनाथ प्रभु द्वारा किया गया था। सभी से पन्ना महाराजा छत्रसाल की राजधानी बनी। यही विराट ब्रह्मांड का मुक्ति पीठ स्थल है। इस नगरी के अनेकों नाम हैं यथा:- परना नगरी, श्री प्राणनाथ नगरी, हीरो की नगरी, मंदिरों की नगरी, फूलों की नगरी, झीलों की नगरी, पत्थरों की नगरी, घाटियों की नगरी, झरनों की नगरी आदि।

(फ) फतैपुर:- महाराजा छत्रसाल ने जसौंधी पर फतह करने के उपरान्त इस कस्बे को अपने अधीनस्थ किया था और थाना बैठाया था।

(ब) बनहुली, बडागांव जागीर, बड़ोंनी, बरुआसागर, बरहरा, बछ्लन सरेही, बंधरौना, वासा। बिरसिंघपुर, विंध्यवासिनी देवी।

बानपुर-: यहाँ के बुन्देली राजा अरिमर्दनसिंह का स्वतंत्रता आन्दोलन में नाम है।

बांदा:- झांसी-मानिकपुर रेलमार्ग पर झांसी से लगभग 193 कि.मी. दूर पूर्वोत्तर में स्थित एक नगर।

बिजौरी:- बिजौरी में अपने बड़े भाई रतनशाह से छत्रसाल जी ने कहा था–

दौर देस दिल्ली के जारौ, तमकि तेग तुरकन पर धारौ।

हम सेवा करि है अनुरागे, लड़ि हैं उमगि तिहारे आगो। (छत्रप्रकाश में)

बनहुली:- (परगना) बेतवा के तट पर स्थित एरच के समीपस्थ का एक कस्बा, जो पूर्व में एक परगना था। यह क्षेत्र सामरिक स्थल के रूप में महत्वपूर्ण रहा है।

बरुआ सागर:- झांसी जिले से 18 कि.मी. दूर, इसे बुन्देलखण्ड का शिमला होने का गौरव प्राप्त है। यहां की नैसर्गिक छटा अति रमणीय व मनोहारी है।

बासा:- सागर से 16 मील दक्षिण पश्चिम में स्थित एक जागीर, संवत् 1732 में महाराजा छत्रसाल ने यहां के जागीरदार केशवराज दागी को द्वंध युद्ध में मौत के घाट उतारकर उसके बड़े पुत्र विक्रमाजीत को जागीरदार बनाया था जो आजीवन उनका विश्वासी सेनापति रहा।

विरसिंघपुर :- (परगना) सतना में जैतवारा स्टेशन से 9 मील पूर्व में बसा कस्बा। महाराजा छत्रसाल ने यहां अनेकों स्थलों का जीर्णोद्धार कराया था।

विंध्यवासिनी देवी :- (मिर्जापुर जनपद में), बुन्देलों की आरायध्य देवी। बुन्देल वंश के जनक राजा पंचम ने इसी देवी के वरदान से खोया राज्य पाया।

(भ) भूरागढ़, भरोसा (परगना)

भदरबाड़ा :- यह झांसी-नौगंवा मार्ग पर मऊरानीपुर से पूर्व की ओर 20 कि.मी. दूर स्थित है।

भांडेर :- चिरगांव और दतिया के मध्य स्थित नगरी, जो चिरगांव से पश्चिम में 21 कि.मी. दूर पहुज नदी के पश्चिमी तट पर बसी एक पौराणिक नगरी है। महाराज चम्पतराय की ये जागीर रही थी, महाराजा छत्रसाल का थोड़ा बचपन यहाँ भी बीता है। यह प्राचीन मंदिरों की नगरी है, पहाड़ियों से तीन ओर से घिरी है। यहाँ पर

सोन तलैया तथा परमहंस स्वामी युगलदास की तपो भूमि (श्री कृष्ण प्रणामी: निजानन्द-सम्प्रदाय की धामी बगिया: श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर) प्रसिद्ध है जिसमें उनकी चमत्कारपूर्ण समाधि भी है, वर्तमान में महन्त श्री 108 श्री गोपालदास महाराज परमज्ञानी विराजमान हैं। झाँसी की महारानी लक्ष्मी बाई के सद्गुरु परमहंस युगालदास जी थे, अतैव उनका आना-जाना यहां कालपी आते जाते समय होता था। 3 अप्रैल 1858 ई. को यहीं अंग्रेजों के सेनापति वाकर को रानी लक्ष्मी बाई ने घायल करके हराया था। उस समय बानपुर के राजा बुन्देला अरिमर्दनसिंह साथ में थे।

भूरागढ़:- महाराजा छत्रसाल के पौत्र गुमानसिंह ने 18वीं शताब्दी में इसका निर्माण कराया था। यहां की एक किवदंती के अनुसार-इस किले में अत्याधिक धन गढ़ा है।

(म), मऊ, मलदुआगांव, महौनी, मनियागढ़, मुंगावली, मंगलगढ़, महेवा, मडौनी, महराजपुर, मैहर, महोबा, महोन, मऊरानीपुर, मुगई (मुगावली परगना), मौदहा, मोरनगांव, मोटी गांव।

मसनेह :- झांसी जिले में गुरसराय के पास का एक गांव, यही महाराजा छत्रसाल का ममाना था।
मऊरानीपुर (परगना)**:-** झांसी से पूर्व में 65 किलोमीटर दूरी पर सुखनई नदी के पास बसा एक नगर, इसका प्राचीन नाम मधुपुरी है।

मऊ :- यहां निष्कलंक बुद्ध कल्कि अवतार महाप्रभु प्राणनाथ जी एवं महाराजा छत्रसाल का प्रथम मिलन संवत् 1739 (माघपूर्णिमा) को तिदुनी दरवाजे पर हुआ था। यह स्थल छत्रप्रकाश से उत्तर में 18 कि.मी. दूर है।

महेवा:- महेवा तीन है।

(i) **नूना महिवा:-** ओरछा नरेश महाराजा रूद्रप्रताप ने संवत् 1588 में अपने पुत्र राव उदयाजीत को महेवा (नुना) की जागीर दी थी। इनके प्रपौत्र चम्पतराय को संवत् 1685 में यहां बैठक मिली थी। महाराजा चम्पतराय के सुपुत्र छत्रसाल का जन्म नुना महेवा की ककर कंचनहार की पहाड़ी पर ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया: 1706 सोमवार (26 मई संन् 1649 ई।) को गोधूलि बेला में हुआ था। यह स्थान टीकमगढ़ जिले के परगना जतारा में स्थित है।

(ii) मऊ महेवा:- महाराजा चम्पतराय ने दूसरे महेवा की जो स्थापना की थी वह धुबेला ताल के सन्निकट बसा महेवा है, जिसे आजकल मऊ महेवा के नाम से जाना जाता है। चम्पतराय की समस्त गतिविधियां उनके उत्तरार्ध जीवन में यहीं घटीं। यह मऊ महेवा आजकल छत्रप्रकाश (म.प्र.) जिले में है। महाराजा छत्रसाल ने प्रारंभ

में अपनी सारी सैन्य गतिविधि इसी मऊ छेत्र (मऊ- सहानियां, मऊमहेवा, मऊ मुकरवा आदि) में की थी।

(iii) पन्ना महेवा:- पन्ना राजधानी के नजदीक भी एक महेवा गांव है, महाराजा छत्रसाल से संबंधित अनेक किवदंत्तियां यहां प्रचलित हैं।

महोबा:- (आल्हा ऊदल की नगरी), कानपुर सागर-मार्ग पर हमीरपुर से 85 किलोमीटर दूर दक्षिण की एक ऐतिहासिक नगरी।... आल्हा उदल को बसाओ आय, बनकी जाघा आया महोवे मैं रहत रहे हें, कबहूं नगर में आनकर रहत रहे हें, आ जाघा पै धन बहुत है, बघेलन सै हमनै ऊ परगनै फतै करै हैं, वहां तिहत्तर लाख कौ धन हमें मिलो हतो, वा हथियार मिले हते, ऊदर के घोड़े की करवारी सोने की मिली हती है मारे पास अबै है,....-- छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम (वैशाख वदि 12 सं. 1786 मु. मऊ)

मलदुआ गाँव:- मंगलगढ़ के पूरब में स्थित एक छोटा-सा गांव, यहां की धरती से चंदेलकालीन बहत्तर करोड़ रजत और नौ लाख की स्वर्ण मुद्राएं महाराज कुं. जगतराज को गढ़ी हुई मिलीं थीं। इस गढ़े खजाने का रहस्य निम्न पहेली से खुला था।

ऊखर पूखर डीलन नाम, गुढ़ा पुन औ कुड़वारी।

मारहि ताहि मिलै नवलक्ष, बहत्तर कोटि गढ़ा भुवधारी॥

महौनी:- वि.सं. 1128 (1071 A.D.) में काशी नरेश वीरभद्र के पौत्र वीर का यहां राज्याभिषेक हुआ था। कालपी और कालिंजर भूभाग पर राजा वीर ने अधिकार करके सुदृढ़ बुन्देली राज्य स्थापित किया था।

मऊ-सहानियां:- छत्रप्रकाश के उत्तर में 11 मील दूर स्थित एक पूर्व कालीन छावनी नगर। वि.सं. 1728 (1671 A.D.) में इस नगर के आसपास के भूभाग को कई छोटी-बड़ी लड़ाइयों में जीतकर कुमार छत्रसाल ने 22 वर्ष की उम्र में यहां सर्वप्रथम आधिपत्य जमा कर स्वतंत्र बुन्देलखण्ड की नींव डाली थी। इसके आसपास का वृहद भूभाग मऊ क्षेत्र कहलाता है। मऊ-महेवा इसके अति समीपस्थ हैं।

मौदहा:- हमीरपुर से दक्षिण की ओर लगभग 50 कि.मी. दूर स्थित एक कस्बा। यहीं पर अनेकों युद्ध हुए हैं, महाराजा छत्रसाल ने दिलेर खां का यही वध किया था।

मोरनगांव:- मालवा राज्य के सहरा रियासत के नजदीक का एक गांव। इसी गांव के निकट चम्पतराय और रानी सारंधा ने धंधेरों के विश्वासघात से 6 नवंबर 1661 को वीरगति पायी थी। कुमार छत्रसाल इस समय साढ़े बारह वर्ष के थे।

मोटी:- मऊ महेवा के पास चार कि.मी. दूर छोटी सी पहाड़ी पर बसा एक गांव, यही संवत् 1644 में चम्पतराय का जन्म हुआ था। चम्पतराय ओरछा नरेश रूद्रप्रताप

के तीसरे पुत्र उदयाजीत के प्रपौत्र थे।

मंगलगढ़:- हमीरपुर-महोबा के मध्य चरखारी के पास स्थित। महाराजा पुत्र कुं. जगतराज की आवास स्थली; यहां का किला महाराजा छत्रसाल ने जीतकर कुं. जगतराज को संन्द कर दिया था, यहां का किला कालांतर में चरखारी किले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मंगलगढ़ में महाराजा जगतराज को गढ़ा धन मिला था-जिसमें बहत्तर करोड़ रजत और नव लाख स्वर्ण मुद्राएं थीं। प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य और प्रकाण्ड पंडित पुहुपशाह द्वारा जब इसकी सूचना महाराजा छत्रसाल जी को मिली थी, तब उन्होंने कुँवर जगतराज के अहं को फटकारते हुए कहा था--

धिक् धन मृतक ऊखारन हारे, बार-बार कहि भूप छतारे।

जो नर कोय मरा धन लेहि- लहे नहीं श्रेय सुलोक मझारी।

(जगतराज दिग्विजय)

महाराजा छत्रसाल ने स्वरचित कवित्त से अपने पुत्र कुँ जगतराज को आत्मबोध* दिया था एवं अपने सिद्धांतों का दिर्गदर्शन कराया था। यथा:---

जाहिं-भोगि भोगी होत, जन्म प्रति रोगी होत,

कुटुंब-वियोगी औ, अयोगी होत जानि के

जगत दिमान जू को पलटो प्रवीन लिख्यौ,

भूप छत्रसाल जू नैं, धर्म नीति छानि कै॥

ऐसे धन ख्वारी करै, जुबारी और लवारी करै।

चोर व्यभिचारी करै, त्यागौ याहिं मानि कै।

जो पै या कुबुद्धि हूँ सों, कुछ सिद्धि होय जाय,

फेरी न कुबुद्धि कीजै, याही उर आनि कै॥

(छत्रसाल-काव्यांजलि पृ. 42-43)

यरल

(र) राजगढ़, राजापुर, राठर, रामनगर3, रिऊआ, रीवा4, रेनवई एवं रामपुर,

---

1. **राजापुर:-** बांदा से उत्तर पूर्व में लगभग 38 किलोमीटर दूर यमुना तट पर बसा गांव जो गोस्वामी तुलसीदास की जन्म भूमि बताई जाती है। महाराजा छत्रसाल का आगमन यहां हुआ था।

राठ:- हमीरपुर से दक्षिण पश्चिम में 81 किलोमीटर की दूरी पर स्थित उत्तर भारत के पनवारी बिल रावा मार्ग पर बनवारी के निकट स्थित एक महाभारत कालीन नगरी इसे विराट नगरी कहा जाता है ऐसी मान्यताएं यहां के जनमानस की है। छत्रसाल कालीन समय में मुग़ल सेना इसी क्षेत्र में शिविर लगाकर महाराजा छत्रसाल के प्रमुख सैन्य शिविर मऊ सहानिया पर आक्रमण की योजना बनाती थी। बीसवीं शताब्दी में यह नगर स्वामी ब्रह्मानंद जी की कर्म भूमि एवं तपोस्थली रहा है। वि.सं. 1743 1686 मैं महाप्रभु प्राणनाथ जी महाराजा छत्रसाल की दिग्विजय विजय यात्रा में यहां पधारे थे। गड़ा धन अपने ऐश्वर्या के लिए उपयोग न करने के लिए आदेश दिया था। उसमें बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

रतनगढ़:- यह गांव कनेरा के शहीदों की जागीर में था। यहां की जागीर जहां को महाराजा छत्रसाल जूदेव ने दी थी।

राजगढ़:- पन्ना से 14 मील दूर पश्चिम में स्थित एक नगर। बहलोल खां 1737 अक्टूबर 1680 मैं इसे आ गिरा था नकली छत्रसाल किले के अंदर से और असली छत्रसाल किले के बाहर से बहलोल खां की सेना पर धावे बोल रहे थे। बेचारा बहलोल खां मौत के घाट उतार दिया गया था।

(ल) ललितपुर झांसी से 84 किलोमीटर दक्षिण में स्थित एक नगर।

लखना ली महाराजा छत्रसाल ने लख नाली में अपना थाना स्थापित किया था।

वीर गढ़ कालिंजर का दुर्ग जीतने के बाद महाराजा छत्रसाल ने वीर गढ़ की घाटी में ठहर कर इस क्षेत्र की समूची मुग़ल सेना मार भगाई थी।

(स) सहरा (सहारा) शहडोल सागर सावर चल हट के जंगल सिवनी सिरोंज सीताबाड़ी शिंदे चंदन परगना तितली सुहावल सोनगरा से उरई सौहारापुर शाहगढ़ और शादीपुर।

सालहट के जंगल:- तृतीय बंगश युद्ध (संवत् 1783-84) में कुंवर जगतराज ने साला हटके जंगल में मोर्चा लगाकर हाथी खां को भयंकर मार दी थी। अतैवयह भूमि भी पावन बन गई।

सागर:- बुन्देलखण्ड का दक्षिणी शहर, यहां मुगलों को रौंदकर खाली को पराजित कर महाराजा छत्रसाल ने अपना विजय ध्वज फहराया था।

सावर:- पश्चिमी बुन्देलखण्ड का वह ग्राम, जहां छत्रसाल ने दूल्हा वेश में मुग़ल सेनापति तहब्बर खां को भयानक मार देकर रौंदा था बेचारा किसी तरह बचकर ग्वालियर जाकर छिपा था।

दूल्हे ने मंडप गमन किया तवर ने नगर को आ घेरा।

दुलहिन की माला पहन वीर रणमरू को आ घेरा॥

निजी सिर पर हाथ रखे भागी तह तहब्बर खां बची कुची सेना॥

विजयी छत्ता सावर पहुंचे जनलोक बिछाए थे नैना॥

वीर भक्त चम्पत छात्र पृष्ठ 198

सिरोंज:- मालवा का एक अति समृद्धि शाली नगर महाराजा छत्रसाल ने यहां

---

2. **रामनगर:-** जमुना नदी के तट पर बांदा जिले के निकट बसा एक गांव है इसी के निकट रचन रायसेन महाराजा छत्रसाल कोटेश्वर खाके संवत् 1735 में भयंकर मुठभेड़ हुई थी।
3. **रीवा:-** महाराजा छत्रसाल के युवराज कुंवर हृदयशाह ने मझली मां से रुष्ट होकर रीवा पर विजय प्राप्त की थी। बुन्देली दरवाजा इस विजय का विजय स्तंभ अब भी विद्यमान है। महाराजा छत्रसाल के कहने पर वह रीवा राज्य वापस करके परना (पन्ना) लौट आए थे।

मुहम्मद खां और मु. आसिम को परास्त कर अधिकार किया था।

सीताबाड़ी-- मोरंग गांव के निकट का एक गांव वीरगति होने के पूर्व ही यहां के पुजारी को कुछ द्रव्य देकर चम्पतराय और रानी सारंधा ने गुप्त रूप से रहने की व्यवस्था बनाई थी।

सुहावल राठ महोबा मार्ग पर कुलपहाड़ से पश्चिम की ओर 3 किलोमीटर की दूरी पर यह गांव स्थित है। इसी गांव में नोनी अर्जुनसिंह चरखारी के सेनापति का संवत् अट्ठारह सौ में जन्म हुआ था। इनकी बहादुरी की एक लोकोक्ति निम्न प्रकार है--

नो से सपेरा के एक के अनी छोड़ गए बेनी अट्ठारह फनी।

(श) शाहगढ़ महाराजा छत्रसाल को धर्म कर्म से अपना आदर्श मानने वाले प्रथम स्वतंत्रता के संग्राम के महा सेनानी राजा वक्त बली जू देव इसी नगर के राजा थे। इन का राज दरबार प्रणामी संतोष से सुशोभित हुआ करता था।

ह हमीरपुर बुन्देलखण्ड का नूतन प्रवेश द्वार तथा प्रमुख ऐतिहासिक स्थल जो कानपुर सागर राजमार्ग पर यमुना और बेतवा के संगम तट पर स्थित है। दो विशाल नदियों का संगम होने के कारण यह पौराणिक स्थान भी माना जाता है।

हनुटेक वह नगरी जिस के निकट महाराज छत्रसाल का रूमी सेना से भयंकर युद्ध हुआ था। इस युद्ध में परिहारो की सेना ने बढ़ चढ़कर भाग लिया था। भूमि सेना तहस-नहस हुई थी और वह जान बचाकर भागा था।

जबसिंह गर्जना बुन्देली कल्याण शाह परिहारो की।

नहीं बचा एक दिन ढलते, रूद्र क्रुद्ध माला।

विजय 1 सत्र साल आए तब हनु टेक शुभ नगरी में॥

(वीर चम्पत भक्त छत्र पृष्ठ 156)

द्वितीय खण्ड

तत्कालीन समय में लिखे गए पत्रों से महाराजा छत्रसाल जी की गतिविधियों पर व्यापक प्रकाश पड़ता है। गांव कस्बे और नगर आदि का प्रमाणिक उल्लेख इन में विद्यमान है। बुन्देलखण्ड की अचल धरोहर के द्वितीय खण्ड में इन पत्रों को अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

---

*इस घटना से स्पष्ट होता है की महाराजा छत्रसाल के पास तोपों का विशाल भंडार था। विभिन्न जागीरो को प्रचुर मात्रा में तो पे हिस्से में मिली हुई थी।

1. छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम (इतिहास संबंधी चर्चा)

.... जो अमुआ पर गन्ने में 84 हैं मौजों ककरेड़ी को नगर कहावत दाग में है 4 कोस मैं येक जगह बनी है वाह क्या हुआ है वन वन में साइन करें डरी हैं डरी हैं शो गांव की को बसा वो आए को राहत रहे हैं? जो पर अग्नि बचपन से ही है चंदेली राज आए आल्हा उदल को बसायो आए महोबे में

राहत रहे हैं कब हों नगर में ऑन कर रहत रहे हैं आज आगा पर धन बहुत है बघेल अन से हमने ऊपर अगर नहीं पता करे हैं उदर घोड़े की सवारी सोने की मिली हती हमारे पास अबे है वाह हत्यार हैं वैशाख बदी 12 संवत् 1786 मुकाम मऊ

2. छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम (इतिहास संबंधी चर्चा)

...कै जो **विरसिंघपुर** में महादेव डोमूनाथ है....ताकौ वासदेव चन्देल ने बनवायौ संवत् चउदा सै बीस (1420) के साल के ऊपर और वनही ने तालाब वनवायो है, वा महादेव पधारे नहीं गये, धरती से महादेव निकरै हैं, राजा वीरभद्र के बखत में महादेव कड़े हैं..... फिर बघेलन से ऊ परगनो रही अपनी जपती करी और तला को घाट हमारी बनवायौ आए, दिवाले के आगे को दहलान हमारी बनवाई आए,--- कुंवार सुदि 9 सं. 1788 मु. मऊ.

3. छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम (विद्रोह-काल के प्रारम्भिक अनुभव)

.....आपर औरगंज़ेब बादशाह से संवत् 1728 की साल में लड़ाई, **मऊ** से चले **ओरछे** को गए वहां राजा सुजानसिंह से लड़ाई की सलाह करी, फिर बलदाऊ के पास **बगदा** गए, वन से सलाह लई, वे हमारे संग में भए और अच्छे सूरबीर ठाकुर हमारे संग में हते. फिर रतनसाह के येंगर **बिजौली** गए रही, रतनसाह ना आए हमें सपनो आयौ कै तुम लडों तुमारी फतै है **(औंडेर)** हम गए खां से हमसे भेंट भई और कही कै हम तुम्हारे संग चलहैं...बड़ी लड़ाई भई, मुग़ल सब हार गए बादसाह के यहां जाहर भई छत्रसाल ने फते पाई.... (अपूर्ण---...)

4. **छत्रसाल का पत्र : जगतराज के नाम**

.....आपर हमने बादशाह से फते पाई वा मुग़लन को मारो, हमारी और मन बढ़ई भई,**(सेउरई को)** हम गए, वहां खूब गाँव लूटे व जैत पटेल बड़ी नामी हतो ऊको पकर लयो, फिर वहां **पथरिया** लूटी, **लखनाली** लूटी और गांव लूटत...मऊ को जात हते, सो **खालिक धामौनी** फौज लेके आ गयो, हमने उसे लड़ाई करी, **धामौनी फतै** करी वा अपनो थानो जमायो फिर **(चंदरापुर)** को गए, वहां केऊ लाख को धन पायो, थानो बैठारो, **मैहर** में थाना जमाओ, चार पांच लाख को धन लयो, मऊ को चले आए---फागुन बदि 30 सं. 1787 मऊ---

5. **छत्रसाल का पत्र : जगतराज के नाम**

... आपर मुनऊवर खां से लड़ाई भई, धूमघाट में बजावत भए,...मार के भगादयो, सहर के भीतर घुस आये किले पै गोला लगाय...वहां हमने नवे लाख.....**गुवालियर** को लूटो, वहां बहुत

सा धन मिलो, वा जवाहिर बहुत मिलो, फिर....**पथरिया** को लूटो हटा **दमोह** इन सब लूटो (बैशाख सुदी 8 संवत् 1788 मुकाम महेवा)

6. **छत्रसाल का पत्र : जगतराज के नाम**

मुनउवर खां व बहादुर खां ने जहांगीर (औरंगज़ेब से अभिप्राय) बादशाह को खबर दई कै छत्रसाल बड़े चुपचीर कर रहै है, जहां जात है, सूबा वा राजन को बड़ी हैरान करै है...जहां देखौ तहां छत्रसाल की फौज फिरत है, वा खुवा लेत फिरत हैं, हम **कोटरा** में हते... बादसाह ने रनदूलह को पठवायो व बहुत से सूबा वा राजन की फौज जोर कै...पनचानबे हजार से कम फौज नाइ रहै, तोपें बगैरा बहुत हती...वहां हमारी बनकी लड़ाई भई, रनदूला हार के भाग गयो वा फौज भागी, फिर अपनी जीत को डंका बजाओ, **कोटरा** जपत करो, फिर वहां से चले **रतनगढ़** को लूटो, वहां से **धामौनी** को गए, वहां की फतै करी, फिर **जतहारा**... बहुत से गांव लूटे व **धानेज मौ** व फिर **महेवा** चले आये----(वैशाख सुदि 11 संवत् 1787 मु. महेवा)

7. **छत्रसाल का पत्र : जगतराज के नाम**

...आपर तुहब्बर खां से लड़ाई भई, बादशाह ने उनको पठवाबो (रामनगर ?) मैं लड़ाई भई, वन के साथ बहुत फौज हती, आखरस मैं वन को मार के भगादयो, फिर तिसरी बखत धामौनी लड़बे को गए, वहां फते को डंका बजावो, फिर कालिंजर के फते करत **वीरगड** को आए, वते (इतने) में घाटी को बड़ो बंदोबस्त करे हते के कड़न न पावे हम ना माने, लड़ाई करन लगे। घाटी के ऊपर लड़ाई भई, वन से फतै करके चले आए, पटना जारो व अपनो दखल करो, तुहवरखां की सुनी कै लड़ने को आवत है...हमारी फतै भई, वहां से चलकै **सागर** की फतह करी वा **एरच** बहुत से **बड़े बड़े सहर** हमने दखल में करे, **बहुत थाने** बैठारे, ई लड़ाई में बहुत धन मिलो, **वा जलालपुर** में पैंतीस लाख को धन मिलो वा तैंतीस लाख की जाघा की फतै करी फिर हम मऊ को चले आए, (जेठ बदि 7 संवत् 1787 मु. महेवा)

8. **छत्रसाल का पत्र : जगतराज के नाम**

....आपर मऊ से हम लड़ाई कर बे को चले, एक किरोर की जाघा हमारी हो गई, कछु और हो जाती तो अच्छी हती...फौज ऊके (मिर्जासदरूद्दीन) पास जमा भई, एक लाख के भीतर फौज ऊके रहै, मिराज,...(चौथ ?) मंजूर ना करी...भियंकर लड़ाई भई, फौज ऊकी भागी....मिरजा के फौज को मारो, बा बड़े बड़े सूरवीर मिरजा के मारे हमारे

घाव आए रही मिरजा की हार भई... चौथ* लैके छोड़ दयो, कूच के नगारे बजावत गांव लूटत अपनो दखल करत **चित्रकूट** को आए, **नरसिंह गढ़**, पहला तोड़ा लियो हटो, जब हमने डेरा करो

हतो, फिर **एरच** टोरो वा **कालपी** टोरी, कोटरा को आये, वहां लतीफ़ से भयंकर लड़ाई भई, लतीफ मारो गओ, फिर पचीस तीस गांव के मवासी से युद्ध**, मवासी सब हारे...मवासी को लेकर मऊ को आए...----आषाढ़ सुदि 12 संवत् 1708 मु. मऊ---

9. **छत्रसाल का पत्र : जगतराज के नाम**

...आपर जसौंधी के जसौंधीया बड़े, जबरदस्त हते, सो बनसे...**पुरईनिगांव** वारन से बड़ी लड़ाई भई, सब हार गये...हमने अपना कबजा करो, **फतैपुर उदयपुर** की फतै करी, सरीप्रद से लड़ाई भई,लोहागढ़ को टोरौ....सहडोल की फतै करी, थाने **जयपुरी** लड़ाई में पांच सै गांव की फतै करी...

10. **छत्रसाल का पत्र : जगतराज के नाम**

...आपर अब्दुल समद से लड़ाई भई...अब्दुल समद को मार के भगादयो...**भीलसा** में आग लगाई व लूट लयो...बहलोद खां को मूड़ काट लयो...कुटरो जपत करो जसो सुहावल में अपनो कब्जो करौ व मोघा लूटो...---कुटरो जपत करो जसो सुहावल में अपनो कब्जो करौ व मोधा लूटो...---आषाढ़ बदि 10 संवत् 1788 मु. मऊ

उपसंहार

सामान्यतया बुन्देलखण्ड को निम्न लोकोक्ति के माध्यम से सुगमता पूर्वक हृदयम किया जा सकता है

इसजमुना उत्तर नर्मदा इत चंबल टोन।

छत्रसाल सोलंकी रही न काहू हो॥

ऐसे विस्तृत बुन्देलखण्ड में लाखों गांव हजारों कस्बे एवं सैकड़ों नगर विद्यमान है। विंध्यांचल पर्वतमाला की यत्र तत्र सर्वत्र बिक्री व 1 अप्रैल से करें बुन्देलखण्ड की विजय पताका आए हैं। कल-कल करती नदियां और झरने प्रेरणा के अविरल प्रोत हैं खेतों में पहाड़ों पर उपजे अवैध वृक्ष जनमानस की आजीविका के साधन हैं। हीरो की खाने एवं पत्थरों के भंडार यहां की विपुल संप्रदाय हैं।

उत्तर एवं दक्षिण मैं क्रमशः यमुना एवं नर्मदा नदी से गिरे बुन्देलखण्ड भूभाग को

चौथ:- महाराजा छत्रसाल ने कुंवर जगतराज को चौथ की जानकारी निम्न प्रकार दी थी जा समझी के चौथ का कहावत है ता को जितने के माल की रियासत हुए उमा के 14 वां हिस्सा हम लेट खाते जहां लोग हो सके कहां लो। आधुनिक काल में इसका अर्थ है---दण्ड (टैक्स)।

**ये लड़ाई संवत् 1733 में हुई।

कालपी-भोपाल राजमार्ग (लखनऊ भोपाल रेलमार्ग) एवं केन नदी क्रमशः पूर्वी, मध्य एवं पश्चिमी तीन भागों को विभक्त करती है।

केन नदी का वर्णन पुराण संहिता से भी आया है यथा:---

पद्मावती केन सरदे, विंध्यपृष्ठे विराजिता।

इन्दिरा नाम सा देवी, भविष्यति कलौयुगे॥

अर्थात के नदी के पूर्व में विंध्याचल पर्वत की मालाओं के ऊपर पद्मावती नाम की एक दिव्य पूरी स्थापित होगी जहां पर आने वाले कलियुग में इंदिरा* नाम की धर्मात्मा (देवी) का प्राकट्य होगा।

पद्मावती पुरी का वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराण में भी आया है। यथा:--

प्रजाश्चाब्रह्मभूयिष्ठा: स्थापयिष्यति दुर्मति:।

वीर्यवान् क्षत्रमुत्साद्य पद्मवत्यां स वै पुरि।

अनुगङ्गमाप्रयागं गुप्तां भोक्ष्यति मेदिनीम् ॥ 12/1/37॥

अर्थात अवतरित चंद आधार छत्रसाल नामक वीर्य वनराजा दुरमति शुद्ध मानसिकता वाले राजाओं को उखाड़ फेंके गा तथा ब्राह्मण क्षत्रिय व धर्म निष्ठा प्रजा की रक्षा करेगा और वह पद्मावती पुरी को राजधानी बनाकर नर्मदा से लेकर यमुना प्रयाग पर्यंत सुरक्षित पृथ्वी बुन्देलखण्ड का राज्य भागेगा।

इस पावन बुन्देलखण्ड एवं महाराजा छत्रसाल के संबंध में तत्कालीन समय में अवतरित महान दिव्य अपौरुषेय ग्रंथ श्री मुखवाणी-तारतम सागर में उल्लेख आया है यथा:--

तिन अच्छी से ठौर अच्छी, जाय कहिए हिन्दुस्तान1।

जहां मेहेदी-महंमद2 आय के, जाहेर किया फुरमान3॥5॥

(संन्न्ध प्र.13)

इन महंमद4 के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान।

छत्रसाल5 तिन ऊपर, तन मन धन कुरवान॥19॥ (किरन्तन प्र. 118)

जिस प्रकार से अवध में श्री राम लक्ष्मण ब्रज में श्री कृष्ण बलराम का महत्व में है उसी प्रकार से बुन्देलखण्ड में श्री प्राणनाथ कल की छत्रसाल का महत्व में है।

निष्कलंक प्रभु कल्कि अवतार श्री प्राणनाथ जी का दिव्य कलेवर इंदिरा नामक इसी भ्रम आत्मा पर था।

1. बुन्देलखण्ड
2. अक्षरा अतीत परब्रह्म श्री प्राणनाथ जी
3. ब्रह्मविद्या राज विद्या ब्रह्म ज्ञान
4. महाराजा छत्रसाल के सद्गुरु महाप्रभु प्राणनाथ जी
5. बुन्देल पति छत्रसाल महाराजा
6. जगदा धार अवतार

अतैव बुन्देलखण्ड का नाम जीवा पर आते ही महाराजा छत्रसाल का नाम अनायास ही मस्तिष्क में घूम जाता है। वस्तुत है बुन्देलखण्ड भूमि के कण-कण में महाराज छत्रसाल व्याप्त है तभी तो प्रातः जागने पर यहां के निवासियों के मुख से **छत्रसाल महाबली करियो भली भली** का मंत्र प्रस्फुटित होता है।

बुन्देलखण्ड का धरातल विविधता पूर्ण है कहीं समतल कहीं उबड़ खाबड़ और कहीं तो शैल शिखरों से आच्छादित है। भारत माता का यह वक्त स्थल समूची दुनिया के वैभव समेटे हुए हैं पुलिस यहां शैल शिखरों के मध्य नीति और समतल श्यामल वह गौरांग धरा है जिस पर मनोहारी जिले एवं सरोवर हैं। यहां की पहाड़ियां कोमल व कठोर पत्थरों का भंडार होने के कारण दुर्गों के लो महलों घरों के निर्माण में सहायक हैं। इस भूमि का नैसर्गिक सौंदर्य सभी को लुभा रहा है इसी कारण से यहां पर्यटन केंद्र सुंदर मंदिर राज महल व किले दर्शनार्थियों को आकर्षित करते हैं। त्यागी तपस्वी वसंत जनों को भी इसी भूमि ने बहुत आकर्षित किया है। इस भूमि में ज्ञानी विज्ञानी दानवीर रणवीर रणबांकुरे एवं मातृभूमि की सेवा में निछावर होने वाले अनगिनत पुरुष पैदा हुए हैं। जिससे बुन्देलखण्ड भूमि का माथा सदैव गौरव गरिमा से महामंडल रहा है।

अस्तु वंदनीय है बुन्देलखण्ड और वंदनीय हैं महाराजा छत्रसाल।

(i) चम्मत भूप्तेस्सूनं,विजयीध्वजधारिणम। सुसौम्य कालजयी महासुबल विक्रमम॥

अश्वारूढ़ महतनूं शत्रु सैन्यविदारिणम। जगदाधारं बुन्देलसिंह (तं) छत्रसालं नमाम्यहम॥

(ii) सकुंडल शोभा दई, प्रगट भई पहिचान।

छत्रसाल छत्ता हुआ, छिपे सबे सुलतान॥

श्री राजीव परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल

(2)

बुन्देलवंश परिचय

विराट ब्राह्मण का उद्‌भव भगवान अक्षर ब्रह्म की क्रीड़ा भावना का कारण है। ब्रह्मांड संसार में मनु एवं शतरूपा से संसार सृष्टि की अभिवृद्‌धि हुई है जिसमें सूर्यवंश का विशेष योगदान है सूर्यवंशी क्षत्रिय से बुन्देलवंश उदित हुआ है जिनकी बुन्देल भूभाग पर यशस्वी पताका फ्राई है। बुन्देलवंश के परिचय हेतु प्रस्तुत अनुभाग एक प्रयास है।

श्री राज परमात्मने नमः

2

बुन्देलवंश परिचय

प्रस्तावना

सृष्टि रचना का क्रम अनंत काल से चला आ रहा है जिसके उदय और ले दो पहलू हैं। पर ब्रह्म सच्चिदानंद अनंत और अद्वैत स्वरूप हैं जबकि जगत असद जल दुख सीमित और द्वैत रूप हैं। परब्रह्म परमात्मा की लीलाएं मनुष्य बुद्धि से अतीत होती हैं परंतु मानव सृष्टि जगत की अमूल्य एवं अनुपम नदी है। मानव उस पर ब्रह्म परमात्मा की खोज में आरंभ काल से ही है।

भक्तजनों उत्तम जीवन की पुकार परमात्मा तक पहुंचते हैं। परब्रह्म लीलाओं का रसपान कर भक्त हृदय परमानंद में मगन हो जाता है परमात्मा के ऐसे भक्तों का सानिध्य जिस किसी को मिल जाता है वह लौकिक और पारलौकिक आनंद को प्राप्त कर लेता है।

गीता सद ग्रंथ में श्रीकृष्ण ने संसार में दो पुरुष बताए हैं एक नाशवान सर पुरुष दूसरा अविनाशी अक्षर तथा नित्य अखण्ड अविनाशी उत्तम पुरुष पुरुषोत्तम अक्षरा अतीत परब्रह्म इनसे अन्य कहा है। अक्षरा टी परब्रह्म परमात्मा ने अपने अनुभूत प्रयोग और अक्षर ब्रह्म को तमाचा है जगत लीला और निजी लीला दिखाने के लिए सत और इच्छा का आवरण डालकर सृष्टि रचना का उपक्रम रचा है। अक्षर ब्रह्म के द्वारा संसार की रचना हुई और अनंत काल से चल रही सृष्टि रचना का विशिष्ट व्यवहार आगे बढ़ा। वर्ष और युग बिकने लगे। मनु महाराज और शतरूपा द्वारा सृष्टि रचना का क्रम विस्तीर्ण हुआ। सतयुग त्रेता और द्वापर व्यतीत हुए जिनमें सतयुग से सूर्यवंश का श्रेष्ठ बुद्ध हुआ। इस श्रेष्ठ क्षत्रिय वंश में अनेकों महा प्रतापी राजा हुए। इक्ष्वाकु, खुशी रिपुंजय कौस्तुभ हरि वह अनीता वशिष्ठ राव प्रतिभा विश्व संधि चंद्रभान भद्रावती युवराज फ्लावर्स दशक ब्रदर्स कव्वाली आशु धनुष प्रमोद हर्ष निकुंभ बरहम कुशासंन् प्रसेनजीत जुगनू मांधाता पूर्व कृत्य संभोग अरण्य ब्रदर्स तू भविष्य वसुमना

---

1. द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।

क्षर: सर्वाणि भूतानि कूटस्थोक्षर उच्यते॥ (15/16, गीता)

उत्तम: पुरुषस्त्वन्य: पर्मात्मेत्युदाहत:। (16/16, गीता)

यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपि चोत्तम:॥(17/16, गीता)

त्रिधन्वा, तृस्यररुण, सत्यव्रत, हरिश्चंद्र, रोहितआवास, हरित चंपक विजय भरूच ब्रिक सुबह सागर असमंजस अंशुमान दिलीप प्रथम भगीरथ श्रुतिसिंह ना भाग अंबरीश सिंधु दीप आयु आयु ऋतु वर्णन सब काम सुदाम सौदाम अस्मत पुलक नारी कवच दशरथ चतरथ एडमिट बृजेश शर्मा विश्व विश्व छठ बांग दीर्घायु सुदर्शन दिलीप दूसरे रघु प्रस्ताव आज दशरथ अभिनंदन और मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम। श्री राम जी के कुछ और लव दो पुत्र हुए कुछ द्वारा कुशवंशी और लव द्वारा लव वंश चला

गहिरवंशीय क्षत्रिय

भगवान श्री राम के पुत्रों कुश और लव के द्वारा वृद्धि पाए क्षत्रियों का विस्तार वट वृक्ष के समान है। कुशवंशी क्षत्रियों में आगे चलकर अनेक वंश प्रसिद्ध हुए। जिनमें गहिर वंश भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सातवीं शताब्दी में गहिर वंशीय एक प्रसिद्ध नरेश काशी में हुए जिनका नाम कृत्तुराज था, जिन्हौंने काशी पर वि.सं. 731 से 783 वि.सं. (674-726 A.D.) तक राज्य किया, तत्पश्चात इनके पुत्र गहिरदेव वि.सं. 783-740 वि.सं. (726--783 A.D.) तक न्यायधीश राजा हुए। इनके पश्चात विमलचंद्र, [840-887 (783-830 A.D.)], नाहूंचंद, [887-931 वि.सं. (830-874 A.D.)], गोपीचन्द्र, [931-951 वि.सं. (874-894 A.D.)], गोविंद चन्द्र, [951-1011 वि.सं. (894-954 A.D.)], टिहुनपाल, [1011-1027 वि.सं. (954-970 A.D.)], विंध्यराज, [1027-1052 वि.सं. (970-995 A.D.)], विंध्यदेव, [1052-1068 वि.सं. (995-1011 A.D.)], अर्जुनवम्मरन, [1068-1080 वि.सं. (1011-1023 A.D.)], हेमकरण तथा वीरभाद्र, [1080-1105 वि.सं. (1023-1048 A.D.)], काशी के राजा हुए।

वस्तुतः कन्नौज पर लंबे समय से अहिरवार क्षत्रियों का शासंन् रहा था इसी की एक शाखा तीर्थराज काशी पहुंची थी और वि.सं. 731 (संन् 674) मैं श्री विहंगराज के पराक्रमी पुत्र ऋतुराज ही हेलोकाशी नरेश हुए थे। काशी के इन रेशों को काश ईश्वर कहा जाता था। इन्हीं की 18वीं पीढ़ी में खेमकरण यशस्वी राजा हुए इनके पुत्र परम प्रतापी वीरभद्र हुए। इन्होंने अपने छोटे पुत्र पंचम को काशी का आधा राज्य दिया था। पिता के मरने के बाद पंचम के अग्रज चारों भाई जनों ने उनका राज्य छीन लिया था। निराश पंचम विंध्याचल की तरफ चले आए उबड़ खाबड़ एवं निर्जन जंगल में भटकते रहे और पर्वत मालाओं के बीच सुरक्षित जगह में बस कर विंध्यवासिनी देवी की घोर तपस्या करने लगे। विंध्याचल सेल पर तब करते-करते पंचम को काफी समय बीत गया। एक दिवस पंचम को आकाशवाणी सुनाई दी जिसका आश्चर्य था बूंद ला अर्थात (पंचम)

1. विंध्य शैल = विंध्य + शैल = विंध्य + श + (श) + ऐल = विंध्येल = विंध्येल + आ = विंध्येला = विन्धेला = बुन्देला:

यदि तुम मुझे प्रसन्न करना चाहते हो तो अपनी गर्दन काट कर खून की मुझ पर बूंदे लाओ चढ़ाव ऐसा सुनते ही पंचम ने अपनी तलवार जिओ ही गर्दन पर चलाएं तभी फिर आकाशवाणी हुई ठहरो पंचम ठहरो तब एक तलवार गर्दन को छू गई और खून की बूंदे देवी के श्री चरणों में टपकने लगी। देवी प्रकट हो गई कहने लगी बस तेरी मनोकामना पूरी होगी धीरज धरो 13 पुत्र ही तेरे सपने को साकार करेगा और आगे भविष्य में पृथ्वी का भार धारण करने शेषनाग के स्वामी धर्म रक्षक पृथ्वी पालक भगवान श्री शेष नारायण भी तेरे कोल में अवतरित होकर पवित्र करेंगे। चिंता मत कर मैं सदा तेरे कुल की रक्षा करूंगी कल्कि अवतार भी तुम्हारे कुल पर असीम अनुकंपा करेंगे। वक्त धैर्य धारण करो। विंध्यवासिनी देवी की कृपा से पंचम बुन्देला कहे जाने लगे।

बुन्देला वंश

देवी विंध्यवासिनी की आशीष से गहीर वंशीय पंचम से बुन्देला वर्ल्ड चला। कालांतर में इन्हीं पंचम वंशीधर बुंदेलों ने जिस भूभाग पर राज्य किया उसे बुन्देलखण्ड के नाम से ख्याति मिली। इन से पहले इस भू-भाग पर शिशुपाल का राज्य रहा। भरथरी भरथरी राजा ने यहीं पर शासंन् करते हुए वैराग्य धारण किया था। कालांतर में यहां विक्रमादित्य नाग कटवाए परिहार और चंदेल वंश दलों ने भी शासंन् किया था। 11 वीं शताब्दी से यह भूभाग गहिर वंशी बुंदेलों क्षत्रियों के अधीन हो गया था।

प्रथम राजधानी महौनी जगम्मनपुर

देवी के वरदान से पंचम को खोया सम्मान धीरे-धीरे मिलने लगा। इनके पुत्र वीर ने जगमनपुर पंचनाथ चंबल घाटी के पूर्वांचल के समीप एक युवक सेनापति सत्ता रखा को विक्रमी संवत् 1128 में 1071 में परास्त कर कालपी कालिंजर आदि स्थान इन लिए और राजा बन गए और मलेश राज्य का अंत कर दिया। महौनी में पंचम पुत्र वीर का राज्याभिषेक बड़ी धूमधाम से हुआ। वस्तुतः राजा वीर ही बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता के जनक हैं। वीर बुन्देला का राजतिलक समग्र बुन्देल भूमि में एक महान पर्व के रूप में काफी दिनों तक माना जाता रहा। गलत है बुन्देलखण्ड में आज भी जो वीरता दिखलाता है उसे वीर बुन्देला के रूप में सम्मान मिलता है धन्य है राजा वीर की स्मृति का यह स्वरूप।

2. भगवान शेषनारायण महाराजा छत्रसाल में समाहित थे। जिस प्रकार ब्रिज बिहारी कृष्ण में विष्णु समाहित थे।

3. कल्कि अवतार श्री प्राणनाथ जी की असीम अनुकंपा छत्रसाल पर थी।

4. बुन्देला: बुन्दे + ला = बुन्देला = बुन्देला:

महौनी बुन्देलाराजाओं की लगभग 180 वर्ष तक राजधानी रही, जिसमें करनपाल [वि.सं. 931 (874 A.D.) से], किन्नरशाह, [वि.सं. 1169 (1112 A.D.)], शैनक [वि.सं.1187 (1130 A.D.) से], नानक देव [वि.सं. 1209 (1152 A.D.)], मोहन पाल (1216 A.D.) से], अभयभूपति (1254 A.D.) से], अर्जुनपाल [वि.सं. 1272 (1159 A.D.)], से और वीरपाल [वि.सं. 931से1308 (1241-1251 A.D. तक)], राजा रहे। बुन्देलखण्ड के समग्र भूभाग की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप राजा वीरपाल ने राजधानी परिवर्तित करने के लिए अन्य स्थानों की खोज प्रारंभ की।

दूसरी राजधानी गढ़कुंडार में

राजा वीरपाल ने गढ़कुंडार में होनी के स्थान पर राजधानी की नींव डाली जिसमें प्रथम राजा सोहनपाल ने [वि.सं. 1308से1316 तक (1251-1259 A.D.)], राज्य किया तत्पश्चात राजा सहजेंद्र [वि.सं. 1316 (1259 A.D.) से], नानक देव [वि.सं. 1340 (1283 A.D.) से], पृथ्वीराज [वि.सं. 1364 (1307 A.D.) से], रामराज [वि.सं. 1396 (1339 A.D.) से], मेदिनीपाल [वि.सं. 1441 (1384 A.D.) से], अर्जुन देव (1494 A.D.) से], मलखानसिंह [वि.सं. 1525 से 1558 (1468-1501A.D.) तक], तक और राजा रूद्रप्रताप वि.सं. 1558 (1501 A.D.), में गढ़कुंडार के शासक हुए थे।

राजा मलखांसिंह ने अपने पराक्रम से चन्देरी और भेजता का प्रांत मुसलमान शासकों से छीन कर अपने गढ़कुंडार राज्य के अधीन कर लिया था। उन्होंने वि.सं. 1539 (1482 A.D.) में बहलोल लोदी को युद्ध में पराजित करके एक विशाल भूभाग छीना था इन्हें रितु खण्डन भी कहते हैं। इनके पश्चात राजा रुद्र प्रताप शासक हुए। इन्होंने गढ़कुंडार से राजधानी बदलने के उद्देश्य से नए स्थान की खोज प्रारंभ की।

तीसरी राजधानी, ओरछा में

महाराजा रूद्रप्रताप ने गढ़कुंडार के स्थान पर ओरछा को नई राजधानी बनाया वह वि.सं. 1558 (1501 A.D.) से वि.सं. 1588 (1531 A.D.) से वि.सं. तक (मृत्यु अवसान काल तक) राजा बने रहे। वि.सं. 1558 (1501 A.D.) मैं ओरछा राजधानी बनी थी।

(1) **महाराजा रूद्र प्रताप -** [जन्म: वि.सं. 1531 (1474 A.D.) मृत्यु वि.सं. 1588 (1530 A.D.)

महाराजा रूद्र प्रताप महाराजा मलखांसिंह के जेष्ठ पुत्र थे। रूद्र प्रताप भाई थे।

1. (i) खड़कसिंह (ii) जगजीतसिंह, (iii) जैतसिंह, (iv) मित्रसेन, (v) देवीसिंह।

रूद्र प्रताप ने गढ़कुंडार के स्थान पर ओरछा बसाकर इसे राजधानी बनाया था इनके तीन रानियां थी जिन से 9 पुत्र हुए।

महाराजा रूद्र प्रताप 20 वर्ष तक ओरछा के राजा रहे। अपने कार्यकाल में उन्होंने ओरछा राज्य को खूब समृद्धि शाली बना दिया। इनकी मृत्यु वि.सं.1588 (1531 A.D.) में हुई।

(2) महाराजा भारतीचंद्र [रा. अभिषेक वि.सं. 1588 (1531 A.D.) मृत्यु वि.सं. 1611 (1554 A.D.)

महाराजा रूद्र प्रताप के अवसान के पश्चात उनके जेष्ठ पुत्र भारती चंद्र का वि.सं.1588 (1531 A.D.) में बड़ी धूमधाम से राज्य पर शक हुआ। वह 23 वर्ष तक ओरछा के राजा रहे वि.सं. 1611 (1554 A.D.)

महाराजा रूद्रप्रताप के अवसान के पश्चात उनके जेष्ठ पुत्र भारतीचन्द्रन का 1588 (1531 A.D.) में बड़ी धूमधाम से राज्याभिषेक हुआ। वह 23 वर्ष तक ओरछा के राजा रहे। 1611 (1554 A.D.) में उनकी मृत्यु हो गई।

(3) महाराजा मधुकरशाह - [राज्याभिषेक वि.सं.1611 (1554), मृत्यु वि.सं.1649 (1592 A.D.)]

राजा भारती चंद्र के कोई पुत्र थे मधुकर शाह का वि.सं. 1611 (1554 A.D.) में राज्याभिषेक किया गया वह भारतीय चंद्र से छोटे थे।

श्री उदया जीत मधुकर शाह के छोटे थे अतैवइन्हें जूना महेवा की जागीर मिली। उदया जीत अत्यंत पराक्रमी वीर थे। वह अपने भाई मधुकर चौक के दाहिने अंग थे इन्हीं के बल पर मधुकर शाह ने मुग़ल सेनापतियों को हमेशा राज्य से दूर रहने को मजबूर कर दिया था।

महाराजा मधुकर चौकी है रानियां थी उनमें गणेश कुंवरि सबसे बड़ी थी जो धर्म परायण एवं परम भक्त थी राजा मधुकर शाह के 8 पुत्र थे।

---

1. (i) भारती चंद्र मधुकर शाह उदया जीत अमान उदास प्रयाग दास दुर्गादास चंदन दास घनश्याम दास भूपत शाह

वाह रे भरत संतान एक तो तेरे पूर्वज ऐसे थे जो बाल्यावस्था में ही शेर के दांत गिनते थे और एक तू है अरे कैसा है तू? मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पुत्र महाराजा कुश का तू वंशीधर है 1 ग्राम महाराजा दिलीप तेरे ही पुरखा थे उन्होंने गौ रक्षा के लिए अपने प्राणों की भी चिंता ना की थी। एक वे थे और एक तू उन्हीं का रक्त। खड़ा-खड़ा यहां तर्क वितर्क कर रहा है। समय किसी की राह नहीं देखता। एक क्षण का भी तो विलंब गौ माता के प्राण ले लेगा। वीर बुन्देली भाग 1 पृष्ठ 89 ले प्रताप नारायण मिश्र निकाय रक्षा में घायल महाराजा रूद्र प्रताप ने कुछ समय के उपरांत वि.सं. 1588 (1531 A.D.) में प्राण त्याग दिए थे।

महाराजा चम्पतराय, इनके पौत्र के बेटे थे, जो ओरछा की शादी पर चार वर्ष [वि.सं.1694 से 1698 (1637-1641 A.D.तक)] रहे, उन्हें निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा था। चम्पत सुमन महाराजा छत्रसाल ने अपने दैवीय बाहुबल से यवन सत्ता से संपूर्ण बुन्देलखण्ड को मुक्त कराया था।

(i) रामशाह, (ii) हिरलदेव, (iii) वीरसिंह देव, (iv) रतन सेन, (v) इंद्रजीतसिंह, (vi) हरिसिंह देव, (vii) प्रतापराय और (viii) नरसिंह देव।

महाराजा मधुकर शाह के समय दिल्ली के तख्त पर हुमायूं (पुनःसंन् 1555-1556 A.D. वि.सं.1612-1613) तथा अकबर (संन् 1556-1605 A.D.वि.सं.1613-1662) आसीन रहे। मधुकरशाह ने अकबर की हिंदू विरोधी नीति का जमकर संघर्ष किया था। वह ओरछा के प्रतापी राजाओं में से एक कहे जाते हैं।

महाराजा रामशाह [राज्याभिषेक वि.सं.1649 (1582 A.D.), जन्म 1590 वि.सं. मृत्यु 1669 वि.सं. (1612 A.D.)

महाराजा मधुकरशाह के निधन [वि.सं.1649 (1592 A.D.)] के पश्चात रामशाह ओरछा की गद्दी पर बैठे और अपने भाई इंद्रजीतसिंह से राज्य प्रशासंन् में सहयोग लेते रहे। अकबर और अच्छा को अपने राज्य में मिलाने के लिए वीरसिंह जूदेव राम शाह के अनुज को कांटा मानता रहा। राम चार्ट चौदह वर्ष [वि.सं.1663 (1606 A.D.)] तक ओरछा की गद्दी पर आसीन रहे। अकबर के बाद जहांगीर का शासंन् आते ही वीरसिंह ने ओरछा का राज्य [वि.सं.1663 (1606 A.D.) में संभाला। रामशाह चन्देरी बानपुर चले गए।

महाराजा वीरसिंह देव- (राज्याभिषेक वि.सं.1663 (1606 A.D.) मृत्यु 1684 वि.सं.(1627 A.D.)

महाराजा मधुकरशाह के द्वितीय पुत्र वीरसिंह देव ने अपने अग्रज रामशाह से वि.सं.1663 (1606 A.D.) में ओरछा का राज्य ले लिया। आप पिता सदस्य विवेकी थे।

वह परम पराक्रमी न्याय प्रिय कविता प्रेमी कृष्ण भक्त एवं परम दानी थे। इन पर बड़ी मां गणेश कुंवरि का अपार स्नेह था।

---

1. महाराजा राम सा और सा राज्य के योग्य शासक नहीं हुए थे।

2. राजा रामशाह के लिए चन्देरी भानपुर की दस लाख की आय का राज्य ओरछा से पृथक कर दे दिया गया। रामशाह ने वि.सं.1669 (1612 A.D.) तत्व वहां राज्य किया। रामशाह के निधन वि.सं.1669 (1612 A.D.) के उपरांत कुंवर भरतसिंह चंदेल के राजा हुए जोकि राम चौक के जेष्ठ पुत्र संग्रामसिंह के बड़े बेटे थे। रामशाह के ग्यारह पुत्र थे जिनमें संग्रामसिंह बड़े थे।

3. वीरसिंह देव का जन्म वि.सं.1599 (1542 A.D.) में हुआ और मृत्यु वि.सं.1684 (1627 A.D.) में हुई।

4. महाराजा वीरसिंह देव ने अपने अन्याय पुत्र बाघराज को उन्हीं कुत्तों के द्वारा मरवा दिया था जिनके द्वारा उसने एक ब्रह्मचारी को मरवा डाला था।

5. आचार्य केशवदेव [वि.सं.1612-1674 वि.सं. (1550-1617 A.D.) का जन्म उन्हीं के शासंन्काल में हुआ था कविता प्रेमी वीरसिंह देव ने इनका खूब सम्मान किया था। आचार्य केशव ने वि.सं.1664 (1607 A.D.) में वीरसिंह देवचरित नामक पांचवा ग्रंथ लिखा था।

6. महाराज वीरसिंह देव पिता की भांति कृष्ण भक्त थे मथुरा वृंदावन से उनका आत्मिक लगाव था। श्री कृष्ण जन्मभूमि मथुरा उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

7. महाराज वीरसिंह देव ने मथुरा में 81 मंथ सोने का तुला दान किया था इसके अतिरिक्त उन्होंने सैकड़ों धार्मिक कार्य किए हैं चीन के प्रमाण अदावत ही विद्यमान हैं।

महाराजा वीरसिंह देव की तीन रानियां थी- (1)अमृत कुंवरी (2) गुमान कुंवरी (3) पंचम कुंवरि। इन रानियों से बारह पुत्र एवं एक पुत्री हुई ओरछा के इतिहास में वीरसिंह देव का नाम अति सम्माननीय है। सूर्य देव कहे जा सकते हैं दिल्ली नरेश जांगीर नरसिंह देव के साथ सर्वाधिक मैत्री भाव निभाया। जहांगीर महल इसका प्रमाण आज भी दे रहा है महाराजा छत्रसाल के वीर्य से महाराजा वीरसिंह देव का आत्मकथा चम्पतराय एवं लाला हरदौल को एक जैसा प्यार करते थे चम्पतराय की सलाह पर वीरसिंह देव ने शाहजहां से संबंध तोड़ लिए थे परंतु बुंदेलों पर वीरसिंह देव के रहते प्रभाव ना सका था। वि.सं.1684 में शाहजहां द्वारा भेजे गए बाकी का सेनापति को चम्पतराय एवं लाला हरदौल के अप्रतिम शौर्य से पराजित होकर भागना पड़ा था परंतु शाहजहां समय-समय पर सेना भेजता रहा इसी बीच वीरसिंह देव का निधन वि.सं.1684 (1627 A.D.) में हो गया।

महाराजा वीरसिंह देव के सपनों को उनकी पीढ़ी साकार व्रत रखना सकी परंतु उनके पिता में के पुत्र उदया जीत के बंशीधर महाराजा छत्रसाल ने इसे साकार किया था। राव चम्पतराय ने वीरसिंह देव के निधन के पश्चात ओरछा गादी पर आसीन जुझारसिंह को लाला हरदौल के परामर्श पर भरपूर सहयोग दिया था।

(6) महाराजा जुझारसिंह

[राज्याभिषेक वि.सं.1684 (1627 A.D.) मृत्यु वि.सं.1691 (1634 A.D.)]

महाराजा वीरसिंह देव के पश्चात जुझारसिंह ओरछा की गादी पर विराजमान हुए। इनकी रानी चंपावती से विक्रमाजीत और पृथ्वीसिंह पैदा हुए।

महाराजा जुझारसिंह अपने पिता के समान गुणवान न थे, अतैव राज्य में बहारे और अंतः विरोधी शक्तियां प्रबल हो गई हरदौल की मृत्यु का लाभ शाहजहां ने उठाया और वि.सं.1691 (1634 A.D.) में मुग़ल सेना द्वारा सुझावसिंह एवं विक्रमाजीत जंगल में कत्ल कर दिए गए शव देखकर और

---

1. रानी अमृत कुंवरि से जुझारसिंह नरहरिदास पहाड़सिंह तुलसीदास और बेनी दास पुत्र हुए
2. रानी गुमानकुंवरि से लाला हरदौल भगवंतराव (भगवानराव), चंद्रभान, किशुनसिंह (पुत्र) तथा कुंजावती पुत्री पैदा हुई थी।
3. रानी पंचकुंवरि से बाघराज, माधवसिंह और परमानंद पुत्र हुए।
4. महाराजा वीरसिंह देव ने अपनी गुप्त वसीयत में छठवें पुत्र लाला हरदौल को ओरछा का राजा अधिकृत किया था तथा जेष्ठ पुत्र जोहारसिंह को एक जागीर अथवा दस लाख रु. देने के लिए लिखा था, परंतु उदारमना हरदौल ने जुहारसिंह को गादी पर बैठाया और उनकी सेवा की।
5. महाराजा जुझारसिंह: जन्म वि.सं. 1620 (1563 A.D.) एवं अवसान वि.सं.1691 (1634 A.D.) में।

सिर कटवाकर दिल्ली ले जाने का हुक्म दिया था राव चम्पतराय ने मुगलों से युद्ध कर दोनों सिम ले लिए और रानी चंपावती तथा उनकी पुत्रवधू कमल कुंवरि विक्रमाजीत की पत्नी को सौंप दिए कार्तिक शुक्ल नवमी रविवार वि.सं.1691 (1634 A.D.) के दिन यह दोनों कंचन घाट के आगे ओरछा में बेतवा तट पर सती हो गई ओरछा गाली सुनी हो गई

(7) महाराजा पृथ्वीसिंह शासंन्काल वि.सं.1693-1694 (1636-1637 A.D.)]

देवीसिंह के चन्देरी लौट जाने पर राव चम्पतराय ने A.D.1693 (1636 A.D.) में पृथ्वीसिंह प्रथम को ओरछा की गादी पर बैठाया परंतु अल्प अवस्था के कारण वह राज्य प्रशासंन् चम्पतराय की देखरेख में चलाने लगा वि.सं.1694 (1637 A.D.) में मुग़ल सेना ने धोखा देकर बालक पृथ्वीसिंह को कैद कर ग्वालियर भेज दिया पृथ्वीसिंह का जन्म वि.सं.1678 (1621 A.D.) में हुआ और मृत्यु वि.सं. 1706 (1649 A.D.) में हुई।

(8) महाराजा चम्पतराय - शासनकाल वि.सं.1694-1698, 1637-1641 ई.)

महाराजा पृथ्वीसिंह के कैद हो जाने पर राव चम्पतराय ने ओरछा के जनमानस को अपनी सेवाएं दी जनता उन्हें राजा के समान मानने लगी परंतु मुग़ल शासक शाहजहां की कुटिल नीति के फल स्वरुप उन्हें हमेशा बुन्देलखण्ड की रक्षा में युद्ध रत रहना पड़ा समय एवं उनके भविष्य के अनुरूप चिंतन करके उन्होंने चार वर्ष उपरांत वि.सं.1698 (1641 ई.) में मुग़ल समर्थक पहाड़सिंह को ओरछा की गादी पर निज हाथों से राज्याभिषेक करके स्वयं बुन्देली जनता के आजीवन प्रहरी बन गए।

महाराजा चम्पतराय का सपना चक्रवर्ती नरेश महाराजा छत्रसाल ने वि.सं. 1740 (1683 A.D.) में पूरा कर दिखाया था। वह रानी लाड़कुंवरि (सारंधा) के पुत्र थे।

ई० 1661 में चम्पत राजा-रानी वीरगति को प्राप्त हो चुके थे।

---

1. भावौ जू मठिया और कमल को बरी की मठिया इसके प्रमाण हैं

2. मुग़ल समर्थक कुल घाटी देवीसिंह चन्देरी से शाहजहां की सहमति से ओरछा आया था और वि.सं.1691 से 1693 (1634- 1636 A.D.) तक रह सका, जनमानस के असहयोग से वह चन्देरी वापस लौट गया, तब चम्पतराय ने जुझारसिंह के पंद्रह वर्षीय बेटे पृथ्वीसिंह को ओरछा की गद्दी पर बैठाया था।

3. महाराजा छत्रसाल का दिग्विजय यात्रा (संवत् 1743-44) के पूर्व संवत् 1740 मैं राजतिलक हो चुका था।

4. संवत् 1718 कार्तिक शुक्ला एकादसी; इस समय छत्रसाल साढ़े बारह वर्ष के थे।

(9) महाराजा पहाड़सिंह--

[शासनकाल वि.सं.1645 (1588 A.D.) मृत्यु वि.सं.1720 (1663 A.D.)]

और मुग़ल शासक शाहजहां अपने मनोनुकूल राजा बताना चाहता था उसे महाराजा चम्पतराय फूटी आंखों पसंद ना थे क्योंकि चम्पतराय मुग़ल विरोधी एवं स्वतंत्र बुन्देलखण्ड के पक्षधर थे पहाड़सिंह अति महत्वकांक्षी था जोकि चम्पतराय का छपा शत्रु था और मुगलों का हमदर्द था। वि.सं.1698 (1641 A.D.) में चम्पतराय ने पहाड़सिंह को अपने कुल का समझकर ओरछा की गद्दी पर बैठाया ताकि मुगलों से बैर खत्म हो। उन्होंने राजा पहाड़सिंह को अपनी सेवा और निष्ठा समर्पित कर दी।

ओरछा नरेश पहाड़सिंह ऊपरी मन से चम्पतराय का खूब सम्मान करता, परन्तु उसके दिल में आस्तीन का सांप उसका रे मारता रहता उसकी रानी हीरा देवी कुटिलता की मूर्ति ही थी चम्पतराय का मानना था कि निस्वार्थ सेवा में प्राण भी चले जाएं और देश का हित हो जाए वह अच्छा है अतएव शुभचिंतक चम्पतराय अपने पैतृक गांव महेवा चले आए चम्पतराय देश प्रेमी और यवन विरोधी थे पहाड़सिंह ने चम्पतराय के ऐसे सिद्धांतों का फायदा उठाकर मुग़ल सेना द्वारा उन्हें जीवनभर आतंकित कर आया और अपनी मुग़ल भक्ति का प्रमाण देता रहा पहाड़ सिंगर ओरछा का राजा जरूर था परंतु वर्चस्व चम्पतराय का था जनमानस पालसिंह के स्थान पर महाराज चम्पतराय को ज्यादा सम्मान देता था

महाराजा चम्पतराय, पहाड़सिंह से ज्यादा राजनीति के खिलाड़ी थे, उन्होंने शाहजहां से कनार-कोंच की जागीर एक लाख में पाई थी कालांतर में दारा ने यही जागीर तीन लाख में पहाड़सिंह को दिलवा

दी थी। दारा का यही वैमनस्य उसकी मौत का कारण बना था चम्पतराय के कारण सा मुग़ल [वि.सं.1713 (1656 ई.)] में दारा मारा गया। अतैव औरगंज़ेब ने चम्पतराय को सम्मानित किया था, पहाड़सिंह देखते ही रह गए थे। अपनी रानी हीरा देवी के कारण पहाड़सिंह की सिर्फ बनाई बन आई, वह नागिन बनकर सुजानराय (चम्पतराय के भाई) और चम्पतराय को डस गयी। स्वतंत्र बुन्देलखण्ड का सपना लिए चम्पत दंपत्ति वि.सं.1718 में वीरगति को प्राप्त हुए।

पहाड़सिंह [वि.सं.1645-1720 (1585-1663 A.D.)] चम्पतराय [1644-

---

1. पहाड़सिंह की मौत के नौ वर्ष बाद तक उनकी रानी हीरा देवी वि.सं.1651-1729) कीरतसिंह पंवार उदगुंवा की बेटी, बुन्देल कुल में आग लगाती रही।
2. काश दारा चम्पतराय का विरोध ना करता, तो आज भारतवर्ष का परिदृश्य कुछ और ही होता। चम्पतराय को भी भविष्य धोखा दे गया और छोटी सी भूल ने बहुत बड़ी-बड़ी कुर्बानियां लीं।

1718 (1587-1661 A.D.) के स्वतंत्र सपने में आग लगाकर डेढ़ वर्ष बाद चल बसे थे।

(10) महाराजा सुजानसिंह--

जीवनकाल–1650-1729 वि.सं. (1593-1672 ई.)

शासनकाल–1720-1729 वि.सं. (1693-1672 ई.)

वि.सं. 1720 में पहाड़सिंह के अवसान के बाद तू जाने से ओरछा की गद्दी पर बैठे थे सुजानसिंह पहाड़सिंह की रानी हीरा देवी के बहकावे में आकर पहले ही चम्पतराय की मौत के कारण बने थे चम्पतराय ने मरने से पूर्व सुजानसिंह को रानी हीरा देवी की काली करतूतें बता दी थी जिसे सुनकर सुजानसिंह दंग रह गया था लेकिन तब तक देर हो चुकी थी चम्पतराय के प्राण पखेरू उनके सामने ही उड़ गए राव सुजानसिंह को मन ही मन फुल कलंकिनी का पाप सताता रहता फल स्वरुप प्रायश्चित रूप में वह स्वर्गीय चम्पतराय के अनाथ बच्चों पर सहानुभूति रखने लगे।

चम्पतराय दंपत्ति के कटे सिर देखकर औरंगज़ेब बहुत खुश हुआ था करो करो करो करण की बुन्देलखण्ड में मुग़ल सत्ता की स्थाई स्थापना में चम्पतराय एक भयानक कांटा थे अब बुन्देलखण्ड में ऐसा कोई शूरवीर ना बचा था जो मुग़ल सत्ता से टकरा सकता और सा राज्य पर या वनों का शिकंजा कसने लगा एवं हीरा देवी की कुटिल नीतियों ने ओरछा राज्य पर काली घटाएं शादी जबकि राजा सुजानसिंह ने वि.सं.1721-22 (1664-1665 A.D.) पुरंधर किला (मराठों का किला) जीता और वि.सं.1723 (1666 A.D.) में बरार प्रांत के चांदा राज्य पर मुग़लों की भरपूर सहायता की थी। फिर

भी वि.सं.1727 (1570 A.D.) एंव 1728 (1571 A.D.) में यवन औरंग ने ओरछा के मंदिरों को ध्वस्त करने की अगुवाई फिदाई खां को सौंपी थी। वि.सं.1727 (1570 A.D.) में राजा सुजानसिंह की अनुपस्थिति में रणबांकुरे वीर दूर मंगल एवं छत्रसाल ने धूम घाट के मैदान में विदाई खां को करारी मार दी थी उसे प्राण बचाने के लिए ग्वालियर भागना पड़ा था अगले वर्ष वि.सं.1728 (1571 A.D.) में पुनः धूम घाट में चंपत सुअन वीर छत्रसाल ने फिदाई खां को राजा सुजानसिंह के अनुरोध पर तीन दिन में ही परास्त कर दिया था, आज उन्हें चम्पतराय की छवि सुकुमार छत्रसाल में नजर आ रही थीं। महाराजा सुजानसिंह का अवसान वि.सं.1729 (1572 A.D.) मैं हो गया था। इसी वर्ष बुन्देल कलंकिनी रानी हीरा देवी भी परलोक सिधार गई। महाराजा सुजानसिंह की अंतरात्मा में छत्रसाल

के व्यक्तित्व की आभा मृत्यु पर्यंत बनी रही उन्होंने अपने उत्तराधिकारी यों को छत्रसाल की आभा का ज्ञान करा दिया था

महाराजा इंद्रमणी

जीवन काल–1670-1732 वि.सं. (1613-1675 ई.)

शासंन् काल–1729-1732 वि.सं. (1672-1675 ई.)

ओरछा नरेश महाराजा सुजानसिंह 1650-1729 वि.सं. (1593-1673 ई.) की मृत्यु के उपरांत उनका लघुभ्राता इंद्रमणी ओरछा की गद्दी पर आसीन हुआ था। इंद्रमाणी प्रारंभ से चम्पतराय का विरोधी था शंभूगढ़ के युद्ध [वि.सं.1713 (1656 A.D.)] मैं वह चम्पतराय के विरुद्ध धारा के पक्ष में लड़ा था क्योंकि वह राजा पहाड़सिंह का पक्षधर एवं दतिया नरेश शुभकरण का साथी था इसी कारण वह चम्पत कुमार छत्रसाल से पुराना बेड मानता था तभी वह वि.सं.1729 (1672 A.D.) में खानजहां के साथ हुए गुलशन आबाद के युद्ध में छत्रसाल का विरोधी बनकर लड़ा था और हार कर भाग गया था महाराजा छत्रसाल ने वि.सं.1730 (1673 A.D.) में गरौठा, जैरौन, जतारा आदि पर बलपूर्वक अधिकार जमाया था। महाराजा छत्रसाल के बढ़ते प्रभाव को देखकर

---

1. चम्पत सुअन छत्रसाल का जन्म वि.सं.1706 (1649 A.D.) में हुआ और उन्होंने वि.सं.1788 (1731 A.D.) तक शासंन् किया। इसी दौरान ओरछा में कौन-कौन राजा हुए हैं उनका अनुशीलन इस प्रकार है महाराजा छत्रसाल के जन्म के समय ओरछा गादी पर पहाड़सिंह राजा था चम्पतराय की मृत्यु के 1 वर्ष तक वही राजा रहा पहाड़सिंह के अवसान वि.सं.1720 (1663 A.D.) के बाद सुजानसिंह वि.सं.1720-1728 तक (1663-1671 A.D.)] राजा रहे, अतः चम्पतराय की वीरगति के समय ओरछा पर पहाड़सिंह का शासंन् था महाराजा छत्रसाल के विद्रोह वि.सं.1728 (1671 A.D.) के आरंभ काल में ओरछा गादी पर सुजानसिंह ही राजा थे जिनका भरपूर प्यार छत्रसाल को प्राप्त था। इंद्रमणी वि.सं.1729 (1672 A.D.) से

वि.सं.1732 (1675 A.D.) तक ओरछा के राजा रहे इनकी प्रकृति छत्रसाल विरोधी थी [वि.सं.1732 (1775 A.D.) से वि.सं.1740 (1683 A.D.)] तक ओरछा की गाड़ी पर जसवंतसिंह राजा पद पर रहे तत्पश्चात वि.सं.1740 (1683 A.D.) से वि.सं.1745 (1688 A.D.) तक भगवंतसिंह राजा रहे इन्हीं के समय छत्रसाल को महाराजा का पद वि.सं.1740 (1783 A.D.) में कल्कि अवतार महाप्रभु प्राणनाथ बक्शीश किया था भगवंतसिंह के बाद ओरछा की गद्दी पर लाला हरदौल के प्रपत्र कुदरतसिंह वि.सं.1745-1793 (1688-1736 A.D.) तक रहे इस प्रकार ओरछा में छः राजा (पहाड़सिंह 16 वर्ष, सुजानसिंह 9 वर्ष, इंद्रमणी 3 वर्ष, जसवंतसिंह 8 वर्ष, भगवंतसिंह 5 वर्ष तथा उद्दैतसिंह 48 वर्ष) छत्रसाल के काल में हुए इनकी मूर्तियों को जाने बिना महाराजा छत्रसाल जी के जीवन दर्शन का अनुशीलन अपूर्ण रहेगा।

2. (i) महाराजा सुजानसिंह निःसंतान थे, इन्होंने अरजार सागर नामक तालाब बनाया और इनकी रानी ने झांसी के निकट रानीपुर नामक एक काम बताया था।

(ii) रतनकुंवरि रानी से इंद्रमणी के जसवंतसिंह और भगवंतसिंह नामक दो पुत्र हुए।

(iii) इनकी एक रानी अमरकुंवरि थीं, जो भगवंतसिंह राजा के राज्य की राजमाता और प्रबंध करता रही।

ओरछा नरेश राजा इंद्रमणी ने वि.सं.1738 (1673 A.D.) में माफी मांगी थी और अनंत काल तक राजा इंद्रमणी कुमार छत्रसाल के प्रति नम्र रहे और बासठ वर्ष की उम्र में वि.सं.1732 (1675 A.D.) में परलोकगामी हुए।

(12) महाराजा जसवंतसिंह--

जीवनकाल–1691--1740 वि.सं. (1634-1683 ई.)

शासनकाल–1732-1740 वि.सं. (1675-1683 ई.)

महाराजा इंद्रमणी के अवसान के बाद मैं महाराजा जसवंतसिंह ओरछा के राजा हुएवह 8 वर्ष तक गाड़ी पर रहे स्वभाव से साधु प्रवृत्ति के थे अपने पिता इंद्रमणी के अंतिम रवैया से परिचित होकर वह महाराजा छत्रसाल से कभी प्रतिकूल नहीं हुए लेकिन मुगलों के समर्थक जरूर रहे पलट है मैं खां जहां और हिम्मत खां के साथ मिलकर मराठों से मालखेड़ के युद्ध में सम्मिलित होकर पराक्रम कर दिखाया था इनका अवसान में हुआ.

(13) महाराजा भगवंतसिंह--

जीवनकाल–1695--1745 वि.सं. (1638-1688 ई.)

शासनकाल–1740-1745 वि.सं. (1683-1688 ई.)

महाराजा जसवंतसिंह ने निसंतान होने के कारण उनके अनुज भगवंतसिंह वि.सं. 1740 (1683 A.D.) में ओरछा की गादी पर बिठाए गए महाराजा भगवंतसिंह के राज्य के प्रबंध की देखरेख पूर्व

दिवंगत महाराजा इंद्रमणी की रानी अमर कुंवरि करती थी वह राजमाता भी थी वह एक धर्म परायण एवं समाजसेवी महिला थी जनता में इनके प्रति आदर था।

ओरछा नरेश भगवंतसिंह ने महाराजा छत्रसाल से समभाव जरूर दिखा था परंतु जब महाराजा छत्रसाल को वि.सं. 1740 (1683 A.D.) मैं महाप्रभु प्राणनाथ जी ने राज्य तिलक करके बुन्देलखण्ड का महाराजा घोषित किया था तब वह चन्देरी दतिया और गढ़ा के राजाओं के साथ छत्रसाल के विरोध में खड़े हो गए थे परंतु महाराजा छत्रसाल ने कुल घर का मान कर इन सभी को शिष्टता भाव से अपना प्रत्युत्तर दे दिया था और वि.सं. 1743 (1686 A.D.) मैं महाप्रभु प्राणनाथ जी के आदेश पर जब महाराजा

(i) इनकी रानी का नाम प्रदीप कुंवरि था जो जिगनि की थी। इन्हें कोई संतान न थी, अतैव राजा जसवंतसिंह निःसंतान मरे थे।

(ii) राजा जसवंतसिंह ने अपने नाम पर जसवंतपुरा गांव बसाया था।

छत्रसाल दिग्विजय पर निकले थे, तभी महाराजा भगवानसिंह का देहावसान हो गया था ऐसा समकालीन इतिहास व वित्त को समकालीन डायरी में उल्लेख मिलता है

14 महाराजा उद्दैतसिंह

जीवनकाल–(1721–1793) वि.सं. (1664-1736 A.D.)

शासनकाल–(1745-17) वि.सं. (1683-1688 A.D.)

महाराजा भगवंतसिंह के निधन [वि.सं.1745 (1688 A.D.)] पर ओरछा की गद्दी पर नवयुवक उद्धतसिंह का तिलक हुआ राज्य सिंहासंन् पर उद्दैतसिंह को पहुंचाने का साहसिक कार्य ओरछा की वयोवृद्ध राजमाता स्वर्गीय राजा इंद्रमणी की पत्नी अमर कुंवरि ने किया था राजा उद्दैतसिंह इसके पूर्व भी घोड़ा की बैठक के थे और ओरछा की गद्दी के लिए गोद लिए गए थे वह महाराजा वीर देवसिंह के योग्य सुपुत्र लाला हरदौल के प्रपौत्र थे राजा उद्दैतसिंह की दो रानियां थी रानी रूप कुंवरि रतनलाल कुंवरि राजा उद्दैतसिंह ने अपने नाम पर कुल दत्तनगर बताया था जो आज बरुआसागर के नाम से विख्यात है।

महाराजा उद्दैतसिंह ने [वि.सं.1753 (1696 A.D.)] मैं महाराजा छत्रसाल की सीमा का अतिक्रमण किया यह घटना अतिक्रमण यवन औरंग की खोटी नियत का परिचायक थी जो बुन्देला वंश को एकजुट नहीं देखना चाहती थी महाराजा छत्रसाल ने इस युद्ध में स्वकुल का ध्यान रखते हुए ओरछा

की राजमाता अमर कुंवरि को बहुत सम्मान दिया था और उनके कहने पर भयंकर युद्ध टल गया इसके पश्चात राजा उद्दैतसिंह ने महाराजा छत्रसाल पर प्रत्यक्ष रूप से जीवन भर सभी युद्ध नहीं किया परंतु वह मुग़ल सल्तनत का हिमायती बना रहा कारण कि वह मुग़ल सत्ता को अपनी सशक्त सेवाएं देता रहा। [वि.सं.1783 (1626 A.D.)] मैं तृतीय विश्व युद्ध के समय ओरछा चन्देरी और दतिया की रियासतें परोक्ष रूप में बस की मदद कर रही थी अतैवस्पष्ट है कि ओरछा नरेश उद्दैतसिंह दिग्विजय महाराजा छत्रसाल के लिए आस्तीन के सांप ही थे महाराजा छत्रसाल के पुत्रों कुंवर जगतराज एवं कुमार हिरदेश आने आस्तीन के सांप

1. महाराजा भगवंतसिंह ने अपने नाम पर भगवंतपुरा गांव बसाया था।

2. यह घटना [वि.सं.1745 (1688 A.D.)] के प्रारंभ की है।

3. तब ओरछे के राजा ने, लिया खटोला ए।

लगी फटकार तिनको, मौत हुआ तिन से॥ (60/168)

(स्वामी लालदास वीतक से)

4. ओरछा की राजमाता अमर कुंवरि पत्नी राजा इंद्रमणी ने ओरछा को ढहने से बचा लिया था। जबकि दूसरी एक कुटिल ओरछा रानी थी हीरा देवी (पत्नी राजा पहाड़सिंह) जो कुल कलंकिनी बनकर बुन्देलवंश को ढाती रही।

5. ओरछा बच गया, युद्ध टलने से। अन्यथा इतिहास के पन्ने गवाह बनकर रह जाते।

को मुंह खोलकर कभी बाहर निकलने का मौका नहीं दिया था। वि.सं.1793 (1736 A.D.) मैं इनका वसान संजोए सपनों सहित हो गया

राजनीति अनुशीलन

महाराजा छत्रसाल के शासनकाल [वि.सं.1728-1788 (1671-1731 A.D.)] में ओरछा की गद्दी पर निम्न राजा आरूढ़ रहे -- सुजानसिंह [वि.सं.1720-1729 (1671-1731 A.D.)], इंद्रमणी [वि.सं.1729-1732 (1672-1675 A.D.)] जसवंतसिंह [वि.सं.1732-1740 (1675-1683 A.D.)] भगवंतसिंह [वि.सं.1740-1745 (1683-1688 A.D.)] तथा उद्दैतसिंह [वि.सं.1745-1793 (1688-1736 A.D.)]।

इन राजाओं की राजनीति का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि यह सभी मुग़ल सत्ता के वफादार रहे हैं महाराजा छत्रसाल को इनसे स्वतंत्र बुन्देलखण्ड की स्थापना में कोई प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग नहीं मिला है फिर भी उन्होंने विशाल बुन्देलखण्ड को मुगलों की दासता से मुक्त कराया था ओरछा चन्देरी वाधती आधी रियासतें भले ही महाराजा छत्रसाल के सीधे नियंत्रण में ना थी परंतु जनमानस में केंद्रीय सत्ता का रूप महाराजा छत्रसाल ही थे यहां की जनता को भी उन्होंने अपना

अश्मित प्यार दिया था अतैवसर्वत्र महाराजा छत्रसाल की तूती बोलती थी उक्त रियासतों पर 1 सप्ताह आक्रमण नहीं कर सकती थी वे जानते थे कि बुन्देलखण्ड के नाम पर समूचे भूभाग का कण-कण महाराजा छत्रसाल के साथ है इन पर आक्रमण करने का मतलब है सीधे छत्रसाल से लोहा लेना और उनकी छत्रसाल एकता को व्यापक व मजबूत करना क्योंकि आखिरकार इन रियासतों पर आरोड़ लोग महाराजा छत्रसाल के पूर्वजों के बंशीधर ही हैं रियासतें भी पूर्व ओरछा राज्य की शाखाएं ही हैं

वस्तुतः महाराजा छत्रसाल जी ने भी यही सोचकर रियासतों पर आक्रमण किया था इसका लाभ छत्रसाल को यही मिला कि पूरे बुन्देलखण्ड की जनता के वीर पुरुष इनके ध्वज के नीचे आ गए थे और इन रियासतों की सेनाओं ने कभी भी महाराजा छत्रसाल से युद्ध नहीं करना चाहा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी रियासत छत्रसाल का बाल बांका ना कर सके

इस पूरे परिवेश में एक भी चर्चा की जरूरत है जिसके द्वारा ही महाराजा छत्रसाल कालीन राजनीति का समग्र इतिहास अतीत के गर्भ से बाहर आ सकता है और तभी महाराजा छत्रसाल के विशाल व्यक्तित्व एवं राजनीति का दूरदर्शन विश्व को मिल सकता है गुलाब कांटो के ही बीच खेलता है और लंबे समय तक

अपनी मोहक सुगंध देता रहता है वस्तुतः महाराजा छत्रसाल जी का जीवन संघर्ष में कांटो का ही था तभी उनका व्यक्तित्व जीवन दर्शन गुलाब की तरह महक रहा है पलट है आज वह युगप्रवर्तक के रूप में उच्चतम अंतरिक्ष शिखर पर दलित परमान हो रहे हैं गुलाब कांटो की भांति घरेलू विरोधी भी महाराजा छत्रसाल की शोभा सब महिमा को कम ना कर सके थे वक्त होता है वह इतिहास निर्माता थे

वस्तुतः युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल जैसी बहुमुखी प्रतिभा का धनी पुरुष ना तो जगत में कोई पैदा हुआ और ना कभी होगा तभी तो वह प्रातः स्मरणीय पुरुषों में वे अग्रणी हैं

राजा लेत राव लेत शाह शहजादे लेत,

प्रात उठ नाम लेत वीर छत्रसाल को (लोकोक्ति)

राजा उद्दैतसिंह प्रवृत्ति ओरछा के राजागण

ओरछा राज्य की सच्चा देश स्वतंत्र होने पर राजा वीरसिंह (द्वितीय) ने दि. 17.12.1947 को जनता के हाथ सौंप दी थी. महाराजा उद्दैतसिंह के परिवर्ती राजाओं का देश की आजादी तक का विवरण निम्न प्रकार है--

1. महाराजा पृथ्वीसिंह (द्वितीय) वि.सं.1793-1809 (1736-1752 A.D.) तक

2. महाराजा श्री सामंतसिंह	वि.सं.1809-1822 (1752-1765 A.D.) तक
3. महाराजा श्री हेतसिंह	वि.सं.1822-1825 (1665-1731 A.D.) तक
4. महाराजा श्री मानसिंह	वि.सं.1725-1732 (1668-1675 A.D.) तक
5. महाराजा श्री भारतचंद्र (द्वितीय)	वि.सं.1732-1733 (1675-1776 A.D.) तक
6. महाराजा श्री विक्रमाजीत	वि.सं.1733-1874 (1776-1817 A.D.) तक
7. महाराजा श्री धर्मपालसिंह	वि.सं.1874-1891 (1817-1834 A.D.) तक
8. महाराजा श्री तेजसिंह	वि.सं.1891-1894 (1834-1837 A.D.) तक
9. महाराजा श्री सुजानसिंह (द्वितीय)	वि.सं.1894-1911 (1837-1854 A.D.) तक
10. महाराजा श्री हमीरसिंह	वि.सं.1911-1931 (1854-1874 A.D.) तक
11. महाराजा श्री प्रतापसिंह	वि.सं.1931-1987 (1874-1930 A.D.) तक
12. महाराजा श्री वीरसिंह (द्वितीय)	वि.सं.1987-2013 (1930-1956 A.D.) तक

ओरछा की प्रथम जागीर: नुना महेवा

राव उदयाजीत*

जीवन काल वि.सं. (1575-1632) वि.सं. (1518-1575 A.D.)

ओरछा राजधानी के संस्थापक महाराजा रूद्र प्रताप ने अपने जीवन काल में अपने पराक्रमी तीसरे बेटे उदया जीत को मऊ महेवा की जागीर दी थी इनका विवाह बिल हरि के गुमानसिंह पवार की पुत्री कमोद कुंवरि से हुआ था प्रेमचंद कमोद कुंवरि की कोख से जन्मे थे इनका जन्म में हुआ था इन्हें महेवा की बैठक वि.सं. 1632 में मिली थी राव प्रेमचंद का विवाह बिल हरि के मकरंद सा पवार की बेटी सुमन कुंवरि से हुआ सुमन कुंवरि की कोख से वि.सं. 1625 में भगवंत राय का जन्म हुआ था और वि.सं. 1661 में भगवंत राय को महेवा की बैठक मिली थी भगवान सहाय का विवाह मान कुंवरि से हुआ था जो करेरा वाले प्रदेशा की पुत्री थी रानी मान कुंवरि की कोख से वीर चम्पतराय का जन्म वि.सं. 1644 में महुआ के निकट मोटी गांव में हुआ था वि.सं. 1685 में चम्पतराय जी को महेवा की बैठक मिली थी इस समय ओरछा की गद्दी पर प्रतापी राजा वीरसिंह देव के पुत्र जुझारसिंह आसीन

थे अन्य भाइयों में अंग राय कोरोनावायरस को जाटिया गढ़ और सुजान राय को वेदपुर की बैठ के बंटवारे में प्राप्त हुई थी राव चम्पतराय ने ओरछा राज्य की सुरक्षा में ओरछा नरेश जुझारसिंह को भरपूर सहयोग दिया था राहु दया जीत के प्रपत्र प्राप्त चम्पतराय बुन्देला जनता के आकर्षण के केंद्र बिंदु बन गए थे और ओरछा के संक्रमण काल में ओरछा के राजा भी हुए मुग़ल सत्ता से टक्कर लेने के कारण उन्हें लंबा जीवन निर्वाचित रूप में व्यतीत करना पड़ा था

बुन्देलकेशरी वीरवर राजा चम्पतराय

जीवन काल (वि.सं. 1544-1718) (1587-1661 A.D.)

चम्पतराय राव बलवंत राय की जय संतान थे वह बड़े पराक्रमी एवं शूरवीर थे चम्पतराय बुन्देली कुलदीपक पूर्ववर्ती राजाओं के समान * पराक्रमी थे उनमें एक विशेष गुण यह भी था कि महत्वाकांक्षा के स्थान पर देश प्रेम को सर्वोपरि मानते थे इसी कारण वह जन जन के सेवक बनकर अपने बलबूते पर बुन्देल केसरी कहलाए।

राव भगवंत नंदन चम्पतराय की चार रानियां थी - 1. भगवंत कुंवरि 2. हीरा कुंवरि,

---

* राव उदयाजीत -- राव प्रेमचंद्र -- राव भगवन्तराय -- राव चम्पतराय

वि.सं. (1575-1632) वि.सं. (1599-1668) वि.सं. (1625-1685) (वि.सं. 1644-1718)

1. तरवैना के बलवंतसिंह पवार की पुत्री;

2. पंचमपुर के गोविन्द धधेरे की पुत्री;

लाड़कुंवरि जो सारंधा के नाम इतिहास में प्रसिद्ध है तथा चार धड़कन को मेरी पहली रानी भगवंत कांग्रेस से चार वाहन एवं अंगद राय दूसरी रानी हीरा कांग्रेस से गोपाल राय तीसरी रानी सारंधा से प्रातः स्मरणीय छत्रसाल एवं उत्तरी मांगू गिरी और चौथी रानी झारखण्ड कुंवरि से रतन नशा उत्पन्न हुए तीसरी और चौथी रानी से पैदा हुए क्रमशः लालजी राय और गोपाल राय बचपन में ही मर गए थे पहली रानी के पुत्र पर पराक्रमी वीर सारवाहन वि.सं. 1697 (1640 A.D.) में खैराल (बबीना) के निकट 14 वर्ष की अल्पायु में अकेले बाकी खां से युद्ध करते समय वीरगति को प्राप्त हो गए थे

चम्पतराय महत्वाकांक्षा से रहित नीति निपुण धैर्यवान परम पराक्रमी धर्म रक्षक कुलदीपक बुन्देल भूमि के पुजारी और एक महान बुन्देल केसरी थे इनकी तीसरी रानी सारंधा में इन्हीं के समान गुण

एवं प्रक्रम था जीने मरने की परवाह न करने वाली इस वीरांगना रानी ने पति के संग रणभूमि में सदैव बढ़ चढ़कर भाग लिया पूरा बुन्देलखण्ड ही उनका राज महल था नदी नाले ऊंची नीची पर्वत मालाएं निर्जन वन उसी महल के अंग थे रानी सारंधा ने कभी भी अपने पति को निराश ना होने दिया अपितु वह उन्हें धर्म एवं मातृभूमि पर मर मिटने के लिए उत्साहित करती रही धन्य है ऐसी वीरांगना जिसमें बुन्देलवंश कि नहीं हिंदू धर्म की भी लाज रखी सारंधा को अंतर्मन में हमेशा अपनी शीतला भाभी से हुए संवाद की बातें याद बनी रहती जो उसके अदम्य उत्साह एवं मनोबल बढ़ाने में हवन अग्नि में भी की भांति कार्य करती थी

चम्पतराय ने बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता के लिए हमेशा ओरछा के राजाओं की मदद की वीरसिंह देव जुझारसिंह कार्यवाहक हरदौल देवीसिंह पृथ्वीराज और पहाड़सिंह को अपनी सेवाएं दी देवीसिंह एवं पृथ्वीराज अल्पकालिक राजा रहे परंतु पहाड़सिंह [1698-1720 वि.सं. (1641-1663 A.D.)] दीर्घकाल तक राजा रहे इन्हें भी राव चम्पतराय ने अपनी निष्ठा पूर्ण सेवाएं दी थी परंतु वह धूप प्रवृत्ति के कारण चम्पतराय को अप्रत्यक्ष रूप में शत्रु मानता रहा उसे वह था कि कहीं चम्पतराय मुझे हटाकर ओरछा नरेश ना बन जाए निसंदेह उसने चम्पतराय के विचारों को समझाना था अपने विचारों जैसा उन्हें समझता था उसकी हीरा देवी रानी पालसिंह से भी ज्यादा क्रूर कुटिल एवं नीच प्रवृत्ति की थी करेला कड़वे और नीम पर जा चढ़े को वह अपने कष्टों से अक्षर से है सिद्ध कर रही थी इन दोनों ने चम्पतराय को मरवाने के लिए अनेकों चालें चली परंतु सब विफल रही चम्पतराय के अनेक हितैषी वीर इसी सिलसिले में मौत की भेंट चढ़ चुके थे अतैवचम्पतराय ने ओरछा छोड़ना उचित समझा और महेवा आकर अपनी जागीर में रुकने लगे थे महेवा आने से अनेक वीर बुंदेले उनसे आज उड़े अपने

3. दैलवाड़ा के फतेहसिंह (बेरछा के इंद्रमणी के भाई) की पुत्री;
4. बेरछा के भूपतिसिंह धधेरे की पुत्री;

पुत्र सारवाहन का शोक भूलकर मातृभूमि से विदर्भ नींव को हटाने के लिए वह सक्रिय हो गए यवन सेना से आए देने युद्ध होने लगे घर का भेदी ओरछा नरेश शाहजहां का अंध भक्त बन कर चम्पतराय की बगावत करता था रहता। समय की नियति पर कर चम्पतराय ने शाहजहां से मित्रता पर कर कोच की जागीर ले ली कुछ वर्षों प्रांत दारा नहीं यह जागीर तीन लाख में पहाड़सिंह को दिलवा दी इसी प्रतिशोध में चम्पतराय ने शाहजहां के बीमार पड़ने पर औरंगजेब का पक्ष लिया और श्यामू गढ़ के युद्ध (29 मई सन् 1656, वि.सं. 1713) में धारा को मौत के घाट उतार कर दिल्ली तक पर औरंगज़ेब को अरुण कराया इस युद्ध में रानी सारंधा ने 500 नारी सेना लेकर निर्णायक युद्ध की भूमिका निभाई थी तभी बरबस चम्पतराय के नाम के साथ वीरांगना सारंधा का नाम औरंगज़ेब के मुख से निकल पड़ा था शामगढ़ विजय के उपरांत औरंगज़ेब ने चम्पतराय को 12 हजारी मनुष्य और एरच सहजादपुर कोच कालपी और कनार पकड़ने की जागीर सौंपी इसी में वीरांगना

सारंधा ने मुग़ल सेनापति बहादुर खां का अरबी मुस्की घोड़ा पाया था कालांतर में यही अशुभ हिंदुत्व के लिए अश्वमेघ यज्ञ का अशोक बना वीरांगना सारंधा और चम्पतराय शीघ्र और गंजे के गलत इरादों को भापकर जागीर को लात मारकरसिंह की भांति महेवा वापस आ गए महेवा वासी अपने राजा रानी को पाकर खुशी के मारे झूम उठे और जेब ने दतिया के राव शुभकरण को चम्पतराय वाली जागीर देकर चम्पत दंपत्ति को जिंदा मुर्दा पकड़ने की हिदायत दी थी इस अनैतिक कार्य में ओरछा राजा और मुग़ल भक्त जागीरदार मदद कर रहे थे।

औरंगज़ेब की मनसबदारी लौट आने के बाद ही वि.सं. 1716 (1659 A.D.) में चम्पतराय ने भांडेर की जागीर एवं एरछ का किला जीता था। इसी समय (एरछ युद्ध में) उनका अभिन्न साथी ब्रह्मभट्ट शहीद हो गया था दतिया के राव शुभकरण इसी जिले में किले में चम्पतराय को बड़ी सेना लेकर घेर लिया था शुभकरण की सेना चम्पत दंपत्ति की अदम्य वीरता के आगे टिक न सकी थी और परास्त होकर भागी थी इस युद्ध में शुभकरण का एक पराक्रमी वीर अंडोल खबर शहीद हुआ था

ओरछा की रानी हीरा देवी चम्पतराय और उनके भाई सुजान राय को धोखे से मरवाने के लिए ताना-बाना बुनती रहती कभी संधि का बहाना तो कभी कुल की लाज और कभी छल कपट से निसंदेह रानी हीरा देवी जैसी कुल कितनी कलुषित चरित्र वाली नारी का नमूना शायद ही इतिहास में कहीं मिले

राव शुभकरण ओरछा की रानी हीरा देवी से मिलकर चम्पतराय और सुजान राय को मरवाने के लिए क्रमशः बेरछा और वेदपुर फौजी भेजी ओरछा नरेश के साथी

---

1. इतिहासकार मानते हैं कि औरंगज़ेब ने चम्पतराय के साथ मनसबदारी देने का छल किया था और 6 नवंबर 1661 (संवत् 1718) में मरवा डाला था।

सुजानसिंह हीरा देवी के कहने से बेरछा जाने वाली फौज के साथ में गया था वेदपुर के किले में सुजान राय शुभकरण की सेना द्वारा निर्णय लिए गए भयंकर युद्ध हुआ सुजान राय अपने पुत्रों सहित वीरगति को प्राप्त हो गए बीमार चम्पतराय को अनुज की मौत की खबर जल्दी ही बेरछा में मिल गई चम्पतराय बेरछा से जटवारा होते हुए डलवाला आए और अपने विशेष साथियों से भविष्य की योजना बनाकर सहारा की ओर चल पड़े सहारा में दतिया ओरछा की सेना के बढ़ते दबाव के कारण चम्पतराय को साहिब राय धमधेरे ने गुप्त मार्ग से किले के बाहर निकाल दिया गुप्त रूप से कुछ सैनिकों के साथ वह सीताबाड़ी में रुक गए यह निरापद स्थल अति उपयुक्त था परंतु अस्वस्थ चम्पतराय को धोखे में रखकर धमधेरे सैनिक मोर गांव के निकट सहारा से 22 किलोमीटर दूर ले गए और उन पर प्राणघातक हमला कर दिया वीरांगना रानी यह देखकर वो चक्की रह गई और पक्षा

घोड़े को आगे बढ़ाया तभी एक विश्वासघाती धमधेरे सैनिक ने उनके घोड़े की लगाम पकड़ ली रानी लाल परी ने तलवार के भयंकर बाढ़ से कई को मौत के घाट उतार दिया और पति के पास जा पहुंची जीवन की अंतिम घड़ियां जानकर वीरांगना अपने पति के साथ शहीद हो गई गोधूलि बेला में सूर्यास्त के साथ यह दोनों भी रात में लाल प्रश्नों में विलीन हो गई

सारंधा चम्पतराय छत्रसाल का प्रादुर्भाव

[संवत् 1706 (1649 A.D.) - 1788]

सारंधा और चम्पतराय मातृभूमि के पूर्ण स्वतंत्रता को पाने के लिए यवन सत्ता से लोहा लेने से चूकते ना थे अतैव शाहजहां [वि. सं. 1684-1713 (1627-1656 A.D.)] के लगातार आक्रमण से वीर चम्पतराय और वीरांगना सारंधा पहाड़ों और जंगलों में रहने को मजबूर हो गए थे ओरछा नरेश पालसिंह भीय 1 सप्ताह के सहायक थे ऐसी विकट परिस्थिति में कुमार छत्रसाल के प्रादुर्भाव **[1706 वि.सं. (1649 A.D.)]** की घड़ियां पास आती जा रही थीं। चम्पतराय के विश्वस्त साथी एवं उनके सहायक सैनिक उनकी जीवन रक्षा कर रहे थे।

दैलवाड़ा के परमज्योतिषी एवं पराक्रमी साथी बखत बली ब्रह्मभट्ट ने राजा चम्पतराय को बताया था कि ज्येस्ठ शुक्ला तृतीय को उत्पा हो रहे शिशु का जन्म गोधूलि बेला के कुछ ही क्षण उपरांत जन्म हो तो वह चक्रवर्ती सम्राट बनेगा। यह सुनकर रानी चम्पतराय

---

1. चम्पतराय को बखतबली ब्रह्मभट्ट (भानु भट्ट के पिता) ने ज्योतिष गणना के आधार पर बताया था कि उनकी मृत्यु अब अति नजदीक है, 15 दिन शेष हैं। ऐसा जानकर उन्होंने अपनी योजना बनाई थी और बली पटेल (महाबली) को भविष्य की सारी जिम्मेदारी सौंपी थी।

कार्तिक शुक्ला एकादशी वि.सं. 1718, (कांठर के लेखों में इस घटना का विस्तृत वर्णन मिलता है।)

से बोली--स्वामी जब गोधूलि बेला आने को हो तब मुझे किसी वृक्ष की डाल पर उल्टा लटका देना और गोधूलि बेला के समाप्त होने के चरण अर्थात जन्म मृत्यु के समय मुझे उतरवा देना ताकि उसी क्षण बालक का जन्म हो बालक का जन्म हो मैं इस चरण के लिए अपने जीवन को जोखिम में डालने से कदापि हिचकी नहीं भले मेरी जान चली जाए धन्य है ऐसी मां जिसने ऐसे पुत्र को पाने की लालसा रखी थी और मातृभूमि पर हिंदुत्व रक्षक चक्रवर्ती सम्राट के जन्म देने हेतु जीवनदान पर लगाने से पीछे नहीं हटी थी।

घर का भेदी लंका ढाबे को चरितार्थ करते हुए अपने ही लोगों से नए रानी सारंधा के प्रसव काल की जानकारी मुग़ल सैनिकों को दे दी थी दिन ढलते ही यवन सैनिकों ने मोर पहाड़ी को दूर से चारों तरफ से घेर लिया था ऐसी विकट परिस्थिति को देखकर चम्पतराय दंग रह गए थे रानी की अभिलाषा पूर्ति में फ्रांस की ही अवशेष था कि जवान सैनिकों ने धावा बोल दिया गोधूलि बेला की अंतिम क्षण में जन्मे बालक को चम्पतराय ने तुरंत गोद में ले लिया रानी को कंधे पर चढ़ा कर कामनी दाई का हाथ पकड़े चम्पतराय मुग़ल सैनिकों के आंखों के सामने ही मोर पहाड़ी से मोर की भांति उड़कर दूसरी पहाड़ी पर पहुंच गए पर शत्रु की आंखों से ओझल हो गए मुग़ल सेना किंकर्तव्यविमूढ़ बनी देखती ही रह गई चम्पतराय दंपत्ति नवजात बालक एवं कानूनी सहित सुरक्षित निकल गए

चम्पतराय के साथी व सैनिक इस घटना से आश्चर्य आश्चर्यचकित हो गए उनकी अंतरात्मा में चम्पत दंपत्ति वह नवजात शिशु पर अटूट श्रद्धा गई उन्हें विशिष्ट दैवीय शक्ति प्राप्त है ऐसा सोच कर अपना जीवन सेवा का व्रत ठान लिया और इस घटना की जानकारी बुन्देलखण्ड में विद्युत गति से फैल गई थी

वीरमाता लाल कुंवरि ने अपने नवजात बालक को शत्रु चलन की लालसा में बड़े लाड प्यार से पाला पर शत्रु चाल कहकर पुकारने लगी रानी को अंतरात्मा में लगा अरे यह शत्रुओं के साले ने के अतिरिक्त गर्मियों के छात्रों सिर मुकुट ताजों को भी विध्वंस करेगा छत्रपति का भी छत्रपति बनेगा अब रानी इस नन्हे बालक को छत्रसाल के नाम से पुकारने लगी छोटे बड़े व बूढ़े भी अब नन्हे बालक छत्रसाल को बड़े प्यार से छत्ता कहकर पुकारने लगे जैसे छात्र छात्र से धूप व वर्षा का निवारण हो जाता है वैसे ही छत्ता बुन्देलखण्ड में मुगलों की दास्तां से एवं विधियों के आतंक का निवारण कर स्वराज्य की स्थापना करेंगे इसी कारण वह सबके बीच आकर्षण का केंद्र से छत्रपति ओके भी क्षेत्र बनकर वह वस्तुतः महाराजा छत्रसाल के लाए और अलौकिक अलौकिक निधियों के सम्राट बनकर चक्रवर्ती महाराजा कहे गए भविष्यवाणियां

छत्रसाल का जन्म दिन सोमवार है परंतु इतिहासकारों ने शुक्रवार लिखा है उन्हें चित्र पक्षी इतवार है और की ओर दृष्टिपात करना चाहिए

आप्तग्रंथों की साकार हुई।

भविष्य की इसी इसी धरोहर ने रानी लाल कोरी की कोख को पुनीत किया था धर्म ने साक्षात बालक बनकर कुमार छत्रसाल के रूप में अनेक चमत्कारी क्रियाओं के द्वारा माता पिता को आनंदित किया था एवं उन्हें निर्भीक बनाया था

एक बार सारंधा (लाड़कुंवरि) ध्यान मग्न थी उन्होंने देखा कि कुमार छत्रसाल का खटोला (छोटा पलंग पालना) शिव सागर में है जिस पर शेषनाग भगवान विराजमान हैं पलंग सहस्त्र पढ़ा धारी शेष की शैया पर है जब तक सारंधा कुछ और सोच थी तभी छत्रसाल ने किलकारी भरी मारी शिक्षण उनका ध्यान उचट गया और पलंग पर उसी दृश्य के अनुरूप छत्रसाल को देखा धन्य है ऐसी मां जिसने ऐसा दृश्य देखा

चंपत-दंपत्ति ने बचपन के सभी संस्कार करवाएं बालक चंद्र कलावत बढ़ने लगा। बालक ने दस ग्यारह वर्ष की अवस्था [वि.सं. 1717 (1660 A.D.)] में विंध्यवासिनी देवी के पास एक या 1 सेनापति का वध किया था हो क्यों ना? पूत के पांव पालने में ही दिखने लगते हैं बचपन में छत्रसाल मंदिर जाते ध्यान लगाते और विचित्र लीलाएं करते बालक 16:00 बजे स्टोर में नन्ना छत्रसाल मगन रहता माता पिता के साथ युद्ध की विभीषिका देख देख कर भी निर्भय बन चुके थे। [वि.सं. 1718 (1661 A.D.)] मैं वह माता-पिता से विहीन हो गए थे इसी कारण उनके अंतरण में विद्रोह की ज्वाला प्रबल हो उठी थी लोहे से लोहा काटता है कटता है ऐसा सोचकर वह डेढ़ वर्ष [वि.सं. 1722-1724 (1665-1667 A.D.)] से अधिक समय तक मुग़ल सेना में रहे तत्पश्चात वह रुद्रावतार छत्रपति शिवाजी से मिले उनका हार्दिक शुभ आशीष पाकर कुमार छत्रसाल बुन्देलखण्ड वापस लौटे तीन वर्ष [वि.सं. 1725-1727 (1668-1670 A.D.)] बुन्देलखण्ड के चप्पे-चप्पे में घूम कर मिजबिल का संचयन किया और [वि.सं. 1728 (1671 A.D.)] कि वैशाख शुक्ल पंचमी को यवन सल्तनत के विरुद्ध बुन्देलखण्ड के स्वराज्य का बिगुल बजा दिया। इसी काल में औरंगज़ेब ने के सेनापतियों से सैकड़ों युद्ध हुए।

जिस प्रकार से कृष्ण के संग बलराम ने धनु जो का सहार किया था उसी प्रकार से इरशादुल छत्रसाल ने कर दिखाया वीर छत्रसाल का निष्कलंक महाप्रभु प्राणनाथ जी से [वि.सं. 1739 (1683 A.D.)] माघ पूर्णिमा को मऊ सहानिया के त्रिवेणी दरवाजे के पास मिलाप हुआ था महाप्रभु के आशीर्वाद से अद्वितीय बल पौरुष पाकर वे निर्भीक बन गए। [वि.सं. 1740 (1683 A.D.)] मैं उनका राज्य अभिषेक महाप्रभु के हाथों पन्ना

---

1. संवत् 1724 में पंडित कृष्ण दास के अनुसार अगहन सुदी पंचमी को तथा संन् 1667 ई. के अंतिम महीनों में (डा. बी डी गुप्ता के अनुसार)

2. तुम दनुज प्रहारे, हम यवन प्रहारे हैं।

में हुआ था अश्रु के दमन एवं प्रजा में सुख शांति हेतु धरा पर धर्म की पुनर्स्थापना हुई महाराजा छत्रसाल ने धर्म दूत बनकर समूचे विश्व में सब धर्म प्रचारक धर्म जागने की शुरुआत की थी वे

जगत के जगत गुरु भी कहलाए प्रस्तुत है वह अवतार थे उनकी तुलना राजाओं व संसदीय महापुरुषों से करना उचित नहीं है जगती तल से असुरों का नाश करना और प्रजा की रक्षा करना उनके जीवन के मूल मंत्र थे उनका आखिरी महासंग्राम [वि.सं. 1783-1784 (1726-1627 A.D.)] मुहम्मद खाबंग से हुआ था उनके अतुल बल से मार खाए असुरों ने फिर बुन्देलखण्ड पर कुदरती डाली नहीं डाली

बहुमुखी विद्या कला संपन्न महाराजा छत्रसाल जन मन के देव बनकर सर्वत्र पूजे जाने लगे जनश्रुति है कि भाग्यशाली लोगों को आज भी महाराजा छत्रसाल के दर्शन होते हैं खता छत्रसाल महाबली करियो भली भली का जाप करने से अनेक नदियां सिद्धियां प्राप्त होती हैं निर्भीकता आ जाती है और मनोकामना की पूर्ति होती है

पन्ना में महाराजा छत्रसाल परवर्ती राजा

चम्पत छत्रसाल ने औरंगज़ेब सत्ता को बुन्देलखण्ड से उखाड़ फेंकते हुए पावन पन्ना नगरी को राज्य की राजधानी बनाया था चम्पतराय के पात्रों में कुंवर हृदयशाह कुंवर जगतराज राव पदमसिंह धीमान भारती चंद्र आदि बड़े पराक्रमी हुए हैं महाराजा छत्रसाल ने राजकुमार वर्षा को पन्ना की गाडी एवं कुंवर जगतराज को नव स्थापित जैतपुर की गाड़ी का भार सौंपा था अन्य पुत्रों को रियासतें जागी रही थी 70 पुत्र बाजीराव पेशवा को तिहाई राज्य देकर वसुधैव कुटुंबकम की भावना सहित भविष्य की सुदृढ़ नींव रखी थी

महाराजा छत्रसाल की मूल पन्ना गादी की परंपरा निम्न प्रकार है--

1. प्रातः स्मरणीय महाराजा छत्रसाल वि.सं. 1740-1788 (1683-1631 A.D.)
2. महाराजा हृदयशाह वि.सं. 1788-1794 (1731-1737 A.D.)
3. महाराजा सभासिंह वि.सं. 1794-1809 (1737-1752 A.D.)
4. अमानसिंह महाराजा वि.सं. 1809-1815 (1752-1758 A.D.)

---

1. विजया अभिनंदन बुद्ध जी, ब्रह्मसृष्टि सिरताज

हाथ हुकुम छत्रसाल के, दियो सो अपनो राज ॥64॥

साखी कहके थाल ले, तिलक करयो श्रीराज।

भाल माहिं छत्रसाल के, कही आप बैठो महाराज ॥65॥ (वीतक 60)

महाराज अधिपति भये, महाराजा छत्रसाल।

राजन में राजा भये, असुरन केरे काल ॥65/60॥ (वृतांतमुक्तावली)

2. धन्य धन्य छत्रसाल बुन्देला, आप गुरु सिगरो जग चेला (लोकोक्ति)

5. महाराजा हिंदूपतिसिंह	वि.सं. 1815-1833 (1758-1776 A.D.)
6. महाराजा अनुरुद्धसिंह	वि.सं. 1833-1843 (1776-1786 A.D.)
7. महाराजा धोकलसिंह	वि.सं. 1843-1855 (1786-1798 A.D.)
8. महाराजा किशोरसिंह	वि.सं. 1855-1891 (1798-1834 A.D.)
9. महाराजा हरिवंशराय	वि.सं. 1891-1906 (1734-1849 A.D.)
10. महाराजा नृपतिसिंह	वि.सं. 1906-1927 (1849-1870 A.D.)
11. महाराजा रुद्रप्रतापसिंह	वि.सं. 1827-1950 (1870-1893 A.D.)
12. महाराजा लोकपालसिंह	वि.सं. 1850-1954 (1893-1897 A.D.)
13. महाराजा माधवसिंह	वि.सं. 1854-1959 (1897-1902 A.D.)
14. महाराजा यादुवेंद्रसिंह	वि.सं. 1959-2020 (1902-1963 A.D.)
15. महाराजा नरेंद्रसिंह	वि.सं. 2020-2055 (1963-1998 A.D.)
16. महाराजा मानवेंद्रसिंह*	वि.सं. 2055-.... तक (1998..... A.D.)

महौनी से परना तक

बुंदेलों की प्रारंभिक राजधानी में होनी थी (ग्यारहवीं सदी में) तत्पश्चात गढ़कुंडार और फिर ओरछा राजधानी बनी ओरछा नरेश महाराजा पुत्र प्रताप ने अपने दो विशिष्ट पुत्रों को अलग-अलग भार सौंपा– (1) ओरछा का महाराजा भारती चंद्र को बनाया और (2) पृथक रूप से लूना महेवा की जागीर अलग करके उदया जीत को वहां का राग बनाया इस प्रकार महेवा में उदयाजीत [वि.सं. 1575-1632 (1518-1575 A.D.)] का प्रशासंन् चलने लगा महेवा नाम से मऊ के निकट एक दूसरा महेवा गांव बसाया जो कालांतर में राजधानी के रूप में विकसित हुआ इसका विस्तार मऊ सहानिया तक रहा जहां आज भी खण्डहर वस्तु व्यवस्थित भवन देखने को मिलते हैं प्रारंभ में छत्रसाल ने यही अपनी राजधानी स्थापित की पूरा क्षेत्र मऊ के नाम से प्रसिद्ध हो गया यथा मऊ महेवा मऊ मुकरबा मऊ सहानिया मऊरानीपुर आदि

अब महाराजा छत्रसाल ने निष्कलंक बुध महाप्रभु प्राणनाथ जी के शुभ आशीष से पन्ना को बड़ी राजधानी बनाया था जहां छत्रसाल की 34वीं वर्षगांठ [वि.सं. 1740 (1683 A.D.)] के समय जो धूल बेला पर में श्री प्राणनाथ जी ने छत्रसाल जी को महाराजा पद देकर राजतिलक किया था धन्य था वह क्षण

श्री प्राणनाथ जी द्वारा स्थापित यह गादी परंपरा महाराजा छत्रसाल से लेकर अध्यापक

- वर्तमान में इनके अनुज कुमार लोकेंद्रसिंह एक सक्रिय राजनेता है जो विधायक एवं संसद सदस्य भी रह चुके हैं

चली आ रही है। महाराज श्री छत्रसाल जी ने पन्ना की घाटी पर भार दिग्विजय राजकुमार कु. हृदयशाह को वि.सं. 1788 (1731 A.D.) मैं वन गमन के पूर्व ही दिया था।

ओरछा राज्यवंश के

चन्देरी राज्य की राजा परंपरा

चन्देरी में ओरछा राज्य वंश की शाखा पल्लवित हुई ओरछा के महाराजा राजस्थान राम शाह के जेष्ठ पुत्र ने चन्देरी पर विजय पाई थी सभी से चन्देरी में बुन्देला राज्य आया।

(1) राजा भरतसिंह -- 1673-1687 वि.सं. (1616-1630 A.D.)]

ओरछा नरेश मधुकर शाह के पुत्र भरतसिंह सात भाई थे उनके पिता राम साह ओरछा के राजा थे वह इन्हें बहुत प्यार करते थे भरतसिंह मैं चन्देरी जीतकर वहीं के राजा बने थे राजा भरतसिंह बादशाह शाहजहां के कृपा पात्र थे अतैवमुगलों से उनका कभी बैर नहीं रहा राजा भरतसिंह ने मुग़ल सेना के साथ काबुल कंधार की चढ़ाई में भाग लिया था उनका मैं अवसान हो गया था

(2) राजा देवीसिंह -- वि.सं. 1687-1720 (1630-1663 A.D.)

राजा भरतसिंह के बाद में उनका पुत्र देवीसिंह चन्देरी का राजा हुआ ओरछा के महाराजा गुलजारसिंह की मृत्यु के उपरांत 2 वर्ष तक राजा के आदेश पर वह ओरछा की गाड़ी पर भी रहे परंतु जनता के सहयोग से वापस चन्देरी लौट गए थे ओरछा महाराजा पहाड़सिंह एवं दतिया के राव शुभकरण के सहयोगी होने के कारण राजा देवीसिंह का व्यवहार राजा चम्पतराय के प्रति अनुकूल नहीं रहा अतएव चम्पतराय की मौत के षड्यंत्र में यह भी थे राजा देवीसिंह का अवसान में हुआ था

(3) राजा दुर्गसिंह -- 1720-1744 वि.सं. (1663-1687 A.D.)

---

1. महाराजा छत्रसाल ने परना की गादी युवराज कुं. हृदयशाह को किस कारण सौंपी थी, उसका उत्तर संभवत: निम्न सवैया में विद्यमान है। यथा:--

जौ लौं तुरकांदल पंचम, तौ लौं रहिब हिन्दुवान दुखारौ॥

निर्जीव हते फिर जींव उठे, अरु देखत ही छत्ता दल भारौ॥

देश प्रदेशहि डंक परी, हिरदेश जियै जौ लों ध्रुव तारौ॥

एकन सौं नदियां न बंधे, मोरो आयो समुन्द्र को बांधन हारौ॥ (छत्रसाल काव्यांजलि, पृ. 52)

2. महाराजा छत्रसाल अंतिम समय में वहां से मऊ आकर रहने लगे थे।

राजा देवीसिंह के अवसान पर उनके जेष्ठ पुत्र दुर्गसिंह [वि.सं. 1720 (1663 A.D.)] चन्देरी के शासक हुए यह बहुत पराक्रमी थे अपने राज्य की सुरक्षा हेतु इन्होंने राजस्थान के लूटमार करने वाले बंजारों एवं दक्षिण से उत्तर की तरफ बढ़ रहे मराठों से भयंकर टक्कर लेकर चन्देरी राज्य को सुरक्षित कर लिया था ओरछा नरेश पालसिंह एवं दतिया के रावण के संपर्क में रहने के कारण चम्पतराय की मौत के सहभागी थे इनका अवस्था में हुआ।

(4) राजा दुरजनसिंह -- 1744-1793 वि.सं. (1687-1736 A.D.),

राजा दुर्गसिंह के अवसान के बाद उनका बड़ा पुत्र दुर्जनसिंह चन्देरी का राजा हुआ इनके प्रारंभिक काल में ही महाराजा छत्रसाल ने पन्ना को राजधानी बनाकर समग्र बुन्देलखण्ड को मुग़ल सप्ताह से मुक्त करा लिया था चन्देरी राज्य के अधिकांश भाग में महाराजा छत्रसाल की शासंन् व्यवस्था थी राजा दुर्जनसिंह का शासंन् मात्र चन्देरी के आसपास तक ही सीमित रह गया था इनका आगमन में हो गया था।

राजा दुरजनसिंह के बाद परवर्ती चन्देरी के राजागण

राजा दुरजनसिंह का अवसान मैं होने के बाद चन्देरी में निम्न राजा हुए--

अनिरुद्ध सिंह [वि.सं. 1807-1832 (1750-1775 A.D.)]

रामचंद्र [वि.सं. 1832-1859 (1775-1802 A.D.)]

प्रजापाल [1859 वि.सं. (1802 A.D.)] मात्र पंद्रह दिन राजा रहे,

मोर प्रहलाद [वि.सं. 1859-1868 (1802-1811 A.D.)];

तत्पश्चात अंग्रेजों ने उन्हें पदच्युत कर दिया फिर कालांतर में एक संधि के अनुसार वि.सं. 1887 (1830 A.D.) में चन्देरी राज्य का एक तिहाई भाग (बानपुर, तालवहेट एंव कैलगुंवा) गोवा मोर प्रहलाद को मिला था इन्होंने बानपुर को अपनी राजधानी बनाया इनकी मृत्यु वि.सं. 1899 (1842 A.D.)

में हो गई थी तब मर्दनसिंह [वि.सं. 1899 (1842 ई॰)] में भानपुर के राजा हुए अंग्रेजों का विरोध करने पर उन्हें देश निकाला हुआ अंत में [वि.सं. 1636 (1879 A.D.)] में उनका निधन वृंदावन में हुआ था।

---

1. महाराजा छत्रसाल जी की दिग्विजय यात्रा के समय यह [वि.सं. 1743-44 (1686-1687 A.D.)] में मौन रहा था।

राजनीति अनुशीलन

महाराज छत्रसाल के जीवन काल में चन्देरी में निम्न राजा गादी पर रहे--

राजा देवीसिंह [वि.सं. 1687-1720 (1630-1663 A.D.)]

राजा दुर्गसिंह* [वि.सं. 1720-1744 (1663-1687 A.D.)]

दुर्जनसिंह [वि.सं. 1744-1793 (1687-1636 A.D.)]

राजा देवीसिंह एवं राजा दुर्गसिंह का व्यवहार मित्र वक्त ने था यह सभी पहाड़सिंह के सहयोगी थे पलट ए राजा चम्पतराय को हमेशा इनसे धोखा मिला यह दोनों चम्पतराय को जिंदा मुर्दा मुग़ल सत्ता के हवाले करना चाहते थे चम्पत सुख छत्रसाल ने इनको बारीकी से परखा था फलत है स्वतंत्र बुन्देलखण्ड के अभियान में इन की जमकर खबर ली थी राजा दुर्जनसिंह कभी भी छत्रसाल से लड़ने की हिम्मत ना जुटा सका था वस्तुत है महाराजा छत्रसाल ने कुल परंपरा को ध्यान में रखकर इन पर उधार भावना ही रखी थी

ओरछा राज्यवंश: दतिया के राजागण

ओरछा के महाराजा वीरसिंह जूदेव ने अपने पुत्र भगवान राय को दतिया बड़ौनी आदि की जागीर देकर दतिया राज्य की नींव डाली थी।

(1) राजा भगवानराय--

शासंनकाल [वि.सं. 1683-1713 (1626-1650 A.D.)]

राजा भगवानराय अपने माता पिता के समान पराक्रमी थे, उन्होंने अपने बल पूर्व पुरुष से दतिया को वैभवशाली बनाकर ओरछा के बाद दतिया को दूसरा स्थान प्रदान किया था। भगवानराय मुगलों के हितेषी एवं सहायक थे। उन्होंने शाहस्ता खां और आसफ खां के साथ मुग़ल सैन्य को अपनी सेवाएं दी थी। शाहजहां ने खुश होकर भगवान राय को वि.सं. 1688

- संवत् 1740 में महाराजा छत्रसाल के राजतिलक के विरोध में दुर्गसिंह आदि 4 लोगों ने विरोध पत्र भेजा था इसका प्रमाण तत्कालीन ग्रंथ वृतांतमुक्तावली के प्रकरण संबंध में निम्न प्रकार मिलता है

  दुरगसिंह नृप रहे चंदेरी। दलपतिराय दलीपुर घेरी॥
  सिंह सुजान ओरछ माहीं। नृपति पहार गढ़ा है जाहीं ॥22॥
  दंभ बड़ो उर चारों ल्याये। करि कै गर्व लिखे पथवाये॥
  राखि एक वैरागी दर में। लैके तिलक करायो घर में ॥23॥
  ऐसे नृप तुम हुहौ कैसे। करहु कूह बालक बुधि जैसे॥
  हम चारों नृप थापै जुरि कै। करि कै तिलक तबहिं अरि मुरकै ॥24॥
  लगै आन कोऊ अरि नाहीं। होइ प्रमान साहि घर माहीं॥
  नृप छत्रसाल लिखे मुनि ऐसे। उत्तर हिये विचारे तैसे ॥25॥

(1631 A.D) में भांडेर की जागीर और पांच हजारी मनसब दिया था। भगवानराय के अनुज नरहरिदास मुग़ल सेना में रहे और एक युद्ध में शहीद हुए थे।

राजा भगवान राय मुग़ल सत्ता के समर्थक होने के कारण चम्पतराय के बुन्देल राज्य अभियान में सहायक ने बन सके थे भगवान रायका लगाओ ओरछा नरेश पालसिंह से अत्याधिक था। वि.सं. 1713 (1656 A.D.) में इनकी मृत्यु उस समय हुई थी जब धारा तथा और औरंगज़ेब अपनी अपनी गोटे चला रहे थे बीमार शाहजहां प्रेषित के लिए जिंदा था।

(2) राजा शुभकरण

शासनकाल: [वि.सं. 1713-1740 (1656-1683 A.D.)

राजा भगवान राय के अवसान के बाद उनका पुत्र शुभकरण वि.सं. 1713 (1656 A.D.)में दतिया की गादी पर विराजमान हुआ शुभकरण ने वि.सं. 1715 (1658 A.D.) औरंगज़ेब का साथ दिया था इसी समय उनका भाई पृथ्वीराज मारा गया था औरंगज़ेब ने शुभकरण को बुन्देलखण्ड का सूबेदार बनाया था चम्पतराय की औरंगज़ेब से अनबन होने का पर शुभकरण ने वि.सं. 1718 (1661 A.D.) में रानी

हीरा देवी पत्नी राजा पहाड़सिंह ओरछा के साथ षड्यंत्र रच कर पहले सुजान राय और फिर बुन्देली श्री महाराजा चम्पतराय एवं वीरांगना को मौत के घाट पहुंचावाया था

चम्पत सूत्र छत्रसाल को भी प्रीत बैरी शुभकरण से बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता के अभियान में कोई सहायता ना मिली अपितु वह हमेशा विश्वासघात का प्रतीक बना रहा शुभकरण ने वि.सं. 1723 (1666 A.D.) में अराकान और वि.सं. 1732 से1737 (1675 -1680 A.D.) तक दक्षिण की दवाइयों में औरंगज़ेब की बहुत मदद की थी उनका पुत्र दलपति राव भी शुभकरण के साथ औरंगज़ेब के सैन्य अभियानों में सम्मिलित होता रहा था। वि.सं.1740 (1683 A.D.) मैं शुभकरण का देहावसान हो गया।

(3) राजा दलपतिराय--

शासनकाल: [वि.सं. 1740-1764 (1783-1707 A.D.)

दलपतिराय को वि.सं. 1740 (1683 A.D.) में दतिया के राजा शुभकरण की मृत्यु के बाद बनाया वह पराक्रमी एवं एवं औरंग का परम हितैषी था दलपति राव ने अपनी वीरता के बल पर औरंगज़ेब से अनेकों पुरस्कार किताब एवं तीन हज़ारी मनसबदारी पाई थी। औरंगज़ेब-भक्त दलपति राय का निधन वि.सं. 1764 (1707 A.D.) में औरंगज़ेब के बाद ही हुआ था।

---

* महाराजा छत्रसाल के राजतिलक का दलपति राय ने भी विरोध किया था।

(4) राजा रामचंद्र राव--

शासनकाल: [वि.सं. 1764-1793 (1707-1736 A.D.)]

राजा दलपतिराय की वि.सं. 1764 (1707 A.D.)] में इहलीला समाप्त होने पर राम रामचंद्र दतिया के राजा हुए थे। औरंगज़ेब के निधन (वि.सं. 1763) (1706 A.D.) के उपरांत मुग़ल सत्ता का अंत जैसे ही हुआ मुग़ल सल्तनत का दबदबा खत्म हो चला था। फिर भी वि.सं. 1780 (1723 A.D.) में जाट सरदार बदनसिंह के विरोधियों ने भाग लिया था तथा वि.सं. 1793 (1736 A.D.) में इन्होंने कड़ा जहानाबाद के भगवंतसिंह खींची के विरुद्ध बुरहानपुर में आदत खां की सहायता की थी जिसमें देशभक्त खींची शहीद हुए थे राव रामचंद्र भी वि.सं. 1793 (1736 A.D.) मैं परलोक सिधार गए थे।

राजा रामचंद्र राव परवर्ती दतिया के राजागण

राजा रामचंद्र राव की बड़ी रानी सीता जी के कारण उनका निधन मैं हो गया तब इंद्रजीत दतिया के राजा हुए थे देश की स्वतंत्रता तक निम्न दतिया के राजा हुए हैं

1. राजा इंद्रजीत [वि.सं. 1793-1819 (1736-1762 A.D.)]

2. राज शत्रु जीत [वि.सं. 1819-1858 (1762-1801 A.D.)]

3. राजा परीक्षत [वि.सं. 1858-1896 (1801-1839 A.D.)]

4. राजा विजयबहादुर [वि.सं. 1896-1914 (1839-1857 A.D.)]

5. राजा भवानीसिंह [वि.सं. 1914-1964 (1857-1907 A.D.)]

6. राजा गोविंदसिंह [वि.सं. 1964-2009 (1907-1952 A.D.)]

राजनीति अनुशीलन

चम्पतराय एवं छत्रसाल के जीवन काल में निम्न दतिया के राजा हुए हैं

1. भगवानराय वि.सं. 1683-1713 (1626-1656 A.D.)

2. शुभकरण वि.सं. 1713-1740 (1656-1683 A.D.)

3. दलपतिराय वि.सं. 1740-1764 (1783-1707 A.D.)

4. रामचंद्र राव वि.सं. 1764-1793 (1707-1736 A.D.)

चम्पतराय के प्रति भगवान राय एवं शुभ करण की भावना शत्रु वत रहे इसी कारण पत्र के स्वरूप महाराजा छत्रसाल को सदा इनसे होशियार रहना पड़ा। वि.सं. 1743

(1686 A.D.) में महाराजा छत्रसाल ने स्वतंत्र बुन्देल की स्थापना के दिग्विजय पर दलपति राय को सदा के लिए सबक सिखा दिया था शुभकरण की ऊंची चालें चम्पतराय की मौत का कारण बनी थी जन समर्थन होने के कारण दतिया राजाओं को छत्रसाल के विरुद्ध सिर उठाने का कभी भी मौका ना मिला था दतिया राज्य के अधिकांश भाग पर छत्रसाल की तूती बोलती थी काश दतिया के शासक हिंदुत्व समर्थक होते तो यवन सल्तनत का नामोनिशान न रहता महाराजा छत्रसाल ने इन राज्यों के अस्तित्व को समाप्त करने की कभी भी नीति ने बनाई थी महाराजा छत्रसाल का हृदय बहुत उदारता से भरा हुआ था इसी कारण और था दतिया चन्देरी आधी रियासतों का अस्तित्व कायम रहा

दिल्ली में मुग़ल सल्तनत

दिल्ली में मुग़ल बादशाह बाबर सन् 1526 में सिंहासंन् पर आरूढ़ हुआ था, उसके पश्चात उसका लड़का है हुमायु संन् 1530 (वि.सं. 1587) में बादशाह बना था बाबर के समय ओरछा में महाराजा रूद्र प्रताप बुन्देलखण्ड के अधिपति थे शेरशाह सूरी द्वारा हुमायूं परास्त होकर रेगिस्तान की ओर भाग गया था वही उम्र कोर्ट में अकबर का जन्म हुआ था। शेरशाह सूरी की कालिंजर विजय के उपरांत मृत्यु होने पर हुमायु पुनः दिल्ली के तख्त पर विराजा था। हुमायूं [वि.सं. 1587-1613 (1530-1556-1558 A.D.)] के शासंन्काल में ओरछा में भारतीय चंद्र राजा थे और अकबर [वि.सं. 1613-1662 (1158-1605 A.D.)] के शासंन्काल में मधुकर शाह महान प्रतापी राजा थे और राम शाह मधुकर शाह के उपरांत [वि.सं. 1649 (1592 A.D.)] में ओरछा के राजा बने थे जो अकबर के हितेषी थे रामसा के अनुज वीरसिंह देव अकबर से सामंजस्य न रखने के कारण विरोधी थे परंतु वीरसिंह देव ने जहांगीर को दिल्ली का शासक बनवा कर ओरछा की गाड़ी प्राप्त कर ली थी जहांगीर [वि.सं. 1662-1684 (1605-1627 A.D.)] ने कभी भी बुन्देलखण्ड पर आक्रमण नहीं किया अपितु अति मधुर संबंध रखें यह संयोग ही था कि ओरछा नरेश वीरसिंह देव और दिल्ली पति लगभग एक ही समय स्वर्गवासी हुए थे जहांगीर के बाद दिल्ली का ताज शाहजहां [वि.सं. 1684-1713 (1627-1656 A.D.)] के पास आया उस समय ओरछा में महाराजा वीरसिंह देव थे परंतु इनके निधन पर इसी वर्ष जुझारसिंह राजा हुए थे, वह [वि.सं. 1691 (1634 A.D.)] में मुगलों के द्वारा मारे गए अतैव सात वर्ष के भीतर [वि.सं. 1691-1698 (1634-1641 A.D.)] ओरछा की गाड़ी पर 5 राजा आसींद देखे गए जुझारसिंह, देवीसिंह,

---

1. बाबर दिल्ली की गादी पर सन् 1526 से 1530 (1583 1587 वि.सं.) तक रहा।

पृथ्वीसिंह, चम्पतराय और पहाड़सिंह। ओरछाराज्य का एक यह एक भयंकर संक्रमण काल था जिसमें बुन्देलखण्ड की दिशा ही बदल गई थी एक वर्ग गुलामी की मानसिकता से ग्रसित हो उठा और दूसरा वर्ग बुन्देलखण्ड की आजादी के लिए मचल उठा दूसरे वर्ग का नेतृत्व चम्पतराय ने स्वीकार किया था ओरछा दतिया चन्देरी के शासक चम्पतराय के खिलाफ होकर मुग़ल सत्ता के हिमायती बन गए शाहजहां के उपरांत औरंगज़ेब (सन् 1656-1707 अर्थात वि.सं. 1713-1764 तक) दिल्ली का शासक हुआ उसके समय ओरछा की गाड़ी पर राजा पहाड़सिंह [वि.सं. 1698-1720 (1641-1663 A.D.)], राजा सुजानसिंह [वि.सं. 1720-1729 (1663-1672 A.D.)] राजा इंद्रमणी [वि.सं. 1729-1732 (1672-1675 A.D.)] राजा जसवंतसिंह [वि.सं. 1732-1740 (1675-1683 A.D.)] राजा भगवंतसिंह [वि.सं. 1740-1745 (1683-1688 A.D.)] और राजा उद्दैतसिंह [वि.सं. 1745-1793 (1688-1636

A.D.)] विराजमान रहे हैं औरंगज़ेब के शासंन्काल में ही दिल्ली सल्तनत तहस-नहस हो गई थी और औरंगज़ेब 27 वर्ष तक दिल्ली से निर्वाचित रहा और औरंगाबाद में ही इंतकाल हो गया था उसके मरते ही मुग़ल सल्तनत का खण्डहर भी ढह गया था दिल्ली के आसपास थोड़े भूभाग पर ही उसके वंश का अधिकार रह गया था औरंगज़ेब के राज्य के जागीर बन कर रह जाने में उसकी कट्टर नीत के साथ-साथ बुन्देला एक और मराठों का उत्थान भी था सम्राट कहलाने वाला मुग़ल वंश अब मात्र जागीरदार बनकर ही रह गया था जगह-जगह के जागीरदार व सूबेदार राजा बन गए थे आज इस कालखण्ड के इतिहास के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है तभी इतिहास की सार्थकता प्रमाणित हो सकेगी और मुग़ल सल्तनत के अंत का वास्तविक चित्रण सामने आ सकेगा

इतिहास के कुछ अवलोकनीय बिंदु

- **1668-1530 A.D.**

महाराजा रूद्र प्रताप ने अपने पराक्रम से चन्देरी सारंगपुर और भेजता का प्रांत मुसलमानों से छीनकर गढ़कुंडार में मिलाया था

- **1530-1540 A.D.**

महाराजा भारती चंद्र को शेरशाह सूरी तथा सलीम शाह मयूर से इस दौरान कई बार युद्ध करने पड़े परंतु विजय हमेशा महाराजा भारती चंद्र की ही हुई इन्होंने बाबर तथा हिमायू के 59 आक्रमण किए थे

- **1554-1592 A.D.**

महाराजा मधुकर शाह ने नियामक कुली का अली कुली न जाए कुलीन खां साहब कुलीन खां सैयद खां अब्दुल्लाह खां आदि को पराजित कर शाही सेना का सामान लूटा

था संन् 1575 (वि.सं. 1631) में सिरोंज ग्वालियर जीती थी सैयद महमूद 12 सैयद मुहम्मद को उन्होंने हराया था। संन् 1598 (वि.सं. 1635) में अकबर ने ओरछा पर चढ़ाई की थी मधुकर सांसे अकबर को मुंह की खानी पड़ी बुन्देली जनता ने धार्मिक उन्माद में आकर मुग़ल सेना में प्रलय का तांडव मचा दिया था

- 1592-1606 **A.D.**

अकबर के सलाहकार अबुल फजल का संन् 1602 में वध होने से मुग़ल सत्ता पर जहांगीर पुत्र अकबर का दबदबा हो गया जो ओरछा की अप्रत्यक्ष नीत का परिणाम था इस हादसे से अकबर ऊपर ना सका था

- **1606-1627 A.D.**

दिल्ली जहां वीरसिंह जूदेव ओरछा को जाता है जहांगीर के दिल्ली तक पर बैठते ही ओरछा में रामराजा की जगह वीरसिंह देव [वि.सं. 1606-1763 (1549-1706 A.D.)] ओरछा के राजा बन गए ओरछा राज्य में खुशी की लहर दौड़ गई थी दिल्ली पति जहांगीर ने ओरछा के प्रति सदा सद्भाव रखा जहांगीर ने आगरा में बुन्देला महल वीरसिंह देव के नाम पर समानार्थ बनवाया था इसी प्रतिउत्तर में ओरछा में जहांगीर महल का ऐतिहासिक निर्माण हुआ जो आज भी दोनों की मैत्री के प्रमाण रूप में स्थित है वीरसिंह देव का शासंन् काल ओरछा राज्य का स्वर्ण काल माना जाता है जहांगीर के मरने के बाद शाहजहां ने आक्रमण करने शुरू कर दिए थे तब [वि.सं. 1570-1684 (1570-1627 A.D.)] बूढ़े वीरसिंह देव के यश को चम्पतराय और हरदौल ने कायम रखकर शाहजहां की आशाओं पर पानी फेर दिया था

- **1627-1656 A.D.**

जुझारसिंह से लेकर पहाड़सिंह के शासंन् काल तक शाहजहां की दिल्ली तख्त पर आसीन रहा है इस दौरान उसके द्वारा बुन्देलखण्ड पर किए गए बर्बर कृत्य की गाथा से इतिहास के पन्ने रक्तरंजित हैं राजा जुझारसिंह और उनके पुत्र के कत्ल तथा चम्पतराय का विद्रोही स्वर के उठने का कारण उसके काल की काली करतूतों का परिणाम रहा है

- 1656-1707 **A.D.**

शाहजहां के उपरांत दिल्ली की गद्दी पर औरंगज़ेब बैठा जो खिलाए उसी को खाओ वाली कहावत औरंगज़ेब ने चरितार्थ कर दी इतिहास जानता है कि चम्पतराय और सारंधा के कारण औरंगज़ेब ने सामूगढ़ युद्ध (सन् 1656) में विजय पाई थी, वही औरंगज़ेब समय पाकर चम्पत दंपत्ति को निकल गया ओरछा दतिया चन्देरी बागड़ा के राजा गुलामी मानसिकता में डूब चुके थे तभी चंपक छत्रसाल ने जागरण की अंगड़ाई ली थी औरंगज़ेब ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमणों की झड़ी लगाकर खुद

के महल में आग लगा ली थी चम्पतराय और सारंधा की मौत ही मुग़ल सल्तनत की महिला गई 1707 में औरंगज़ेब के सामने ही ढह गई

अनुशीलन

बाबर से लेकर औरंगज़ेब तक जहांगीर को छोड़कर सभी मुग़ल राजाओं ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किए इतिहास के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बाबर से ज्यादा हिमायू ने हिमायू से ज्यादा अकबर ने अकबर से ज्यादा चाहा जाने और शाहजहां से बढ़कर औरंगज़ेब ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण का कहर ढाया था इससे एक बात और स्पष्ट हो जाती है कि जो इतिहासकार अकबर को महान कह कर पुकारते हैं उन्हें आंखें खोल कर उसकी हिंदू विरोधी नीतियों का अवलोकन करना चाहिए वस्तुतः अकबर की दीन ए इलाही नीति मुग़ल साम्राज्य के विस्तार वादी नीति का ही एक हिस्सा थी दूसरी बात मुग़ल सल्तनत में शाहजहां का काल स्वर्ण युग कहा जाता है इतिहास के तत्कालीन दूरदर्शन से इस तथ्य की भी पोल खुल जाती है मुग़ल साम्राज्य के विस्तार वादी नीति की जरूरी परंपरा में लेकर गए इतिहास की कलाई अब खुलने लगी अतीत के गर्भ में छिपे बुन्देली इतिहास के प्रकाश में आने से अब इतिहास को सही दिशा मिलने लगी है आशा है कि अतीत के पुनर्मूल्यांकन से इतिहास की सही तस्वीर उड़ेगी

ओरछा एवं दिल्ली दरबार

दिल्ली दरबार	**ओरछा दरबार**
1. बाबर (1526-1530 ई.)	1. महाराजा रूद्र प्रताप (1468-1531 ई.)
2. हुमायूं (1530-1540 ई.)	(i) महाराजा भारतीचंद्र (1531-1554 ई.)
(1555-1556 ई.)	(ii) महाराजा मधुकरशाह (1554-1592 ई.)
3. अकबर (1556-1605 ई.)	3.(i) महाराजा मधुकरशाह (1554-1592 ई.)
	(ii) महाराजा रामशाह (1592-1606 ई.)
4. जहांगीर (1605-1627 ई.)	4. (i) महाराजा रामशाह (1592-1606 ई.)
	(ii) महाराजा वीरसिंहदेव (1606-1627 ई.)
5. शाहजहां (ii) (1627-1656 ई.)	(i) महाराजा वीरसिंहदेव (1606-1627 ई.)
	(ii) महाराजा जुझारसिंह (1627-1634 ई.)
	(iii) महाराजा देवीसिंह (1634-1636 ई.)
	(iv) महाराजा पृथ्वीसिंह (1636-1637 ई.)
	(v) महाराजा चम्पतराय (1637-1641 ई.)

(vi) महाराजा पहाड़सिंह (1641-1663 ई.)

6. औरंगज़ेब (1657-1707 ई.)

(i) महाराजा पहाड़सिंह (1641-1663 ई.)

(ii) महाराजा सुजानसिंह (1663-1672 ई.)

(iii) महाराजा इंद्रमणी (1672-1675 ई.)

(iv) महाराजा जसवंतसिंह (1675-1684 ई.)

(v) महाराजा भगवंतसिंह (1684-1688 ई.)

(vi) महाराजा उद्दैतसिंह (1688-1736 ई.)

महाराजा छत्रसाल के आविर्भाव के समय आजा दिल्ली का शासक था छत्रसाल तब 7 वर्ष के थे तभी औरंगज़ेब अपने पिता चाचा को जेल में बंद करके चम्पतराय के सहयोग से दिल्ली की गाड़ी पर विराजमान हुआ महाराजा छत्रसाल की समग्र विद्रोही गतिविधियां और अंगी शासंन्काल में हुई जब वह 57 वर्ष के थे उसी समय औरंगज़ेब की 89 वर्ष की आयु में मृत्यु हुई थी उसकी मृत्यु के बाद लगभग 25 वर्षों तक महाराजा छत्रसाल शासंन् करते रहे

महाराजा छत्रसाल कालीन : पन्ना और दिल्ली दरबार

पन्ना राज दरबार	:	**दिल्ली दरबार**
1. महाराजा छत्रसाल		1. बादशाह औरंगज़ेब
(वि. सं. 1728-1788 तक)	:	(1657-1707 ई.)
(1671-1631 ई.)	:	2. राजा बहादुरशाह (मुअज्जम)
	:	(1707-1712 ई.)
	:	राजा जहांदारशाह
	:	(1712-1713 ई.)
	:	4. फरुखसियर
	:	रफ़ीउद्दारजात
	:	रफीउद्दौला

: मुहम्मदशाह रंगीला (रोशन अख्तर)

(चौथे से सातवें शासकों का शासंन् काल 1713-1748 A.D. तक रहा है।)

दिल्ली में मुग़ल सल्तनत औरंगज़ेब के उत्तरार्ध जीवन में ही ढह गई थी औरंगज़ेब परवर्ती मुग़ल राजा नाम मात्र के ही बादशाह रह गए थे इन्हें दिल्ली के आसपास के भूभाग ही सुरक्षित रख पाना मुश्किल हो रहा था दिस. 1710 में लोहागढ़ जीतकर महाराजा छत्रसाल ने बहादुरशाह को दिया था और दिल्ली ने टोका उन्हें आश्वासंन् दिया था वस्तुतः महाराजा छत्रसाल समूची मानव जाति के महाराजा थे

भाग द्वितीय

जीवन वृत्त

1. आविर्भाव खण्ड

2. नौ वर्ष का संघर्ष काल

3. विकास काल

4. युद्ध-खण्ड

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(1)

आविर्भाव खण्ड

चम्पतराय और रानी सारंधा के अंदर धधक रहे मातृभूमि के प्रति रक्षा के अंगारे कभी ठंडे नहीं पढ़े पर उनकी बढ़ती उम्र लक्ष्य सिद्धि में आड़े आई तभी विंध्यवासिनी देवी के शुभ आशीष से चम्पतराय की 62 वर्ष की अवस्था में उनकी रानी सारंधा (लाड़कुंवरि) की कोख से वि.सं. 1706 (1649 A.D.) एक बालक का जन्म हुआ जिसे साडे 12 वर्ष की अवस्था में माता-पिता का विरोध झेलना पड़ा इसी बालक छत्रसाल के जीवन कालखण्ड [वि.सं. 1706-1718 (1649-1661 A.D.)] पर प्रस्तुत अनुभाग में प्रकाश डाला जा रहा है।

श्री राज परमात्मने नमः

(1)

आविर्भाव-खण्ड

दिल्ली विरोध के कारण चम्पत दंपत्ति शाहजहां की आंखों के क्रिकेटर बन गए थे मुग़ल सेना और अपने कुछ स्वार्थी हितेषी भी चम्पतराय के जानी दुश्मन बन गए थे चम्पत दंपत्ति के चारों ओर संकट की घटाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी पर चम्पत दंपत्ति के बुलंद हौसले बुन्देली नव जवानों के अपार स्नेह से बढ़ते जा रहे थे। उनकी रानी सारंधा के अंतः करण में धधक रही स्वाभिमान की लौ चम्पतराय के उत्थान में अभिवृद्धि कर रही थी इस दंपत्ति का प्रतिफल मातृभूमि के प्रति अदाज स्नेह उगते सूर्य की किरण समुद्र उच्च गति से बढ़ रहा था। बुन्देल भूमि में निवास करने वाले ऋषि मुनि चम्पत दंपत्ति के प्रति अपार कृपा दृष्टि बरसाते रहते। मां विंध्यवासिनी का वरद हस्त दोनों को अभय प्रदान कर रहा था। वि.सं.1705 (1648 ई.) की वर्षा ऋतु चंपद दंपत्ति के जीवन में नवजीवन का संकेत देने लगी श्रावण मास में लांगरी की आराधना से प्रसन्न हो जगत जननी मां विंध्यवासिनी ने चम्पत दंपत्ति के घर भगवान के अनुसार भतार के आविर्भाव की मंगलमय सूचना दी दिन में व्यतीत होने लगे चंदा रानी शौकत ख्यालों में डूब कर मात्र आनंद की अनुभूति लेने लगती राजा चम्पतराय के ऊपर इस समय शाहजहां की भ्रुकुटी तनी हुई थी परंतु रानी सारंधा के अदम्य साहस एवं सहयोग से चम्पतराय कभी पथ विचलित नहीं हुए अब रानी के प्रसव काल की

बेला आ पहुंची चम्पतराय के सहयोगियों ने अति सुरक्षित एक स्थान चुनाव जोकर कर कंचन हार की पहाड़ी पर था।

छत्रसाल का प्रादुर्भाव

चम्पतराय की तीसरी लाल कुंवरि नाम की रानी थी जिसका पीहर का नाम सारंधा था चम्पतराय उन्हें इसी नाम से पुकारते थे इतिहासकारों ने इस रानी को वीरांगना सारंधा कहकर उल्लेख किया है इस ईरानी की कोख से जस्ट शुक्ला तृतीया वि.सं.1706 (1649 ई.) सोमवार को झांसी से पूर्व दिशा में आकर कंचन हार की पहाड़ी पर एक बालक का गोधूलि बेला में जन्म हुआ था चम्पतराय ने नवजात बालक को गोद में लिया रानी सारंधा को कंधे चढ़ाया और कामिनी नारी (दायी) की बांह

पकड़ कर पहाड़ी से छलांग मार दी थी यह क्या? चमत्कार हो गया छलांग भरते ही चम्पतराय के अंदर एक दैवीय शक्ति आ गई जिसके सहारे वह उड़ते हुए दूसरी पहाड़ी पर सुरक्षित पहुंच गए इस घटना का चित्रण कविताओं में अंकित है

रानी के उधर मांझी भाई जब गर्भ पीर

हुए के अधीन लगी कृष्ण को मना बने

इतने में आए एक निवाला डर गयो लाए

रानी के निकट पांच बहुएं दुर्ग सामने

इसे पुत्र भयो प्रगट बुलावे चम्पतराय

लगे सुधरता मिल लो नारा नराची नवाब ने

भूषण घनत्व नो आई है यवन सेन

देख के काम इन मन लागी डरावने

डोरो है आय कंकर कंचना के हार में

चम्पतराय नाहर तो विकट रोज खाएं के

गांव नहीं निकले को देखो विभूषण जगह

तीनों हैं तब उपाय धीरज मन लाए के

रानी ले कंधे चलाएं पुत्र को हुए लगाएं

झपट कामिनी की भांति धाय के

मार के छलांग अदर खुद चले चम्पतराय

मोर की पहाड़ियां से गए मोर से उड़ाए के

महाराजा चम्पतराय मोर की भांति पार्टी से जुड़े थे इसी कारण काकर कंचन हार की इस ऐतिहासिक पहाड़ी का नाम मोर पहाड़ी पड़ गया

इस नखत अनुरूप अरुण पर परिणाम

जन्म पत्र साथियों छत्रसाल यह नाम

महाराजा छत्रसाल की जन्म कुंडली दिलवाड़ा के ज्योतिषी बबली ब्रह्मभट्ट ने बनाई थी ऐसा सुना जाता है और नीचे लिखा कविता उन्हीं के द्वारा रचा बताया जाता है

उदय में राजे अगर मंगल विराजे

जहां बल को शुक्र शनि सहित बिहार है

बुध अरे नाचे रवि राहु प्रजा को प्रकाश

लाभ करें सुरगुरु अमित अपार हैं

17 से 6 को विलंबी नाम संवत् जेठ

तिथि तीज इतवार है

शिव के नक्षत्र में बबली छत्रसाल

लीनो नारायण आए के अवतार हैं

छत्रसाल का बचपन

कुमार छत्रसाल का लालन-पालन रानी सारंधा ने बहुत लाड़ दुलार से किया कुल परंपरा के अनुरूप कुमार छत्रसाल के संस्कार करवाए गए छह मास में अन्य प्राशन संस्कार भी हुआ नन्हे बालक की प्रवृत्ति जानने के लिए कुल रिती रिवाज के अनुसार अनेक वस्तुएं सामने रखी गई नन्हे बालक ने

किलकारी मारते हुए सर्वप्रथम तलवार का स्पर्श किया वस्तुतः होनहार बिरवान के होत चिकने पात का दिग्दर्शन माता-पिता को बचपन में दिखने लगा ऐसा देख कर चम्पत दंपत्ति अति आनंदित हुए चम्पतराय की अवस्था इस समय 62 वर्ष की हो चुकी थी नन्हे बालक में ऐसे गुण देखकर अंतः करण में छाई निराशा के बादल छट गए थे रानी सारंधा युद्ध में जाने से पूर्व नन्हे बालक को तलवार का स्पर्श कराती तत्पश्चात तलवार धारण करती थी जब शिशु बैठने लायक हो गया तब वह अपनी पीठ पर बांधकर युद्ध भूमि में ले जाने लगी एक समय की बात है कि नन्हा बालक केवल 7 महीने का था तब मुगलों के अचानक आक्रमण के कारण रानी ने इन्हें एक कंदरा में छिपा दिया था मुग़ल सैनिकों के मैदान से भाग जाने के पश्चात चम्पत दंपत्ति ने कंदरा में जाकर देखा कि नन्हा बालक एक चट्टान के नीचे नागराज के साथ खेड़ा में आनंद मंगल है रानी ने कंदरा में उतरकर बालक को अपनी गोद में भर लिया इसके पूर्व नागराज एक विद्युत चमक के साथ विलीन हो चुका था

चार वर्ष की अवस्था [वि.सं.1710 (1653 ई.)] में छत्रसाल को मां के साथ ननिहाल जाना पड़ा क्योंकि उस समय शाहजहां ने चम्पतराय को पकड़ने के लिए भारी मुहिम चला रखी थी रानी सारंधा ने कुछ काल तक यहीं रहकर नन्हे छत्रसाल की समुचित शिक्षा का प्रबंध किया था रानी चम्पतराय को कम समय दे पाने के कारण कुछ बड़े होने पर छत्रसाल को ननिहाल में छोड़ आई थी बालक छत्रसाल ने 10 वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते बहुत से अस्त्र अस्त्र शस्त्र चलाने में दक्षता प्राप्त कर ली थी

---

1. चंद्र (शुक्ल) पक्ष

2. चंद्रवार (सोमवार)

3. मृगशिरा नक्षत्र,

4. पाठ भेद नरना अर्थात 9 प्लस ना का अर्थ स्वामी होता है अतैवनर स्वामी का अर्थ नारायण ही है।

वि.सं.1717 (1606 ई.) की साल में विंध्यवासिनी देवी के मंदिर पर बुंदेलों की कुलदेवी पूजन का बड़ा अनुष्ठान चल रहा था देवी की पूजा के लिए नन्ना छत्रसाल कमर में तलवार लटकाए पास की वाटिका में फूल लेने के लिए बालकों की टोली के साथ गया इतने में वाटिका के पास एक या 1 टुकड़े आई यवन सेनापति सरदार ने बच्चों से कड़कती हुई आवाज में देवी के मंदिर में पहुंचने के लिए सीधा मार्ग पूछा बालकों ने कोई जवाब नहीं दिया उत्तर ना मिलने पर सरदार घोड़े से उतरकर वाटिका में आया और एक बालक ने गाल पर चांटा जमा दिया ऐसा व्यवहार देखकर छत्रसाल के अंतः करण में मां द्वारा बताई मुगलों की काली करतूतें भूल गई बस छत्रसाल ने आव देखा न ताव

तत्क्षण अपनी तलवार उस सरदार के पेट में दे मारी और दूसरे वार में उसकी गर्दन धड़ से अलग कर दी वाटिका में कोहराम मच गया दूसरे एवं सैनिक भाग खड़े हुए बालक छत्रसाल एक हाथ में फूलों की टोकरी और दूसरे हाथ में यवन सरदार का कटा सिर लटकाए मंदिर की ओर चल पड़े तब तक बुंदेलों की एक सैन्य टुकड़ी मंदिर से बाहर निकल आई थीछत्रसाल को देखकर सभी अचंभित रह गए जनमानस ने बालक छत्रसाल को कंधे पर उठा लिया जब यह घटना उनके माता-पिता ने सुनी तब उन्हें अत्यंत प्रसन्नता हुई चम्पतराय मन ही मन विचार करने लगे मुझे अपने 10 वर्षीय बालक के पोरस को सुनकर आत्मा में बड़ी शांति मिली है जिस उद्देश्य को लेकर मैं जिंदगी जी रहा हूं अब मुझे आशा है कि लाल कुंवरि का यह लाल उस नो को आगे बढ़ाएगा नन्हे बालक छत्रसाल को बुला बाकर चम्पतराय ने अपनी सारी बीती बातें बता दी और भविष्य की रूपरेखा बालक के अंदर भर दी अंत में चम्पतराय अपने बालक छत्रसाल के सिर पर हाथ रखकर शुभाशीष देकर बोले थे बेटे मेरी जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है यवन सम्राट औरंगज़ेब जिंदा मुर्दा मुझे पकड़ वाना चाहता है इसके लिए मेरे साथी जो की आस्तीन के सांप हैं कभी भी घातक बन सकते हैं और उसकी मनोकामना पूरी कर सकते हैं तुम पर मुझे विश्वास है और भविष्य की आशाएं हैं पक्ष में और तुम्हारी मां सारी आकांक्षाएं तुझ पर छोड़कर अब शांति पूर्वक बलि दे सकते हैं आते वक्त बुन्देलखण्ड के स्वराज्य की लव बुझने ना देना

बालक छत्रसाल की भक्ति

नन्ना छत्रसाल या तो अस्त्र शस्त्र चलाने की कला सीखता रहता अथवा मंदिर में बैठकर परमात्मा का ध्यान लगाता महेवा में ही एक चेतन गोपाल का मंदिर है जहां छत्रसाल बच्चों के साथ धनुष बाण भी ले कर खेलते और भगवान की पूजा भी करते

जनश्रुति के आधार पर ऐसा कहा जाता है कि 1 दिन नन्हे छत्रसाल मंदिर में विराजमान राम लक्ष्मण और सीता की मूर्तियों के पास खड़े हो गए बाल सुलभ चेष्टा अनुरूप सोचने लगे सोचते सोचते छत्रसाल की भाव समाधि लग गई इसी अवस्था में छत्रसाल इन मूर्तियों से कहते हैं चलो तुम मेरे साथ धनुष बाण का खेल खेलो बालक की तन्मयता में हर्ट की प्रबलता होती है बार बार कहने पर भी जब मूर्तियां खेलने को तैयार ना हुई तब छत्रसाल धनुष पर बाण चढ़ाकर बोले यदि तुम अब भी मेरे साथ ना चले तो मैं तुम्हारे सीने पर बाण का प्रहार कर दूंगा अब क्या था भक्तवत्सल पुरुषोत्तम श्री राम लक्ष्मण और सीता सहित प्रकट हो गए लक्ष्मण का स्वरूप छत्रसाल में प्रवेश कर गया छत्रसाल श्री राम के साथ खेलने लगे सीता जी इस दृश्य की दृष्टा बन गई जब समाधि अवस्था में छत्रसाल के मुख से हुंकार के शब्द गूंजने लगे तब पुजारी ने बड़ी मुश्किल से खेलाडू लाकर नन्हे छत्रसाल की ध्यान अवस्था तोड़ी नन्हे छत्रसाल रोज इसी मंदिर में आकर ध्यान करने लगते यह रीति प्रीति परस्पर बढ़ चली छत्रसाल मगन होकर मूर्तियों के सामने नृत्य करने लगे एक दिवस प्रेम

मगन हो छत्रसाल नृत्य कर रहे थे तभी मंदिर की मूर्तियां भी संग संग नृत्य करने लगी मंदिर में लोक नृत्य संगीत के स्वर सुनते थे दूसरे बालक भयभीत होकर यह चर्चा करते थे इस घटना का तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रंथ छात्र प्रकाश में उल्लेख मिलता है यथा

संपुट बजे सुने सब कोई सब की बुद्धि अचंभे हुई

छत्रसाल और प्रीत पराई इच्छा पूर्ण होने न पाई

पंडा तुरंत कहां से आए फिर तू गोविंद ने नाचन पाए

ढुलाई अपने नेताओं घर से मांगी मिठाई देता

(छत्रप्रकाश पृ. 72)

इनके किवदंतियों से विदित होता है कि छत्रसाल बचपन से ही बड़े धार्मिक प्रवृत्ति के थे

माता पिता का वियोग

कुमार छत्रसाल को साडे 12 वर्ष की अवस्था में माता-पिता का वियोग सहना पड़ा वि.सं.1718 (1661 ई.) में ओरछा रानी कुल कलंकिनी हीरा देवी के उकसावे में आकर राजा ओरछा के हितैषी सुजानसिंह ने दतिया के राव शुभकरण से मिलकर एक षड्यंत्र रचा और मोरंग गांव के पास मुग़ल सैनिकों द्वारा बूढ़े तथा अस्वस्थ चम्पतराय

और रानी को करवा लिया कुछ संबंधी साथियों ने विश्वासघात करके चम्पतराय पर हमला कर दिया बहादुर रानी सारंधा ने अनेक सिपाहियों को मार डाला और प्रेम पति के साथ शहीद हो गई

माता-पिता का संस्कार-- कुमार छत्रसाल ने सहारा से मोरंग गांव आकर दूसरे दिन कार्तिक सुदी द्वादशी: वि.सं.1718 (1661 ई.) को माता पिता का अंतिम संस्कार किया मोर गांव से महेवा आकर व अन्य माताओं से भी मिले तत्पश्चात अपने छोटे भाई अंगद राय के पास देवगढ़ पहुंचे महेवा वापस लौट कर तीनों भाइयों के साथ माता-पिता के अन्य सब संस्कार वैदिक रीति-रिवाज के अनुरूप कराए गए

अपने हुए पराए किशोरावस्था में जब मां-बाप के मार्गदर्शन की बालक को जरूरत पड़ती है उसी समय छत्रसाल अनाथ हो गए थे स्वर्गीय पिता द्वारा औरंगज़ेब से विद्रोह करने के कारण दतिया ओरछा और चन्देरी आदि के राजा राम लोग छत्रसाल के प्रबल शत्रु थे चेहरा के धंधे से संबंधी थे और प्रदूषण से बंधे भी थे इसके बावजूद भी वे सभी छत्रसाल की दुखद स्थिति के कारण बने थे

अनाथ कुमार छत्रसाल आश्रम की खोज में कुल पुरोहित द्वारा भी दुत्कार दिए गए बहिन ने भी शाही दरबार के डर के कारण अपने दरवाजे छत्रसाल को देखकर बंद कर दिए

परायो का संभल ऐसी संकट की विकट घड़ी में कुछ ऐसे लोगों ने उनके जीवन में प्रवेश किया जिन्होंने उनके किशोर जीवन में अमृत गुणों का संचार किया था और समय पर उनको संभल दिया था इन्हीं लोगों ने छत्रसाल को सहारा व स्नेह देकर स्वराज्य की स्थापना में सक्रिय भूमिका निभाई थी और बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता के इतिहास का मार्ग प्रशस्त किया था

बर्दिया कुमार की लड़की माता पिता के वियोग ने कुमार छत्रसाल को जोर ग्रस्त कर रखा था अपने द्वारा दूध कारे जाने पर वह बेसहारा होकर नन्हा ग्राम के पास एक पेड़ के नीचे लेट गए जो पीड़ा से वे बेचैन थे इस समय धरती ही उनकी मां तुल्य थी और आकाश पिता सदृश्य मन में रह रहकर माता-पिता की बातें याद आती और चली जाती जोर से उनका बुरा हाल था इस इस इस स्थिति में छत्रसाल को पढ़े

---

1. सहरा वाले लोकपालसिंह धमधेरे जी चम्पतराय के काका जा साले थे ने ओरछा की रानी हीरा देवी के प्रलोभन में आकर मृतक चम्पतराय दंपत्ति के सिर काटकर मनुष्य प्राप्ति के उद्देश्य से दिल्ली दरबार में 7 नवंबर 1661 को औरंगज़ेब के सम्मुख प्रस्तुत किए थे।

2. कार्तिक शुक्ला एकादशी: वि.सं.1718 (1661 ई.)

3. अंगदराय देवगढ़ में बख्त बुलंद गॉड राजा के यहां एक प्रतिष्ठित सैनिक के रूप में रहते थे।

4. पौत्र कृष्णा पंचमी: वि.सं.1718 (1661 ई.)

5. अंगदराय, रतनसाह और गोपालराय।

6. छत्रसाल की सहोदर वहीं मान को मरी थी जिसका विवाह ज्ञानसिंह परमार करेरा वाले जमीदार से हुआ था।

देख इसी ग्राम की रहने वाली कुमार की एक बेटी जिसके पिता का नाम पर दिया था ने छत्रसाल को पहचान लिया और अत्यंत श्रद्धा एवं आदर भाव के साथ अतिथि बनाकर अपने घर ले गई आज छत्रसाल के लिए यह लड़की सहोदर वहीं से भी बढ़कर सिद्ध हुई थी इतिहास इसके नाम पर मौन है

लल्लू गडरिया जब कुमार छत्रसाल इसी नन्हा गांव के निकट एक वृक्ष के नीचे सो रहे थे तब एक पंधारी सर्व को उनके मुख मंडल पर पड़ रही कड़ी धूप से बचाते हुए लल्लू गडरिया ने देखा था धूप के अवसान होने पर नागरा अदृश्य हो गया था तब इसी लल्लू गडरिया ने चम्पत कुमार छत्रसाल को

जगह पर एक शुभ शकुन की सूचना दी थी बूढ़े व्यक्ति के इस आदेश ने ज्वर ग्रस्त छत्रसाल के अंदर आत्म बल को जागृत किया था कालांतराने शुभशकुन यावं सत्ता के विभिन्न होते ही साकार होटा था कुमार छत्रसाल आगे चल कर राजा ओके महाराज पण कर भानुभक्त चमके

देलवाडा का महाबली पटेल उनके पिता स्वर्गीय चम्पतराय को अपनो से हमेशा धोका मिला था और विश्वास हुं पर आयो मे पटेल भी एक है चम्पतराय ने मृत्यु के पूर्व इस महाबली को अन्य रानियो एम गोपाल राय के भरण-पोषण की जिम्मेदारी सोपी थी येऊ नका अति विश्वास पात्र अंतरंग साथी था ही व्यक्ती पर पूर्ण विश्वास करते राणीने छत्रसाल के लिए आभूषण की खाती थी और छत्रसाल के विवाह की स्वीकृति की जानकारी करायची महाबली पटेल ने बेरछा वाले हरदेव सिंग पवार की कन्या देवकुंवरि के साथ छत्रसाल का विवाह संपन्न कराया था

देलवाडा का भानुभट्ट आदिवासी नवयुवक भानुभट्ट के नये कुमार छत्रसाल यादव से ऐसे उभार लिया था जैसे कोई दुखते बचाले भानुभट्ट के सहयोग से कुमार छत्रसाल की कीर्ती बुन्देलखण्ड मे चम्पतराय के वारिस के रूप में चलने लगी थी आगे चल कर भानुभट्ट कुमार छत्रसाल के पठान उगामी बनकर उनके दाहिने हाथ साबित हो गये थे नवयुवक भानुभट्ट कुमार छत्रसाल के सही मायने मे अँग्रक्षक हुए थे

तेली महाबली और भाट भानुभट्ट हि कुमार छत्रसाल को जननायक बनाने मे अग्रसर रहे थे तत्कालीन समय मे इं दोनो समुदायों का सर्वाधिक लोगो से मिलना जुना रहता था।

- महाराजा होने की भविष्यवाणी

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(2)

नौ वर्ष का संघर्ष काल

[1705-1727 वि.सं. (1648-1671 ई.सं.)]

कुमार छत्रसाल के माता पिता के अवसान काल [वि.सं. 1728 (1671 ई.) कार्तिक शुक्ल एकादशी] से लेकर शोध लग्न [ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी: (1728-1671 ई.) के मध्य का काल संघर्ष-काल के रूप में माना जाता है। इस संघर्ष-काल में उनके जीवन मे अनेक उतार-चढाव आहे इसी परिवेश में प्रस्तुत अनुभाग में प्रकाश डाला जा रहा है।

श्री राज परमात्मने नमः

(2)

नौ वर्ष का संघर्ष काल

कुमार छत्रसाल के किशोरावस्था के 9 वर्ष (वि.सं. 1718 (1727) माता पिता के वियोग मे बहुत संघर्ष मे बीते कुमार छत्रसाल चिंतन करके इस संघर्ष काल व आत्मबल असे सार्थक बनाया माता पिता के द्वारा दिये गये अंतिम उपदेश ओ को करने के लिए किस काल में उनका बीजारोपण बडी सूज असे कुमार छत्रसाल ने किया धरती के अंदर डाले गये बीज जनमानस कि आखो से ओजल रहते है परंतु अंकुर के विस्तार पाने पर बीज का स्वरूप जगत मे प्रकट होता है या संघर्ष काल इस काही पर्याय है।

विद्रोही ज्वाला

माता पिता के अवसान से छत्रसाल दुखी रहने लगे उनके अंदर विद्रो की ज्वाला धडकने लगी हत्यार और मुग़ल शासक के विरोधक लढणे के लिए उनके अंतर्मन मे भयंकर भरी हुई थी उनका

चित्र बडा व्याघ्र पोहोचला था भाई बंधु विद्रो के लिए तयार नाथे वे सब छत्रसाल की बात सुनकर पुणे शांत रहने के गुजरी बाते खेळकर समजाते पूजा तेथे परंतु छत्रसाल के अंदर जल रही ज्वाला बढते ही जा रही थी उनकी अवस्था अब सोलह बरस के लग भग थी

मुग़ल सेना में भर्ती

कुमार छत्रसाल के मन में विचार आया कि मुग़ल सेना विशाल है उसके सम्मुख लड़ने के लिए एक बड़ी सेना चाहिए युद्ध संचालन एवं अन्य बातों का भी ज्ञान जरूरी है जो युद्ध के समय ही जानी जा सकती है किसी प्रकार से उनकी सेना में भर्ती होकर काम किया जाए पर उनका अंतर मन झकझोर उठा अरे माता पिता के हत्यारे की सेना में भर्ती होकर उसकी सेवा करूंगा यह तो अधर्म एवं नीच कर्म है परंतु उन्हें विचार आया अरे लोहा लोहे को काटता है उनके विवेक में बात जम गई क्योंकि मजबूत से मजबूत रस्सी वहीं से टूटती है जहां से वह कमजोर होती है भले

---

1 एक पंथ दो काज सिद्ध होंगे, जानकारी भी मिलेगी और परिस्थितियों का अनुभव भी तथा औरंगज़ेब पितृ बैर को भूल बैठेगा।

ही उसकी लाख से ना हो फिर भी कमजोरियां जरूर होंगी यह सोच कर उनका मन प्रसन्नता से भर गया मुग़ल साम्राज्य में सैकड़ों दुर्ग हैं उन पर विजय पाने के लिए रणनीति बनाने का ज्ञान जरूर मिलेगा प्रत्यक्ष अनुभव भी मुझे यही तो करना है जीवन में जिसके लिए जी रहा हूं गूगल सत्ता को ही तो मुझे जाना है वास्तव में * * * हक है रानू है निसंदेह नीतियों की कमी नहीं है बशर्ते रणनीतिक हो शत्रुओं में भी कुछ अच्छे गुण होते हैं भगवान राम ने मरना था रावण के पास लक्ष्मण को राजनीति की शिक्षा लेने भेजा था प्रस्तुत है अनुभवों से सीख लेकर व्यक्ति कम उम्र में बुजुर्गों जैसी योग्यता प्राप्त कर सकता है

छत्रसाल को इसी समय पता चला कि मिर्जा जयसिंह राजा दक्षिण में अभियान पर जाने वाले हैं और इसी हेतु सैनिकों की भर्ती कर रहे हैं कुमार छत्रसाल अपने चाचा जाट भाई बलदाऊ और भाई अंगद राय के साथ राजा जयसिंह के पास गए स्वर्गीय चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल को देखकर राजा जयसिंह बहुत खुश हुए वीर पिता का वीर पुत्र बनेगा यह कहकर उन्होंने छत्रसाल को गले लगाया राजा जयसिंह ने उन्हें अपनी सेना में रख लिया छत्रसाल को मनचाही मोराद मिल गई दोनों बड़े प्रसन्न थे पर लक्ष्य अलग अलग था उनके अंतर्मन की विद्रोही ज्वाला की यह पहली सफलता थी जयसिंह नरेश छत्रसाल को बहुत चाहने लगे थे वह कुमार छत्रसाल की वीरता पर खुश थे इतनी अल्प उम्र में इतना साहसी कुमार छत्रसाल तो अपने मां बाप जैसा ही वीर समझ में आ रहा है दक्षिण

भारत जाकर जयसिंह ने महाराष्ट्र का पुरंदर किला घेर लिया महीनों युद्ध चला था अंत में कूटनीतिक के सहारे शिवाजी ने यह किला खाली करके औरंगज़ेब से संधि कर ली थी कुमार छत्रसाल ने अपने लक्ष्य के अनुरूप मुग़ल सेना का बारीकी से अध्ययन किया रणनीति के दाव पेच और मुग़ल सेना की कमजोरियां बहुत नजदीकी से पर की थी क्या कारण था कि विशाल मुग़ल सेना अल्प मराठी सेना से यह किला जीतना सकी थी? कुमार छत्रसाल को शिवाजी की रणनीति का सम्यक ज्ञान होता जा रहा था।

संधि के अनुसार शिवाजी को मुग़ल सेना के साथ बीजापुर रियासत पर आक्रमण करना पड़ा उस समय शिवाजी की रणनीति का भी छत्रसाल को प्रत्यक्ष रूप से रखने का शुभ अवसर मिला परंतु एक साथ लड़ने का मौका मिला था क्योंकि छत्रसाल उस समय दूसरे मोर्चे पर थे चार-पांच माह तक शिवाजी और जयसिंह साथ साथ रहे थे परंतु औरंगज़ेब ने शिवाजी को दिल्ली बुलाकर आगरा में कैद करवा लिया था शिवाजी की बढ़ती हुई शक्ति से औरंगज़ेब चिंतित था।

अब तक कुमार छत्रसाल ने डेढ़-दो वर्ष मुग़ल सेना में रहकर काफी जानकारी

---

1 वि.सं. 1722-24 (1665-67 ई.)

प्राप्त कर ली इसी समय औरंगज़ेब ने देवगढ़ का किला जीतने के लिए बहादुर खां को लगा रखा था जयसिंह राजा ने एक टुकड़ी का नेतृत्व छत्रसाल को भी सौंपा कुमार छत्रसाल के अंतर्मन में धधक रही विद्रोही ज्वाला ने अब तक लक्षित सन्मार्ग को प्राप्त कर लिया था अबएक टुकड़ी का नेतृत्व पाकर वह बच रहे अनुभव को पाने के लिए देवगढ़ की ओर प्रस्थान कर गए

देवगढ़ विजय

गोडवाने में स्थित है एक प्रसिद्ध गढ़ जिसे देवगढ़ का किला कहा जाता है इस दुर्ग की भी अपनी एक कहानी है अनेक योद्धाओं का स्वाभिमान इससे जुड़ा है अनेक वीरों ने इस दुर्ग की रक्षा जान हथेली पर रखकर की है

एक समय यह विशाल दुर्ग राजापुर मंगल के हाथों में था औरंगज़ेब की कुदृष्टि इस पर पड़ी उसने मिर्जा राजा जयसिंह को इस विशाल किले को जीतने की बागडोर सौंपी दक्षिण में पुरंदर का किला जीतकर मिर्जा जयसिंह ने अब देवगढ़ जीतने की जिम्मेदारी बहादुर खां को सौंपी देवगढ़ का घेरा डाले उसे कई महीने बीत गए थे वह हताशा से भर गया था बहुत ही खेल मनसे किला फतह करने की रणनीतियां बनाता पर हर बार हाथ मलता रह जाता मुग़ल सेना का मनोबल टूटता जा रहा था

गोंडवानी के शूरवीर ने मुग़ल सेना को नाकों चने चबा डालें थे क्या करें क्या ना करें ऐसा बार बार सोच सोचकर वह सैनिकों पर खींच रहा था तभी वहां कुमार छत्रसाल एक मुग़ल टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए आ पहुंचे कुमार छत्रसाल को देखकर उसने लंबी सांस लेकर कुछ राहत पाई और मिल बैठकर रणनीति बनाई

पहले दिन छत्रसाल ने अपनी टुकड़ी को किले का पूरा बाय निरीक्षण कराया और किले की गतिविधियों का सूक्ष्म निरीक्षण किया कुमार छत्रसाल मन ही मन विचार ने लगे अरे 1 दिन इसी तरह मुग़ल सल्तनत को भी बहाना है आज इनके बाहुबल को देख रहा हूं कि महीनों हो गए दुर्ग पर मुग़ल सेना ध्वज नहीं करा सकी है हम कल इस पर जरूर ध्वज फहराएंगे

रणनीति के अनुसार मुग़ल सेना ने किले की घेराबंदी की छत्रसाल अपने भाई रतन शाह और अंगद शाह को लेकर अपने टुकड़ी दुर्ग के ऐसे मुहाने पर लगाई जहां पर अमल की रक्षा पंक्ति कमजोर थी छत्रसाल के मुट्ठी भर सैनिकों ने तबाही मचा दी भयानक युद्ध हुआ बहादुर खां की सैन्य टुकड़ी के होने लगे थे परंतु आज छत्रसाल ने साक्षात यमराज का स्वरूप धारण कर रखा था वह पूर्णमल की सेना को गाजर मूली की तरह काटते रहते ब्लू को तोड़कर आगे बढ़ते जा रहे थे

---

1. यह घटना की है (25 अप्रैल 1667 से 17 सितंबर 1667)।

बहादुर खाने कुमार छत्रसाल की इतनी बहादुरी देखकर अपने सैन्य टुकड़ी को ललकारा और उत्साहित किया अरे जाओ जाओ छत्रसाल के साथ आगे बढ़ो देखो वह मुट्ठी भर सैनिकों के साथ आगे बढ़ता जा रहा है कायरता छोड़ो अरे बुललो फिर कब बहादुरी दिखाओगे बहादुर खां की शान में दबा मत लगाओ वीरो बहादुरी से बढ़े चलो यह सुनकर सैनिकों में जोश उमड़ पड़ा इसका प्रभाव छत्रसाल की मुग़ल सैन्य टुकड़ी पर आग में घी के समान हुआ अब भयंकर मार से कोरम के योद्धा एक-एक कर कटने लगे छत्रसाल ने दुर्ग में प्रवेश कर लिया कुमार छत्रसाल की आग उगलने वाली तलवार ने शत्रु दल के सैनिकों को कॉल कर डाला था उनके सिर हवा में उछलते नजर आने लगे काल दायिनी तलवार ने छत्रसाल के हाथों पूरणमल की अंतरंग टुकड़ी को विदीर्ण कर डाला उनके तमाम साथी पीछे छूट चुके थे फिर भी छत्रसाल ने देवगढ़ के किले पर अपना झंडा लहरा दिया बहादुर खां की सैन्य टुकड़ी ने किले पर पूरा अधिकार कर लिया छत्रसाल की विजय तलवार ने आज बहादुर खां की लाज रख दी

कुमार छत्रसाल पूरणमल की बची सैन्य टुकड़ी को ध्वस्त करते हुए किले से बाहर निकले बाहर युद्ध कोमल की सेना के छत्रसाल ने परखच्चे उड़ा दिए विशेष सेना ने घुटने टेक दिए छत्रसाल का

घोड़ा आज हवा से बातें कर रहा था न जाने कहां से उसमें गजब की ताकत आ गई आज उसने बाहुबली छत्रसाल को वीर रस से परिपूर्ण बना दिया था

पूरणमल की एक टुकड़ी लेकर भी चरण शरण लेने आ रही थी तभी एक अनहोनी घटना हो गई लौटती कोमल की सेना के एक राजपूत सरदार ने धोखे से छल पूर्वक छत्रसाल की गर्दन पर तलवार का भयंकर हार कर दिया पर इतना भारी था कि छत्रसाल धरा पर जा गिरे और बेहोश हो गए प्रहार करा रहा था परंतु छत्रसाल के गले में मजबूत लोहे का बिछुआ था अतैवकाल के गाल से बच गए रणभूमि में पड़े कुमार छत्रसाल की देखरेख उनका स्वामी भक्त घोड़ा कर रहा था वह किसी भी व्यक्ति को पास तक ने आने देता घटना गोधूलि बेला के उपरांत रात की थी यह घोड़ा उनकी रात भर देख रेख करता रहा प्रातः होने पर छत्रसाल को उनके भाई रतन शाह और अंगद राय ने खोजा और पालकी विजय श्री का पुरस्कार पाया बहादुर खाने कुमार छत्रसाल का नाम तक नहीं लिया गया इस छलनी से छत्रसाल का मन मुगलों के प्रति खेल हो गया उनकी सहायता करने के लिए इन्हें दुख भी हुआ लाल कवि ने छात्र प्रकाश ग्रंथ में इस युद्ध का सजीव चित्रण किया है यथा

सिंघनाद कल घर जीके धनजी उठाओ भट्ट वीर

सत्ता वीर रस उमंग में गणेश गोली तीर

गणेश गोली तीर्थ तारों देखत देव अचंभो भैरव

एक वीर सहसंन् पर धावे हाथ और को न पावे

सांगली करें गंगानी सारी

नाश्ता की और पानी कालिका रानी

(पृ. 81)

लगभग डेढ़ वर्ष (वि.सं. 1722-1724) मुग़ल सेना में रहकर कुमार छत्रसाल ने अपना लक्ष्य पूरा कर लिया उन्होंने मुग़ल सेना से दूर हट जाना चाहा वह महाराष्ट्र के वीर शिरोमणि नरहरि छत्रपति शिवाजी से मिलने के लिए उतावले हो उठे।

शिवा-छत्ता मिलाप

देवगढ़ विजय उपरांत कुमार छत्रसाल ने वीर शिवाजी से मिलने की योजना बनाई थी लक्ष्य के अनुरूप कुमार छत्रसाल मुग़ल शिविर छोड़कर दक्षिण की ओर हिंदुत्व के सशक्त प्रहरी छत्रपति शिवाजी की राजधानी की तरफ बढ़ चले लक्ष्य आसान न था एक तो मुग़ल सेना द्वारा पकड़े जाने

का भय दूसरा मार्ग की अठखेलियां कारण की जरा ध्यान चुका कि मार्ग उल्टा होने का भय उनके लिए यह रास्ता अनजान था

संकल्प और आत्म बलशाली व्यक्ति को मार्ग के व्यवधान कभी रोक नहीं पाते कुमार छत्रसाल का घोड़ा उबड़ खाबड़ धरती पर चलने का अभ्यस्त था यहां भी बुन्देलखण्ड जैसा ही भौगोलिक परिवेश था रात दिन उनकी अनवरत यात्रा थी 1 तीर्थयात्री के वेश में निकला कुमार छत्रसाल चारों तरफ खोजी आंखों से निहारता चला जा रहा था रास्ते में कई पड़ाव आए और गए अनेक स्थलों पर उसने मुसीबत में फंसे लोगों की सेवा से लोगों का दिल जीत लिया पत्नी देवरी उनके साथ मर्द आने वेश में थी दोनों घुड़सवार सरपट बढ़ते जा रहे थे यकायक एक भयंकर बाढ़ लिए भीमा नदी मिली अभी वर्षा हुई थी उन्माद भरी धीमा कुमार छत्रसाल की परीक्षा लेने मुख्य खोले सामने चुनौती दे रही थी वीर छत्रसाल ने सोचा मुगलों का वह खत्म हुआ।

---

1. कुमार छत्रसाल का विवाह वैशाख शुक्ल तृतीया 1722 को हुआ था इसके कई मां बाद वह मुग़ल सेना में भर्ती हुए थे और अदहन सुदी पांच गुरुवार संवत् 1724 (शिवाजी से मिलन) के पूर्व मुग़ल सेल सेना से अलग हो चुके थे

2. उमरेड, महाराष्ट्र का एक गांव जहां छत्रपाल गांव के एक पटेल के घर ठहरे थे उन्होंने अपना नाम यहां छविनाथ बताया था।

और अब भी माड़े आ गई युक्ति से असंभव कार्य संभव बनता है कुमार छत्रसाल और देव कुंवरि ने जान की बाजी लगाकर भीमा नदी को परीक्षा दी और सफल हुए आखिर उनके अंगरक्षक नागदेव कभी दूर नहीं रहते उन्होंने जलमार्ग बनाया छत्ता ले रहा पाली जैसे प्रह्लाद ने गर्म खंबे में चींटी देखकर तत्काल खंबे का आलिंगन कर लिया वैसे छत्ता कुमार छत्रसाल ने जनपथ को देखकर भीमा को पार किया था

अब मिलन की पावन बेला सन्निकट आ रही थी शिवाजी को गुप्त चरो द्वारा छत्ता के निकल भागने और महाराष्ट्र की तरफ पदार्पण आने करने की सूचना मिल चुकी थी भीमा नदी पर शिवा गुप्त रूप से उनका स्वागत कर चुके थे कुमार छत्रसाल ने शिवाजी के पास सिंगड़ पहुंचकर अपना संदेश भेजा संदेश पाकर शिवाजी भाव विह्वल हो गए छत्रपति शिवाजी और कुमार छत्रसाल का महा मंगल मिलन इतिहास की अमूल्य धरोहर बन गई इन दोनों सूर्य वीरों के मिलन की पावन घड़ी में लिख गया हिंदुत्व की अखण्ड संरक्षा और सुरक्षा का इतिहास धर्म के उत्थान हेतु यही तो वहीं पर पधारे हैं असुरों के दमन एवं सज्जनों की रक्षा के लिए।

छत्रपति शिवाजी ने कुमार छत्रसाल से हाल-चाल पूछे और वीर चंपा दंपत्ति को भावभीनी श्रद्धांजलि दी तभी छत्रसाल के भी नेत्रों में अश्रु बिंदु पर पड़े थे वीर शिवाजी ने कुमार छत्रसाल को सहानुभूति के साथ सांत्वना दी और कुछ काल

1. वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

हाथ में ध्वजा रहे बाल दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो!

प्रात हो कि रात हो संग हो न साथ हो
सूर्य से बढ़े चलो चन्द्र से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो! धीर तुम बढ़े चलो! (बालगीत)

2. मार्ग में एक प्रहरी से हुए संवाद का निम्न चित्रण मिलता है

तुम कौन कहाँ से क्यूँ आए, प्रहरी की आँख बचाकर करके।
यह शिवा छत्रपति की सीमा है, बिन आसा कोई क्यों सरके।
हम छत्रसाल चंपत सुबाल, बुंदेलखण्ड से आए हैं।
छल छिद्र नहीं उर मित्र भाव, लेकर आये मन भाए हैं॥
छत्ता ने खड़ग उठाकर के, गरदन पर रख परमाण दिया।
उस समय अंधेरे से निकले, श्री छत्रपति ने हाथ लिया॥ (वीर भक्त चंपत छत्रसाल पृ. 136)

रुकने का आग्रह भी किया कुमार छत्रसाल की अभिलाषा पूर्ण हुई कुछ मास रोकने का विचार बनाया ताकि छत्रपति शिवाजी के सानिध्य का लाभ मिले विचार मगन होते कुमार छत्रसाल को देखकर शिवाजी कहने लगे कुमार तुम मेरे पुत्र बन चुके हो यह सब राजकाज सेना सब तुम्हारी ही है तुम मेरे अपने हो ऐसी स्नेह भरी मधुर वाणी बोलकर शिवाजी ने कुमार छत्रसाल के नवनीत समान हृदय में अमृत घोल दिया था।

[वि.सं. 1724 (1667 ई.)] था कुमार छत्रसाल साडे 18 वर्ष के हो चुके थे थोड़े ही समय में कुमार छत्रसाल ने यहां रहकर बहुत सी जानकारियां प्राप्त कर ली। एक दिन छत्रपति शिवाजी ने इन्हें अपने सिंहासंन् पर बैठाया और बोले कुमार छत्रसाल यह सिहासंन् तुम्हें अब बुन्देलखण्ड में भी मिलना है तुमसिंह पुत्र हो तुमनेसिंह का दुग्ध पान किया है तुम्हें अपनी मातृभूमि को गुलामी की दास्तां से स्वतंत्र करना है जनसत्ता को धराशाई कर तुम्हें देव सत्ता स्थापित करनी है वक्त तुम सब परीक्षाएं उत्तीर्ण कर चुके हो तुम्हें चक्रवर्ती सम्राट बनने के सभी लक्षण हैं ऐसा कहकर छत्रपति शिवाजी ने बीरो चितरंग से कुमार छत्रसाल को अपनी भवानी तलवार भेंट की थी कुमार छत्रसाल शिवाजी से तलवार पाकर रोमांचित हो उठे

शक्ति हमारी सदा तुम्हारे साथ रहेगी हिम्मत बांधो।

स्वयं शत्रुओं को तुम अपने बूंद देश से भगा दो॥

छत्रसाल का तेज चमक क्षण भर में झूला हो आया।

पक्का दाया हाथ शस्त्र को वीरवती ने शीश झुकाया॥

छत्रपति शिवाजी ने कुमार छत्रसाल को भावभीनी विदाई दी थी तथा अपना आत्म बल एवं विश्वास देकर दिव्य संदेश सुनाया था उसकी झलक तत्कालीन लाल कभी कृत छत्रप्रकाश ग्रंथ में वर्णित है क्या था

करौ देश के राज छतारे, हम तुमतें कबहूं नहिं न्यारे।

दौरि देश मुग़लन को मारौ, छपटि दिली के दिल संहारों॥

तुम हो महावीर मरदाने, करिहौ भूमि भोग हम जाने।

जो इतहीं तुमको हम राखै, तो सब सुजस हमारै भाखै॥

धन्य है यह वर्ष [वि.सं. 1724 (1667 ई.)] सुकुमार छत्रसाल सिंगड़ से निजगढ़ बुन्देलखण्ड की ओर लौट पड़े।

1. यह कह तेग मंगाय बधाई, वीर बदन दूनी दुति आई (क्षत्रप्रकाश)

बुन्देलखण्ड वापसी

कुमार छत्रसाल दो वर्ष [वि.सं. 1722-1724 (1665-1667 A.D.)] के उपरांत वापस बुन्देलखण्ड लौट आए, उक्त समय में उन्हें व्यापक अनुभव हो चुका था उन्होंने अपने अनुभव को बुन्देलखण्ड की माटी से जोड़ने के लिए ऊंची नीची पहाड़ियों कराओ तथा वनों का व्यापक सर्वेक्षण किया मातृभूमि पर स्थापित मुग़ल ठिकानों का भी बारीकी से गहन अध्ययन किया इस कार्य में उन्होंने दो वर्ष (1725-1727) से अधिक बताएं इस दौरान अनेकों लोगों से जनसंपर्क भी किया हमजोली साथियों की टोलियां भी संगठित की अपने भाई अंगद राय और रतन सा से मिलने क्रमशः देवगढ़ और बिजली भी गए अपने दे को उन्होंने भाइयों के सम्मुख प्रकट किया परंतु दोनों भाई तैयार ना हुए तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रंथ क्षेत्र प्रकाश में इस घटना का अत्यंत मार्मिक वर्णन मिलता है जिसे सुनकर नपुंसक व्यक्ति भी जोश में भर उठता है

दौर देश दिल्ली के जारौ, तमकि तेग तुरन पर धारौं।

हम सेवा करि हैं अनुरागे, लड़ी हैं उमगि तिहारे आगे॥

जो मुमिया हम पै मिली रैहैं, तेई संग फौज के रैहैं।

जै ने लागि हैं संग हमारे, दोष ने लागे तीनके मारे॥

ले उमराव चौथ भरि दै हैं, तेहि तेई अमल देस कौ पै हैं।

जिनमें ऐड़ जुद्ध की पावै, तिनपै उमगि अस्त्र अजमावै॥

सुकुमार छत्रसाल के ऐसे वचनों पर भी जब रतनशाह को विश्वास नहीं हुआ, तब उन्होंने कर्तव्य पर भरोसा कराते हुए असंभव को संभव कर पाने का प्रमाण निम्न प्रकार से दिया--

उदिदम ते संपत्ति घर आवै, उदिदम करै सपूत कहावै।

उदिदम करै संग सब लागै, उदिदम ते जग में जसु पावै।

समुद्र उतरि उदिदम ते जैये, उदिदम ते परमेसुर पैये॥

इस अभियान में कुमार छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड के हर भूभाग का अपनी नीति के अनुरूप भ्रमण किया संयोगवश, तभी [वि.सं. 1727 (1670 A.D.)] में औरंगज़ेब ने ओरछा के मंदिरों को तोड़ने की मुहिम छेड़ी।

धूमघाट विजय

अपने रण कौशल को दिख लाने के लिए कुमार छत्रसाल समय की खोज में थे तभी औरंगज़ेब ने पिलाई खां को ओरछा के मंदिर ध्वस्त करने के लिए भेजा था।

---

8 मई और 4 अगस्त 1670 (वि.सं. 1727) औरंगी फरमानों को तामील करने के वास्ते सरदार फिदाई खां ने बुन्देलखण्ड में पदार्पण किया था।

चम्पतराय और सारंधा के अवसान के पश्चात बुन्देल भूमि स्वाभिमानी वीरों से विहीन हो चुकी है ऐसा समझकर एवं सेना गजब की भांति आगरा से ओरछा की तरफ चल पड़ी थी उस समय ओरछा की गाड़ी पर बूढ़े महाराजा सुजानसिंह थे ऐसी संकट की घड़ी में उन्होंने कुमार छत्रसाल को बुलवाकर सहायता मांगी और चम्पतराय की मौत के प्रसंग पर उन्हें प्रायश्चित किया था।

कुमार छत्रसाल ने दूर मंगल बक्शी को साथ लेकर धूम घाट के मैदान में फिदाई कहां को रोक लिया भयंकर युद्ध हुआ गौरंगी सेना में त्राहि-त्राहि मच गई छत्रसाल और धुरमंगद की सेना के बीच फंसी और अंगी सेना दो पाटों के बीच में लगी तीसरे दिन विदाई का बची कुची सेना लेकर ग्वालियर भाग गया का बची कुची सेना लेकर ग्वालियर भाग गयाओरछा में खुशियां छा गई परंतु यह क्या? विदाई का कुछ समय बाद एक बड़ी सेना लेकर फिर आदम का यह दो नंबर कुमार छत्रसाल ने बुन्देली सेना का उत्साह बढ़ाते हुए विदाई कहां की सैन्य टुकड़ी को मौत के घाट उतार दिया बेचारी यवन सेना बुंदेलों के अदम्य साहस से नेस्तनाबूद हो गई ओरछा की शान गगन मंडल में भागवत चमक उठे बूढ़े सुजानसिंह ने धूम घाट विजय के नायक चम्पत सूत्र छत्रसाल को गले लगा कर बहुत सम्मान दिया

मध्यप्रदेश की यह रणभूमि धूम घाट राजस्थान की हल्दीघाटी के समान है वस्तुतः पश्चिम दिशा से बुन्देलखण्ड में प्रवेश पाने हेतु सर्वाधिक उपयुक्त स्थान यही है यहां पर आकर ही यवन सेना ने हमेशा मुंह की खाई है धूम घाट की माटी माथे का चंदन है ऊर्जा का अनन्य स्त्रोत है।

कुमार छत्रसाल के लिए यह रणास्थली धूम घाट वरदान है धूम घाट विजय से ही उनकी यशोगाथा बुन्देल भूमि के चप्पे-चप्पे में फैली थी वह नरवीर हिंद केसरी चंपक सुमन छत्रसाल के नाम से जन-जन के नायक बने थे।

स्वछन्द कार्य योजना

धूम घाट विजय के उपरांत कुमार छत्रसाल अपने सैन्य गतिविधि को गठित करने में जुट गए और अपना समय मऊ कहानियां मऊ महेवा में देने लगे उन्होंने अपनी सैन्य गतिविधि का क्षेत्र मऊ की पहाड़ियों को चुना था समग्र बुन्देलखण्ड के नर

---

1. महाराजा सुजानसिंह ने इसी समय रण कर कशा नामक तलवार छत्रसाल के कमर में बांधकर उन्हें सदा विजई रहने का आशीर्वाद दिया था इस समय महाराजा सुजानसिंह की आयु 77 वर्ष थी इसके अनंतर 2 वर्ष बाद उनका अवसान हो गया था इनकी रानी कंचन कुंवरि ने ओरछा में बेतवा तट पर कंचन घाट का निर्माण करवाया था वह धार्मिक स्वभाव की एवं अत्यंत समझदार महिला थी उनके कहने पर ही महाराजा सुजानसिंह के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया था तभी इनमें कुमार छत्रसाल के प्रति अगाध प्रेम उमड़ा था।

नारियों में छत्रसाल का नाम श्रद्धा पूर्वक लिया जाने लगा था धर्म और धरने की रक्षा में प्राण प्राण से सलंग्न छत्रसाल के अंदर जनता को दैवीय शक्तियों का भी आभास होने लगा था उन्हें एकटक निहारने के लिए लोग ललित बने रहते थे कुमार छत्रसाल ने स्वच्छंद कार्य योजना की सफलता में यह भी एक प्रमुख कारण था कहा जाता है कि इसी समय उन्हें एक दिव्य पुरुष के दर्शन भी हुए थे जिन्होंने एक सिक्का देकर उन्हें उन्हें बुद्धा अवतार के रूप में मिलने का वचन दिया था।

वि.सं. 1728 (1671 ई.) के लगते ही कुमार छत्रसाल अपने अभीष्ट लक्ष्य सिद्धि के अति समीप पहुंच गए थे वृंदावन में भी छत्रसाल की भावी रणनीति की चर्चाएं उनके कुल गुरु के घर आंगन तक पहुंच गई थी संभव है कि छत्रसाल ने इसी योजना के अनुरूप गुप्त ढंग से वृंदावन मथुरा की यात्रा भी की हो और ब्रजनाथ सहायक मेरे हो कावर भी गिरिराज से मांगा हो तभी उनके अंतः करण में आध्यात्मिक शक्ति का संचार हुआ होगा

कुमार छत्रसाल का अंतरण असीम उत्साह एवं सुरती से भरने लगा था यथार्थ में यह सब कुछ उनकी स्वच्छंद कार्य योजना का परिणाम था

संघर्ष काल के उतार-चढ़ाव

चम्पत दंपत्ति की वीरगति प्राप्त हो जाने से कुमार छत्रसाल पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा था कार्तिक शुक्ला एकादशी को जब छत्रसाल अनाथ हुए तब उनकी उम्र साडे 12 वर्ष की थी और उनका विवाह वैशाख शुक्ल तृतीया [वि.सं. 1722 (1665 A.D.)] को हुआ था तब वह 16 वर्ष से कम उम्र के थेइस समय अवधि में कुमार छत्रसाल अपनों से ठुकराए गए थे वहीं ने इन्हें देखकर अपने फाटक ही बंद कर लिए थे कुल पुरोहित भानु पंडित ने मुंह मोड़ लिया था ऐसी अल्प अवस्था में बेसहारा कुमार छत्रसाल को कुछ पराए लोगों ने सहारा दिया था जिनके बलबूते पर कुमार छत्रसाल ने अपनी इस अवस्था में साहस बटोर कर बड़े हुए

बरदिया कुम्हार की लड़की, लल्लू गडरिया दिलवाड़ा के महाबली पटेल एवं यहां के ही नवयुवक भानु भट्ट आदि नए कुमार छत्रसाल की अंतरात्मा में कभी भी नीरसता नहीं आने दी प्रारंभ के 3:30 वर्ष इन लोगों के सानिध्य में ही बीते कुमार छत्रसाल ने कुछ दिनों में ही बुन्देलखण्ड का भौगोलिक परिस्थिति का विधिवत निरीक्षण किया

---

1 आध्यात्मिक शक्ति-शारीरिक और मानसिक शक्ति को बढ़ाकर मानव की कार्य दक्षता कार्य क्षमता और कार्य कुशलता को कई गुना कर देती है।

था। वह एक दिन भी चैन से ना बैठे थे। पूरा बुन्देलखण्ड ही उनकी पाठशाला बनी हुई थी। इस काल [वि.सं. 1718-1721 (1661-1664 A.D.)] में भी उन्होंने बड़े बूढ़ों से संपर्क बनाकर बहुत कुछ सीख लिया था।

स्वर्गीय चम्पतराय की इच्छा अनुसार कुमार छत्रसाल का विवाह [वि.सं. वैशाख अक्षय तृतीय 1702 (1665 A.D.)] देव कुंवरि के साथ देलवाड़ा के महाबली पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ था।

कुमार छत्रसाल ने तदोपरांत डेढ़-दो वर्ष [सं. 1722-24 (1665-1667 A.D.)] मुग़ल सेना में बिताए थे तथा संवत् 1724 (1667 A.D.) के उत्तरार्ध में उन्होंने छत्रपति शिवाजी के पास पहुंचकर उनका सानिध्य पाया था उनके पास से लौटकर उन्होंने 3 वर्ष [वि.सं. 1725-1727 (1668-1670 A.D.)] बुन्देलखण्ड में संघन जनसंपर्क किया था। इसी दौरान तत्कालीन ओरछा नरेश सुजानसिंह ने उनके व्यक्तित्व को देखकर बहुत स्नेह दिया था।

वस्तुतः कुमार छत्रसाल के यह 9 वर्ष भयंकर उतार-चढ़ाव भरे थे। अग्नि में तककर सोना कुंदन बनता है यह कहावत कुमार छत्रसाल पर सटीक बैठती है।

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(3)

विकास काल

(1728-1744)

सोलह वर्ष [वि.सं. 1728-1744 (1671-1687 A.D.)] का कालखण्ड छत्रसाल जू देव के विकास के महत्वपूर्ण वर्ष हैं। संघर्ष काल के दौरान सीखे व्यस्त समझे अनुभवों का कार्यान्वयन किस प्रकार छत्रसाल जूदेव ने किया है उसकी झलक ग्यारह वर्षों के [वि.सं. 1728-1739 (1671-1682 A.D.)] कार्यकलापों में दिग्दर्शित होती है, और पांच वर्ष 1739-17 44 (1682-1687 ई.)] विकास की स्थापना के हैं प्रस्तुत है इसी का इस खण्ड में अनुशीलन।

श्री राज परमात्मने नमः

(3)

विकास-काल

(1728-1739)

(अ)

कार्यान्वयन काल [वि.सं. 1728-1739 (1671-1682 ई.)]

छत्रसाल जूदेव ने विषम परिस्थितियों के सम्मुख कभी हार ना मानी थी चाहे पुरंदर किले की घेराबंदी हो अवध देवगढ़ विजय अथवा धूम घाट का मैदान उनके अंतर्मन में कभी हार की कल्पना तक उठी थी विजय श्री ही उनके अंतर्मन की उत्कंठा रही इसी उत्कंठा के सहारे कुमार छत्रसाल ने संघर्ष के 9 वर्ष पूरे किए थे संघर्ष का फल मीठा होता है यह शाश्वत सत्य है मातृ भूमि की सक्रिय सेवा की भावना ने उन्हें स्वच्छ कार्य योजना में सफलता देकर विकास की तरफ उन्मुख किया था

शोध लग्न

माता पिता के अवसान के पश्चात नौ वर्ष का समय कुमार छत्रसाल का जीवन अनेक उतार-चढ़ाव के घटनाक्रमों से गुजरा। इस काल में वह अपने दे का सत्कार रूप में परिणित करने के लिए जी जान से जुटे रहे और उनकी सेना का निकटता से गहन अवलोकन महा प्रताप शिवाजी से भेंट और ओरछा नरेश महाराजा सुजानसिंह का स्नेह संघर्ष काल की सफलता की निशानी है परिवारिक जनों एवं बुन्देली नवयुवकों के सामने भविष्य की लकीर खींच कर अपने दे का मजबूत आधार बनाकर छत्रसाल जूदेव एवं सैन्य के विरुद्ध अरुण हो चले।

बुंदेलों के कुलगुरु वृंदावन निवासी स्वामी नरहरीदेव जी ने अपने शिष्य सरिसदेव के हाथ युद्ध की शोध लग्न (पत्रिका) कुमार छत्रसाल के पास भिजवायी थी।

औरंगज़ेब की मेष राशि के लिए उसकी राशि से तृतीय पढ़ने वाली मिथुन राशि वाले व्यक्ति छत्रसाल को ही विजय मिल सकती है ऐसा विचार कर युद्ध की शोध लग्न तैयार हुई यथा शोध लग्न सूर्योदय के पूर्व रविवार जेष्ठ शुक्ल पंचमी [वि.सं. 1728 (1671 A.D.)]

कुंवर छत्रसाल ने इस शुभ बेला (लग्न) की शुरूआत 5 सवार और 25 सैनिकों से उक्त लग्न मुहूर्त में की। आकाश से जैसे कोई तारा क्षण भर के लिए अपार ज्योति को लेकर टूटता है तब जनमानस उस समय इस अनहोनी पर आश्चर्य करने लगता है और विधाता के बनाए अपार संसार की निवेदिता

पर नाज कर उठता है बस ऐसा ही कुछ उस क्षण हुआ था ठीक युद्ध की शोध लग्न पर मोर पहाड़ी पर ठहरी मुग़ल सेना के ऊपर छत्रसाल अपनी सेना लेकर टूट पड़े मुग़ल सेना इस अप्रत्याशित आक्रमण को झेलना सकी थी कुछ काल के लिए यवन सेना में प्रलय सी मच गई जैसे कोई भूकंप आ जाए और क्षण भर में तबाही मचा कर विलीन हो जाए ऐसे ही छत्रसाल की सेना ने मुग़ल शिविर पर धावा बोलकर कहर ढा दिया और विलीन हो गए शोध लग्न का परिणाम अति सुखद रहा छत्रसाल ने अपने इस छोटी सी सेना के द्वारा दिन दूनी रात चौगुनी सफलता प्राप्त की बुन्देल भूमि में छत्रसाल की स्वतंत्र भागने लगी

पांच सवार पच्चीस सैनिक

कुंवर छत्रसाल की इस लघु सेना का मूल्यांकन करने पर अवगत होता है कि जनपद में सवार और 25 सैनिकों ने छत्रसाल के झंडे के नीचे उनका दामन थामा था वह समूचे बुन्देलखण्ड की जन भावनाओं को प्रतिबिंबित कर रहा था इस सेना में दो बुन्देल कुमारों के अलावा रैली मोदी खंगार मनिहार चूड़िहार बारी कहार ढीमर दवा अहीर दो मुसलमान राजपूत और ब्राह्मण थे वस्तुतः यह सभी वर्ग के योद्धाओं का एक संगठन था।

लाखों सैनिकों हजारों घुड़सवार और हजारों रुपए तथा सैकड़ों सेनापतियों से सजी मुग़ल सेना से मोर्चा लेने का उद्यम रचने वाले के पास केवल 5 बार और 25 सिपाही निसंदेह उस समय जनमानस के अंतर्मन में इस अभियान के प्रति अविश्वास एवं औचित्य ही नेता की धारणा बनी होगी परंतु इतिहास साक्षी है कि बड़े से बड़े कार्य छोटे से छोटे संगठनों ने विशालकाय रूप धारण कर असंभव को भी संभव कर दिखाया है और संसार को आश्चर्यचकित किया है

इन पाँच खंभों एवं पच्चीस पत्थरों से एक कुशल कारीगर द्वारा बनाया गया बुन्देली सेतु निसंदेह भविष्य की समस्त आकांक्षाओं को पूर्ण करने में खरा उतरा है निशदिन उठते बवंडर ओ आंधी व तूफानों के प्रचंड झोंकों से यह सेतु तक से मस ना हुआ वर्णन शिशु अवस्था से किशोरावस्था पाकर खूब फला फूला बुन्देल वासियों का ही

उदिदम ते संपत्ति घर आवै, उदिदम करै सपूत कहावै।

उदिदम करै संग सब लागै, उदिदम ते जग में जसु पावै।

समुद्र उतरि उदिदम ते जैये, उदिदम ते परमेसुर पैये॥ (छत्रप्रकाश)

नहीं अपितु समग्र राष्ट्र वासियों का नवजीवन बना यह युगों युगों तक प्रेरणा स्रोत बंद कर सूर्य के समान चमचम आता रहेगा धन्य है महाराजा छत्रसाल जी का यह जीवनदाई पांच सवार 25 सैनिकों का अनूठा संगठन

तत्कालीन कवियों और इतिहासकारों ने इस विलक्षण संगठन का सजीव चित्रण किया है जिसका निरूपण निम्न रूप में देखिये:-

॥लाल कवि कृत छात्र प्रकाश के अंश॥

ये सब सुभट संग के जानौ, कुंवर नारायनदास बखानौ।

गोविंद राय पैंतपुर वारे, सुंदरमनि पमार अनियारे।

दलसिंगार राममनि दौवा, मेघराज परिहार अगौवा।

धुरमंगत बगसी मरदानौ, ख्वांगर खरौ किसोरी जानौ।

प्रबल मिश्र दलशाह ज्यों, त्यौ हर कृष्ण प्रशंस।

लच्छे रावत राममनि, मानसाह हरिबंस॥

मेघी अरु परदौन दयाले, भानु भट्ट लगसी सनि पाले।

फौजे मियां समर अति सूरौ, लोह लराक सिरोमनि पूरौ॥

पंबल ढ़ीमर खरगे बारी, मोदी पते सबै हितकारी।

पांच सवार पचीसक प्यादे, विरचै विकट सहज में सादे॥

॥कृष्ण कवि कृत: प्रजा पालक छत्रसाल के अंश॥

जे भट छत्रसाल के खास, प्रथम कुंवर नरायनदास।

पैंतपुरा के गोविंद राय, सुंदरमनि पंमार सहाय।

ऐड़े बैंडे मेघन दौवा, मेघराज परिहार अगौवा।

फौजे मियां किशोरी खांगर, रावत सांवत सबै उजागर।

भान भट्ट लच्छे बल बाढ़े, दल सिंगार राममनि गाढ़े।

प्रबल मिश्र धुरमंगत बगसी, मेघी दयाल मान हरिवंसी।

त्यों दलशाह राममनि दौंवा, त्यौं परदौन कृष्णहार भौवा।

पवल ढ़ीमर मोदी पते, इतै लोग सब एकई मते।

छत्रसाल के जालम जुंगा, ते उठ भोर बजावै पुंगा॥

पंच अश्व और पच्चीस सैनिकों का विवरण निम्न प्रकार है-

पंच अश्व 1. भले भाई (इस घोड़े को छत्रसाल के लिए उनकी मां लाड़कुंवरि ने आभूषणों से के सहित महाबली पटेल के पास धरोहर में रखा था) 2. लच्छी; 3. मृगछौना; 4. भभूखा; 5. दामिनी घोड़ी।

पच्चीस सैनिक - कुमार छत्रसाल के साथ सबसे पहले सम्मिलित होने वाले शूरवीरों के नाम निम्न वत् हैं--

(1) कुंवर नारायणदास (2) कुंवर गोविंदराय (3) सुंदरमणि पमार

(4) दलसिंगार (5) राममनि दौवा (6) मेघराज परिहार

(7) धुरमंगत बगसी (8) खागर खरों (9) किशोरी

(10) प्रबल मिश्र (11) दलशाह (12) हरी कृष्ण

(13) लच्छे रावत (14) राममनि (15) मानशाह

(16) हरिबंस (17) मेघी (18) परदौन (प्रद्दुमन)

(19) दयाल (20) भानु भट्ट बगसी (21) फौजे मियां

(22) पंवल ढ़ीमर (23) लोहीराक (सिरोमणि)

(24) खरगे बारी (25) पते मोदी

उपर्युक्त पच्चीस सैनिक कुमार छत्रसाल के नेतृत्व में महेवा (परगना जतारा टीकमगढ़) के पास मोर पहाड़ी पर शोध लग्न के पूर्व एकत्रित हुए शोध लग्न और राज्य के राज्य गुरु के वंशज पंडित राधेलाल गुसाई के पास सुरक्षित पत्र के अनुसार निम्न प्रकार थी जेष्ठ शुक्ल पक्ष पंचमी रविवार

संवत् 1728 (14 अहरगण 6/92 स्पष्ट रवि 9/17/31/8,) असत् तिथि छोड़कर सत् तिथि ग्राह की गई थी) प्रथमवार रवि ध्रुव नक्षत्र रोहिणी कुमार छत्रसाल ने अपने इष्ट देव श्री कृष्ण जन्म नक्षत्र रोहिणी रखवाया था सिद्धि योग शकुनी स्थिर लग्न प्रातः सूर्योदय (6 बजकर 50 मिनट) से 28 मिनट पूर्व ही अर्थात 6 बजकर 22 मिनट पर था।

कुमार छत्रसाल ने उक्त शोधन के अनुरूप ही उक्त सैनिकों को साथ लेकर मुग़ल सेना पर भयानक आक्रमण किया था इस युद्ध में आशातीत सफलता पाकर सभी हर्षोल्लास से भर उठे थे

ध्वज-- इस समय कुमार छत्रसाल के दो ध्वज थे यथा

(i) प्रथम ध्वज झंडा में श्री मारुती जी का चित्र और कुलदेवी विंध्यवासिनी देवी का चित्र अंकित था इसके अतिरिक्त ध्वजा में चंद्रमा और सूर्य के चिन्ह बनाए गए थे चंद्रमा उज्ज्वल चरित्र का प्रतीक था तथा सूर्य कुमार छत्रसाल के वंश का परिचायक

था। यह ध्वज पीले रंग का था।

(ii) द्वितीय ध्वजा (झंडा) में श्रीमारुती जी का चिन्ह था। यह केसरिया रंग का था। इसका प्रयोग रणभूमि में किया जाता था।

इन दोनों जजों (झंडों) का प्रयोग महाराजा छत्रसाल जी द्वारा संवत् 1740 (1683 A.D.) के पूर्व तक होता रहा था, तदोपरांत एक ध्वज हो गया था जिसमें पीले रंग में चंद्रमा एवं सूर्य के चिन्ह अंकित थे तथा ध्वज केसरिया रंग का था पीले एवं केसरिया रंग क्रमशः धर्म एवं प्रक्रम के थे

दिग्विजय ध्वज-- महाराजा छत्रसाल ने संवत् 1743 (1686 A.D.) में जब दिग्विजयी यात्रा की थी तब उस समय उनके ध्वज में प्रमुख रूप से चंद्रमा और सूर्य के बड़े-बड़े चिन्ह अंकित थे जो क्रमशः लौकिक रूप में उज्जवल चरित्र और सूर्य वंश की दिग्विजयी सत्ता के प्रतीक थे।

स्व. चम्पतराय की प्रेरणा एवं ओरछा नरेश का शुभाशीष-- इस संगठन में इस रूप में संगठित होने के पीछे लालकवि ने अपने ग्रंथ छत्रसाल में स्वर्गीय चम्पत दंपत्ति की प्रेरणा एवं तत्कालीन ओरछा नरेश महाराजा सुजानसिंह का शुभ आशीष भी माना है ओरछा नरेश सुजानसिंह ने कुमार छत्रसाल से कहा--

गहिर बंस के छत्र छतारे, तुम तें ह्वै हैं काज हमारे।

जब तें चंपति कीन पयानों, तब तें परिब हीन हिन्दुवानो॥

लग्यो होन तुरकन को जोरा, को राखै हिंदुन की तोरा।

तुम चंपति के बंश उज्यारे, छत्र धरमधुर थंम न हारे॥

तुम लीनी हिम्मत हिय ऐसी, आनि फेरिहौ चंपति कैसी।

अब जो तुम कटि कसौ कृपानी, तो फिर चढ़े हिन्दुमुख पानी॥

(छत्रप्रकाश पृ. 84)

पांच सवार और पच्चीस सैनिकों की टोली ने चम्पतराय के निधन के नौ वर्ष पश्चात् सं 1728 (1671 A.D.) में इस शोध लगन के अनुकूल अरुण होकर बुन्देल भूमि में

चम्पत दंपत्ति के अवसान (संवत् 1718) होने पर देश की स्थिति का चित्रण निम्न प्रकार से था

जासों कुल दिल्ली दल हरियो। सो चंपति सुरलोक सिधारियो।

चार पहिर रवि मंडल फरिब, जित्यों जगत जीति दिस चारिब॥

गयी सूर सुरपति के लोके, फूटी समुद कौन अब रोके।

उमड़े फिरत युद्ध की गाढ़े, चहुं ओर बैरीबल-बाढ़े॥

चहुं ओर बैरी बढ़े, छत्रबल ताकत घात।

सूनो वन मृगराज को, दुख उखारत खात॥

ऐसी दसा होने जब लागीं, चंपति चमू सोच में पागी॥ (छत्रप्रकाश पृ. 88)

(छात्रप्रकाश पृ. 88)

नूतन आशा का जेस्ट शुक्ला पंचमी के दिन सूर्योदय हुआ था संयोग से यह पुण्य अवसर सूर्य वार रविवार के दिन ही सूर्योदय के समय के हाथ आया था।

शहीदी चौपड़ा

महाराजा छत्रसाल बड़े प्रकृति प्रेमी थे बुन्देल भूमि की पहाड़ियां नैसर्गिक छटा से परिपूर्ण रहती हैं उन पहाड़ियों पर कहीं-कहीं भव्य प्राकृतिक छटा को बिछड़ते सुंदर चौपड़े देखने को मिलते हैं बचपन में छत्रसाल का जीवन इन्हीं सबके बीच में बीता था।

महाराजा छत्रसाल अपनी सैन्य टुकड़ियों को लिए इन्हीं स्थलों पर थकान मिटाने हेतु अमृत पान किया करते थे 1 दिन की बात है कि महाराजा छत्रसाल एक पहाड़ी के उच्च शिखर पर चल गए वहां मनोहारी चौपड़े के दृश्य को देखकर मंत्रमुग्ध हो गए महाराज नैसर्गिक छटा का घूम घूम कर अवलोकन करने लगे पहाड़ी के नीचे एक मुग़ल सैन्य टुकड़ी आदम की उसके गुप्तचर पहाड़ी पर चढ़े इधर-उधर की हलचल को टटोल रहे थे तथा उनकी नजर एक कपड़े पर जा लगी जहां उन्होंने एक शक्ति को टहलते हुए देखा दूरबीन की मदद से साफ स्पष्ट हो रहा था कि यह व्यक्ति कोई अन्य नहीं बल्कि स्वयं बुन्देला छत्रसाल है जो अकेले ही टहल कदमी कर रहे हैं

गुप्त चोरों के अनुसार मुग़ल तने टोली ने चारों ओर से उस चौपड़े को घेर लिया और ऊपर चढ़ने लगे महाराजा छत्रसाल की दो ही नजर आजाडे के इर्द-गिर्द छाई सुंदरता पर मोहित थी पहाड़ी शिखरों पर चढ़ना आसान काम नहीं होता है यह मुग़ल सैनिक ऊपर चढ़ने में कठिनाई का अनुभव कर रहे थे उनमें जल्दी चढ़ने की होड़ लगी थी इसी पर्यटन में कुछ मुग़ल सैनिक नीचे को लुढ़क गए उनके गिरने से पत्थर भी फैसले पत्थरों के गिरने की आवाज से पूरी पहाड़ी गूंज उठी घाटी का निर्णय सुनकर अंदर आओ में छिपे छत्रसाल की सैन्य टुकड़ी चौक पड़ी इस टुकड़ी का नेतृत्व लक्ष्य रावत और बाघ राज परिहार कर रहे थे उनकी दृष्टि सहसा उसी और गई जहां से पत्थर लड़के थे परिस्थितियां भी रह गए उन्होंने देखा कि छत्रसाल को पकड़ने मुग़ल टुकड़ी चुपचाप ऊपर चल रही है पल भर के देरी छत्रसाल का काल बन सकती है ऐसा सोचकर टुकड़ी आनन-फानन में उसी तरफ भागी आगे आगे मुग़ल गुप्तचर और पीछे पीछे वीर बुंदेलों की टोली एक दूसरे के चढ़ने में होड़ लग गई मुग़ल बहुत आगे थे बुंदेले वीर नीचे बुंदेले वीरों को पर्वत शिखर चढ़ना दौड़ कर आता है वह मुगलों के मुकाबले दोगुने से चलने लगे इस चढ़ा चढ़ी के दौर से पर्वत मालाएं गूंजने लगी तभी छत्रसाल की तंद्रा टूटी में मुगलों को देख कर चौक पढ़ें चारों ओर से अचानक मुगलों का आक्रमण एकाकी थे अब उन्होंने मुगलों पर बाण वर्षा शुरू कर

दी, लेकिन टिड्डी दल के समान उनकी संख्या ऊपर बढ़ती जा रही थी नीचे से बाघराज की टोली ने मुगलों पर प्रहार शुरू कर दिए और ऊपर से छत्रसाल ने बीच में मुग़ल 5 गए उन्हें दिन में ही तारे दिखने लगे ऐसा उनके मुख से निकल पड़ा अरे ए शैतान कहां से आ गए यहां तो कोई ना था भयंकर मार की बुन्देली टुकड़ी ने फिर भी मुग़ल ऊपर चढ़ते जा रहे थे छत्रसाल का जीवन संकट में घिर आया वीर बुंदेलों ने जान की बाजी लगा दी एक-एक कर मुग़ल घायल होने लगे बेचारे लुढ़क कर मौत के गाल में समा गए इस काम में बुंदेलों की कॉपी कीमत चुकानी पड़ी तब कहीं जाकर छत्रसाल की जान बची इस चौपड़े पर छत्रसाल के खातिर हरिशंकर मिश्र नंदन छिपी कृपाराम आदि अनेक वीर बुंदेले शहीद हुए तभी से यह चोपड़ा शहीदी चोपड़ा के नाम से प्रसिद्ध है

यह घटना उस समय की है जब औरंगज़ेब का एक चहेता सेनानायक मैं छत्रसाल के दमन के लिए बुन्देलखण्ड आया था जिसका नाम तय है तहब्बर खां था इसी की एक गुप्तचर सैन्य टुकड़ी ने सेनानायक को बिना बताए ही छत्रसाल को जिंदा या मुर्दा पकड़ने की सूची थी उन्हें छत्रसाल को देखकर ऐसा लगा था कि बिल्ली के भाग्य में दूध का छींका टूटा है परंतु यह दुख का चेक आया था था तो फनी लेविस धरो का ठेका जो मौत बंद कर टूटा था बेचारे यह कजली के बदले आज ही खा गए

आतताईयों से युद्ध

पांच सवार 25 सैनिकों के गठन एवं सेना पर कहर ढाना शुरू कर दिया फलत है विकास काल के कार्यान्वयन समय में अनेक यवन प्रेमी आतंकियों ने सीधे छत्रसाल से जंग लेना शुरू कर दिया इन युद्धों से छत्रसाल को अत्यधिक लाभ हुआ कारण की जनमानस के सम्मुख एवं प्रेमी लोगों के मुखोटे खुलने लगे और मातृभूमि के पुजारी

इस टोली ने सोचा था, कि यदि आज छत्रसाल मारे गए तो बुन्देल भूमि का कुलदीपक अस्त हो जाएगा और उसी के साथ बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता का सपना भी चकनाचूर हो जाएगा हम सभी भी काल के गाल में समा जाएंगे लेकिन यदि हमारे बलिदान से छत्रसाल बच गए तो हम जैसे हजारों वीरों को वह तैयार कर लेगा आखिर मातृभूमि की सेवा के लिए मर मिटना सौभाग्य की बात है ऐसा सुनहरा मौका जाने मिले ना मिले ऐसे उमंग और जोश में भर कर इस टुकड़ी ने भारत मां के लाल छत्रसाल की जान बचाई थी अमर शहीद पंडित हरिशंकर मिश्र नंदन श्री नंदराम और कृपाराम आदि वीर अपार श्रद्धा और सतत प्रेरणा के पात्र हैं ऐसे वीरों को शत शत प्रणाम निसंदेह से श्रेय वादी वीरों का संगठन बनाकर महाराजा छत्रसाल देव ने आशातीत सफलता पाई थी और ऐसे ही वितरा की बलिदानी यों के बल पर ही बुन्देलखण्ड में स्वराज्य का सूर्य उदित होकर चमका था यह सैनिक किराए के टट्टू ना थे अपितु जिनके रोम रोम में मातृभूमि के कर्ज चुकाने की तमन्ना कूट-कूट कर भरी हुई थी।

नवयुवकों ने एवं बड़े बूढ़ों का सहयोग छत्रसाल को अनायास मिलने लगा गलत है उनकी सैन्य शक्ति एवं संगठन का विस्तार स्वस्थ होने लगा चम्पत सूत्र छत्रसाल को जो लोग छुपकर सहयोग देते थे वह सक्रिय सहयोग देने लगे इस काल में निम्न रजवाड़ों से लड़कर छत्रसाल विजई हुए

(i) कुंवर सेन धंधेरे से कुं. इंद्रमणी से वि.सं. 1730 (1673 A.D.) में, केशव राय डांगी से वि.सं. 1732 (1675 A.D.) में फिदाई खां से [वि.सं. 1728 (1671 A.D.)] में सैयद बहादुरखां, खलिक से वि.सं. 1729 (1672 A.D.) में मुहम्मद खां और हासिम खां तथा रंगदूलह से वि.सं. 1730 (1673 A.D.) में हासिम खां से पुनः वि.सं. 1733 (1676 A.D.), वि.सं. 1735 (1678 A.D.) में, मुनउवर खां से वि.सं. 1733 (1676 A.D.) में, करमइलाही से, वि.सं. 1735 (1678 A.D.) में, अब्दुल हमीद, इखलाख खां और रूमी में वि.सं. 1737 (1680 A.D.) में, तहबर खां से वि.सं. 1735 (1678 A.D.)

में तीन बार, दलेलखां से वि.सं. 1738 (1618 A.D.) में, बसालत खां, मु. अफजल तथा शमशेर खां वि.सं. 1739 (1682 A.D.) में तथा वि.सं. 1739 (1682 A.D.) में तथा वि.सं. 1739 (1682 A.D.) के समापन माह में शेर अफगान से।

इन ग्यारह वर्ष के कार्यान्वयन काल में इन बड़े युद्धों के अलावा छोटे-मोटे युद्ध तो आए दिन हुआ ही करते थे इन युद्धों से छत्रसाल जूदेव को अपार दौलत एवं शोहरत हासिल हुई जो बुन्देलखण्ड के स्वराज अभियान में अत्यंत सहायक हुई।

श्री राज परमात्मने नमः

(3)

विकास काल

(1728- 1744 वि.सं.)

(ब)

*** स्थापना काल [वि.सं. 1739-1744 (1682- 1687 A.D)]**

एकादश वर्ष कार्यान्वयन काल [वि.सं.1728-1739 (1682-1687 A.D.)] के दौरान महाराजा छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड के 100 राज्य की एक किरण पाली, उनके स्वप्न के साकार होने में अब थोड़ा ही समय शेष था। गुरु नानक की भविष्यवाणी का समय पूरा हो रहा था---

बीतेगा उन्तालीसा दगेगा चालीसा,

तब कोई होसी मर्द मर्द का चेला।

नानक गुरु दिखावें साईं

सांच सांच दी वेला॥

संत त्रिकालदर्शी होते हैं, भूत, वर्तमान व भविष्य के जानकार होते हैं। व्यवस्थित है ईश्वर के प्रतिनिधि स्वरूप हैं। बिना संत के समाज, कभी उन्नति नहीं कर सकता है, उनके मार्गदर्शन की जरूरत हर प्राणी को अनिवार्य रूप से रहती है।

श्रीमद् भागवत महापुराण की निम्न भविष्यवाणी भी छत्रसाल को महाराजा बनाने एवं एक धाम (पुरी) की स्थापना की रूपरेखा प्रस्तुत कर रही।

वीर्यवान क्षत्मुत्साद्य पद्मावत्यां स वै पुरि।

अनुगंग्यां प्रयाणं गुप्तां भोक्ष्यति मेदिनीम॥

(12/1/35)

सदगुरु श्री प्राणनाथ मिलाप

अनादि अक्षरा अतीत परमात्मा के स्वरूप सद्गुरु प्राणनाथ जी निष्कलंक बुध रूप में बुन्देलखण्ड में पदार्पण कर चुके थे। वह जागनी नाद एवं राष्ट्र जागरण के विपुल अभियान मैं वि.सं. 1739 (1682 A.D.) में गढ़ा (जबलपुर के पास) मैं अपनी विशाल साधु समाज1 के साथ डेरा डाले हुए थे। राष्ट्र जागरण के परिवेश में उनका दुंदुभि नाथ प्रस्तुत किरन्तन के द्वारा प्रसारित हो रहा था।

राजा ने मलो रे राणे राय तणो, धर्म जाता रे कोई दौड़ो।

इसी समय गढ़ा में किसी कारणवश छत्रसाल जूदेव के भतीजे देवकरण जी आए हुए थे। यहां पर उन्होंने महाप्रभु प्राणनाथ जी की वाणी का उद्घोष सुना, वह बहुत प्रभावित हुए। ब्रह्म ज्ञान के साथ-साथ राष्ट्र जागरण की चर्चा सुनकर वह महाप्रभु प्राणनाथ जी के सानिध्य में पहुंचे और उनसे दीक्षा लेकर शिक्षक स्वीकार कर लिया। देवकरण महाप्रभु को बताया कि मेरे चाचा छत्रसाल आपके राष्ट्र जागरण अभियान को साकार कर सकते हैं। उन्हें 12 वर्ष पूर्व किसी दिव्य पुरुष ने मऊ के जंगल में दर्शन दिया था और बुद्ध जी की छांव का एक सिक्का देकर भविष्य में मिलने से आगमवाणी कही थी। मुझे लगता है महाप्रभु जी, आप ही दिव्य पुरुष हैं कारण कि--- आप अंतर्यामी हैं, जगतनियंता है, आप ही एक बार ओरछा का चतुर्भुज मंदिर बचाने के लिए पधारे थे, तभी औरंगज़ेब की एक बेटी अपना वेश बदलकर सहित बनी थी। प्रभो! यदि आपकी आज्ञा हो तो आपका संदेश मऊ पहुंचा हूं---- चाचा छत्रसाल इस समय वही हैं। महा प्रभु की आज्ञा पाकर देवकरण जी, लाल दास एवं गरीब दास को लेकर मऊ आए और उन्होंने मिलकर अपने चाचा छत्रसाल जू देव से चर्चा की। महाराजा छत्रसाल ने देवकरण से कहा कि--- शेर अफगन की मुहिम दूर पर है, निकलने का वक्त नहीं है, आप महाप्रभु को यही लाने की कृपा करें।

महाराजा छत्रसाल के ऐसे अनुग्रह भरे संदेश को पाकर महाप्रभु जी कड़ा से चलकर अगरिया होते हुए साधु समाज सहित किलकिला सरिता के अमराई घाट पर पधारें। यहां पास ही पश्चिम में कॉल लोगों

की बस्ती थी। महाप्रभु के साथ आए साधु समाज ने अमृत के चारों तरफ डेरा डाल लिया। यह शुभ दिन था माघ शुक्ला नवमी: वि.सं. 1739(1683 A.D.)।

---

1. इन्हें प्रणामी समाज सुंदर साहब के नाम से पुकारता है।
2. प्रस्तुत प्रकरण (किरन्तन प्र. 58) इतिहास का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है जो तत्कालीन समय का सटीक चित्रण प्रस्तुत करता है।

देवकरन महाप्रभु को लेकर मऊ सहानिया पहुंचे और तिदुनी ने दरवाजे के सम्मुख डेरा डाला। छत्रसाल, शेर अफगान3 के बढ़ते आक्रमण के कारण वहां प्रभु से तत्काल ना मिल सके। प्रत्यक्ष मिलने से पूर्व उन्होंने तीन बार4 महाप्रभु के दर्शन किए थे। इस समय विक्रमी शताब्दी 1700 का 39 वां वर्ष व्यतीत होने वाला था तथा 40 माह प्रारंभ होने को था।

माघ पूर्णिमा 1739 वि.सं. (1683 A.D.) को महाराजा छत्रसाल जी महाप्रभु प्राणनाथ के सम्मुख पधारे।उस समय उनकी अवस्था का 34 वां वर्ष चल रहा था। महाराजा छत्रसाल ने महाप्रभु प्राणनाथ जी को बाबा जी राम-राम कहा और दूर बैठ गए5। महाप्रभु प्राणनाथ जी ने उन्हें संकेत से कहा-- बाबा आओ यहां पास में बैठो।

छत्रसाल, महाप्रभु प्राणनाथ जी के सन्निकट आकर बैठ गए। श्री प्राणनाथ कहने लगे--- वक्त! तुम बस मेरे हो चुके हो, तुम्हें दूर भागने की आवश्यकता नहीं है। हम तुम्हें ढूंढते ढूंढते हैं यहां तक आ गए हैं, अब भला हम तुम्हें कैसे छोड़ सकते हैं। अपनी शंकाओं को निर्मूल करो, धर्म के पुनर्स्थापना में तुम्हें हमारा साथ देना है। जो कार्य अब तक तुम करते रहे हो, वह अब मैं करूंगा डेस छत्रसाल! अब मैंने तुम्हें प्रत्यक्ष रूप से शरण में ले लिया। भयमुक्त हो जाओ। शरणदाता ही उसका रक्षक होता है वक्त! लो तुम्हें ऐसी अभिलाषा थी न! यह कहकर आसंन् से उठ खड़े हुए। छत्रसाल को 12 वर्ष पूर्व जो बुद्धू छाप की मुद्रा मिली थी, वैसी ही मुद्राओं की राशि उम्र पड़ी। छत्रसाल अचंभित हो गए उन। उन्होंने महाप्रभु प्राणनाथ जी के चरण पकड़ लिए। महाप्रभु ने उन्हें उठाकर गले लगा लिया। प्रभु के गले लगते ही एक दिव्य ज्योति प्रकट हुई, जिसने छत्रसाल के शरीर को रोमांचित कर दिया। अंतर्यामी महाप्रभु उन्हें उनकी समस्त दैहिक दैविक एवं भौतिक तत्वों का हरण करके अभय बना दिया। अबे होकर छत्रसाल कॉलेज यही हो गए, अब उन्हें भयंकर युद्ध के भयानक परिणामों की चिंता ना रही। स्वयं महाप्रभु

---

3. इस समय शेर अवगत पनवारी में डेरा डालकर मऊ सहानियां पर आक्रमण कर रहा था, क्योंकि उस समय महाराजा छत्रसाल का प्रमुख सैन्य शिविर एवं राजधानी यही थी।

4. महाराजा छत्रसाल ने प्रथम * स्वप्न में दर्शन किए, दूसरी बार मऊ में आवास व्यवस्था निरीक्षण के बहाने से और तीसरी बार शिकारी वेशभूषा में दर्शन किए।

5. फेर दूजी बेर बेस बदल के, कर सिकार को साज।

साथ सबों के बीच में, बैठे थे श्री राज (प्राणनाथ)॥

तहां जाए ठाड़े भए, तरह मूढ़ की ल्याय।

कही बाबाजू राम-राम, बाबा बैठो इत आय॥ श्री लालदास बीतक

यहां पर श्री प्राणनाथ जी ने उसी सम्मान सूचक शब्द (बाबाजी का प्रयोग किया है, जिस सम्मान सूचक शब्द (बाबाजू) का छत्रसाल जी ने प्रयोग किया था। निसंदेह आज भी इसमें व्यापक दिशा बोध प्रतिध्वनित हो रहा है।

परमात्मा ने उन्हें भय मुक्त कर दिया था।

दूसरे दिन प्रातः महाप्रभु प्राणनाथ जी का आशीर्वाद लेकर महाबल शाली छत्रसाल ने शेर ऑर्गन पर महा शेर बनकर धावा बोल दिया और भयानक आक्रमण करके शेर अब गन को ढेर कर दिया2। महाबल धारी छत्रसाल जूदेव विजयनगड़ा बजाते हुए महाप्रभु के पास आ गए और फिर उनके चरणों में समर्पित कर दिया था। जो युद्ध में महीनों लड़कर जीत न सका, वह आपके शुभ आशीष से आज ही हमने जीत लिया प्रभो! छत्रसाल ने यह शब्द महा प्रभु के चरणों में बैठकर कहे थे। धन्य थी यह पावन बेला, और धन्य हो गई वह पावन भूमि--जहां पर छत्रसाल ने महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी का दर्शन किया था। इस पावन भूमि का राजकरण आज भी मस्तक पर धारण करने योग्य है। यह स्थली धर्म की पुनर्स्थापना की स्मृति में महातीर्थ बन गई है, और सम्यक मार्ग दर्शन देती रहेगी।

राजतिलक

महाराजा छत्रसाल ने महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के वास्तविक स्वरूप को पहचान कर

---

1. स्वामी लालदास जी इस मिलाप के प्रत्यक्षदर्शी थे, उनके लिखित जी तक (दैनंदिनी में वर्णित इस प्रसंग पर पाठ भेदभाव तांतर की गुंजाइश नहीं है। केरल से युद्ध के लिए जाते समय छत्रसाल जी महाप्रभु के पास आए थे। और हुए पूर्ण मनोरथ का आज का वर पाया था।

भाई बखत महाराज, की मुहिम से अवगत।

श्री राज रुमाल लेके, सिर पर धरमराज।

हाथ धरा सिर ऊपर, हुए पूर्ण मनोरथ कार्स॥

आशीष पाठक छत्रसाल, उसी दिन शेर अफगन को परास्त करके प्रभु के पास लौटे।

2. तत्कालीन ग्रंथ वृतांतमुक्तावली में शेर और धन से युद्ध एवं श्री प्राणनाथ मिलाप का एक ही समय बताया गया है। छत्रसाल जू देव अपने को बुद्ध जी का सेवक मान कर दीवान शब्द से अपना संबोधित कर आते थे, राजा नहीं। राजा तो केवल परमात्मा है, हम सभी उसके सेवक हैं, दीवान हैं।

अफगन आइ पड़यो पनवारी। ताथे सोच भयों हिये भारी॥61॥

अफगन अपनी फौज लै, मेल्यो निकट दबाइ।

तब दिवान सेना सहित. उठयो तहां अकुलाइ॥72॥

तत छिन श्रीजू अपनी, असि कटि दई बंधाई।

सिरोपांव पहिराई कै, दीन्हीं आशिष धाइ॥74॥

पैदर पांच हजार सों, तीनि सहज जु सवार।

एक सहस जन संग लै, कीनों समर संवार॥76॥

समर जीति अति मगन हुइ, दरसंन् कीने आइ।

आप हुकुम कीन्हों तबहि, घर बैठे तब जाई॥77॥

सुन्यो तारतम यह तब, इत दिवान छत्रसाल।

लख्यो सकुंडल रूप निज, दृष्टि आपनी हाल॥78॥ (प्रकरण 64 पृ. 388/399)

उन्हें परमात्मा स्वरुप माना और उनका शिष्य तो स्वीकार कर नाथ पुत्र कर आए थे उन। महाराजा छत्रसाल जी ने श्री प्राणनाथ जी को बुन्देलखण्ड का महाराजा माना था और वे स्वयं को उनका धीमान (दीवान) कहते थे नाम लिखते भी थे। वि.सं. 1740 (1663 A.D.) मैं अन्ना नगर श्री प्राणनाथ प्रभु ने बताया और श्री बंगला जी की स्थापना पन्ना नगर के प्रारंभिक निर्माण के रूप में हुई थी।

ऐतिहासिक खोजों से पता चलता है कि छत्रसाल ने वि.सं. 1739 से 1744 (1682-1687 A.D.) के मध्य जो सनंदें दी हैं, उनमें उन्होंने स्वयं को दीवान करके ही लिखा है पर आधे जेठ वि.सं. 1744 (1787 A.D.) के पश्चात वे अपने को महाराजा लिखने लगे थे।

ऐतिहासिक दस्तावेजों से यह भी पता चलता है कि उनके सद्गुरु श्री प्राणनाथ जी ने मिलन (छत्रसाल मिलाप) के पहले वर्ष में छत्रसाल को उनकी 34 वीं (चौंतीसवीं) वर्षगांठ पर पन्ना की प्रथम निर्माण स्थली में बड़ी धूमधाम से किया था। इसी वर्ष में विकसित होकर राजधानी बन गई थी चोपड़ा से लेकर पटना तक राज तिलक के दिन थी। राजमहलों में महापर्व जैसा वातावरण था, पन्ना

की गिरी कंदर आओ में भी रौनक थी। हो भी क्यों ना? आज महाप्रभु ने स्वयं कुंडल छत्रसाल का राज्य अभिषेक गोधूलि बेला 2 में किया था।

बुन्देलखण्ड में छत्रसाल के राजतिलक की चर्चा से दूर तक फैल गई थी जिस प्रकार से स्वयं 1:00 का राजा कहलाता है, उसी प्रकार प्रभु कृपा से आज छत्रसाल स्वयमेव उम्र गिरेंद्र हो गए थे। तरह-तरह के मंतव्य व विचार अन्य राजाओं में उठ रहे थे, जबकि बुन्देली जनमानस अपार प्रसन्नता का अनुभव कर रहा था। युग की आवश्यकता के अनुकूल छत्रसाल का राज्य तिलक होना अनिवार्य था।

शत्रुता की भावना रखने वाले राजाओं ने ही नहीं अपितु संख्या भावनाओं में लिप्त एक साधु तीन ने भी विरोध किया था। ओरछा दतिया, चन्देरी वेगड़ा आदि के राजा राम गणों ने एक पत्र भेजकर अपना विरोध व्यक्त किया था। यथा डांस

राखी एक बैरागी दर में। लेके तिलक कर आए हो घर में ॥23॥

ऐसे नृप *तुम हुहौ कैसे।* करहु *कुह बालक बुधि जैसे॥*

हम चारों नृप थापैं के। करि है तिलक तबहि अरि मूरिकैं ॥24॥

---

1. महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी की आज्ञा से राजतिलक के 4 वर्ष बाद वह अपने को दीवान के स्थान पर राजा (महाराजा) लिखने लगे थे।

2. राज्य तिलक की तिथि - जेस्ट शुक्ला कृपया, बुधवार: वि.सं. 1740 (1684 A.D. की गोधूल बेला की परम पावन मुहुर्तय

3. सैंदुड़ा के दार्शनिक कवि अक्षर-अनन्य जू

लगै उनको कोऊ अरि नाही। होइ प्रमान साहि घर माही*॥25॥*

दंभ बड़ो और चारों1 ल्याये। करी के गर्व लिखे पठवाये॥26॥

(वृतांतमुक्तावली,प्र. 79,पृ. 502)

महाराजा छत्रसाल ने इस पत्र का उत्तर अपने सद्गुरु महाप्रभु के प्रति अटूट श्रद्धा भाव चर्चा कर दिया था, उसकी झलक तत्कालीन ग्रंथ वृतांतमुक्तावली (समकालीन इतिहास-व्रत-डायरी) में विद्यमान है।

पूरन ब्रहम सहित श्री श्यामा। चली आए मेरे निज धामा॥

कलिमल मेटन आज्ञा कीन्हीं। गैल परोक्ष हाथ में दीन्हीं॥27॥

हाथ सीस मेरे उन दीन्हों। तिलक भाल दे अपनो कीन्हों॥

प्रभु की करी मीटर है नाही। *नर करतूत उड़े हिना माही ॥28॥*

तुम सुर होई असुर मग थापौ। वाही को रुख निसदिन नापौ॥

जिन सुर धर्म उच्छेदन कीन्हों। सो मग चित्त आपने दीन्हों॥29॥

ऐसी करि तुम हम को दूषौ। त्यों दिन असुर होत ज्यों मूषौ॥

तामें श्यामा वर दीन्हों। मेटै कौन लिलाटहि कीन्हों॥30॥

(प्रकरण-79)

निसंदेह महाराजा छत्रसाल के राजतिलक की घटना सत्र में शताब्दी की बहुत बड़ी ऐतिहासिक घटना है। ग्रंथों की भविष्यवाणियां इसमें सन्निहित थी। आदम बच्चन अक्षर से है सत्य हुए। पन्ना नगरी में पद्मावती पुरी धाम की स्थापना एवं महाराजा छत्रसाल के राज्य तिलक का होना वहां शास्त्र सम्मत है।

॥शिवोवाच॥

दशार्णे शोभते देशे महापद्मावती पुरी।

विंध्यांचलस्य पृष्ठे *या भूमिस्तपरितो हमला॥*

(भविष्य पुराण)

॥शुक उवाच॥

वीर्यवान् क्षत्रमुतसाद्द पद्मावात्यां पुरी।

अनुगंगयानाया प्रयागं गुप्तां भोक्ष्यति मेदिनीम्॥

(श्रीमदभाo--12/1/37)

---

1. दुर्गसिंह नृप रहे चंदेरी। दलपतिराय दलीपुर घेरी।।

सिंह *भगवंत* ओरछे *माही। नृपति पहार गढ़ा है जाहि।।*

2. ये चारों यवन सत्ता हितैषी होने के कारण सत्ता के विरोधी बन रहे थे।

3. महाप्रभु द्वारा किया गया राज्य अभिषेक अखण्ड है, संसारी ताकत इसे कभी मिट नहीं सकती। छत्रसाल समग्र बुन्देलखण्ड के महाराजा आजीवन रहे।

यवन सेनापतियों से युद्ध

स्थापना काल [वि.सं. 1739-1744 (1682-1687 A.D.)] में यवन छत्रसाल देव को तहस-नहस करने के लिए अनेकों सेनापति बुन्देलखण्ड में भेजें। यवन समर्थक राजाओं एवं जागीरीदारों ने इनका भरपूर साथ दिया था, परंतु छत्रसाल के ऊपर निष्कलंक बुध महाप्रभु प्राणनाथ जी का वरदहस्त होने के कारण विद्यार्थियों की एक न चली थी। महाप्रभु प्राणनाथ जी के मिलाप दिवस के दूसरे दिन ही शेर अवगत वि.सं. 1739 (1682 A.D.) की भयंकर पराजय हुई थी, विजय छत्रसाल ने इसी विजय को बुन्देलखण्ड की स्वराज्य स्थापना का दिवस मान लिया। वि.सं. 1739 (1682 A.D.) के समापन पर अर्थात वि.सं. 1740(1683 A.D.) की पूर्व संध्या पर यह एक महान विजय दुंदुभी थी।

महाराजा छत्रसाल जूदेव के बढ़ते प्रभाव को दबाने के लिए यवन औरंग ने चाहा कुलीन [वि.सं. 1740(1683 A.D.] जलाल खां [वि.सं. 1742 (1685 A.D.], पुरदल खां [वि.सं. 1743 (1686) राणाप्रताप सिंह [वि.सं.1744 (1687 A.D.)] तथा रणमस्त खां को भेजा था, यवन व असुर सेना पराजित होकर भागी थी। [वि.सं.1740 (1683 A.D.)] में महाराजा पद पर छत्रसाल के राज्य अभिषेक होने पर स्थापना काल ऐतिहासिक बन गया था। संवत् 1743-44 (1686-1787 A.D.) मैं दिग्विजय यात्रा से समूचा बुन्देलखण्ड स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित हो चुका था।

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(4)

युद्ध-खण्ड

दो सौ बावन भयंकर युद्ध में विजय श्री का वर्णन करने वाले महाराजा छत्रसाल ने भारत वसुंधरा पर ईश्वर यह देश राज्य की स्थापना की थी। निसंदेह उन्होंने जीवन भर हजारों छोटे देश बड़े युद्धों में असंख्य विधियों का दमन किया। निष्कलंक महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के सानिध्य में संपादित

दिग्विजय यात्रा, महाराजा साल की अमूल्य उपलब्धि है। प्रस्तुत अनुभाग में दिग्विजय यात्रा का वृतांत एवं भयंकर युद्ध की झलक दिग्दर्शित है।

श्री राज परमात्मने नमः

(4)

युद्ध-खण्ड

प्रस्तावना

जाको राखे साइयां मार सके ना कोय वाली कहावत महाराजा छत्रसाल के ऊपर पूर्णरूपेण सत्य होती है। जन्म शत्रु सेना के बीच, शिशु अवस्था वीरांगना मां की पीठ पर, कुमार अवस्था आते-आते माता-पिता की वीरगति। तदोपरांत प्रारंभ हुआ अनाथा वस्था का दौर फिर भड़की विद्रोह की ज्वाला और 22 वर्ष के होते होते ले डाला क्रूर यवन सल्तनत से आजीवन संघर्ष का सत्य संकल्प, जिसके कारण जीवन हजारों युद्ध की विभीषिका का सामना करने में गुजरा, फिर भी वह कालजई रहा, ऐप राजे रहा और साकार कर दिखाया मुग़ल सल्तनत का विध्वंस और स्वतंत्र बुन्देलखण्ड का सपना। ऐसे कॉल अजय कुमार छत्रसाल गगन मंडल में दिग्विजय सम्राट के रूप में उदित होकर युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल के नाम से सारे जग में आलोकित हुए।

वस्तुत है वह अवतार थे, सामान्य नरना थे। उनका प्रादुर्भाव धरातल से वेदर मियों का दमन और धर्म की रक्षा के लिए ही हुआ था। तलवार का काम युद्ध में रहता है, ना कि हमेशा म्यान में रहना। छत्रसाल का प्रादुर्भाव असुरों के दमन के लिए ही हुआ, अतैवयुद्ध भूमि आजीवन उनकी क्रीड़ा भूमि बनी रही। असुरों को उनकी तलवार सदा कालका वलित करती रही। महाराजा छत्रसाल के दैवीय अपार बल और उसके कारण जनमानस की जगह पर निम्न शब्द प्रस्फुटित होते रहते हैं:-

छाता तेरे राज में, धक-धक धरती होए।

जित जित घोड़ा मुंह करें, तित तित फत्ते होय॥

इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस।

छत्रसाल सों लड़न की, रही न काहूं हौंस॥

महाराजा छत्रसाल के राज्य में निम्न लोकोक्ति हर प्राणी के मन में बसी हुई थी, जिससे प्रजा सुख शांति का अनुभव करती थी और शत्रु भयभीत हो उठते थे।

छत्रसाल के राज कौ, जो करिहै खोद विनोद।

जर जैहैं जर मूर तें, मर जैहैं विर-खोद॥

मुग़ल सैनिकों के मुख से निकले निम्न वाक्यांश इस परिवेश में गागर में सागर भरने जैसे हैं इनका अनुशीलन करने से उनके युद्ध अनूप की झांकी अंतःकरण में बसाई जा सकती है। अमा यार! कोई आदमी हो तो उससे (छत्रसाल से) लड़े भी। वह तो पूरा शैतान ही है। जरूर ही किसी दिन या प्रेत की होगी... अभी यहां, तो कुछ लम्हों में ही वहां। न जाने कैसे वीर मीलों दूर तक पहुंच जाता है? बस पूछो मत! मेरी जान बच गई। देखा नहीं तुमने! उसने देखते ही देखते न जाने कितनों को मार गिराया था? अरे मियां! मैंने तो यह भी सुना है कि वह जब चाहता है तब उड़ जाता है। उसने उस शैतान को खुद अपनी आंखों से उड़ते देखा था। तूफान की रफ्तार से जुड़ा था। दोस्त! इन भूत प्रेतों से लड़ना तो अपनी मौत को ही बुलाना है। जान है तो जहान है। बेचारा बदनसीब अब्दुल्ला! बेमौत मारा गया।

(पंडित प्रताप नारायण मिश्र: विजय ही विजय; पृष्ठ 67)

वस्तुतः छत्रसाल विजयश्री के पर्याय हैं। विजय ही विजय उनका वास्तविक स्वरूप है।

धर्मद्रोही हिंदुओं से युद्ध

कुंवर सेन अंधेरे से युद्ध (वि.सं. 1728 में)

धंधेरों ने वीर चम्पतराय से विश्वासघात किया था। मुगलों से मिलकर और ओरछा वालों के कहने में आकर उदयवीर चम्पतराय और वीरांगना लाल को बरी के मौत के उत्तरदाई थे। अंधेरे मुगलों के अंधभक्त और सहयोगी थे अतएव कुमार छत्रसाल ने 1 दिन सहरा पर धावा बोल दिया। कुंवर सेन और उसके सैनिक युद्ध से सावधान थे अतैवइन सब ने भागकर किले में शरण ले ली। छत्रसाल ने तुरंत किले की घेराबंदी कर ली। कई दिनों तक घेराबंदी बनी रही। कोर सेन की सहायता के लिए मुग़ल सेना नहीं आई। इससे कुंवर सेन का मन मुगलों के प्रति घृणा से भर उठा। उसने छत्रसाल के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और मित्रता के लिए प्रार्थना की। कुमार छत्रसाल के विशाल और उदार ह्रदय को देखकर कुंवर सेन गदगद हो गया। उसने छत्रसाल के धर्म रक्षा एवं हिंदुत्व जागरण के परम लक्ष्य को साकार करने में पूरा सहयोग करने का आश्वासंन् भी दिया और निभाया भी। कुमार छत्रसाल की [वि.सं. 1728 (1671 A.D.)] में यह एक उपयोगी विजय थी। मालवा का यह भूभाग आजीवन छत्रसाल के नियंत्रण में रहा।

कुंवर सेन ने अपनी भतीजी दानकुंवरि (साहब राय धंधेरे की पुत्री) का विवाह छत्रसाल के साथ कर दिया था। इस प्रकार दोनों की मित्रता घनिष्ठ रिश्तेदारी में परिवर्तित हो गई थी।

राजा इंद्रमणी से युद्ध [वि.सं. 1730 (1673 A.D.)]

ओरछा नरेश जानसिंह (प्रथम के [वि.सं. 1729 (1672 A.D.)] में निःसंतान निधन होने से पूछा की गाड़ी पर इंद्रमणी बैठा। औरंगज़ेब के बहकावे में आकर ओरछा नरेश इंद्रमणी ने स्वयं [वि.सं. 1723 (1673 A.D.)] में कुमार छत्रसाल पर आक्रमण कर दिया औरंगज़ेब की नीति छत्रसाल का दमन कर इंद्रमणी को काट की कठपुतली बनाने की थी, जिसे अंधभक्त इन इंद्रमणी ना समझ सका और छत्रसाल से बैर मोल ले लिया। छत्रसाल जी ने इंद्रमणी को घर का होने के कारण अनेकों दृष्टांत देकर समझाया परंतु उसने एक न सुनी। युद्ध के नगाड़े बजाकर रणभूमि में आ गया। आ बैल मुझे मार वाली कहावत चरितार्थ होने को थी परंतु छत्रसाल जी ने क्षमाशील भाव रखते हुए युद्ध में परास्त कर उसे भगा दिया, बेचारा गिलानी के मारे [वि.सं. 1732 (1675 A.D.)] में चल बसा। इस युद्ध में क्षमाशील रवैया के कारण छत्रसाल जी को काफी हानि उठानी पड़ी थी। इस युद्ध में पराक्रमी कृपासिंह चौधरी और धनु बख्शी आदि बलशाली वीरों ने वीरगति पाई थी, लेकिन इस बार दुर्जनसिंह हाडा ने छत्रसाल जी के झंडे के नीचे आकर युद्ध लड़ा।

केशवराय दांगी से द्वंद युद्ध [वि.सं. 1732 (1675 A.D.)]

केशव राय दांगी बादशाह का जागीरदार और मुग़ल सल्तनत का अंधी माहिती, द्वंद युद्ध में परम प्रवीण था संवत् 1732 में महाराजा छत्रसाल ने भाषा जागीर पर आक्रमण करने की तैयारी की। महाराजा छत्रसाल ने बादशाह पहुंचकर केशवराय दांगी (डांगी को अपने मातृभूमि एवं राष्ट्रप्रेम के मंतव्य की ओर ध्यान खींचा और कहा आप हमारे साथ बुन्देलखण्ड के स्वतंत्रता में साथ दें, हम आपकी हमेशा सहायता करेंगे। यह सुनकर मन मलीन मंद बुद्धि वाले केशवराय दांगी ने छत्रसाल की खिल्ली उड़ाई और अपशब्द कहे। अति बलिष्ठ महा अभिमानी दांगी ने छत्रसाल से लड़ने की ठान ली।

छत्रसाल महाराजा ने सोचा दोनों और सैनिक बुंदेले वीर ही हैं। यदि यह दुआ तो जो भी मारेगा वह बुन्देला वीर हो ही होगा। बुन्देली शक्ति का ह्रास होगा और प्रत्यक्ष रूप से मुग़ल सल्तनत को ही शक्ति लाभ मिलेगा। युवा शक्ति ही बुन्देलखण्ड को स्वतंत्र करा सकती है इसका क्षीण होना लक्ष्य सिद्धि में बाधा होगी। ऐसा विचार कर छत्रसाल जी ने दांगी से धुंध युद्ध का प्रस्ताव रखा जिसे सुनकर महाराजा छत्रसाल

1. वे थे पहाड़सिंह के सुपूत, राजा सुजान सिंह स्वर्ग गए।

इनके अधिकारी इंद्रममणि, जो छत्रसाल से वर्ग भए॥

मिलकर अवरंगी सेना में, लड़ने आए बुंदेले से।

मिलकर दोनों ने इंद्रमणि, का नशा चूर कर दिए वीर।

वह भागा ओरछा राज तजा, हिय में नहिं थोड़ा रखा धीर॥ (वी.च.भ.छ.202)

की सेना के होश उड़ गए कहां 26 वर्ष के छत्रसाल और कहां 45 वर्षीय बलिष्ठ योद्धा केशवराय दांगी। केशव स्वीकार कर गंभीर करने लगा देखकर मातृभूमि के प्रेमी विक्रमाजीत और मर्यादसिंह (दोनों भाइयों) ने अपने पिता केशवराय दांगी को बहुत समझाया और पैर पकड़े पर वह युद्ध डालने को तैयार ना हुआ।

वीरों में महावीर महाराजा छत्रसाल ने दांगी को ललकारा युद्ध शुरू हुआ पर भयंकर अदाओं पर चलने लगे। जवानों की सांस थमने लगी। यह दूध देखकर भीम और जरासंध के युद्ध की कहानी गोचर हो उठी। छत्रसाल ने अपना जीवन दाव पर लगा दिया ब्रजराज सहाई धारणा को दिल में धारण कर छत्रसाल जी द्वंद युद्ध में नए जोश को वर्कर कूद पड़े। आखिर बलशाली केशवराय दांगी ने छत्रसाल को करारी टक्कर दी। छत्रसाल की सेना के लोग मलीन हो उठेगा परंतु वे सब असहाय थे। सांगे चली तलवारें खिंची पर कोई पीछे हटा। काल हो चला युद्ध में वीरों के जोश में कमी ने आई। अब परस्पर तीर चलने लगे, युद्ध उन्मत्त छत्रसाल का जोश उमड़ पड़ा, केशव राय दांगी अपने को ज्यादा प्राकृतिक समझकर 28 कर उठा, उसका बल दानवों की भांति बढ़ने लगा। तभी केशव रहे दांगी के वर्क स्थल में छत्रसाल के तरकश का एक तीर ऐसा गुस्सा कि वह धड़ाम से धरा पर धराशाई हो गया। छत्रसाल ने दौड़कर दांगी का सिर धड़ से अलग कर दिया, यह देखकर डांगी के कुछ सैनिक टूट पड़े। उन्हें भी छत्रसाल जी ने मार भगाया,ई तो मौत के घाट उतर गए।

महाराजा छत्रसाल संस्कार विधि विधान से करवाया और बादशाह की जागीर दांगी के बड़े पुत्र श्री विक्रमाजीत को सौंप दी। अन्य आस-पास के गांव जीतकर भाषा जागीर में मिला दिए। दांगी के दोनों पुत्रों को महाराजा छत्रसाल ने पुत्रवत स्नेह देकरउन्हें अपना मुंह बोला बेटा बनाया था। दोनों बालक जीवन भर महाराजा छत्रसाल के परम हितैषी एवं विश्वास पात्र बने रहे और उनकी सेना में एक योग्य सेनापति का दायित्व भी निभाया इस धुंध युद्ध से निसंदेह आज पाटलिपुत्र की महाभारत कालीन गाथा की पुनरावृति भाषा में अवतरित हुई।

---

1. इस धुंध युद्ध का विवरण महाराजा छत्रसाल ने अपने पुत्र कु.जगतराज को लिखे पत्र में निम्न प्रकार से किया है--- बासा नगरी में दांगी राजा हतो, ऊ बड़ो बलवान व नामी रहै, बादशाह के सुवा को उन्हें मार के भगा दे, हमने अपने मन में सोची कि देखो कैसो दागी राजा है, मऊ से चले। थोड़ी फौज लेकर, 20 22005 लेकर बाता नगरी में पहुंचे.... पुणे हमारे तलवार गाली रही ((किंतु) बच गई फिर कहीं और घालो पहली बखत कछु कम लगी हो मां दूसरी बखत की तलवार से हमारे बहुत चोट आई फिर हमने उनको उमस के सांग मारी रही (किंतु उन्हें हार ना मानी। फिर एक बार मारो, गिर करो। मूड़ हमने काट लाइव व फौजदारी..... बादशाह नगरी में हमने खानों बैठा रो। बादशाह नगरी की रियासत 30 लाख की है। लड़ाई संवत् ए 1732 की साल में भई।

जसोंधियों से युद्ध

जसोंधी ग्राम के निवासी जसोंधिया कहलाए। इन्होंने आसपास के पुरैनी गांव आदि के लोगों को इकट्ठा करके मुग़ल सैनिकों के बहकावे में आकर छत्रसाल जी के सैन्य शिविर पर धावा बोल दिया उन। इस युद्ध में छत्रसाल के ना चाहते हुए भी अनेकों ज सोंधिया वीर कालका वलित हो गए। इन सभी ने महाराजा छत्रसाल के सिद्धांतों को बिना जाने युद्ध छेड़ दिया इसका भरपूर खामियाजा उन्हें उठाना पड़ा। महाराजा छत्रसाल ने विजय करके यहां अपना अधिकार जमाया तथा आसपास के क्षेत्रों को भी जीतकर स्वतंत्र रियासत स्थापित की।

वारियों एवं मवासियों से युद्ध [वि.सं. 1733 (1676 A.D.)]

जंगलों और छोटे किलो में रहने वाले हथियारबंद लोगों ने जिस प्रकार चम्पतराय के साथ कई बार धोखा, छल और कपट किया था, चार वाहन की मौत एवं चम्पतराय सारंधा की मौत में यह सभी सहायक थे। उसी प्रकार से इन लोगों ने मिलकर छत्रसाल पर आक्रमण किए। प्रारंभिक क्षणों में महाराजा छत्रसाल ने इन सभी से भयंकर युद्ध किए और विजय श्री प्राप्त की। दूरदर्शी महाराजा छत्रसाल ने इन्हें गले लगाकर मार्गदर्शन दिया और इन सभी के अंतर्मन में राष्ट्रप्रेम की शिक्षा दी।

सिरोंज के युद्ध में आनंद राय बन का पहले पहल महाराजा छत्रसाल जी के विरुद्ध लड़ा था फॉर मा परंतु छत्रसाल जी को अपना हितेषी जानकर तथा उनके बल पराक्रम से प्रभावित होकर उनके झंडे के नीचे आकर खड़ा हो गया। सिरोंज पर विजय पा लेने के बाद महाराजा छत्रसाल ने आनंद राय बन का को यहां का पौधा बनाया। यह देख कर समूचे बुन्देलखण्ड के कार्यों और वासियों ने महाराजा छत्रसाल को अपना राजा मान लिया। इन दोनों समूहों ने उन्हें उसी प्रकार से सहयोग दिया जिस प्रकार से लंका विजय में बंदरों ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का साथ दिया था।

1. (छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम)

॥श्री॥

*** आपर जसौंधी के जसोंधिया बड़े जबरदस्त हते।सो बनते.... पुरैनी गांव वाराणसी बड़ी लड़ाई भाई। सब हार गए। बहुत मारे गए वह भाग गए। हमने अपना कब्जा करो। फतेहपुर उदयपुर की फतेह करी। शरीफ पद से लड़ाई भाई** शहडोल की फतेह करी।*** लड़ाई में पांच से गांव की फतेह करी। पांच लाख को धन लूटमार में पायो घर आ जा रही हमारे अधीन हो गए।***-*** जहां जीते पायो या हार मानी तो चौथ की रियासत उसको शॉप दही।--- आषाढ़ वदि संवत्.....

3. वारी अर्थात् जंगल में रहने वाले आदिवासी लोग;

4. मवासी अर्थात मवैया (बघेली) स्थाई सेना, छोटे सामंत अर्थात् छोटे किलों के भीतर निवास करने वाले, गुजरोदार;

राजा उद्दैतसिंह से युद्ध (वि.सं. 1753)

ओरछा नरेश भगवंतसिंह के पश्चात उद्दैतसिंह आदि पर बैठे, यह मां प्रतापी ओरछा कुलभूषण लाला हरदौल के पुत्र थे। एक बार इन्होंने औरंगज़ेब के उकसावे पर [वि.सं. 1700 (1600 A.D.)] में झांसी के निकट बुन्देली शिविर पर आक्रमण कर दिया। महाराजा छत्रसाल ने उद्दैतसिंह को बहुत समझाया कि घर टूटन अच्छी नहीं होती, तुम्हें और अंगी चालू से सदा सावधान रहना चाहिए। तुम युद्ध से दूर रहो। परंतु औरन की धुन में मदमस्त उद्दैतसिंह ने एक न सुनी। खून खराबे से बचने के लिए महाराजा छत्रसाल ने ओरछा सेना की घेराबंदी कर ली यह देखकर उद्दैतसिंह के होश उड़ गए। तब ओरछा की दूरी रानी डोली में बैठकर महाराजा के निकट आई और संधि का प्रस्ताव रखा। इस संधि में रानी ने महाराजा छत्रसाल को झांसी हिस्से में दी और नाले से (ओरछा और झांसी के मध्य में बटवारा रखा। महाराजा छत्रसाल--- महान शमा शमा परम विवेकी को मां दयालु एवं धैर्यवान सदा रहे, गलत है उन्होंने महारानी अमर कुंवरि को सादर सम्मान देते हुए संधि को स्वीकार कर लिया था। महाराजा छत्रसाल के ऐसे शील स्वभाव एवं दैवीय गुणों को निहार कर बूढ़ी रानी ने पुत्रवती देकर युगों युगों तक जीवित रहने का शुभ आशीष महाराज को दिया था। ओरछा तुम्हारा ही है, तुम्हारी पुरानी रियासत है, बेटे! इसके गौरव एवं सम्मान की सदा रक्षा करना फॉर मा बुंदेलों की आत्मा यही बस्ती है, तुमसे तो कुछ छुपा नहीं है स्वर्गीय राजा चम्पतराय की शुभकामनाएं ओरछा पर सदा रही है बेटे! इसके गौरव एवं सम्मान की सदा रक्षा करना, बुंदेलों की आत्मा यही बस्ती है ओ मां तुमसे तो कुछ छुपा नहीं है, स्वर्गीय राजा चम्पतराय की शुभकामनाएं ओरछा पर सदा रही हैं बेटे! मेरे स्वर्गीय पति के बड़े भाई ने उनकी पहचान आखिरी क्षणों में कर पाई थी उनके प्राण उनके सामने ही सब कुछ बताने के बाद ही सूर्य रश्मि ओकी के संग विलीन हुए थे। बेटे! आज तुमने मेरी लाज रख ली है, तुम सदा विजई रहोगे।

बूढ़ी रानी के वचन सुनकर महाराजा छत्रसाल अतीत के झरोखों में खो गए उन्हें माता पिता की याद में 35 वर्ष केबाद पुनः ताजी हो गई, सभी बूढ़ी रानी ने सिर पर हाथ फेरते हुए उन्हें ढांढस बंधाया था। बूढ़ी रानी की छवि में महाराजा छत्रसाल को अपनी मां सारंधा की आभा दिखाई पड़ी थी। बूढ़ी रानी को सम्मान डोली में बैठाकर महाराजा छत्रसाल ने कुछ दूर तक साथ चल कर विदा किया। सर्वत्र महाराजा छत्रसाल की जय जय कार होने लगी। आज महासंग्राम टल गया है, दूसरा महाभारत होने से बच गया है। ऐसा बुन्देल भूमि के जनमानस ने ह्रदय से स्वीकार किया।

वस्तुतः महाराज चाहते तो ओरछा को पलक झपकते अपने अधीन कर लेते, परंतु उन्होंने

---

1. [वि.सं. 1745 (1687 A.D.)]
2. महाराजा सुजानसिंह [वि.सं. 1720-1729 (1663-1672 A.D.)]:

कभी भी ओरछा पर आक्रमण नहीं किया और अपने पुत्रों को भी ऐसी हिदायत दे रखी थी। इन सभी के बावजूद ओरछा गांदी ने महाराजा छत्रसाल के प्रति कभी सहानुभूति नहीं रखी।

[वि.सं. 1753 (1696 A.D.)] के पश्चात ओरछा नरेश राजा उद्दैतसिंह ने फिर कभी महाराजा छत्रसाल के ऊपर आक्रमण नहीं किया।

औरंगज़ेब

मुग़ल सल्तनत के सूत्रधार बाबर की पांचवी पीढ़ी में औरंगज़ेब हुआ। वह अपने भाइयों को मारकर एवं पिता शाहजहां को कैद में डालकर संन् 1656 के उपरांत दिल्ली के तख्त पर आसीन हुआ था। औरंगज़ेब कितना महत्वकांक्षी, 2, 30, क्रूरता, इस संबंध में इतिहास का हर विद्यार्थी ही नहीं अपितु अनपढ़ लोग तक जानते हैं। आगरा के कैद खाने में बंद आजा शारीरिक एवं मानसिक कष्टों से घुट घुट कर मरा था, तब भी मदांध औरंगज़ेब के मन में दया की भावना रंच मात्र भी जगी थी। औरंगज़ेब ने अपने बाप शाहजहां के लिए मुकर्रर बांके हकीम पुत्र श्री कुल्ला से मिलकर जहरीली औषधियों का निर्माण करवाया था। सन् 1658 में मरने से पूर्व शाहजहां ने अपनी बड़ी बेगम को धारा सिखों की अबोध बेटी का हाथ पकड़ पाते हुए कहा था कि तुम अपने सभी गहने जेवर एवं बेशकीमती चीजों का मोह त्याग कर इन्हें औरंगज़ेब को सौंप दो और पुत्री का जीवन बचाओ क्योंकि वह नीच धन-संपत्ति का टिकट लोभी लालची है। वस्तुतः औरंगज़ेब ऊपर से बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति का दिखता था परंतु अंदर से क्रूर,, लालची, सत्ता लोलुप एवं हत्यारा था। अतैव

---

1. महाराजा छत्रसाल के इन्हीं सिद्धांतों के कारण ही समूचे बुन्देलखण्ड एक सूत्र में बंद था चला गया था। किसी भी बुंदेले राव व जागीरदार की तभी भी महाराजा छत्रसाल से सीधी लड़ाई की हिम्मत नहीं हुई, हां कुछ आस्तीन के सांप जरूर बने रहे परंतु उन्हें आसींद से बाहर निकलने का मौका महाराजा छत्रसाल के जीवन में कभी नहीं मिला। वह सब आस्तीन में छुपे छुपे ही मर गए। इसी कारण से वह कॉल अजीत एवं शत्रु नाशक कहलाए। समूचा जनमानस उन्हें बुन्देल कुलदीपक हिंदकेसरी जगतगुरु प्रातः स्मरणीय धर्मावत आर मान्यता रहा। इतिहास साक्षी है कि महाराजा छत्रसाल चक्रवर्ती सम्राट के गुणों से परिपूर्ण थे, उनका जीवन विजय राज जनक के सदस्य था। उन्हें इस युग का जनक कहा जा सकता है। प्रस्तुत है वह युग पुरुष एवं युगप्रवर्तक है।
2. शासंन्काल [वि.सं. 1745 (1793 A.D.)] तक
3. बाबर (1526-1530 ई.

1. हुमायूं ([वि.सं. 1530-40 तथा 1555-56 4.शाहजहां (1628-1657 ई.)

2. अकबर (1556-1605 ई.) 5. औरंगज़ेब (1657-1707 ई.)

3. जहांगीर (1605-1627 ई.)

4. औरंगज़ेब के चार बेटे थे- मुल्तान मुहम्मद, 2. कमबख्श, 3. मुअम्मल (बहादुर शाह) 4. अकबर, (पहले बेटे को छोड़कर सभी ने विद्रोही रुख अपना लिया था)
5. विस्तार के लिए समकालीन इतिहास का अनुशीलन अनिवार्य है।

उसका व्यक्तित्व भीतर से काला और बाहर से सफेद जैसा था, इसी कारण से जनमानस ने उसे रावण कंस आदि जैसे अत्याचारी नामों से संबोधित किया है।

औरंगज़ेब के इस क्रूर व्यक्तित्व की काली छाया बुन्देलखण्ड पर भी पड़ी। दिल्ली के राज्य शासंन् को नसीब कराने वाले बुन्देल केसरी चम्पतराय और वीरांगना सारंधा को उसने इस उपकार के बदले मौत के घाट उतरवा दिया था। इन्हें बुन्देली आत्माओं के कटे सिर देखकर औरंगज़ेब फुलाना समा रहा था। यह उसकी आखिरी खुशी थी क्योंकि इस घटना ने ही उसके आगे आने वाले जीवन को नरक बना दिया था पुलिस चौक साडे 12 वर्षीय अनाथ बालक छत्रसाल ने उसके उत्तरार्ध जीवन काल में उसे दिल्ली से लगातार 27 वर्षों तक बाहर रखा था। उसका सारा किया कराया चौपट हो गया था, बुन्देल भूमि से मुग़ल 57 चुकी थी और बुन्देलखण्ड स्वतंत्र राज्य बन गया था।

कुमार छत्रसालनहीं भाई इस वर्ष की आयु से शुभ लग्न में जो विद्रोह प्रारंभ किया था, वह 1 वर्ष के अंदर ही सफलता की सीढ़ियां छूने लगा था। औरंगज़ेब तो समझ रहा था कि चम्पतराय के निधन के बाद समूचे बुन्देलखण्ड उसके अधीन आ चुका है, परंतु दसवें वर्ष में ही अर्थात 9 वर्ष की शांति के बाद भूचाल आ गया था पुलिस चौक यह भूचाल हवा के झोंकों के रूप में प्रकट आ और तूफान बन कर मुग़ल सल्तनत को ढा गया। औरंगज़ेब ने एक के

बाद एक सैकड़ों सेनापतियों को छत्रसाल के ऊपर भेजा वहां पर हाल यह हुआ-- जैसे जलते हवन-- अग्नि में भी लगातार डालने से हवन ज्वाला और भी तेज हो जाती है, वैसे ही छत्रसाल से लड़ने आए मुग़ल सेनापति भीगी के सदृश्य सिद्ध हुए, सभी गुम हो गए हवन कुंड में। कुमार छत्रसाल की हवन शाला से सारा बुन्देलखण्ड महक उठा। मुग़ल सल्तनत छूमंतर हो गई और भगवा ध्वज भगवान सूर्यनारायण के रथ पर चढ़ने लगा। आखिर थे भी सूर्यवंशी--- जयकुमार छत्रसाल।

अंत समय औरंगज़ेब में इतनी समर्थन आ रही कि वह खुद लड़ने को उन्हें बुन्देलखण्ड आ पाता। बेचारा औरंगज़ेब तो दक्षिणी रियासतों एवं राजस्थान में दुर्गादास राठौर की कूटनीति में ऐसा फंसा कि उसका शहजादा अकबर(पुत्र) खुद बादशाह बनने के चक्कर में विद्रोह कर बैठा था। कुमार छत्रसाल ने एक कुशल खिलाड़ी की भांति औरंगज़ेब को थका थका कर अर्थ विकसित कर डाला था फलत है उसे किसी के ऊपर भरोसा ना रहा। बुन्देलखण्ड आने वाला हर मुग़ल सेनापति मुंह की खाता और चोट देकर ही छूट पाता। अनेकों को मौत के गाल में समा ना पढ़ा। मन मारकर औरंगज़ेब को बुन्देलखण्ड की तरफ से आंख बंद कर लेनी पड़ी और बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता को स्वीकारना पड़ा।

---

1. 1681 से 1707 तक
2. वि.सं. 1761 में आखिर वह स्वयं लड़ने आया था अपनी हम मिटाने पर असफलता उसके साथ लगी थी। ओरछा का इतिहास नाम पुस्तक में वर्णन मिलता है।

महाराजा छत्रसाल ने औरंगज़ेब के मरने से 7 वर्ष पूर्व ही दक्षिणी बघेलखण्ड की दो लाख की रियासत अपने पुत्र को भारतीय चंद्र को दी थी, अतैवस्पष्ट है कि बुन्देली सत्ता बाहर भी स्थाई पैर जमा चुकी थी।

औरंगज़ेब के अंतिम बरस बहुत बुरे गुजरे। भारत का सम्राट कहलाने वाला औरंगज़ेब अपने अंतिम काल में कुछ रियासतों का ही राजा रह पाया था। महाराष्ट्र गुजरात कॉम राजस्थान आदि की बागडोर भी उससे छिन चुकी थी। संन् 1707 में जब औरंगज़ेब मरा तब वह बुन्देलखण्ड में स्थापित महाराजा छत्रसाल के स्वतंत्र ईश्वरीय राज्य को समाप्त करने की अपनी पुरानी और अंतिम अभिलाषा संग ले गया।

औरंगज़ेब के अवसान (संन् 1707 के बाद महाराजा छत्रसाल के समय दिल्ली तख्त पर 6 राजा पद आसीन हुए पुलिस चौक यथा---1. बहादुरशाह (मुअज्जम) सन् 1707 में, 2. जहांदरशाह 1712 में, 3. फर्रूखसियर सन् 1713 में, 4. रफीउद्दारजात, 5. रफीउददौला* तथा 6. मुहम्मदशाह रंगीला (शहजादा रोशन अख्तर) [इसकी मृत्यु सन् 1748 में हुई थी]।

औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद उक्त किसी भी मुग़ल राजा ने बुन्देलखण्ड पर चढ़ाई नहीं की। महाराजा छत्रसाल ने कुशल राजनीति एवं कूटनीति का परिचय देकर दिल्ली सल्तनत को अभय दान दिए रखा था। उन्होंने जीवन भर दिल्ली ना चोरों का वचन निभाया था।

मुग़ल सल्तनत की अस्थिरता का लाभ उठाकर ही लुटेरे मुहम्मद खां ने उत्तरी बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किए थे, जिसे महाराजा छत्रसाल ने कुशल नेतृत्व के द्वारा असफल कर दिये थे।

संयुक्त युद्ध

[वि.सं. 1731-1733 (1674-1676 A.D.)]

प्रस्तावना-- औरंगज़ेब ने बुन्देलखण्ड पर सर्वाधिक आक्रमण किए थे। उसने बड़ी से बड़ी सेनाएं देकर यह दो नंबर सेनापतियों को यहां भेजा था, परंतु युद्धों में महाराजा छत्रसाल ने अपने अपार बल पराक्रम, जन सहयोग एवं चक्रव्यूह युद्ध नीति के फल स्वरुप हमेशा विजय पाई थी।

मुग़ल सल्तनत नए बुन्देलखण्ड में जो सैकड़ों सेनापति भेजे थे, उनमें कुछ प्रमुख सिपहसालार निम्न प्रकार हैं---

फिदाई खां, सैयद बहादुर खां, खालिद खां, अंदुल है, फौजदार मुहम्मद खां,

---

- ये दोनों अल्पकालीन राजा हुए हैं।

मु. हाशिम, मुनव्वर खां करमइलाही, इखलाख खां, अफ्रासियाव, रूमी, तहव्वर खां, दलेलखां, वखालत खां, खानजहां, मु. अफजल, शमसेरखां, शेर अफगन, शाहकुलीन, मिर्जा सदरुद्दीन, लतीफखां, मु. जलालखां, खानदिलावर, रणमस्त खां, अब्दुल समद, बहलोल खां, मोराद खां, पुरदिल खां आदि।

बाबर से लेकर शाहजहां के काल तक (जहांगीर का काल एक अपवाद है) बुन्देलखण्ड में आक्रमण मंदिरों को तोड़ने के लिए वह सत्ता की प्राप्ति हेतु हुए थे परंतु औरंगज़ेब के काल में तो आक्रमणों की बाढ़ ही आ गई थी इतने आक्रमण किसी भी राज्य पर नहीं हुए पुलिस चौक कहा भी जाता है कि

सोना तप कर ही कुंदन बनता है वस्तुतः इन आक्रमणों ने ही बुन्देलखण्ड को मुग़ल सल्तनत से हिंदू सामाज्य बना दिया था।

हर बार मुंह की खाने औरंगज़ेब ने छत्रसाल के दमन के लिए (1674 1670 ई. के मध्य) संयुक्त अभियान चलाए। दो दो 33 चारों को एक साथ युद्ध करने के लिए उसने बुन्देलखण्ड भेजा था परंतु कुमार छत्रसाल ने अपने सूझबूझ और नीतिगत संधि के माध्यम से सफलता पाई। उनकी इस सफलता का यह एक रहस्य रहा कि कोई भी सूबेदार छत्रसाल से युद्ध नहीं करना चाहता था और वे संधि का झूठा बहाना भी छत्रसाल की ओर से राज दरबार में प्रस्तुत करते थे।

प्रथम संयुक्त युद्ध

लगातार पराजय के पश्चात औरंगज़ेब ने अपनी दक्षिण में लगी सेनाओं का मुख्य बुन्देलखण्ड की ओर मोड़ दिया पर। इलाहाबाद के सूबेदार हिम्मत कहां ग्वालियर के सूबेदार अमानुल्लाह खां तथा इंद्र रखी के जागीरदार पहाड़सिंह और को इस संयुक्त अभियान की जिम्मेदारी सौंपी गई। तीनों सेनाओं ने बुन्देलखण्ड की तरफ प्रस्थान कर दिया। छत्रसाल जी ने अपनी सैन्य शक्ति कम देखकर संधि की अफवाह उड़वा दी। कूटनीतिक के सहारे छत्रसाल जी ने शाही सेना के औजारों को अपनी ओर पढ़ लिया था। तीनों सेनाओं ने संधि की बात औरंगज़ेब तक इस ग्रुप में पहुंचाई की छत्रसाल ने हार मान ली है अतैवअब लड़ना उचित नहीं है। इस कारण औरंगज़ेब ने इस संयुक्त युद्धाभ्यास को रोके जाने का फरमान जारी कर दिया था।

इधर महाराजा छत्रसाल ने कुछ दिन शांत रहकर अपने स्वतंत्र अभियान को दूर-दराज के इलाके में प्रारंभ कर दिया जिसकी सूचना औरंगज़ेब को बहुत समय के बाद मिली हो मां तब तक औरंगज़ेब दक्षिण व राजस्थान के विद्रोह दबाने में व्यस्त हो चुका था।

इस प्रकार छत्रसाल ने इस अभियान के विरुद्ध कूटनीति का सहारा लेकर बहुत अच्छी सफलता पाई और सैन्य शक्ति को खूब बढ़ा लिया था।

द्वितीय संयुक्त युद्ध

औरंगज़ेब ने संयुक्त अभियान की तैयारी करवाई पुलिस ने सिरोंज के फौजदार नरवर के पास दार्चुला कथा पुणे इंद्र की के जमीदार पहाड़सिंह और को अभियान में शामिल कर संयुक्त बागडोर सौंपी। इन तीनों सेनाओं ने मिलकर एक रणनीति तय की और छत्रसाल के विद्रोह पर नजर दौड़ाई। जब छत्रसाल ने इस संयुक्त युद्ध की खबर गुप्त सूत्रों से प्राप्त की तब उन्होंने मुग़ल ठिकानों पर अपने आक्रमण बिल्कुल बंद कर दिए और गुप्त रूप से अपनी सैन्य शक्ति की वृद्धि करने में जुट गए।

जब काफी अरसे से छत्रसाल जी की विरोधी गतिविधियों का कोई पता ना चला तब इन तीनों सेना एक ओके जान में जान आई, क्योंकि यह सब कुमार छत्रसाल से लड़ने के लिए कतरा रहे थे। इन तीनों ने औरंगज़ेब को इस बात की सूचना दी कि छत्रसाल ने आक्रमण बंद कर दिए हैं और अब संयुक्त अभियान की कोई जरूरत नहीं है। औरंगज़ेब ने एक हुकमनामा जारी करके इस अभियान को मुलातवी कर दिया था। तब इन तीनों सेना नायकों ने राहत की सांस ली।

उपसंहार

कुमार छत्रसाल ने प्रारंभिक क्षणों में औरंगज़ेब के इन दोनों संयुक्त अभियानों को कूटनीति के सहारे जीत लिया। उनका मानना था कि संभल शत्रु से सीधे लड़ना अहित कर है, ऐसे में कूटनीति का सहारा लेकर काम लेना कोई बुरी बात नहीं। अपनी सेना को व्यर्थ में कटवाने से दो कदम आगे बढ़ने से अच्छा है कि दस कदम पीछे लौटना। वस्तुतः पीछे हटकर ही लंबी छलांग भरी जा सकती है जो सफलता का द्वार खोलती है। महाराजा छत्रसाल का दृष्टिकोण अन्य क्षत्रिय राजपूतों से अलग था जो आन शान पर मर मिटना उत्तम मानते थे पीछे हटना कायरता। उनका विचार था कि लक्ष्य की अभीष्ट सिद्धि के बिना बलिदान हो जाना धर्म व राष्ट्र के लिए भी अधिकार है ओ मा मेरी मूर्खता है। उनका मानना था कि समय अनुकूल नीति में परिवर्तन कर लेना उचित होता है। इसी का प्रत्यक्ष प्रमाण है--- बुन्देलखण्ड को पूर्ण स्वतंत्रता और महाराष्ट्र में वीर शिवाजी द्वारा स्वतंत्र राज्य की स्थापना परंतु राजस्थान में इन्हीं गुणों के अभाव से कभी भी मुग़ल सल्तनत से स्वतंत्र राज्य स्थापित नहीं हो सका।

मुग़ल सत्ता से युद्ध

फिदाई खां से युद्ध [वि.सं. 1728 (1671 A.D.)]

यह कोक अल्ताफ खां जहां का बड़ा भाई और औरंगज़ेब का अति लड़ाकू सेनानायक था पुलिस वर्क महाराजा चम्पतराय की मौत के 9 वर्ष बाद औरंगज़ेब ने बुन्देलखण्ड में परीक्षण

के तौर पर यह जानने के लिए कि वहां पर जनशक्ति की अब क्या हालत है फिर आई खां को सेना सहित बुन्देलखण्ड रवाना किया। निश्चित मार्ग सोचकर फिदाई खां बढ़ चला। बुन्देल वासियों को जब पता चला कि मिठाई खा मंदिरों को तोड़ने के लिए एवं धनात्मक उद्देश्य से चला चला आ रहा है ओ मां ऐसे समाचार सुनकर सोते हुए सांप जाग उठे, बुन्देली नव युवकों ने कुमार छत्रसाल के नेतृत्व में राव दूर मंगल के साथ आगरा सुबह के समीप सिंधु नदी1 के तट पर धूम घाट की पहाड़ियों पर लुक छुप कर मोर्चा लगा लिया। बेचारा उन्माद भरा विदाई का फराक विश्राम के लिए इन्हीं पहाड़ियों के बीच रास्ते में रुक गया। बस इसी की तलाश थी बुंदेले रणबांकुरे को। रणनीति के तहत रात में

24:00 के बाद हमला शुरू हुआ। मुग़ल सैनिक निर्भय बने प्रगाढ़ निद्रा में थे। अचानक पहाड़ियों से पत्थरों की वर्षा से आहत हो उठे, फिर तीनों से वह घायल होने लगे। विचारों को अचानक हुए आक्रमण के प्रतिरोध का मौका भी ना मिला। इधर-उधर भागने वालों को तलवार और भालू से मौत का रास्ता दिखा दिया जाता। अभागा विदाई का2 अपनी रणनीति में फस कर मरते मरते बचा, वापस आगरा भाग गया।

कुमार छत्रसाल और धुरमंगद की योजना सफल हुई। समूचे बुन्देलखण्ड इस अप्रत्याशित विजय से आनंदित हो उठा। धुरमंगद कुमार छत्रसाल की अगुवाई में सदा रहने का व्रत इसी विजय के बाद लिया था जिसे उसने आजीवन निभाया। इस वजह से छत्रसाल की ख्याति 14 अप्रैल उठी। चम्पत के लाल का लाल ध्वज को मां उदित सूर्य की लाल राशियों के संग प्राची दिशा से नव मंडल की ओर बढ़ चला।

इस वजह से छत्रसाल ने भविष्य के सफलता की कुंजी वाली थी। 9 वर्ष के संघर्ष काल की यह उपलब्धि थी। इस युद्ध में बुन्देल राजपूत वीरों के अतिरिक्त कोल (जनजाति और 89 (हथियारबंद किसान जनों ने एक साथ दिया था।

---

1. डबरा स्टेशन के पास धूम घाट नामक स्थान (बुन्देलखण्ड की यह 2. हल्दीघाटी है तथा महाभारत के कुरुक्षेत्र की संज्ञा से अभिहित)।

2. (छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम) (विद्रोह के प्रारंभिक अनुभव)

आपर औरंगज़ेब बादशाह से संवत् 1728 की साल में लड़ाई भाई मऊ से चले और 6 को गए, वहां राजा सुजानसिंह से लड़ाई की सलाह करी फिर कॉल दाऊ के पास वगदा गए, 1 से सलाह हुई, वह हमारे संग में भय और शूरवीर ठाकुर हमारे संग में हते.... हमें सपनों आयोग की तुम लड़ो तुम्हारी फतेह है (उड़ेल हम गए खां बादशाह के यहां जहां री भाई छत्रसाल ने फतह पाई, बादशाह ने 75005 पटवाई और यह पटवाई के छत्रसाल विजय पकड़ लाए जावे, रईसुल ऐसी कृपा भाई के पेड़ के पत्ते हैं गई, 20005 मुग़ल मारे गए..... पॉज हमारी मारी गई एक से एक बढ़कर.... अपूर्ण

सैयद बहादुर खां से युद्ध [वि.सं. 1729 (1672 A.D.)]

औरंगज़ेब ने छत्रसाल जी को पकड़ मंगवाने1 के लिए सैयद बहादुर खां2 को बुन्देलखण्ड भेजा। इस समय छत्रसाल जगह-जगह संगठन कर रहे थे। कुमार छत्रसाल का पता लगाते लगाते सैयद बहादुर का उस स्थल पर जा पहुंचा, जहां छत्रसाल अपने विश्वस्त साथियों के साथ जंगल में अभ्यास कर रहे थे। सभी इसने कुमार छत्रसाल को घेर लिया और आत्मसमर्पण के लिए ललकारा। कुमार छत्रसाल बिना समय गवाएं सैयद पर टूट पड़े ओमा भयंकर मारकाट मच गई। सैयद की सेना भागने

लगी। कुमार छत्रसाल ने सैकड़ों मुगलों को धरती पर सुला दिया ओ मां तब जान बचाकर सय्यद बहादुर कहां भाग खड़ा हुआ था और उस टॉप छत्रसाल युद्ध में विजयी हुए।

खालिक खां से युद्ध [वि.सं. 1729 (1672 A.D.)]

एक बार कुमार छत्रसाल ने युक्ति और पर्यटन के सहारे धामौनी एवं उसके आसपास के जंगलों के बीच मुग़ल शस्त्रागार छावनी को नियंत्रण में लेने का व्यू रचा। उन्होंने अपने विश्वस्त साथी बाकी खां को शस्त्रागार छावनी पर और स्वयं धामौनी पर एक साथ आक्रमण करने की योजना बनाई। इस समय धामौनी पर खलीफा फौजदार नियुक्त था। एक साथ एक ही समय दोनों जगहों पर आक्रमण किया गया। बाकी खा ने योजना अनुरूप शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया और धामौनी में खाली खासे छत्रसाल जी का भयंकर युद्ध हुआ, एक बार तो छत्रसाल को पीछे हटना पड़ा होगा फिर जल्दी ही वीर बकरों को इकट्ठा करके खाली कहां पर टूट पड़े3। इस बार का आक्रमण भयंकर था खाली को जान के लाले पड़ गए, वह धामौनी छोड़कर रात के अंधेरे में चोट देकर रानगिरी भाग गया1। कुमार छत्रसाल ने धामौनी के किले पर भगवा ध्वज पहरा दिया।

---

1. उपर्युक्त आचरण से औरंगज़ेब की नियत का खुलासा होता है।

2. यह ग्वालियर का सूबेदार था कुमार छत्रसाल का दमन करने आदम का था। पराजित सैयद बहादुर का ग्वालियर लौट गया।

3. गौना पिपराहट हनुटूक, धौरा सागर अरु लखरौनी।

बाड़ेहार और चन्द्रापुर को, मैहर तक किन्हीं है छौनी॥

खालिक रानगिर को भागा, श्री छत्रसाल ने घेर लिया।

सब साथी उसके घेर घेर, निज असि के घाट उतार दिया॥ (वीर भक्त चम्पत छत्रसाल:पृ.193)

4. खालिक खां तीस हजार चौथ देकर छूटा था। (छत्रप्रकाश)

फौजदार मुहम्मद खां [वि.सं. 1730, 1733 (1673, 1674 A.D.)]

सिरोंज का फौजदार। फौजदार मुहम्मद खां से सिरोंज को अपने कब्जे में लेने के प्रयास में पहली बार (वि.सं. 1730 में) छत्रसाल ने कुमार सेन धमधेरे को साथ लेकर आक्रमण किया। उस समय मुहम्मद हाशिम भी सिरोंज में ही था। दोनों ने मिलकर कुमार छत्रसाल को करारी टक्कर दी। मुगलों का साथ दे रहे थे फॉर्म आफ वनवासी डोंट। इनका प्रमुख सरदार आनंद राय भी था। परंतु छत्रसाल जी की नीतियों से प्रभावित होकर दूसरी बार (वि.सं. 1733 में सभी वनवासी व आनंद राय सेना

सहित छत्रसाल जी के झंडे के नीचे आ गए थे। फल स्वरुप मुग़ल सेना पर दोहरी मार पड़ने लगी। मुग़ल सेना दो पाटों के बीच पचने लगी ओ माय गॉड सरदारों के बदौलत छत्रसाल जी की विजय हुई। असंभव को संभव बन गई। वस्तुतः महाराजा छत्रसाल में दैवीय आकर्षण झलकता था। गैबी ध्वज उनकी विजय ही विजय का पर्याय था। जहां से जीटीबी नगर सके वहां से महाराजा छत्रसाल की गहरी पताका प्रविष्ट होकर विजय का डंका बजा दी थी।

फौजदार मुहम्मद ध्वस्त हुआ महाराजा छत्रसाल ने दो प्रांत सिरोंज का किरदार आनंद राय प्रमुख को नियुक्त करके मुग़ल सल्तनत उखाड़ फेंकी। आहट फौजदार मुहम्मद सिरोंज ना सका।

कहा जाता है कि मुहम्मद खां ने दूल्हे को कैद से मुक्त कराने हेतु महाराजा छत्रसाल से युद्ध किया था।

मु. हाशिम खां वि.सं. 1730, 1733, 1735, एवं 1737

(1673, 1676, 1678, 1679 A.D.)

फौजदार मुहम्मद खां के साथ मुहम्मद हाशिम भी सिरोंज का फौजदार नियुक्त किया गया था। सिरोंज रियासत के विशेष हिमायती थे बनवासी गोंड सरदार, जिनमें आनंद राय गोंडवी था। वनवासी गोंडो के कारण सिरोंज पर मुहम्मद हाशिम काबिल था। छत्रसाल ने पहले देश फिर प्रदेश के सिद्धांत अनुसार दोनों गुंडों (गोंड सरदार एवं आनंद राय प्रमुख को समझाया बुझाया और देश प्रेम की भावना जागृत की। इन दोनों की सम्मिलित सेना

---

1. रणदूलह को बंदी करके, श्री छत्रसाल दलपति सुवीर।

बुन्देलखण्ड के नगर नगर, अरु ग्राम ग्राम सैनिक सुधीर॥

मुहम्मद खां आकर रणदूलह, आजाद किया बंदी घर से।

घमासान युद्ध भी मचा दिया, उठ गई शांति पृथ्वी पर से॥

जनमेजय का यह नाग-यज्ञ रणहवन कुंड में सभी राख।

हो गए बोलते अल्लाहहो, अकबर के नारे लाख-लाख॥

रणदूलह और मुहम्मद भी, पूर्णाहुति होकर शुद्ध हुए। (वी.च.ध.छ, 144-145)

ने छत्रसाल जी का साथ देकर मुहम्मद हाशिम को धूल चटा दी1 और रात में ही सूर्योदय दिखाई देने लगा। मुहम्मद हाशिम पराजित होकर रात के अंधेरे में गायब हो गया, अन्यथा काल कवलित हो

जाता। इस वजह से छत्रसाल जी को महत्वपूर्ण ख्याति मिली। तुम्हारा घर तुम्ही को समर्पित कहकर उन्होंने आनंद राय को रियासत सौंपकर बनवासी जनमानस को विशेष आकर्षित किया।

कुमार छत्रसाल की मु. हाशिम खां से कई बार मुठभेडे हुई। हर एक बार वह जान बचाकर भागता रहा। [वि.सं. 1730, 1733, 1735, एंव 1737 (1673, 1676, 1678, 1679, A.D.) में हुए युद्ध का विवरण बहुत मिलता है [वि.सं. 1700 (1600 A.D.)] में मुहम्मद हासिम खां एवं फौजदार मुहम्मद खां को सिरोंज में हराकर ही आनंद राय वनवासी को वहां कीरियासत कुमार छत्रसाल ने सौंपी थी।

रन धुलह से युद्ध (रुहिल्ला खां)

[वि.सं. 1730, 1733, 1734 (1673, 1676, 1677 A.D.)]

फौजदार खालिद खां की पराजय के बाद औरंगज़ेब ने [वि.सं. 1729 (1672 A.D.)] में रनदूलह को धमौनी का फौजदार बनाकर बुन्देलखण्ड भेजा। संवत् है 1730 के चैत्र मास में छत्रसाल ने रनदूलह को बसिया के निकट रण क्षेत्र में परास्त कर दिया। वह बची कुची सेना लेकर भाग खड़ा हुआ। युद्ध की भीषण मार खाए रनदूलह ने प्रतिशोध की भावना रखकर एक बड़ी सेना लेकर उन्हें वि.सं. 1733 में धामौनी की ओर कूच किया। सागर के निकट दोनों सेनाओं का घनघोर युद्ध हुआ, बुन्देली नवगठित सेना ने भयंकर मार दी। कई सेनाओं को इकट्ठा करके लाया था उसकी सेना विशाल थी। कभी बुन्देली सेना सबल दिखती तो कभी मुग़ल सेना। बुन्देली सैनिकों के अंगप्रत्यंग में वसुंधरा का महत्व झलक रहा था, एक एक वीर के कई मुग़ल सैनिकों पर भारी पड़ रहा था। महाराजा छत्रसाल ने चक्रव्यूह रचना करके मुग़ल सेना को पीछे हटने को मजबूर कर दिया। मुग़ल सेना का भीषण सहार हुआ। रनदूलह कहलाने वाला रुहिल्ला

---

1. हाशिम की सेना बहुत बड़ी, सब सधे सधाये वीर बड़े।
हिंदू भी उनके साथ लगे, आकर संग्राम में सभी अड़े॥
श्री छत्रसाल का घोड़ा था, चौगान महा पर भरता।
जिस ओर वीर मुंह का कर लेता, उस ओर सफाया था करता॥
मुहम्मद को गज ने ले भागा, आनंद चौधरी साथ लगे।
दलपति ने काम तमाम किया, चहूं ओर विजय के बोल जगे॥
अरियों ने मुंह की खाई है, जो शान बढ़ाएं महा रहे।
छत्ता ने ध्वज लहराया था, विरदावनि बंदी गान कहे॥ (वी. भ. च. छ. 194-195)

2. अप्रैल व मई सन् 1673 ई.

खां रन छोड़कर भागा। मुहम्मद खालिद खां की तरह रंग दूल्हे की भी दुर्गति हुई। दोनों बार की पराजय से इसे औरंगज़ेब का कोप भाजन बनना पड़ा था।

तीसरी बार रणदूलह पुनः औरंगज़ेब के आदेश पर उस समय आया था जब मुनव्वर खां एवं बहादुर खां परास्त हो चुके थे। संवत् 1734 में कोटरा1 के आसपास भयंकर लड़ाई हुई थी। 95000 पॉज मुगलों की थी। युद्ध में महाराजा छत्रसाल की यह ऐतिहासिक विजय हुई थी।

मुनउवर खां से युद्ध [वि.सं. 1733 (1676 A.D.)]

(मुनब्बर खां)। यह बारहा (सहारनपुर) के सैयद वंश के सैयद खानजहां का बेटा था। इसे औरंगज़ेब ने 1674 (वि.सं. 1731 में ग्वालियर का फौजदार नियुक्त किया था। जब छत्रसाल भोपाल के निकट मुग़ल ठिकानों पर आक्रमण करके भगवा ध्वज पर आकर उत्तर की तरफ बढ़े, सभी झांसी से 3 मील दूर उत्तर पश्चिम में धूम घाट पर मुहांसे भयंकर युद्ध हुआ। मुग़ल सेना में त्राहि-त्राहि मच गई मुसीबत में फंसा मुनव्वर खां अपने बचे कुचे सिपाहियों को लेकर ग्वालियर की तरफ भागा। उसके साथ ही सेनापति बहादुर खां को भी मुंह की खानी पड़ी। कुमार छत्रसाल ने पीछा करते हुए ग्वालियर पर भी धावा बोला, मुग़ल खजाने को लूटा था।

करम इलाही से युद्ध [वि.सं. 1735 (1678 A.D.)]

कालिंजर का फौजदार कर्म इलाही। कालिंजर का किला बुन्देलखण्ड का एक

---

1. (छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम)

बादशाह ने रंगुला को पटवा वाह बहुत से सुबह राजन की फौज जोर केरला के संग लगाई, 95000 से कम भौजाई रहे ओमा टॉपर बघेरा बहुत हाथी कोटरा में रसगुल्ला ले आए, वहां हमारी वन की लड़ाई भाई, रंग दुल्ला हार के भाग गए हो वह फौज भागी ओमा फिर अपनी जीत को डंका बजाया, कोटरा जपत करो, फिर वहां से चले रतनगढ़ को लूटेओमा वहां से दमोह निको गए, वहां की फतेह की फतेह करी, फिर जतारा.... बहुत से गांव लौटे* वर्धा न्यूज महावीर महेवा चले आए,

वैशाख सुदी 11 संवत् ए 1787 मुंह महेवा

2. (छत्रसाल का पुत्र जगतराज के नाम)

मुनउवर खां से लड़ाई भाई, धूम, धूम घाट में डंका बजा वत भरे, फौजी लड़.... आयो, बड़ी तेजी से लड़ाई भाई, आखिरकार मुग़ल पठान अन के ऊपर हमने खूब हटवार करो, मार के भगा दयो को मां शहर के भीतर घुस आए

किले पर गोला लगाया..... वहां हमने 90 लाख.... फिर ग्वालियर को लूटो, वहां बहुत शोधन मिलो, वाह जवाहिर बहुत मिलो फिर... पथरिया को लूटो। हटा दमोह इन सब को लूटो

वैशाख सुदी 9 संवत् 1787 मुकाम महेवा

महत्वपूर्ण दुर्ग हैं, जिस प्रकार से दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर स्थित धामौनी का दुर्ग। इन दोनों दलों को आधीन किए बिना बुन्देलखण्ड के सुरक्षित अस्तित्व की कल्पना नहीं की जा सकती थी। महाराजा छत्रसाल ने बुन्देलखण्ड के 100 राज्य अभियान को अपने अभीष्ट लक्ष्य सिद्ध रणनीति के अनुसार बनाया था, तभी उनके पद अब कालिंजर दुर्ग की तरफ बढ़ चले थे।

करमइलाही ही इस समय कालिंजर का मुखिया था। उसने छत्रसाल के बढ़ते रुख को परख लिया, वह जानता था कि बुन्देला छत्रसाल उन पर अवश्य हमला करेगा। अतैवउसने तैयारी कर रखी थी। [वि.सं. 1735 (1678 A.D.)] में कालिंजर विजय हेतु महाराजा छत्रसाल का क्रम इलाही से भयंकर युद्ध हुआ। सामरिक दृष्टि से कालिंजर का किला अति महत्व का है, इस पर अधिकार करना राष्ट्र नायक छत्रसाल के लिए अनिवार्य था। भयंकर लड़ाई में कर्म इलाही की हार हुई। बेचारा प्राण बचाकर सौगंध वोट देकर भाग सका। महाराजा छत्रसाल ने कालिंजर दुर्ग पर अपना विजय ध्वज लहरा दिया तथा मांधाता चौबे को फौजदार नियुक्त करके वापस आ गए।

खानदिलावर से युद्ध [वि.सं. 1735 (1678 A.D.)]

खानदिलावर--- औरंगज़ेब का एक दिलेर सेनापति, अति बहादुर सिपहसालार था। एक समय यह धामौनी किले का फौजदार भी रहा था। यह महाराजा छत्रसाल की कालिंजर वजह से तेल मिलाकर लड़ने को दौड़ा आया था। इसके पास तोपखाना भी था। एक बड़ी सेना लेकर उमड़ा था, दिल में अनेकों अरमान लिए।

महाराजा छत्रसाल को इसने आज हीरा, तब महाराजा छत्रसाल का खां दिलावर की सेना से भयंकर युद्ध हुआ। बुन्देल रणबांकुरे ने प्रचंड युद्ध में या वनों को भयानक मार दी। दोनों सेनाओं का युद्ध अति भयानक था,खां दिलावर अपनी पूरी शक्ति से लड़ रहा था, परंतु उसकी शक्ति शनै शनैसिंह हो चली, तो खाना भी बुंदेलों से छीन लिया। उसकी सेना में भगदड़ मच गई, बुन्देल रणबांकुरे में अंततः खां दिलावर की सारी योजनाओं को धूल में मिला दिया। वह आया था गणेश बनने को मां पर सियार बन गया। बेचारा खां दिलावर प्राण बचाकर भाग निकला। उसके तमाम हाथी घोड़े को मातो पर एवं युद्ध सामग्री महाराजा छत्रसाल के हाथ लगी थी।

दुश्मन के हय गज अस्त्र-शस्त्र, तोपें बहू हाथ लगीं इनके।

पर खान दिलावर भाग गया, कुछ साथी साथ लिए गिन के॥

(वीर चम्पत भक्त छत्रसाल, पृष्ठ 176)

खानदिलावर अपने अंतर्मन में हार से बेहद लज्जित था उसमें प्रतिशोध की ज्वाला निरंतर धधकती रही। कहा जाता है कि इसी कारण वह [वि.सं. 1744 (1687 A.D.)]

में पुनःआ धमका था। तब वह (खानदिलावर) महाराजा छत्रसाल की अपार बल पर उसकी गाथा सुनकर लौट गया।

दाराब खां से युद्ध [संवत् 1735 (1678 A.D.)]

औरंगज़ेब ने बुन्देलखण्ड की उत्तरी सीमा की ओर से आक्रमणों को तेज करने के लिए दारावर को भेजा। इस समय औरंगज़ेब ने अपनी रणनीति के अनुसार जमुना के उत्तर में नियुक्त रियासतों के अधिकारियों को विशेष अधिकार भी दिए, ताकि यहां की जनता, बुन्देलखण्ड के निवासियों को सहयोग ना करके मुग़ल सत्ता के प्रति लगाव वापस लाए। परंतु जमुना तट से सटे बुन्देलखण्ड की भूमि में बसे जनमानस ने सदैव की भांति अपनी मातृभूमि को प्रधानता दी और अपने महाराजा छत्रसाल जी के प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव जगाए रखा। इस सद्भाव का पता इसी तथ्य से लग जाता है कि जिन महिलाओं के पति बुन्देली सेना में हैं हमको चूड़ियों की क्या जरूरत। प्रस्तुत है बुन्देली सैनिक युद्ध में जी-जान लगाकर लड़ते थे।

[वि.सं. 1735 (1678 A.D.)] में औरंगज़ेब द्वारा नियुक्त धाराम खाने जमुनापार के महाराजा छत्रसाल से लड़ाई की योजना बनाई। महाराजा छत्रसाल जी को गुप्त चरो से इसकी भनक लग गई। बेचारा डरावना योजना बना ही रहा था कि बुन्देली सेना ने आ घेरा। भयंकर मारकाट मच गई। जो बुन्देली सैनिक अपने घरों में थे वह भी आज हम के। दोहरी मार से दार आपका की सेना के सैनिक कालका वलित होने लगे उनके खून का दरिया बेह चला।

तहब्बर खां से युद्ध [वि.सं. 1734, 1735 (1677, 1678 A.D.)]

तहब्बर खां --- एक खां ज्यादा (उच्च वंशी है मनसबदार था। अक्टूबर 1677 तक वह अवध का फौजदार रहा। औरंगज़ेब ने इसे ताकतवर एवं कुशल सेनापति मानकर छत्रसाल के दमन के लिए बुन्देलखण्ड भेजा। इसमें तीन बार छत्रसाल जी से भयंकर

युद्ध किए थे। बड़ी चालाकी से छत्रसाल जैसी युद्ध नीति अपनाता था पर हर बार असफल रहा। एक बार स्नेक उपचारों से पता लगवा कर छत्रसाल को जब उनके विवाह की रस्म पूरी हो रही थी, सावर में1 आगरा। विवाह का हंसी खुशी का वातावरण रणभूमि में बदल गया। पहले तो बुंदेले घबरा गए थे, उसी समय दूल्हा वेश में सजे एक योद्धा की तरह लड़ने को तैयार छत्रसाल ने सबके अंदर एक ऊर्जा का अद्भुत संचरण कर दिया। रणभेरी बज उठी, युद्ध में प्रलय दृश्य उपस्थित हो गया। वीर बुंदेले अपार बल पर उससे भरे की धुन मत हो उठे, बेचारे तहब्बर खां ने इतने भयंकर युद्ध की कल्पना तक भी ना की थी। इसकी सेना को बुन्देल रणबांकुरे ने काट डाला। वह प्राण बचाकर भाग निकला उसकी प्रतीक्षारत अन्य सैन्य टुकड़ियों बेखबर बनी रही। कुमार छत्रसाल विजय ही बनकर सांवर पहुंचे तब विवाह की शेष रस्में पूरी हुई थी।

इस योजना में असफल रहने के कारण खेती आकर उसने उन्हें बुन्देलखण्ड प्रस्थान किया। ऊंची नीची पहाड़ियों से गुजरता हुआ आगे बढ़ चला। छत्रसाल ने गुप्त चरो द्वारा सूचना पाकर छापामार युद्ध शैली से लड़ने का दे बनाया। इसी के अनुसार उन्होंने अपनी सेना को कई टुकड़ों में बांटकर पहाड़ियों पर छिपा दिया, जहां से पेपर कहां की सेना गुजरने वाली थी। रणनीति कारगर हुई गौमाता तहब्बर खां चूहे दानी में आकर फस गया। ऊपर से छापामार दलों के हमले एवं आगे पीछे छत्रसाल की दूसरी अन्य टुकड़ियों ने भयंकर मार दी। भयंकर मार्कशीट है तहब्बर खां बिलबिला पड़ा। छत्रसाल जी नेता तहब्बर खां को उड़कर कैद कर लिया। 3 भारी लड़ाई हुई चार कौमा ते तहब्बर खां भारी साथ देकर ही छुप सका था।

---

1. यह घटना [वि.सं. 1735 (1678 A.D.)] के पूर्व की है
2. तहब्बर खां लड़ने के खातिर, सावर की ओर बढ़ आया बस।

   तब छत्रसाल मंडप आए, पंडित ने वेद गाया॥ पृष्ठ 198

   निजी सिर पर लात रखे भागी, तहव्वर खां बची खुची सेना।

   विजयी छत्ता सावंर लौटे, लोग बिछाए थे नैना॥ पृष्ठ 199 (वीर भक्त चम्पत छत्रसाल)

3. अरे मियां! मैंने तो यह भी सुना है कि जब वह चाहता है, तब उड़ जाता है। उसको कोई देख भी नहीं पाता। साजुक तो यह है कि यह सब को देखता रहता है। फौजदार थे वहां को तो उसने उनकी कैद कर लिया था भाई जान! यह झूठ नहीं है।.... ऐसी महारत हासिल की है। अहमद ने मुस्ताक की बात में अपनी बात जोड़ दी थी। (67 (पं. प्रताप नारायण मिश्र लिखित वीर बुंदेले भाग-2 विजय ही विजय)
4. छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम

.... तुहब्बर खां से लड़ाई भई, बादशाह ने उनको पटवा वह तो (रामनगर?) मैं लड़ाई भई, बनके साथ बहुत फौजी, आंख में उनको मार के भगा देगा फिर तीसरी भगत धामौनी लड़ने को गए, वहां फतेह को डंका बजा दो, फिर कालिंजर के फतेह वीर गढ़ को आए हो मां बातें (उतने में घाटी को बड़ों बंदोबस्त करें हते के यहां से कदम न पावे, हम ना माने, लड़ाई करण लगे, घाटी के ऊपर लड़ाई भाई, 1 से पता करके चले आए, घटना जारी व अपनी नकल करी ओ मां तो तहब्बर खां की सुनी के लड़के को आवत है.... हमारी फतेह भाई, वहां से चलकर सागर की फतेह करी वायरस, बहुत से बड़े बड़े शहर हमने दखल में करें, बहुत थाने में बैठा रेल लड़ाई में बहुत धन मिलो वाह जलालपुर के पैंतीस लाख को धन मिलो वह 33 लाख की जागा की फतेह करी, फिर हम मऊ को चले आए जेठ बदी 7 संवत् 1787 मु. महेवा

महाराजा छत्रसाल की तरफ से पहली लड़ाई (रायसेन) नामक स्थान पर हुई थी ओमा जो बांदा के बदौसा और मलवा दुर्ग के मध्य में है। दूसरी लड़ाई सांभर के आसपास हुई (इस समय दूल्हा बने छत्रसाल ने विजय पाई थी और तीसरी (अंतिम) लड़ाई वि.सं. 1736 (1679 A.D.)] के पूर्व हमीरपुर एक के भूभाग पर हुई थी।

तहब्बर खां की मृत्यु जनवरी 1681 (1737 A.D.)] में अजमेर में शाही दरबार की ड्योढ़ी पर हुई थी। यह मार्च [वि.सं. 1679 (1736 A.D.)] में अजमेर का फौजदार नियुक्ति किया गया था। अतः तीसरी लड़ाई संवत् 1735 (1678 A.D.) के अंत में हुई।

लतीफ खां से युद्ध [वि.सं. 1733 दो बार, 1737 में भी दो बार (1676-1680 A.D]

(सैयद अब्दुल लतीफ) कोटरा का मुग़ल फौजदार। कुमार छत्रसाल जब कालपी और एरच आदि स्थलों पर विजय पताका फहरा कर (रही बच्ची मुग़ल सल्तनत को पुनः ढहकर) आगे बढ़ रहे थे, तभी कोटरा के फौजदार सैयद लतीफ ने छत्रसाल जी को आ घेरा 5। जो सुबह उमंग में भरी बुन्देली सेना ने सैयद लतीफ को ऐसी मार दी कि

(छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम)

1. ... फौज हमारे संग में कम हंसी, काय से जितना गांव शहर हमने फतेह करें सिपाही बंदोबस्ती में राख देवों करें, जब तीसरी लड़ाई बाबर खां से भाई, संवत् 1758 (1735 क्वेश्चन की चाल मेंटीचर भगत बड़ी जोर से लड़ाई भाई... वन की हार वही टेबल खबरों और कहीं के छत्रसाल से कबहु ना लड़े हो, छत्रसाल आदमी ने हो देवता आए.... या लड़ाई में हमने 5:30 से गांव की बारात पटवारी वगैरह को पता करें.... (जेठ वदी 30 संवत् 1787 मु मऊ)

संवत् है 1735 ही सही है क्योंकि इसकी मौत संन् 1681 (वि.सं. 1737 में हुई थी, जो इतिहासकारों द्वारा प्रमाणित है

2. कहा जाता है कि यह तहब्बर खां से महाराजा छत्रसाल के चार युद्ध हैं, चौथा युद्ध दौसा (चित्रकूट) में (वि.सं.1735 (सन् 1679) में हुआ था सोमा अतैवव तीसरा युद्ध 1735 में हुआ था।

3. तहब्बर खां की मृत्यु संवत् 1737 (जनवरी 1681) में हुई है अतैव वह उपलिखित पत्र में संवत् 1735 होना चाहिए। [वि.सं. 1736 (1676 A.D.) में महाराजा छत्रसाल एक संधि के अनुसार दक्षिण भारत में मुग़ल सेना के साथ 1 वर्ष रहे थे।
4. [वि.सं. 1733 (1676 A.D.)] में सैयद लतीफ ग्वालियर के समीप पर हुआ था और जान बचाकर दक्षिण को भागा था। उस समय कुमार छत्रसाल के हाथ अरबी घोड़े, 708 तथा तेरे तो पे लगी थी।
5. जब सूबेदार एक हारा, तब दूजा सेना ले आता।

उसको भी छत्रसाल ढातेको मा औरंगज़ेब बहुत लिखा था

जब तक तहब्बर खां हरण से, सैयद लतीफ सेना लाया

घमासान युद्ध कर हार गया, अपनी सबसे ना कटवाया

तब हामिद खां महान बली, चढ़ाया विजय भरे धन में

उसके गजनी से, श्री छत्रसाल चेतन में

(वीर भक्त चम्पतराय पृ. 206)

आ बैल मुझे मार वाली बात पूरी हुई, लतीफ बची कुची सेना लेकर कोटरा की तरफ भागा। छत्रसाल जी ने कोटरा को चारों तरफ से घेर लिया। 2 माह1 घेराबंदी चली, असहाय लतीफ ने छत्रसाल के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। वह क्षमा याचना कर के साथ देकर छूट सका था परंतु संवत् है 1737 विश्वासघात करने पर छत्रसाल जी ने इसे मौत के मुंह में भी पहुंचा दिया था।

महाराजा छत्रसाल ने प्रजा एवं बुन्देली सैनिकों के आराम हेतु 2 माह तक घेराबंदी रखी थी, इस कारण बिना भयंकर युद्ध के कोटरा (सैयदनगर उनके हाथ आ गया था। हमीद अंधेरे ने मध्यस्थता करके सैयद लतीफ को कोटा छोड़कर चले जाने की छूट दिलाई थी। लतीफ खां की संपूर्ण शक्ति नष्ट करके कोटरा में छत्रसाल जी ने अपना आधिपत्य जमाया था। यहां की जागीर कालांतर में महाराजा छत्रसाल ने अपने जेष्ठ पुत्र कुमार राव पदमसिंह को दी थी। जिसका संचालन जिगनी से किया गया था जो कालपी, 5, एरच एवं मौदहा के मध्य प्रकट में केंद्र में है दूरी लगभग 25 मील के अंदर है।

अब्दुल हमीद से युद्ध [वि.सं. 1737 (1680 A.D.)]

भारतीय संस्कृति की अक्षुण्य धरोहर चित्रकूट, अब्दुल हमीद के अधीन था। वि.सं. 1735 में महाराजा छत्रसाल ने कालिंजर के बाद चित्रकूट को लक्ष्य बनाया। अब्दुल हमीद पर चढ़ाई करके महाराजा छत्रसाल ने उसे हटने को मजबूर कर दिया। पहले से तैयार अब्दुल हमीद ने महाराजा छत्रसाल को करारी टक्कर दी परंतु रणबांकुरे बुंदेलों ने अब्दुल हमीद को प्राप्त कर विज ध्वज फहराया और महाराजा छत्रसाल के अरमानों को पूर्ण किया।महाराजा छत्रसाल ने अब्दुल हमीद को बुन्देल भूमि से खदेड़ कर चित्रकूट में हिंदुत्व का सूर्य उदय किया।

अरियों में चर्चा होती थी, यह तो अवतारी पुरुष महा।

इससे लड़ना मरना समय है, ऐसा ही सबने सदा कहा॥

चहूं ओर यही चर्चा होती, यह मनुज नहीं अवतारी है।

जो गया विजय की हवस लिए, उसने सब ताकत हारी॥

भगवान ने गीता में गाया, में समय-समय पर आता हूँ।

उन्मूलन पाप नाश करके, धार्मिक मर्याद बचाता हूँ॥

वै राम बने रावण मारा, बन कृष्ण कंस को संहारा॥ (वही)

अब भी यवनों के जुर्म देख के, श्री छत्रसाल है अवतारा॥ (वही)

1. चहुंदिसि घेरि कोटरा लीनौ, जूझ लतीफ मास द्वे कीनौ।

उपराला करि सक्यों ने कोई, संकेत भयो लतीफ मढ़ोई॥

(छत्रप्रकाश प्रकरण पृ. 153)

अफ्रासियाव खां (रूमी)* [वि.सं. 1737 (1680 A.D.)]

महाराजा छत्रसाल धामौनी का दुर्ग जीत चुके थे परंतु औरंगज़ेब इस महत्वपूर्ण दुर्ग को अपने अधिकार में रखने के उद्देश्य से बार-बार फौजदार उनकी नियुक्ति कर रहा था, परंतु कोई भी सिपहसालार धामौनी को वापस ले ले सका। [संन् 1681 (संवत् 1737) में औरंगज़ेब ने अफ्रासियाव खां (रूमी) की धामौनी दुर्ग पर नियुक्ति की, परंतु महाराजा छत्रसाल ने इसे भी खदेड़ दिया एक, भूमि की सहायता करने के लिए और मुग़ल फौज ने आशिकी। रूमी भयंकर युद्ध से घबराकर प्राण बचाकर चला गया। उसकी सेना की बड़ी दुर्गति हुई थी।

बेचारा औरंगज़ेब राजस्थान में दुर्गादास राठौर को दबाने के निमित्त उलझा हुआ था। ऐसे सुनहरे अवसर को पाकर महाराजा छत्रसाल ने कनार परगना से लेकर आगरा सुबह तक लगने वाली बुन्देलखण्ड की पश्चिमी सीमा तक विधिवत अधिकार कर लिया।

नहले पे दहला

इस युद्ध में अपाचे आप खां रूमी बुरी तरह पराजित अवश्य हुआ परंतु उसकी रणनीति प्रशंसा करने के योग्य थी। इस रूमी सरदार ने अपनी पूरी सेना को कुछ पीछे छोड़कर कुछ अखबारों ही साथ लेकर

छत्रसाल की तो लेने एवं आतंकित करने की योजना बनाई थी, अतएव वह टेढ़े मेढ़े रास्ते से अपने तेज (हरावली इराकी ईराकी घोड़ों पर सवार होकर निकला। उसकी रणनीति थी, की छत्रसाल की पूरी सेना बिना भोजन किए, मुझ पर टूट पड़ेगी और सारी सेना मुझे घेर लेगी। कम सेना को देखकर वह सब असावधान हो

- ईरान की सीमा से लगा तुर्की का सारा पूर्वी क्षेत्र रूम और यहां के लोगों को रूमी कहा जाता है। यहां के सैनिकों को मुग़ल सेना में विशेष दर्जा मिला करता था, क्योंकि इन सैनिकों के अंदर शत्रु के ऊपर अति वेग से आक्रमण करने की विशेष क्षमता होती है और जब इसके पास इराकी (खुरासानी) घोड़े हों, तब इनकी क्षमता दोगुनी बढ़ जाती है।

1. धामौनी बाबर औडेरा, हरंथौन कटकरा को घेरा।

 शाही सेना का खजाना भी, सौ गाड़ी माल लूट घेरा॥

 तब आया रूमी देहली से, अपनी शाही सेना लेकर।

 लड़ गए वीर फट गई भूमि, रूमी भागा सब देकर॥ (पृ.195)

 रूमी की सेना काट पीट, निज विजय ध्वज लहरा करके।

 आए थे नगरी हनुटूक, उपहार बांट निज घर के॥

2. छत्रसाल ने जिस तरह के बुद्धि चातुर्य से रूम में सेना को मात दी थी उसी तरह के युद्ध चातुर्य, साहस और नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन करके उन्होंने गोलकुंडा के भग्नावशेष पर हैदराबाद की नवाबी गद्दी के संस्थापक एवं सुयोग्य सेनापति-गाजीउद्दीन खां निजामुल मुल्क के पिता शाहकुलीन खां की सेना को मऊ महेवा से लगे गुरैया पहाड़ के युद्ध में पराजित किया था।

(महेंद्रप्रतापसिंह: छत्रसाल की युद्ध कला और सैनिक सफलताएं)

जाएंगे, तब हमारी सेना इस सावधान सेना को पहाड़ी के भीतर चारों ओर से कैद कर लेगी ओमा जिससे छत्रसाल इसे ना किंकर्तव्यविमूढ़ बनकर रह जाएगी। तब हमारी सेना के भयंकर प्रहार से बुन्देली सेना कैथे के गूदे की तरह बिखर कर 12 घाट हो जाएगी। छत्रसाल सेना छत्रसाल सहित कालका वलित हो जाएगी। यदि रूमी की रणनीति कारगर हो जाती तो यह भयंकर परिणाम ही सामने आता। परंतु कुमार छत्रसाल कम रणनीतिकार नहीं थे। उन्होंने मुग़ल सेना में डेढ़ वर्ष रहकर तथा वीर शिवाजी की छत्रछाया में कुछ समय रहकर बहुत कुछ सीख लिया था। कुमार छत्रसाल में विपदा के समय उतावलापन कभी देखने को नहीं मिला।

वस्तुतः छत्रसाल ने जिस प्रकार बुद्धि चातुर्य से रूमी की रणनीति को धता बताया वह उल्लेखनीय है। भोजन व्यवस्था में तल्लीन छत्रसाल सेना के सैनिकों ने जब देश घोड़ों की

टापू से उड़ने वाली धूल एवं टापू की ध्वनि सुनी तब उन्होंने तत्क्षण कुमार छत्रसाल को सूचना दी थी। छत्रसाल जी ने घोड़ों की तोपों की आवाज एवं उड़ रही धूल का आकलन किया और यह भी जान लिया कि यह घुड़सवार संकीर्ण मार्ग होकर आ रहे हैं इनकी संख्या न्यून है। यह सब विचार कर उन्होंने पूरी सेना को भोजन कर लेने के बाद तैयार हो जाने के लिए कहा, तथा स्वयं कुछ हरावली (धावक अथवा रोहित होली को लेकर तुरंत उसी और कुछ कर गए और उसी मार्ग की एक शकरी पगडंडी पर मोर्चा लगा लिया। रूमी यह देखकर दंग रह गया कि कुमार छत्रसाल थोड़े से सैनिकों को साथ लेकर मार्ग अवरुद्ध किए जंग करने को उतावले हैं। रूमी की सेना भी पसीना पसीना हो गई। कुमार छत्रसाल ने इस टुकड़ी को भयानक मार दी। पीछे जो रूमी सेना आदेश की प्रतीक्षा में खड़ी थी वह बेखबर एवं सावधान बनी रही। बेचारा रूमी बुरी तरह कुचला जाता है रहा। इधर बुन्देली सेना ने रूमी सेना को अकस्मात जाकर दबोच लिया। उत्साहित बुन्देली सेना ने रूमी की सेना को गाजर मूली की तरह काट डाला। युद्ध विजय की अभिलाषा लिए रूमी सेना कालका वलित हो गई। कुमार छत्रसाल ने नहले पर दहले वाली रणनीति अपनाकर यशस्वी विजयश्री प्राप्त की।

मिर्जा सदरूद्दीन से युद्ध [वि.सं. 1737 (1680 A.D.)]

(मिर्जा सदरूद्दीन खां) संन् 1680 में इसे औरंगज़ेब ने कहा की उपाधि दी थी। इसके पूर्वज इस महान के सैयद थे उन। इसे रानगिर की फौजदारी दी गई थी। राठ के निकट छत्रसाल जी का मिर्जा सत्र उद्दीन के साथ युद्ध हुआ एक। मिर्जा सदरूद्दीन घमंड में भरा अपनी विशाल सेना का संचालन कर रहा था। बुंदेले सैनिक इस विशाल लश्कर को देखकर घबराए, परंतु महाराजा छत्रसाल के कुशल निर्देशन में वीर बुंदेले रणबांकुरे जोश में भर उठे।

1. दि. 14.4.1680 ई.

पराक्रमी राममनि दौवा, अजीतराम, नारायणदास बालकृष्ण, गंगाराम चौबे आदि दो सेना नायकों ने भयंकर युद्ध किया। इन की मार से मुग़ल सेना में हाहाकार मच गया। विशाल मुग़ल सेना मुट्ठी भर वीर बुंदेलों के सम्मुख बौनी साबित हुई। कॉल कमलेश करने वाली तलवारों के वीरों से मुग़ल सेना में भगदड़ मच गई। मिर्जा सत्र उद्दीन भी भाग खड़ा हुआ, किंतु वीरों में परमवीर महाराजा छत्रसाल ने री गति से घेर कर उसे बंदी बना लिया 3। बेचारा मिर्जा सदरूद्दीन असहाय था। वह चौथ देकर ही छूट सका था।

औरंगज़ेब ने समाचार पाकर क्रुद्ध होकर उसे धमोनी की फौजदारी से बर्खास्त कर दिया और अपाचे आप कहां की नियुक्ति का हुकुम जारी किया।

हामिद खां से युद्ध [वि.सं. 1737 (1680 A.D.)]

सैयद अब्दुल लतीफ खां की पराजय सुनकर हामिद खां कोटरा की ओर दौड़ा, परंतु बीच में ही बुन्देली सेना से मुठभेड़ हो गई फिर बुंदेले रणबांकुरे 2 माह से अधिक समय तक कोटरा को घेरकर विश्राम करके लौट रहे थे वे सभी नव शक्ति से परिपूर्ण थे। बेचारा हामिद खां यही मात खा गया। उसकी सेना ने बुन्देली सेना से जमकर टक्कर ली लेकिन उनके उत्साह बुन्देली सेना की मार से घटते चले गए। हामिद खां की बची कुची सेना रणभूमि से भागने लगी। हामिद खां ने बहुत प्रयास किया, पर उसकी सेना रणभूमि में ठहर ना सकी। कुमार छत्रसाल की बरसी ने अमित खां को बल ही कर दिया। वह बेचारा असमय ही बरसी के वार से काल के गाल में विलीन हो गया।

---

1. संन् 1680 (संवत् 1737)
2. परसुराम सोलंकी और मेघराज परिहार ने भी पीछे से मुग़ल सेना को मार दी थी।
3. (छत्रसाल के पत्र जगतराज के नाम)

   .... देस देस के राजन व सूबन को लिखी, फौज ऊके पास जमा भाई, एक लाख के भीतर फौज ओके रहे, मिर्जा (मिर्जा सदरूद्दीन.... (चौथ? मंजूर ना करें, माया फौज के लड़के को आयोमा भी के में हमारी फौज ने बढ़कर हाल लवर.... मिर्जा की हार भाई, मिर्जा थारो बायोमा फतेह के नजारे बजे होम आ रही मिर्जा को पकड़ ले आओ। शॉट लेकर छोड़ दो, कुछ के नजारे बजावट गांव लूटा अपनों का करत चित्रकूट को आए, नरसिंहगढ़ पहला तोड़ो तो, जब हमने डेरा करो है तो, फिर एरच टू कालपी सॉरी, कोटरा को आए हो मां वहां लतीफ से भयंकर लड़ाई भाई, लतीफ मारो गयो, फिर 2530 गांव के 89 (से युद्ध करो 89 सब हारे, अधीन हो गए, वह हमारे संग में लगावे को तैयार हो गए, मासी को लेकर मऊ को आए आषाढ़ सुदी 12 सोमवती 1788 मुकाम मऊ

4. वि.सं. 1737 में अब्दुल समद से शादीपुर के पास विजय, शेख अनवर से खैरागढ़ के युद्ध में ₹200000 दंड लेकर विजय, सदरूद्दीन धामौनी के फौजदार को चिल्ला नौरंगाबाद राठ के युद्ध में विजय, अब्दुल हमीद को चित्रकूट में, सैयद लतीफ को कोटरा कालपी एरच युद्ध में (छत्रसाल की) विजय,

   ओरछा का इतिहास पृष्ठ 197

अब्दुल समद से युद्ध [वि.सं. 1737 (1680 A.D.)]

अब्दुल समद, यह कोड़ा जहानाबाद का फौजदार था और यमुना पार करके महाराजा छत्रसाल से लड़ने आया था। वस्तुतः अब्दुल समद औरंगज़ेब से आज्ञा पाकर बुन्देलखण्ड में घुसा था पुलिस ने बेतवा तट पर शादीपुर के निकट युद्ध की रणभेरी बजाई थी। ललकार सुनकर

छत्रसाल कहां के रहने वाले थे? तुरंत अपनी सेना लेकर अब्दुल समद पर टूट पड़े। घमासान युद्ध शुरू हुआ। यवन सेनापति अब्दु समुद्र चतुर अंगणी सेना से सुसज्जित था। उसकी सेना रावण एक सेना जैसी दिखाई दे रही थी, परंतु महाराजा छत्रसाल के वीरों का जोश नव मंडल को छू रहा था, उनके घोड़े विद्युत गति से दौड़ रहे थे, चारों तरफ मारो काटो के स्वर गूंज रहे थे। महाराजा छत्रसाल की सेना के अर्चित राय,,,,, देवकरण, कृष्णदास, उदय शर्मा लाल कवि, राम मणि दवा आदि महावीर ने बढ़ चढ़कर वीरता दिखलाई। भूषण कवि ने इस युद्ध का वर्णन निम्न प्रकार से किया है---

असि ग्रह नृप छत्रसाल खिझयौ खेत बेतवै के,

उततें पठानन हूं कीनी झुकि झपटैं।

हिम्मति बड़ी के गबड़ी के खिलवारन लौं,

दैत सै हजारन हजार बार चपटैं॥

भूषण भनत काली हुलसी असीसन कों,

सीसन को ईस की जमाति जोर जपटैं।

समद लौं समद की सेना त्यों बुन्देलन की,

सेलै समसेरै भई बाड़व की लपटैं॥

महाराजा छत्रसाल ने इन सैन्य टुकड़ियों का खूब जोश बढ़ाया रावण की सेना पर जिस प्रकार से राम को विजय मिली थी, वैसे ही विजय छत्रसाल ने पाई थी। अब्दुल समद का मदर चूर-चूर हो गया। वह हाथी से कूदकर पैदल भागा। महाराजा छत्रसाल ने उसे बंदी बना लिया और साथ लेकर क्षमा किया था।

इस युद्ध में महाराजा छत्रसाल को काफी घाव आये थे। समद को करारी मात देने से औरंगज़ेब भयभीत हो गया था। फलस्वरूप बुन्देलखण्ड को पुनः आधीन करने की

---

1. वे राम बने रावण मारा, बंद कृष्ण कंस को सहारा।

अभी यवनों के जुर्म देख, श्री छत्रसाल है अवतारा [वी.च.भ.छ.207]

2. यह युद्ध वि.सं. 1737 में हुआ था, महाराजा छत्रसाल की यह यशस्वी विजय थी। रणक्षेत्र में 21 तोपें महाराज के हाथ लगी थीं। बेचारा बंदी अब्दुरस्ममद चौथ देकर छूटा और दिल्ली भाग गया।

3. (i) प्रथम युद्ध- शादीपुर में दि. 22.2.1681 संवत् 1737 के समय

(ii) द्वितीय युद्ध- बेला में 1737 (1681 A.D.) में,

उसकी अभिलाषा मंद पड़ती चली गई। लाल कवि ने इस युद्ध का आंखों देखा हाल अपने ग्रंथ क्षेत्र प्रकाश में निम्न प्रकार किया है यथा--

बीरुझयौ रन छत्रसाल बुन्देला। कियौ खभरि खग्गनि खिझ खेला॥

एक उमक अरु दमक संहारै। लेहि सांस जब बीसक मारै

छत्रसाल जिही दिसि सीस गिरीस पै, काढ़ि घोप कर माहिं।

तिही दिसि सीस गिरीस पै, बनत बटोरत नाहिं॥

छत्रसाल जिही दिसि धसि आवै। तिही दिसि बखतर पास ढहावै॥

काटि अरि-मुंड उछालत कैसे। बटनि खेल खेलहु नट जैसे॥

चौथ चुकाय कूच निरधारे। समद कालिन्दी पास सिधारे॥

(लाल कवि कृत क्षत्रप्रकाश)

महाराजा छत्रसाल ने इस शोध का विषय उल्लेख एक पत्र में किया है।

बहलोल खां से युद्ध [वि.सं. 1737 (1680 A.D.)]

बहलोल खां मियाना, एक उच्च वंशीय मनसबदार था, इनके वंशज को म्याना का खिताब मिला हुआ था। औरंगज़ेब ने इसे छत्रसाल के दमन करने के लिए दक्षिण से भेजा था। बहलोल खां अत्यंत कुशल एवं बहादुर सेनापति था। औरंगज़ेब ने एक अति विशाल सेना देकर तोपों से सुसज्जित कर रवाना किया गौ माता की छत्रसाल के दमन में कोई कसर ना रहे दो।

बहलोल खां ने सर्वप्रथम 17 साल की रणनीति पर गहन चिंतन व मनन किया, तत्पश्चात उसने भावी रणनीति तय की। उसी के अनुरूप उसने अपनी सेना को नागरिक

---

1. (छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम)

.... आपर अब्दुल समद से लड़ाई भई, हमारे साथ बलदाऊ रामा मन दवा बगैरा हते, धूमधाम से लड़ाई भाई राम मनवा सबसे आगे भागो, समद की फौज से कहीं के एक आदमी ने मुझको मार के भगा दे, तब समझ आगे को बढ़ो हमारी फौज

आगे तो बड़ी, नारायण परमार लड़ाई में दूजे, अब्दुल समद को मार के भगा दे वाह चौथ चुका ले (भेजता में भाई लड़ाई हो चुकी तब भी लेता में आग लगाई बल्लू टू, 2 किलो रोधन वहां से लाइव, सब जागा खबर भाई के अब्दुल समद हार गए वहां सब शुभम को डर भाइयों को मां शबरी 10 संवत् 1788 मु. मऊ

2. (छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम)

.... सब जागा खबर भई अब्दुल समद हार गयो, सब सूबन को डर भयो बहलोल खां ने फिर 25000 सोच लेकर राजगढ़ को धोखे में गिर गयो, हमने खबर पाई के राजगढ़ पुणे घरेलू कॉमेडी उपचार करें है हमारी फौज राजगढ़ की गई, 5 रोज लड़ाई भाई सोमा आखिरत में बहलोल खां को मूड काट लो.... भाई हमने पकड़ लो, को पकड़के फुटरो जपत करो, जसो सुहावल....मैं अपनी सब्जी करीबा... आषाढ़ बदी 10 संवत् 1788 मु. मऊ

वेष में कई टुकड़ियों में विभक्त करके पन्ना खजुराहो के मध्य के निकट पर एकत्रित होने का फरमान जारी किया। वह स्वयं छत्रसाल जी की गतिविधियों को तो लेता हुआ के तट पर जा पहुंचा। छत्रसाल दक्षिणी बुन्देलखण्ड में व्यस्त हैं ऐसी सूचना पाकर वह खिलखिला उठा। वह, सोने में सुहागा, अब तो विजय सुनिश्चित है। ऐसा सोचकर बहलोल खां ने अन्ना पर आक्रमण करने के लिए सेना को बढ़ने का आदेश दे दिया, परंतु वह अभी पन्ना से 14 मील दूर ही था, की राजगढ़ के किलेदार ने यह गतिविधि पर रख ली और आगे बढ़ने से रोका। मुग़ल सेना विशाल थी अतैवकिलेदार सेना सहित राजगढ़ लौट पड़ा। इस स्थिति को देखकर अब नौलखा ने पहले राजगढ़ ध्वस्त करने की सूची और राजगढ़ घेर लिया। किलेदार ने एक मिलती जुलती शक्ल के सैनिक को छत्रसाल का बाना पहना कर नेतृत्व सौंप दिया। नकली छत्रसाल को देखकर बहलोल खां घबरा गया। दोनों ओर से युद्ध छिड़ गया। इसी बीच किलेदार ने 1 साड़ियां पर संदेश वाहक बैठाकर महाराज छत्रसाल के पास दक्षिण भेजा प्रस्ताव संदेश पाकर महाराजा छत्रसाल तुरंत द्रुतगति से रात-दिन चलकर राजगढ़ आ पहुंचे और उन्होंने पीछे से आकर बहलोल खां को घेर लिया भयंकर युद्ध छिड़ गया, बहलोल खां भी बड़ी सेना को लेकर आया था और इधर उधर उसकी सेना आकर बहलोल खां की मदद करने लगी। 5 दिवस भयंकर युद्ध चला। महाराजा छत्रसाल ने उसके सैनिकों को चुन चुन कर काल के मुंह में भेज दिया और बहलोल खां का सिर काट लिया यह देखकर उसकी बच्ची खुशी से ना भाग खड़ी हुई,परंतु बुन्देली सेना ने इन्हें भी काल कवलित कर डाला।

दलेलखां से युद्ध [वि.सं. 1738 (1681 A.D.)]

औरंगज़ेब के विश्वासपात्र सेनापति दलेल खाने हमीरपुर के पूर्वी सिरे से यमुना पार करके मौदहा आदि स्थानों पर खलबली मचाई। 17 साल जीने दलेल खा को मौदहा के पास आ गिरा। बुन्देली सेना ने इसे दो तरफ से गिरा, जिससे उसकी सेना बुन्देली सेना के बीच पेश कर रह गई। मुगलों की दूसरी सेना सहायता को ना आ सके। बुन्देली रणबांकुरे की मार से मुग़ल सेना की व्यू रचना छिन्न-भिन्न हो गई, दलेल का (दिलेर खां) पराजित होकर औरंगज़ेब को अपना मुंह दिखाने लायक तक ना रहा।

यह लड़ाई [वि.सं. 1738 (1681 A.D.)] की है, इसी समय मोराद खां से भी भयंकर युद्ध हुआ था दो। दलेल खां द्वारा दोबारा युद्ध करने पर महाराजा छत्रसाल ने इसे मौदहा के निकट मौत के घाट उतार दिया था, वह अपनी पूर्व पराजय का बदला लेने के प्रयास

---

1. कुछ एक इतिहासकार यह लड़ाई [वि.सं. 1758 (1701 A.D.)] की मानते हैं परंतु समग्र परिस्थितियों के अवलोकन से एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों से [वि.सं. 1738 (1681 A.D.)] ही ठहरता है।

में जी जान से जुटा था। दलेल खा के साथ उसकी सेना भी कब्रगाह में सो गई।

मोराद खां से युद्ध [प्रथम वि.सं. 1738 (1681 A.D.)] में,

दूसरा [वि.सं. 1740 (1683 A.D.)] में

मोराद खां का दिलेर का तिल्ला का भतीजा था। यह सेवड़ा परगना का फौजदार था। यह दलेल का एक की पराजय सुनकर उसकी सहायता करने के लिए दौड़ा आया। अभी वह ज्यादा दूर निकल भी नहीं पाया था की असावधानी से बढ़ रही उसकी सेना पर छत्रसाल ने विपरीत दिशा से आ कर धावा बोल दिया। यह लड़ाई राजापुर (बांदा) के जमुना तट से 9 मील दूर पहाड़ी गांव में हुई। घमासान युद्ध हुआ। हजारों सैनिक काल के गाल में विलीन हो गए। बेचारे मोराद खां के मन की मोराद (औरंगज़ेब से पुरस्कार पाने की पूरी ना हो सकी। वह युद्ध में बंदी बना लिया गया और छत्रसाल जी से क्षमा मांगकर साथ देकर ही छूट सका। से जुड़ाव रखने पर भी अब छत्रसाल का अधिकार हो गया।

मोराद खां के दोबारा युद्ध करने पर महाराजा छत्रसाल ने वि.सं. 1740 में इसे मौत के घाट उतार दिया उनको। महाराजा छत्रसाल की यह नीति रही है कि एक बार बंदी बनाए मुग़ल से पैसा लाल फौजदार ओके दोबारा लड़ने पर वह उसे काल कब लिख कर देते थे, यही हश्र मोरुड़ा का हुआ 3।

इखलाख खां से युद्ध [वि.सं. 1739 (1682 A.D.)]

एक समय का धामौनी का मुग़ल सेना नायक। महाराजा छत्रसाल ने गढ़ाकोटा के भयंकर युद्ध में जब मुगलों को करारी मात दी थी तब मुग़लों की मदद के लिए धामौनी से इखलाख खां दौड़ता हुआ गढ़कोटा आया था।

पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति अभियान के तहत जब पुनः वि.सं. 1739 (1682 A.D.) में महाराजा छत्रसाल ने गढ़कोटा पर आक्रमण किया, तब इखलाख खां से महाराजा छत्रसाल का सामना हुआ था। महाराजा

छत्रसाल ने मुग़ल सैनिकों को चकनाचूर करने के लिए रणभूमि में एक रणनीति के तहत रोके रखा। युद्ध की भयंकर मार खाकर इकलाख

---

1. सेहुड़ा दलेल खा के अधीन था और दलेल की तरफ से उसका नायब मोराद खां किस क्षेत्र का प्रबंध करता था। अटैक मोराद खां सहायता हेतु दौड़ा आया रहा था तभी मुठभेड़ हुई।
2. (छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम)

   .... वा मौधा लूटो, उनसठ लाख की लूट करी, मोराद खां को मारो फतह करके परना आए, महाराज प्राणनाथ जू से मिलके जीत को हाल सुनाओ, बड़े खुशी भए और कहीं कै बच्चा अब मैं बहुत फतै पाहै, आषाढ़ बदि 10 संवत् 1788 मु. मऊ

3. उपर्युक्त पत्र की भाषा से स्पष्ट है कि मोराद खां संवत् 1740 के आसपास मारा गया।

का युद्ध भूमि में प्राण छोड़कर चल बता एक। गढ़ाकोटा को पुनः पाकर महाराजा छत्रसाल ने अपने विजय अभियान को सार्थक सिद्ध किया। बुन्देली जनमानस उन्हें विघ्न हरण देव के रूप में मांगने लगे थे।

बसालत खां से युद्ध [वि.सं. 1739 (1682 A.D.)]

पनवारी का फौजदार। मऊ राठ पनवाड़ी भूभाग प्रायर शरण स्थली बनी रही है। मुग़ल सेना को मऊ सहानिया पर आक्रमण हेतु यही दिशा समतल होने के कारण उपायुक्त एवं लाभदायक थी। अतैवमहाराजा छत्रसाल जूदेव की विशाल सेन ने छावनी पर औरंगज़ेब की आंख थी। इस पर अधिकार जमा कर छत्रसाल को दमन करने की मुग़ल रणनीति प्रमुख थी। परंतु मऊ सहानिया कभी भी मुगलों के हाथ में आ सके।

[वि.सं. 1739 (1682 A.D.)] में पनवारी का फौजदार बसा लक्खा छत्रसाल जी के दमन के लिए योजना बना ही रहा था कि महाराजा छत्रसाल ने पनवारी पर धावा बोल दिया। मुग़ल खजाने की लूटपाट की,ई ठेका ना दोस्त करके बसा लक्खा को रौंदा। यहां अपनी उन्हें सत्ता स्थापित कर महाराजा छत्रसाल मऊ छावनी लौट आए।

इसी समाचार को सुनकर औरंगज़ेब ने शेर अवगत को फरवरी 1683 (संवत् 1739) में एक बहुत विशाल सेना देकर छत्रसाल जी के दमन के लिए भेजा था।

मुहम्मद अफजल से युद्ध [वि.सं. 1739 (1682 A.D.)]

औरंगज़ेब ने छत्रसाल के दमन के लिए और बुन्देलखण्ड में स्थाई वर्चस्व के लिए दिल्ली दरबार से अनेक प्रमाणों को जारी करके बुन्देलखण्ड में युद्धों की झड़ी लगा दी थी। जिधर देखो उधर से पैसा लाल जी को पकड़ने के लिए आ धमकता। इन सब ने तो बुन्देलखण्ड को राजस्थान ही समझ रखा था कि सम्राट के भय से कोई भी विरोध ना करेगा और सभी उसकी शरण में आ जाएंगे। बेचारा छत्रसाल अकेला क्या करेगा?

वस्तुतः शत्रु शमन करने वाले महाराजा छत्रसाल असुरों का दमन करने के लिए ही अवतरित हुए थे, जिस प्रकार ब्रज में कृष्ण को मारने के लिए राक्षसों ने ताता लगा रखा था और वे सभी काल के मुख्य में समाते चले गए उसी प्रकार से बुन्देलखण्ड में पदार्पण करने वाले वनों का भी यही हश्र हुआ। महाराजा छत्रसाल भी अपनों की हौसला अफजाई करते हुए उन्हें खेल खिला खिला कर मौत के हाथों सौंपते रहे।

---

1. मार्च के अंत में संघ 1682 स्वीट

[वि.सं. 1739 (1683 A.D.)] में मुहम्मद अफजलखां ने महाराजा छत्रसाल को आगरा। युद्ध की रणभेरी बज उठी, एक सैनिक दूसरे सैनिक से भिड़ गए। तलवारों की टक्कर है आकाश में गूंज उठी। हाहाकार मच उठा, जवानों की चित्कार ए बड़ी मार्मिक थी। भयंकर लड़ाई हुई। रणभूमि को माया वनों के रक्त से रंजीत हो उठी। रणभूमि में मुहम्मद अफजल पराजित हुआ, उसे मरते वक्त जलाने वाला भी नसीब ना हुआ, बेचारा अफजल बेमौत मरा।

शमशेर खां से युद्ध [वि.सं. 1739 (1683 A.D.)]

संवत् 1739 (1683 A.D.) में महाराजा छत्रसाल ने स्वराज्य का व्यापक अभियान चलाकर बुन्देलखण्ड के आंतरिक भागों में मजबूत स्थिति बना ली थी। इसी दौरान महाराजा छत्रसाल ने औरंगज़ेब के अनेकों सफेसल आरो को मारकर व परास्त करके खलबली मचा दी थी।

शमशेर खां नामक एक मुग़ल सैन्य से पैसा ला को महाराजा छत्रसाल ने कई स्थलों पर प्राप्त किया था फिर भी वह अन्य स्थलों की मुग़ल सेना को एकत्र करके पीने गए मुग़ल ठिकानों पर उन्हें अधिकार जमाने की चेष्टा करता रहता। ऐसी स्थिति को भाप कर महाराजा छत्रसाल ने नरसिंहगढ़, रामगढ़ जलालपुर,,, गढ़ाकोटा आदि स्थानों पर शमशेर खां को परास्त किया था। अंत में शमशेर खां अपने प्राण बचाकर बुन्देलखण्ड से भाग गया, जान बची तो लाखों पाए लौट के बुद्धू घर को आए वाली कहावत चरितार्थ हुई।

शेख अनवर से युद्ध [वि.सं. 1739 (1683 A.D.)]

औरंगज़ेब का एक विख्यात सेनापति। कालपी से लौटकर महाराजा छत्रसाल ने वि.सं. 1739 में ही दक्षिण में मालवा भूषण के खैरागढ़ पर आक्रमण किया। उस समय वहां मुग़ल सेना का सेनापति अनवर शेख तैनात था पुलिस ने जल्दबाजी में छत्रसाल के विरुद्ध मुग़ल सेना लगाई और स्वयं नेतृत्व थाम कर टूट पड़ा। वीर बुन्देली सेना इस समय जोश में थी संगठित मुग़ल सेना बुन्देली सेना के जौहर को जेल ना सकी उसे बहुत बुरी मार खानी पड़ी। शेख अनवर मोर्चे से भागने लगा उसके प्राणों पर आप बनी थी। भागती मुग़ल सेना का छत्रसाल ने पीछा किया और शेख अनवर को बंदी बना लिया गया। शेख अनवर की गिरफ्तारी ने तो रही सही कसर को पूरा कर दिया। बेचारा चौथ पर ही छूट सका था।

---

1. मु. अफजलखां की कालिंजर के निकट [वि.सं. 1738 (मार्च 1682)] में मुठभेड़ बुन्देली सेना से हो चुकी थी अतैव पुनः लड़ने आया था।

अतैव औरंगज़ेब के सारे फौजदार छत्रसाल से युद्ध करने से घबराने लगे थे, में कोई ना कोई बहाना बनाकर बुन्देलखण्ड नहीं आना चाहते थे फिर भी मजबूरन उन्हें आने पर चोट देकर जाना पड़ता और जान के भी लाले पड़ जाते।

शेर खां से युद्ध [वि.सं. 1739 (1683 A.D.)]

शेर खां [वि.सं. 1739 (सन् 1682-83)] में कुमार छत्रसाल को रौंदने के लिए एक बड़ी सेना लेकर बुन्देलखण्ड में घुसा था। उसकी सेना में अनेक बहादुर सरदार भी शामिल थे। अफगन खां भी शेर खां के सहायतार्थ आया हुआ था।

राठ पनवाड़ी क्षेत्र में शेर खां ने मोर्चा लगाया अमर कुमार छत्रसाल ने अपनी सैन्य छावनी मऊ सहानिया से युद्ध नीति का निर्धारण किया और शेर खां की सेना को आगे रा। भयंकर मारकाट मच गई। बुन्देली सेना में भयंकर उत्साह था, वह भूखे शेर की भांति शेर खां की सेना पर टूट पड़ी। शीतकालीन कोहरे की धुंध ने शेर खां की रही सही कमर भी तोड़ दी। बेचारा, बुन्देली सेना की द्रुतगति की मार को सह न सका। उबड़ खाबड़ भूमि का पूर्वाभ्यास न होने से उसकी सेना कटघरे रणभूमि में फस गई। आम खा के होते हुए भी शेर का अंत में महाराजा छत्रसाल के हाथों कालका वलित एक हो गया।

महाराजा छत्रसाल के अप्रतिम शौर्य एवं पराक्रम को रणभूमि में निखर कर मृतक शेरखां का सहयोगी एवं उसकी सेना ने बुंदेले रणबांकुरे का पीछा नहीं किया। फागन नए नए सिरे से मोर्चा लेने के तैयारी

प्रारंभ कर दी, इसके लिए उसने एक बड़ी सेना भेजने हेतु औरंगज़ेब को पत्र लिखा और दूसरी सेना मुग़ल संहिता को आ पहुंची थी।

शेर अफगन खां से युद्ध [वि.सं. 1739-1740 (1683 A.D.)]

बार-बार की हार से बौखलाए औरंगज़ेब ने शेर अफगान खां को बुन्देलखण्ड भेजा। शेर अफगान ने [वि.सं. 1739 (1683 A.D.)] माघ मास में मऊ सहानिया के पास आकर डेरा डाल दिया। इस बार उसके पास एक विशाल वाहिनी सेना थी, कारण कि इसके पूर्व उसकी छत्रसाल जी से कई तक करें हो चुकी थी। एक बार वह मोटू के पास छत्रसाल जी से बुरी तरह पराजित होकर भागा था। इन सब बातों को ध्यान में रखकर वह अच्छी

---

1. फिर भगते दूर चले जाते, अरियों को चकने में धरते॥

   फिर इधर उधर से घूमघूम, धोखे से करते चूर-चूर।

   सरदार शेरखां सेनापति, निज असि से शिर को किया दूर॥

   (वी.च.भ.छत्र. 212)

2. शेरअफगन खां

तैयारी के साथ आया था। एक उसके बुलंद हौसले थे, क्योंकि उसे पता था कि इस समय मऊ सैन्य शिविर में छत्रसाल नहीं है। अजय जीत की आशा लिए शुभ घड़ी गिन रहा था वहां पर उसका नशा उस समय हिरन हो गया जब उसने महाराजा छत्रसाल को बुन्देली सेना का नेतृत्व करते देखा। बहुत चक्का होकर अपने भाग्य को वह कोसने लगा।

इस बार छत्रसाल के मुख्य मंडल पर अपार तेज था पर हाथ में अजीत दिव्यास्त्र दो।

उसे क्या पता कि छत्रसाल को साक्षात परमात्मा से अभयदान मिल चुका है। इस आवेदन की शुभ विला थी माघ पूर्णिमा [वि.सं. 1739 (1683 A.D.)]। धन्य है यह ऐतिहासिक चली थी दुनी दरवाजा (मऊ सहानियां)।

महाराजा छत्रसाल की बुन्देली सेना नारायणी सेना तीन बंकर शेर अब उनको डस गई। बेचारा अपनी सैन्य शक्ति को हटाकर चौथ देकर दोबारा ना आने की सौगंध खाकर वापस लौट गया। 4 अंतर्मन में प्रतिशोध को छुपाने यह (शेरअफगन) वाचा का कच्चा निकला। पुनः लड़ने को चोरी-छिपे आ

धाया, तब महाराजा छत्रसाल के युवराज कुमार हृदयशाह ने 28 जून सोलह सौ निन्नानवे (28.6.1699) को पन्ना के निकट मौत के घाट उतार दिया था।

संवत् 1739 में शेर अफगन खां से हुई विजय को महाराजा छत्रसाल जूदेव ने महाप्रभु प्राणनाथ जी का वरदान माना था। यह विजय ही महाराजा छत्रसाल के लिए

---

1. वह बखत महाराज को, थी मुहिम सेर अफगन।

   भई असवारी तैयार, आय के लगे चरन॥32॥

   श्रीराज रुमाल लेए के, सिर पर धरा महाराज।

   हाथ धरा सिर ऊपर, होए पूरन मनोरथ काज॥33॥

   जब उससे फते करके, आए श्री महाराज।

   तब लोगों ने कहा, बिन श्रीराज ना होए एक काज॥35॥

2. तत छिन श्रीजू अपनी, असि कटि दई बंधाई।

   सिरोपांव पहिराई कै, दीन्ही आशीष धाई॥75॥

3. इस युद्ध में रणबांकुरे मेघराज, माधवसिंह, नारायणदास, श्री खंडेराई, राममनि दौवा आदि वीरों ने अद्भुत पराक्रम दर्शाया था, युद्ध जीत कर सभी ने आकर महाप्रभु प्राणनाथ जी के चरण छुए थे।
4. (छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम)

   .... आपर सेख अफगन से मटोन में लड़ाई भई, भारत दिखाने तब हम छोड़कर चले आए, फिर के मुहूर्त के गए तो अब गन से लड़ाई भाई, शेर अब गम को मार के भगा दमोह मटोल में अपना दखल करके मऊ को चले गए, सिरके से अवगत अपनी फौज लेकर मऊ में चढ़ाए हो, लड़ाई भाई, से अवगत को मार के भगा रहे हो, जो फौज हाथी चौक.... आषाढ़ बदी 3 संवत् है 1788 मूवी

5. मार्च 1699 में शेरअफगन लड़ने आया था, परंतु करारी चोट खाकर लौट पड़ा था और शीघ्र एक बड़ी फौज लेकर जून 1699 में उन्हें पन्ना के पास आ धमका था। कुछ एक इतिहासकार यह घटना 1700 की मानते हैं।

   छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम
6. .... आपर संसार के एक से एक बढ़कर सूबा पड़े हैं हमारे पराक्रम को ख्याल करो तो हमें वरदान प्राणनाथ जी को हो गयो है तो, सौतन की मर्जी से फतेह करें.... जेठ सुदी 13 संवत् है? मु. मऊ

अमियतुल्य थी। इसके पश्चात वह महाराजा घोषित किए गए थे।

शाहकुलीन से युद्ध [वि.सं. 1740 तीन बार (1683-84 A.D.)]

(कुलीन खां)। शाहकुलीन का हैदराबाद के निजाम वंश के पूर्व स्थापित वंश का था, तुरंत से आने के कारण इन्हें तो रानी भी कहा जाता है।

औरंगज़ेब ने शाह कुलीन को छत्रसाल की प्रमुख सैन्य छावनी मऊ सहानिया पर चढ़ाई के लिए दिसंबर 1683 में (संवत् 1740) में भेजा था जहां कुलीन एक बहुत बड़ी सेना लेकर आया था। उसने रणभूमि में महाराजा छत्रसाल को करारी टक्कर दी थी, इसमें 500 सैनिक भी शहीद हुए थे। महाराजा छत्रसाल के छापामार दल ने युक्ति और पर्यटन के सहारे शाह कुलीन की कमर तोड़ दी, उसकी विशाल सेना विध्वंस हो गई। आश्चर्यजनक तरीके से बुन्देली सेना ने शाह कोलीन को कैद कर लिया।पलता है उसकी बच्ची ताकत और भी ध्वस्त हो गई एक। शॉर्ट देकर बेचारा भाग्य का मारा सा कुलीन सिर झुकाए चला गया। कौन है एक बार सा कुलीन बुन्देलखण्ड में घुसा था और नीली मुकाम पर ठहरा था। महाराजा छत्रसाल ने शाह कुलीन को आगरा पुलिस चौक इसी समय अस्मद् का नामक दूसरा मुसलमान सरदार अपनी सेना लेकर शाह कुलीन की सहायता को आ पहुंचा पुलिस चौक भयंकर युद्ध हुआ। महाराजा छत्रसाल ने अहमद खां को कैद कर लिया। जहां कुलीन दिल्ली की तरफ भाग गया। दिल्ली पहुंच कर उसने उन्हें तीसरी बार युद्ध करने की ठान ली तब औरंगज़ेब ने नंदराम नामक सरदार को आठ सौ सवाल और बड़ी सेना सहित कहां कुलीन के साथ भेज दिया। शाह कुलीन मौत का मारा मऊ पर चढ़ाया ग्राम नौगांव छावनी के समीप भयंकर युद्ध हुआ और शालीन अंतिम सांसों के लिए कैद हो गया। उसके सारे अरमान उसकी सांसों में समा कर रह गए थे।

खांनजहां से युद्ध [वि.सं. 1729, 1740 (1672, 1683 A.D.)]

औरंगज़ेब का एक सेनापति, जो बुन्देलखण्ड में प्रभावी था। गुलशानाबाद में जहां ने राजा इंद्रमणी के सहयोग से कुमार छत्रसाल से [वि.सं. 1729 (1672 A.D.)] में भयंकर

1. (महाराजा छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम)

.... जो हाल सब बादशा ने सुनी के छत्रसाल ने फौज (शेर अब उनको राख से अवगत से डांट लेकर भगा दयो बादशाह कुलीन (स्क्रीन को पटवा 75005 लेकर हमारे ऊपर मऊ में धावा करो.... लल्लन लगे साथ रोज लड़ाई भाई.... 1 दिन 24:00 गए भावा हमने कर दो, ओके सब आज मरी होती, वैसे ही में हमने तो अप्लाई बाण चलाए, फौज सब मारी गई, व्हाट्सएप खोल इंच को पकड़ लो, सवा लाख रुपैया के चुका, और छोड़ दो,पुणे कॉल खाई के अब कब हो आपसे ना लड़ो आषाढ़ बदी 3 संवत् है 1788 मुंबई

2. जैसे-तैसे बचाकर भागा, आशा कुलीना कायर बन।

दिल्ली में जाकर खबर दिया, औरंगज़ेब गुस्से में मन (वीर भक्त चम्पत भक्त छत्र 168)

युद्ध किया था। उस समय भी महाराजा छत्रसाल की रणनीति सफल रही थी हमारी सेना के बावजूद खां जहां हारा और इंद्रमणी के साथ भाग गया था।

अपनी पराजय का बदला लेने के लिए खां जहां उन्हें [वि.सं. 1700 (1600 A.D.)] में दक्षिण से बुन्देलखण्ड की ओर बढ़ रहा था, तभी उसे मालखेड़ा के युद्ध में मराठों के हाथों दुर्गति झेलनी पड़ी हो मां फलित है उसका छत्रसाल से बदला लेने का सपना साकार ना हो सका था। इसकी एक वजह यह भी थी कि ओरछा नरेश जसवंतसिंह ने छत्रसाल जी से लड़ने की सलाह देकर उसे हतोत्साहित भी कर दिया था।

जलाल खां से युद्ध [वि.सं. 1742 (1685 A.D.)]

वेतवा तट पर [वि.सं. 1700 (1600 A.D.)] में मुग़ल सिपहसालार सरदार जलाल खां ने महाराजा छत्रसाल की सेना पर अचानक हमला बोल दिया। जलाल खां सोच रहा था कि छत्रसाल की सेना सावधान एवं असंगठित है ऐसा अच्छा मौका फिर ना मिलेगा। परंतु बुन्देली सेना अचानक आक्रमण करने में महारत हासिल की थी, भूखे शेर की तरह बुन्देल रणबांकुरे जलाल खां के ऊपर टूट पड़े। भयंकर लड़ाई छिड़ गई। वे बेचारे आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास अर्थात मारने आए थे बेचारे खुद मरने लगे। जलाल खां का बहुत बुरा हाल हुआ। वह महाराजा छत्रसाल द्वारा कैद कर लिया गया। उसकी बच्ची खुशी से ना यह देख कर सिर पर पैर रख कर भाग गई। मुहम्मद जलाल खां को जान के लाले पड़ गए। क्षमा याचना कर और लंबी चौथ देकर वह खरगोश जैसी गति से जंगल में विलीन हो गया था।

रणमस्त खां से युद्ध [वि.सं. 1743 (1686 A.D.)]

औरंगज़ेब का एक विश्वासपात्र रण बांकुरा सेनापति। औरंगज़ेब द्वारा [वि.सं. 1743 (1686 A.D.)] में इसे दूसरी बार बुन्देलखण्ड की ओर भेजा गया था, अभी वह चलकर आगरा तक ही आ सका था कि म***** मौलवी ओ द्वारा का लिपि में लिखे गए पत्र एक महजरनामा दो को पढ़कर औरंगज़ेब ने प्रण मस्त खा को वापस दिल्ली भिजवा दिया था। इसकी प्रमाणिकता तत्कालीन वित ग्रंथों (डायरिया में मिलती है यथा----

---

1. यमुना तट पर स्थित कालपी के किले पर महाराजा छत्रसाल के सद्गुरु निष्कलंक प्रभु श्री प्राणनाथ जी का शास्त्रार्थ यहां के मूल्य मौलवियों से हुआ था जिसमें इन सभी की पराजय हुई थी, फिर इन्होंने श्री प्राणनाथ जी को इमाम महदी का अवतार मानकर अपना हाथी माना था और एक ताम्रपत्र मैं यह सब बातें लिखकर दिल्ली सा औरंगज़ेब के पास औरंगाबाद भेजी थी। इसी पत्र को नजर नामा कहा गया है।
2. मेजर मामा का तात्पर्य है खाली इकरारनामा:

सत्रह शत तेतालिस माही। करी महुम मुलक में ताही ॥34॥

ह्वे पड़वारी राठहिं आये। तित ते फेर कालपी छाये ॥35॥

इत कुरान चर्चा भई भारी। करी हदीसन की कुनि सारी।

चरचा माहि जेर सब कीन्हे। सब मिलि महजरनामा दीन्हे ॥36॥

साहि पास पहुंचाये तेही। तोरा करत ग्वाह दी जेही।

महजरनामा सुनि सुख पायो। लै गुमान मस्तक निहुरायो ॥39॥

सात चिन्ह क्यामात सुनि लीने, हिये बिचार प्रेम नहिं भीने।

नृप पर तित उमराव पटाये। सुनत लिखे मुरकाय बुलाये ॥40॥

आयो तो रणमस्त खां, सो लीन्हों मुरकाय।

सहजादे बुलवाय के, दीन्हों मन्त्र सुनाय ॥41॥

आये जुरि सहजादे सबही। कही साहि ने तिनसों तबही।

छत्रसाल पर जिन चढ़ जाओ। अपने जिन उमराव पठाओ ॥42॥

(वृतान्त मुक्तावली: प्रकरण 79)

राठ खड़ोत जलालपुर, नजीक कालपी पहुंचे।

इत मुल्ला काजी सैयद, सब जमा किए ॥34॥

तिन सो कुरान हदीसों की, चरचा करी जब।

जेर हुए इस्लाम में, सबों मजहर लिख दिया तब ॥34॥

(लालदास कृत वतिक: प्र. 60)

[वि.सं. 1743 (1686 A.D.)] के पूर्व पहली बार राणा मस्त था बुन्देलखण्ड में घुस आया था, जब वह पनवारी के पास 18, सब एक रात को महाराजा छत्रसाल ने चारों ओर से घेर लिया था, दिन होते ही दोनों सेनाओं के मध्य भयंकर युद्ध हुआ था एक। रण मस्त कारण से विचलित होकर मुंह की खा कर लौट चला, तब महाराजा छत्रसाल की सेना ने इसकी मुग़ल सेना का भयानक सहार किया था। 2 बेचारा रन मस्त खां का ही प्रमाण के कारण इस बार वि.सं. 1743 में फिर आ रहा था उन। खैर खुदा की, यह युद्ध चल गया। प्राण मस्त खाने श्री प्राणनाथ का शुक्र माना और वापस चला गया।

1. पनवारी के मैदान बीच, भूपति ने इसको आ घेरा।

जयकृष्णचंद्र श्री प्राणनाथ, नहि और ध्येय है कुछ मेरा॥

रणमस्तखान मुंह की खाकर, निज सेना को कटवा करके।

वापस दिल्ली की ओर भगा, छत्ता की शक्ति बड़ा करके॥ (वीर भक्त चम्पत छात्र प्रकाश पृष्ठ 177)

2. वि.सं. 1736 में

3-4 जिन अर्थात मत

वीतक-वर्णित युद्ध-काल

[संवत्. 1739 से 1745 तक छः वर्ष (1682-1688 A.D.)]

प्रस्तावना

वीतक एक उत्तर मध्यकालीन ऐतिहासिक महाकाव्य है जिसकी रचना राष्ट्रपिता महात्मा गादी के पूर्वज (वंशज) स्वामी लाल दास जी ने [वि.सं. 1751 (1694 A.D.)] में श्रावण भाद्र मास में की थी। अभी तक का आशय स्वामी लाल दास कृत समकालीन डायरी से है। स्वामी लालदास जी महाराजा छत्रसाल के धर्मगुरुमहाप्रभु प्राणनाथ जी के साथ वि.सं. 1739 में बुन्देलखण्ड पधारे थे, अतैव [वि.सं. 1739 (1682 A.D.)] से महाराजा छत्रसाल के प्रति वह बुन्देलखण्ड में जो कुछ मुग़ल सल्तनत द्वारा किया जा रहा था उसका दूरदर्शन इस ऐतिहासिक ग्रंथ में परिलक्षित हुआ है, क्योंकि स्वामी लाल दास जी का मुख्य थे महाप्रभु प्राणनाथ जी का जीवन चरित्र लिखना था वह उनकी यात्राओं का ब्यौरा प्राकृत (विवरण)। अतैव [वि.सं. 1745 (1688 A.D.)] के शुभारंभ तक के ही कुछ ऐतिहासिक परिवेश के दर्शन होते हैं। कारण कि---- महाप्रभु प्राणनाथ जी की आखिरी यात्रा चित्रकूट की थी, जहां से वे संवत् 1745 (1688 A.D.) के लगते ही एक वापस पढ़ना आ गए थे। अतैव संदर्भित वितक में 6 वर्ष (संवत् 1739-1745 तक का युद्ध काल का वर्णन वर्णित है। वीतक के प्रकरण 58 से 61 तक में यह झांकी देखने को मिलती है।

पुरदल खान--- औरंगज़ेब की आज्ञा से संवत् 1739 (1682 A.D.) में पुरदल खान रामनगर में आया था उसने महाप्रभु प्राणनाथ जी को पकड़वाने के लिए रामनगर के राजा के पास अपने साथी सेखखिदर के माध्यम से संदेश भिजवाया था। अतैव मुग़ल सल्तनत दक्षिण की तरफ से बुन्देलखण्ड में अपनी बुझती लौ को पुनः स्थापित करने के लिए प्रयासरत थी।

महाराजा छत्रसाल से इसी दौरान पुरदलखान से करारी टक्कर हुई। वह महाराजा छत्रसाल से डरकर बुन्देलखण्ड से पलायन कर गया।

---

1. *चित्रकूट ते परना आये, पुरी अपनी छवि छाए।*

सत्रह शत पैतालिस लगते, काढ़ के साथ शकल रख जग ते ॥60॥ प्रक. 79 (वृतांतमुक्तावली)

2. *इन समय सुल्तान का, हुआ हुकम पुरदलखान।*

रहे रामनगर एक बैरागी, तिनकी तुम करियो पहिचान ॥58/48॥ (वीतक)

जब आए रामनगर से, तब पुरदलखान।

कुफर दिल में लेय के, कहो राजा (रामनगर) के कान ॥61/2॥ (वीतक)

3. *ए कौन है कहां से आए, है इनका मतलब कौन।*

इन सुन हुकम श्रीधर को, भेजा ऊपर मोमिन ॥58/49॥ (वीतक)

सेखखिदर--- पुरदलखान के हुक्म से शोर मचाता हुआ सेठ किधर गड़ा आया। उसने गढ़ा से ही रामनगर के राजा को धमकी दी थी एक कि वह वैराग्य को पकड़कर सौंप दें अन्यथा बादशा ने आपके ऊपर चढ़ाई करने का हुक्म दिया है। सेठ किधर दूसरे दिन रामनगर आ धमका दो था। स्वयंसेवक इधर महाप्रभु प्राणनाथ जी के पास पहुंचा था 3, तभी स्थानीय मुसलमानों ने भी अपना जल जला दिखाने के लिए वहां भारी उत्पात मचाना चाहा, तो सेठ किधर ने उन सभी को सैनिकों के द्वारा धक्के देकर भगवा दिया था चार। कारण कि--- सेठ किधर जो बुरी नियत से आया था, वह अब महाप्रभु प्राणनाथ जी का भक्त बन चुका था। उसने प्राणनाथ जी का संदेश बादशाह औरंगज़ेब कोलिक भेजा था 5 ग्राम यह घटना भी संवत् 1739 (1682 A.D.) के अगहन (कृष्ण पक्ष) मास की है।

गुलाम मुहम्मद--- पुरदलखान की जाति का था तथा उसका हिमायती था। सेठ किधर के लौटा जाने पर यह शाही हुकम लेकर धामौनी से रामनगर महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी को पकड़ने आया था। गुलाम मुहम्मदहे की मुहिम से डरकर रामनगर के राजा ने महाप्रभु प्राणनाथ जी को रामनगर छोड़ने का कड़ा आदेश दिया था, तब वह संवत् 1739 की अगहन शुक्ला दशमी रात को रामनगर छोड़कर चले थे। चौदस को गढ़ा आकर रुके थे। गुलाम मुहम्मद के सैनिक महाप्रभु प्राण नाथ की वाणी सुनकर लज्जित होकर लौट गए थे। इस समय वहां महाराजा छत्रसाल के भतीजे देवकरण बुन्देला उपस्थित थे. इनकी उपस्थिति भी गुलाम मुहम्मद के भागने का एक कारण था। जान बची तो

1. मैं आया फकीरों पर, पकड़ देयो मेरे हाथ।

नातो मुहिम तुम ऊपर, से चलें मेरे साथ॥51॥

2. यों करते दिन दूसरे, शेखखिदर पहुंचे धाय।

मुलाकात राजा सों करी, पहिले एही बताए॥51॥

3. शेख आए के पहुंचिया, लै भीर अपनी।

देख दीदार कदमों लगा, पाए अपनी वतनी ॥102॥

4. तब शेख को गुस्सा चढ़ा, इन्हें उठा देओ मुदरक।

देओ धक्के इनको, करने लगा हरकत हक ॥107॥

5. केतेक दिन सेख रहा, लिख भेजी पहिचान।

केतेक लोग सेख के रह गए, जिनको जोर ईमान ॥125॥ प्र. 58, वीतक

6. फेर अहदी गुलाम मुहम्मद, दौड़ा धमौनी से।

खां सेख पुरदलखान का, पुकार किया उत तें ॥128॥ प्र. 58, वीतक

7. संवत् सत्रह से उंतालिसे, मास अगहन सुदी दस में।

चले रामनगर से, फिर आए चौदह पढ़े में ॥132॥

8. तिनने रोके बाग में, तब आए पहुंचे देवकरन।

तिनसों बातें होने लगी, लड़े चार पहर मोमिन ॥134॥

लाखों पाये, लौट के बुद्धू घर को आए गुलाम मोहब्बत के सैनिकों ने ऐसा मानकर राहत की सांस ली। एक

वस्तुतः महाराजा छत्रसाल के दबदबे का अहसास होते ही पुरदलखान तथा गुलाम मुहम्मद आदि फिर कभी महाप्रभु के आगे नहीं आए।

हाकिम राय--- गढ़ा में भगवंत राय का बेटा हाकिम राय था दो। वह अत्यंत क्रूर एवं आतताई था। उसने महाप्रभु प्राणनाथ जी एवं उनके साथ चल रहे भक्तों (सुंदर साथ को लूटने का विचार किया तीन। तब स्थानीय व्यक्ति गंगाराम बाजपेई को चार महाराजा छत्रसाल के हितैषी एवं सहायक थे उन्होंने डरा धमकाकर भय दिखा कर हातिम राय को भयभीत कर दिया था। यह घटना को 1739

संवत् की है। गढ़ा में महाप्रभु प्राणनाथ जी 1 मार्च 13 दिवस है रे थे। हाकिम राय की नियत देखकर निष्कलंक अवतार महामति प्राणनाथ जी अगरिया आ गए। जहां पर महाराजा छत्रसाल के भतीजे देवकरण कुछ वर्षों से ठहरे हुए थे। 5

मुहिम शेर अफगन की---- वीतक ग्रंथ के प्रकरण साथ में शेर अफगान के ऐतिहासिक युद्ध का जिक्र मिलता है, अतएव इतिहासकारों ने इस बी तक ग्रंथ को एक इतिहास की अमूल्य धरोहर प्रमाणित किया है।

संवत् 1739 (1682 A.D. में माघ मास में मऊ के निकट महाराजा छत्रसाल ने महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के दर्शन किए थे। सिद्धू ने दरवाजा (मऊ में यह ऐतिहासिक मिलन हुआ था। पूर्णिमा की चांदनी छाई हुई थी। महाराजा छत्रसाल ने शेर अफगान के मोर्चे पर (राठ पनवाड़ी के निकट होने के कारण श्री प्राणनाथ जी को बुलवाया था। सब महामति प्राणनाथ जी अगरिया से चलकर (पढ़ना में किलकिला तट पर भक्तों को छोड़कर) मऊ पधारे थे।

---

1. एतो बाली खुदाए का, हमसे बेअदबी कछु होए।

   तो होता बुरा हमारा, हम ठोरे ने पावें सोए ॥136॥

2. हादी वहां से चलकर, गड़े पहुंचे धाय।

   वहां भगवंत राय का, बेटा हाकिम ताए ॥137॥

3. उसने दिल में यों लिया, लूंट लिया फकीरन।

   यही हराम खोरी के, लोगों आगे कहे सुकन ॥138॥

4. ए सुनी गंगाराम बाजपेई, वहां था इनका आसंन ॥139॥

   तिन जाए वरजा उनको, क्यों ए करने लगा काम ॥140॥ पृ. 58, वीतक

5. जब देवकरन विदा भए तब पूछी श्री राज (प्राणनाथ) नें बात।

   तुम अपना ठौर छोड़ के, और मुलक क्यों जात ॥38॥ पृ. 59, वीतक

6. चले अगरिए से, परना पहुंचे आए।

   डेरा किया अमराई में, ठौर झंडे की चित्त ल्याए ॥11॥

शेर अफगान की विकराल सेना पर महाराजा छत्रसाल की यह विजय एक चमत्कार थी। इसी चमत्कार ने महाराजा छत्रसाल को महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी का सेवक बना दिया था। एक कुछ समय श्री प्राणनाथ मऊ ठहर कर संवत् है 1740 1683 A.D. के लगते दो पन्ना पधारे थे, जहां उनका विशाल भक्त समुदाय उनकी बात जो रहा था। इस समुदाय की संख्या 5000 से 10000 के बीच बताई जाती है।

शेर अब गन इस युद्ध में बंदी बना तथा उसके अनेकों बहादुर सरदार मारे गए थे। अर्थदंड (चौथ देकर उसकी जान बची थी। चेराव गन की करारी हार सुनकर औरंगज़ेब ने महाराजा छत्रसाल के दमन के लिए चाह कुली नंबर 1683 (संवत् 1740) में भेजा था। इस युद्ध का जिक्र भी तक में उपलब्ध नहीं है परंतु महाराजा छत्रसाल जी द्वारा जगतराज को लिखे पत्रों में इसका प्रमाणिक उल्लेख मिलता है।

पुरदलखान से ललितपुर में जंग--[वि.सं.1740-41 (1683-84 A.D.)]

पुरदलखान द्वारा भेजे गए शेखखिदर एवं गुलाममुहम्मद रामनगर में महाप्रभु प्राणनाथ जी को ना पकड़ सके थे। कयामत की बात पुरदलखान को सता रही थी, क्योंकि उसके उक्त दोनों 3 सिपहसालार ओं नए कयामत का बताकर महाप्रभु प्राणनाथ जी को पकड़ने में असमर्थता जताई थी। अतैववह खुद पन्ना की तरफ चला था सोमा सभी मार्ग में महाराजा छत्रसाल जी की लड़कपन के निकट उस से मुठभेड़ हो गई। उसकी विशाल

भेजी खबर महाराज को, आप पहोंचे आए इस।

कह भेजी महाराज ने, मोहे बने न आवन तित ॥18॥

साथ सरूपदे को छोड़ के, आप छड़े पधारो इत।

तो कारज सब सिद्ध होवहीं, हम पावें सुख नित ॥19॥

मऊ में तिदुनी दरवाजे, डेरा किया बाहिं।

राजा भेस बदल के, दरसन किया ताहिं ॥21॥

1. वह बखत महाराज को, थी मुहिम सेर अफगन।

   भई असवारी तैयार, आए के लगे चरन ॥32॥

   श्रीराज रुमाल लेए के, सिर पर धरा महाराज।

   हाथ धरा सिर ऊपर, होए पूरन मनोरथ काज ॥33॥

जब उससे फते करके, आए श्री महाराज

सब लोगों ने कहा, बिन श्री राज ना होए एकाज ॥35॥

2. संवत् सत्रह से चालीसे, पधारे परना में।

सेवा श्री महाराजे करी, क्यों कहूं इन जुबां से ॥47॥ प्रक. 60 (वीतक)

3. तुम्हारे अहदी आए थे, बीच रामनगर।

सो तहकीक कर गए हैं, तुम्हें तहां भी न पड़ी खबर ॥13॥

4. जब मारी लड़तपुर, कब हुआ असवार।

आवत भेंटा राह में, तब भागा हुआ खुवार॥16॥

सेना युद्ध में मौत के घाट उतार गई, तब वह रणभूमि से भाग खड़ा हुआ। वापस भागते समय उसकी एक सैन्य टुकड़ी, जिसमें तीन हजार सिपाही थे, में सभी महाराज छत्रसाल के केवल बाईस सैनिकों द्वारा पराजित कर दिए गए। बेचारा पुरदलखान घायल अवस्था में गौर के यहां जा छिपा था। गौर उसका एक हिमायती सिपहसालार था। यह जन्म [वि.सं. 1740 (1683 A.D.)] में हुई थी है वह उस समय महाप्रभु प्राणनाथ जी पन्ना में विराजमान हो चुके थे।

सूबेदार सफजंग से युद्ध [वि.सं. 1740-41 (1683-84 A.D.)]

गौर सिपहसालार ने पुरदलखान की हार का बदला लेने के लिए एक बड़ी फौज तैयार की और सूबेदार सत्संग से मुलाकात की। सूबेदार संग 200ma महाराजा छत्रसाल से लड़ने के लिए आतुर बैठा था। गौर की विशाल सेना से उसका मनोबल और बढ़ गया। सूबेदार संघ को आगे बढ़ते देख कर महाराजा छत्रसाल ने उसकी विशाल वाहिनी को एक मुहाने पर आधीरा, पीछे ठहरी उसकी सेना को इसका पता ना चल पाया। मुहाने पर भीषण मारकाट मच गई। सूबेदार सत्संग की सेना जो पीछे थी मुगालते में बनी रही। उठ रहे स्वर दो आर्थक थे, पलट है बुन्देली सेना अपने लक्ष्य में कामयाब हुई हो मां सब जंग की सेना मारी गई, उसका नामोनिशान तक ना रहा। विजय छत्रसाल वरना आकर महाप्रभु प्राणनाथ जी के चरणों में आए और नतमस्तक हुए। यह जन्म संवत् 1740-1741 के मध्य घटित हुई।

महाराजा छत्रसाल की बुन्देलखण्ड

दिग्विजय

महाप्रभु प्राणनाथ जी ने चंपकलाल कुंवरि के पुत्र कुमार छत्रसाल का आतिथ्य स्वीकार कर पन्ना में पदार्पण किया था। आप्त ग्रंथों में वर्णित भविष्य वाणियां यहां साकार हुई थी। संवत् 1739 के बीतने पर महाप्रभु प्राणनाथ जी, जो निष्कलंक बुध (कल्कि)

---

1. बाईस असवारें मारी फौज तीन हजार।

   भागा जाए भेड़ ज्यों, बिना तेज देखा खुवार ॥17॥

2. फौज लेकर आइया, गौर सों करी मुलाकात।

   लड़ाई सफजंग की, नाम निसान ना रही कहु आस ॥18॥ (प्रकरण 61) वीतक

3. औरंग (औरंगज़ेब) अकस राखत है, है लड़ाई इस्लाम।

   दावत सब ठौरों करो, बुलाओ अपने ठाम ॥5॥

   चले अगरिए से, परना पहुंचे आए।

   डेरा किया अमराई में, ठौर झंडे की चित्त ल्याय॥ (प्रकरण 60) वीतक

4. ॥साखी॥ बीतेगा उनतालीसा दगेगा चालीसा, तब कोई होसी मर्द मरद मरद का चेला।

   नानक गुरु दिखावे सांई, सांच सांच दी बेला (नानक वाणी)

अवतार हैं, ने कुमार छत्रसाल के यहां पर ना (पन्ना आधुनिक नाम) में अविचल निवास ग्रहण किया था। उस समय महाप्रभु प्राणनाथ जी हजारों भक्तों के साथ यहां पधारे थे फॉर्म आफ श्री कृष्ण प्रणामी निजानन्द संप्रदाय में इन भक्तों को सुंदर साथ कहा जाता है।

राज तिलक--- चम्पत सुमन छत्रसाल का परिणाम में स्थित बंगला जी (पढ़ना नगर की प्रथम आधारशिला रूपी इमारत, में उनकी 34 वी वर्षगांठ पर महाप्रभु प्राणनाथ जी द्वारा गोधूलि बेला में निज हाथों से संसार में राज्य करने के लिए राज्य तिलक किया था।

इस शुभ अवसर पर देश देशांतर के प्रतिनिधि उपस्थित थे, सभी साधु समाज ने महाराजा छत्रसाल को आत्मीय शुभ आशीष दिया था एक। स्वामी लालदास जी उस राज्य अभिषेक कार्यक्रम के विशिष्ट थे, उन्होंने उस समय का प्रवेश अपनी डायरी वितक में निम्न प्रकार लिखा है। जिससे यह राज्य अभिषेक संवत् 1740 में ही ठहरता है।

सम्बत सत्रह सै चालीसे, पधारे परना में।

सेवा श्री महाराजें करी, क्यों कहूं, इन जुबां सें ॥47॥

अपनो आपा सब दियो, और दियो सब साज।

आरती निछावर करके, कही धन धन दिन है आज ॥55॥

॥छत्रसाल उवाच॥

एही टीका एही पांवड़ा, एही निछावर आए।

श्री प्राणनाथ के चरन पर, छत्ता बलि बलि जाए ॥56॥

पहिले दाता हम भए, गुरु को दीनो सीस।

पीछे दाता गुरु भए, सब कुछ कियो बकसीस ॥57॥

॥राज तिलक॥

विजया अभिनन्दन बुध जी, ब्रहमसृष्टि सिरताज।

हाथ हुकम छत्रसाल के दियो सो आपनो राज ॥64॥

साखी कहके थाल से, तिलक करयो श्रीराज ॥

भाल मांहि छत्रसाल के, कही आप बैठो महाराज ॥65॥

वीर्यवान् क्षत्रमुतसाध पद्मावात्यां स वै पुरि।

अनुगङ्गयां प्रयागं गुप्तां भोक्षयती मेदिनीम्॥ (श्रीमद्भागवत:12/1/37)

अनु गंगा चार्य प्रयागम गुप्ता को क्षति मेरी नाम श्रीमद् भागवत

1. तब बोले श्री राज जी, देखो राणा पातसाह सब।

   पर जो कछु करनी अंकूर की, सो इत देखी हम अब ॥61॥

   आगे साधु-संतों ने, कहयो गुरु सिस्य को धरम।

   सोतो अब इहां भयो, उड़यो सबों को भरम ॥62॥ पृ. 60 (वीतक)

2. श्रीप्राणनाथ जी
3. श्रीप्राणनाथ जी
4. छत्रसाल महाराजा

सकुण्डल सोभा भई, प्रगट भई पहिचान।

छत्रसाल छत्ता हुआ, छिपे सबे सुलतान ॥67॥

बजी बधाई नृपति के, करि आरती प्रान।

सब जन सो महाराज जू, करयो प्रणाम प्रमान ॥66॥

(प्रकरण 60)

अतैव इतिहासकारों द्वारा दर्शाई गई तिथि संवत् 1744 अशुद्ध है। इस शुद्धता का प्रमाण अभी तक ग्रंथ से और भी स्पष्ट हो जाता है। देखिए प्रमाण----

संवत् सत्रह सै तेंताले, असवारी करी जब।

हस्ती पर चढ़ाए के, आगे सेना चलाई तब ॥150॥

राठ खड़ोत जलालपुर, नजीक कालपी पहुंचे ॥151॥

इहां से असवारी कर, सेउड़े पहुंचे जब।

बसन्त सुरखी आए मिला, कदमों पकड़े तब ॥162॥

चित्रकूट को ले चला, पर जुदा रख्या आप ॥163॥

श्रीराज चले चित्रकूट को, लिया महाराज दिल में।

सेवा में भंग होत है, कोई इलाज करो इनसें ॥164॥

तब सेवा के वास्ते, पहुंचाए सब साथ।

कुंवर ठकुराए ने सबै, इत खोले अल्ला कलाम।

श्रीराज रोसनी जाहिर करी खुल गए सब ठाम ॥166॥

प्रकरण 60 (वीतक)

तत्कालीन ग्रंथ वृतांतमुक्तावली में भी इसकी पुष्टि निम्न प्रकार मिलती है। यथा---

सत्रह शत तेंतालिस माहीं। करी महुम मुलक में ताहीं॥

चित्रकूट तब श्रीजू आये। रामजन्म नवमी छवि छाये॥

एक बरस तित रहे बिचारी। करयो प्रकास बहुत इत भारी॥

---

1. छत्रसाल महाराजा
2. छत्रपति ओके भी पति
3. राजा गण
4. महाराजा छत्रसाल के यहां
5. दिग्विजय यात्रा पर सेना का चलना
6. श्री प्राणनाथ जी
7. छत्रसाल जी
8. संवत् ए 1744 रामनवमी और 1745 चैत के मध्य
9. रामनवमी: संवत् 1744

चित्रकूट ते परना आये। पुरी आपनी में छवि छाये॥

सत्रह शत पैंतालिस लगते। काढ़यो साथ सकल सब जगते॥

(प्रकरण: 79)

अर्थात महाराजा छत्रसाल, महाप्रभु प्राणनाथ जी को [वि.सं. 1743 (1686 A.D.)] के अंत में हाथी पर बैठाकर दिग्विजय करने के लिए निकले थेतब महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी राठ, खड़ौत, कालपी, जलालपुर और सेहुड़ा होते हुए राजा बसंत सुरखी (सोलंकी) के अनुरोध पर [वि.सं. 1744 (1687 A.D.)] में रामनवमी के दिन चित्रकूट पहुंचे थे तथा वह एक वर्ष स्थाई निवास करके [वि.सं. 1747 (1688 A.D.)] के अगले ही पढ़ना वापस लौट आए थे। इस बीच महाराजा छत्रसाल जूदेव [वि.सं. 1744 (1687 A.D.)] में वर्ष भर दिग्विजय यात्रा पर बुन्देलखण्ड में घूमते रहे।

महाप्रभु प्राणनाथ जी ने [वि.सं. 1743 (1686 A.D.)] के अंत में पन्ना से सेना के साथ प्रस्थान किया था और [वि.सं. 1744 (1687 A.D.)] में राम-नवमी के दिन चित्रकूट आकर भक्त मंडली के साथ लगातार एक वर्ष रहे और संवत् 1745 के लगते ही महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी वापस पर ना आए थे। अतैवइससे स्पष्ट है कि राज्याभिषेक संवत् 1744 (1687 A.D.) में न होकर चार वर्ष पूर्व ही हो चुका था। इस तथ्य की और भी पुष्टि निम्न विवेचन से स्पष्ट हो रही है---

(i) राज-तिलक के पूर्व की परिस्थितियां और

(ii) राजतिलक के पश्चात की परिस्थितियां;

(i) राज्य तिलक के पूर्व की परिस्थितियां

(अ) महाराजा छत्रसाल जू देव ने अपने सद्‌गुरु प्राणनाथ जी से शेर अफगन से विजय प्राप्त के उपरांत परना जाने की विनती की थी और स्वयं कुछ दिनों के लिए मऊ सहानिया ही रुक गए थे। इधर श्री प्राणनाथ जी महाप्रभु, परना में सुंदर साथ के मध्य विराजमान थे, तभी एक विचित्र घटना हो गई है। जिसका वर्णन समकालीन व्रत महाकाव्य प्रताप मुक्तावली के (प्रकरण 65) में स्वामी बृजभूषण (जो महाराजा छत्रसाल के ही शिष्य थे) ने किया है।

1 दिन महाराजा छत्रसाल जी ने देवकरण को लेकर मऊ से गोरेगांव के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में एक नदी को नाव से पार करने लगे तभी महाराजा छत्रसाल (धीमान देवकरण से कहने लगे---

एक दिन महाराजा छत्रसाल जी ने देवकरण को लेकर मऊ से गोरेगांव के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में एक नदी को नाव से पार करने लगे, तभी महाराजा छत्रसाल (धीमान देवकरण से कहने लगे---

---

1. संवत् है 1745 का शुभारंभ

ना हो गई जब बीच में, बोले तहां दिमान (छत्रसाल)।

हमहि तुमहि नारी कहै, बाबा (प्राणनाथ जी) बड़े सुजान ॥5॥

त्रिया संग इनके भली, रूपवान अति कोई।

माया अक्षर पुरुष लौं, इन सम और न कोई ॥6॥

इन नारिन में संग हुइ, बिहरै निसदिन धाय ॥7॥

दिमाग छत्रसाल के ऐसे अनायास वचन सुनकर देवकरण को भी एक बड़ी शंका हो गई, सब देवकरण ने महाराजा छत्रसाल से कहा--- मुझे शीघ्र नाव द्‌वारा नदी पार कराओ, वहीं बैठ कर बात करेंगे। यह सुनकर छत्रसाल जी ने देवकरण को पढ़ना तट की ओर उतार दिया परंतु स्वयं बिना कुछ कहे नाव से लौट पड़े और मऊ की ओर अकेले चल पड़े। इधर देवकरण भी तुरंत घोड़े पर सवार होकर पढ़ना की ओर से गिरता से चल दिए। इस घटना से देवकरण बहुत व्याकुल हो गए और सोचने लगे कि कहीं छत्रसाल जल्दी लौटकर कुछ अनर्थ ना कर डाले, क्योंकि उन्हें श्री प्राणनाथ जी पर अब विश्वास हो चला है।

पन्ना आते ही देवकरण चिंता कुल होकर निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी से बोले हे प्रभु!

हिरदो फिरयो दिमान को, बरती आई कुबुद्‌धि।

कूच आप इततें करो, समझि दई हय शुद्धि ॥11॥

अर्थात छत्रसाल का हृदय घूम (विरोधी) गया है उनमें कुबुद्धि का प्रवेश हो गया है अतैववह हमारी राय यह है प्रभु, यहां से आप भक्तजनों सहित तुरंत प्रस्थान कर दें, (ताकि किसी संभावित भयानक अनर्थ से बचा जा सके)।

यह सुनकर निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी, देवकरण को डांस बनाते हुए कहने लगे। को मैंने निज हाथों से यहां पर जो प्रज्वलित ध्वजा आदित्य मान जागने का झंडा स्थापित किया है वह अचल रहेगा। यह चराचर जगत को शरण देने वाला एवं दिनोंदिन वृद्धि को प्राप्त करेगा 2 ग्राम पत्र! तुम चिंता मुक्त होकर मेरी शरण में रहो। छत्रसाल कुंडल की वासना है, उन पर कुबुद्धि स्थाई भाव नहीं जमा सकतीग्राम माया अति बलवान है अर्थात माया 6 अति बलवंती अतैवइस माया का जोर भयानक है क्योंकि ब्रह्म कुश्ती भी धरे

---

1. महाराजा छत्रसाल जी प्रारंभ से ही अपने को प्रजा का दिमाग (दीवान) मानते थे राजा नहीं। आता है बुद्धिमान शब्द छत्रसाल का बोधक है।
2. तब बोले श्रीजू तहां, अचल खंभ हम रोग।

   गाड़ि दयो झंडा यहां, करै न कोऊ लोग ॥13॥

   सत स्वरूप के उर विषे, अचल रहै सब छाइ।

   तौ लौं झंडा रोशनी, दिन दिन चढ़ती जाइ ॥14॥ 64 (वृतांतमुक्तावली)

मोह के आकार सभी का आना माया में ही हुआ है वत्स! तुम बिल्कुल व्याकुल एवं घबराओ मत।

उधर महाराजा छत्रसाल साईं कालीन बेला में मऊ से चलकर पंडवा स्थान (पांडव फरियाद पर रात्रि भर ठहरे और आत्म चिंतन में रत रहे, दूसरे दिन मध्यान में यहां से वह चल पड़े। इधर पढ़ना में श्री प्राणनाथ जी ने देवकरण को हुकुम दिया कि पेड़ पर चढ़कर देखो कि क्या छत्रसाल आ रहे हैं।श्री प्राणनाथ जी की भविष्यवाणी सत्य निकली, दो घड़ी में ही छत्रसाल जी मैदान के बीच दिखाई देने लगे। अश्व पर सवार महाराजा छत्रसाल सरपट दौड़े चले आ रहे हैं। वह अशोक से उतरकर सीधे प्रभु चरणों में साष्टांग दंडवत प्रणाम करते हुए लौट गए। महाप्रभु ने छत्ता को उठाकर गले से लगा लिया और भोजन के लिए, जैसे पिता अपने अबोधबालक को स्नेह से कहता है, वैसे ही मां प्रभु के व्यवहार को देखकर सत्ता आत्मा विफल हो गए। पुत्र सदृश्य छत्रसाल का रूप में रखकर प्रभु प्राणनाथ जी ने उन्हें भोजन हेतु आसंन् पर बैठाया और जगत जननी की आधारभूत आ श्यामा स्वरूपिणी बाईजू राज महारानी ने सत्ता को पुत्र वध भोजन कराया। एक यह सब देखकर देवकरण अचंभित थे।

दीवान छत्रसाल के अंदर शंका का आना एवं उसका तिरोभाव होना समा यह एक अत्यंत विस्मयकारी घटना है। देवकरण इस घटना के प्रत्यक्ष साक्षी रहे, जोकि महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के शिष्य थे, उन पर इस घटना ने व्यापक प्रभाव डाला। प्रभु के ब्रह्म स्वरूप को न रखकर देवकरण ने अपना तन मन सब कुछ परम प्रभु के ऊपर निछावर कर दिया।

(आ) महाराजा छत्रसाल ने निष्कलंक बुद्ध महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी का शिष्य तत्व स्वीकार कर लिया तब महाराजा छत्रसाल की सेना के सेनापति ने एवं कुछ विशिष्ट लोगों ने श्री प्राणनाथ जी पर अविश्वास का भाव जताकर महाराजा छत्रसाल के अंदर भी यही भाव जगाने का भरसक प्रयास किया था, परंतु महाराजा छत्रसाल का भाव अधिक रहा। यह घटना उस दिन की है जब महाराजा छत्रसाल जी शेर अब गन को पूर्ण प्राप्त कर दो सेना सहित पन्ना में अपने सद्गुरु प्राणनाथ जी का दर्शन करने आए थे, संवत् 1740 का शुभारंभ ही हुआ था। इस संबंध (परिवेश में वित्त के निम्न वचन दृश्य हैं। यथा---

मऊ सेती परना मिने, पहुंचे श्रीजी साहब (प्राणनाथ)॥37॥

आए महाराज उत्तथे, रसोई के बखत।

---

1. सथिन उतर अरज करा, पहुंचे छत्ता दिवान ॥19॥

   कदमनि लागे आनि कै, धरे शीश पर हाथ ॥20॥

   उठे राज प्रक्षालि पग, चौका बैठे आन।

   श्री बाई जी थार सजि, आगे धरयो समान ॥21॥

   उठे राजा रोगी के लाइव प्रसाद धीमान स्पाइस प्रकरण 64 (वृतांतमुक्तावली)

2. संवत् 1739 की समापन बेला में

सेना कर ठाढ़े हते, श्रीजी साहिब (प्राणनाथ) जी तित ॥39॥

कुली दज्जाल कांपिया, किया जो बड़ा सोर।

ए निहचें मोकों मारेंगे, इन दोऊ से चले न मेरा जोर ॥42॥

काहू काहू के दिल में, कलियुग आए बैठा।

बदफैली दिल में करी, जो था सेना में जेठा ॥43॥

डगावने महाराजा को, बहुत करी दज्जाल।

नाम भए राज (प्राणनाथ) तरफ दिलगीर, हमेशा रहे खुसहाल ॥44॥

संवत् सत्रह सै चालीसे, पधारे परना में।

सेवा में महाराजें करी, क्यों कहूं इन जुबां से ॥47॥ प्रक. वीतक

ऐसे दूषित वातावरण में भी महाराजा छत्रसाल पर कोई प्रभाव ना जमा पाया था अपितु उन्होंने अपनी हवेली ब्लैकेड चोपड़ा मैं पधार कर दो निम्न उद्‌गार श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहिब के प्रति व्यक्त किए थे---

एही टीका एही पांवड़ो, एही निछावर आय।

श्री प्राणनाथ के चरन पर, छत्ता बलि बलि जाय ॥56॥

प्रकरण: 60 (वीतक)

महाप्रभु प्राणनाथ जी त्रिकालदर्शी थे, उन्होंने इस बात को भी जान लिया था कि उनके नाद पुत्र (शिष्य) छत्रसाल को कलुषित जीव मुझ से पृथक करना चाह रहे हैं और वे सभी इस तरह से महाराजा छत्रसाल की परख कर रहे हैं पुलिस अब इस वातावरण का अपनी ओर से अभी महाप्रभु प्राणनाथ जी ने छत्रसाल जी को भान नहीं होने दिया था, फिर भी महाराजा छत्रसाल इस कसौटी पर खरे उतरे थे।

(इ) महाराजा छत्रसाल से श्री जी साहिब (श्री प्राणनाथ कते (कुरान का ज्ञान अभी छुपाए हुए थे लेकिन इसकी जानकारी महाराजा छत्रसाल को विरोधी भावनाओं वाले लोगों द्‌वारा हो गई थी 4। अतैवचम्पत सुमन महाराजा छत्रसाल ने समय पाकर इस भ्रांति का निराकरण कर लिया था तब उनके अंतः करण से निम्न उद्‌गार निकले थे---

---

1. श्री प्राणनाथ जी और महाराजा छत्रसाल जी;
2. चौपड़े की हवेली मिने, तहां पधराए श्री राज।

   चले आए सुखपाल ले, कांध पर कुंवर महाराज ॥50॥ (वीतक)

3. नाग पुत्र तेही छत्रसाल नृप,

   तेहि शिष्य ब्रजभूषण कछु पायो ॥18॥ (वृतांतमुक्तावली, प्रकरण 9)

4. देखा देखी महाराजा के, ल्याया जो ईमान।

बस बसा छाती पर, करता था सैतान ॥78॥ प्रकरण 60

बात छिपाई कुरान की, आवते महाराज से आप।

तो पहिचान के वास्ते, इनको प्रकट करने प्रताप ॥79॥ (वीतक)

यामें अपनी बीतक सबहै, श्री देवचंद्र को मेरो तेरो नाम।

जा दिन जो बीती हम तीनों में, सो सब लिखी तमाम ॥86॥

ए बात सुनो महाराज को, जोस जो चढ़यो जोर।

ए वस्त प्रकट करके, करों खेल में सोर ॥86॥ वीतक पृ. 60

इस प्रकार महाराजा छत्रसाल को मा कली योगी प्रवृत्ति वाले लोगों के बहकावे में नहीं आए और निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी पर अपनी पूर्ण श्रद्धा प्रदर्शित की।

निष्कर्ष:- महाराजा छत्रसाल के अंदर सद्गुरु श्री प्राणनाथ जी के प्रति उठे अविश्वास का पूर्ण रूप से प्रक्षालन हो चुका था। इसी कारण चोपड़ा सदन में, दीवान छत्रसाल पहली बार परम प्रभु प्राणनाथ जी को पालकी में बैठाकर से लाए थे, तब उस समय एक 3 पद एक उनके मुख से मुखरित हुए थे, कारण की महाराजा छत्रसाल की आभा कभी प्रवृत्ति की थी।इन घटनाओं से स्पष्ट होता है कि इस जगत में इन दोनों गुरु शिष्य के समान ना तो कोई पैदा हुआ और ना होगा। यथा:-

छत्रसाल सेवा करी, निज परना में आई।

भयो न आगे होइगो, समझौ हिये मिलाइ ॥25॥

गुरु अरु शिष्य बहुत भये, जुगन जुगन के माहिं।

लिखे पुरानन में सकल, कोऊ या सम नाहिं ॥26॥

प्रकरण सं. 65 (वृतांत०)

बुन्देलखण्ड की अंतर है एवं बाय परिस्थितियों को देखकर तथा दीवान छत्रसाल के ऊपर बहाए कुछ लोगों की कुदृष्टि को पढ़कर निष्कलंक बुध कल्कि अवतार श्री प्राणनाथ जी ने छत्रसाल का राजतिलक करने के लिए तुरंत आवश्यकता समझी थी। संयोगवश दीवान छत्रसाल का 35 वा जन्मदिवस आ गया था, अटेवा श्री प्राणनाथ जी ने समस्त जन जा बातों को दूर करने के लिए जेस्ट शुक्ला तीज (संवत् 1740) को गोधूलि बेला में राज्य तिलक करने की घोषणा देश देशांतर में करवा दी थी।

निश्चित शुभ मुहूर्त बेला में दीवान छत्रसाल का राज्य अभिषेक दो बड़ी धूमधाम से पन्ना में संपन्न हुआ।3

॥आस्था पद॥ साहेब का कहलाया शरने आया।

शरने आया साहिब का कहलाया, प्रेम प्याला पाया।.... छत्रसाल काव्यांजलि पृ. 64

॥स्तुति॥ पूरन ब्रह्म ब्रह्म से न्यारे, आनंद अखण्ड अपारे।

शिव सनकादि आदि के इच्छित, शेष न पावत पारे ... प्रक. 65 वृतांतमुक्तावली

भोग बाई आंख मेरी बेर बेर फर्क है जय हर्षा मेरो भारी जी

अनइंछित कलियुग निकंदन, आये श्री नित्य बिहारी जी।..... प्रक. 65 (वृतांतमुक्तावली)

2. (i) महाराजा अधिपति भये, महाराजा छत्रसाल।

राजन में राजा भये, असुरन केरे काल ॥60॥ प्रक. 65 वृतांतमुक्तावली

(ii) छत्रसाल हुआ छिपे सबवे सुल्तान 667 (वी तक प्रकरण 60

3. अतैवकमा राज्याभिषेक संवत् 1740 में ही हो ना प्रमाणित होता है संवत् 1744 में नहीं।

लाल कवि, महाराजा छत्रसाल जी के अभिन्न साथी थे। वह एक महान वीर एवं पराक्रमी सेनापति थे पूर्णाराम उनका समग्र जीवन महाराजा छत्रसाल की छत्रछाया में ही व्यतीत हुआ था। रणभूमि में वह महाराज के दाहिने अंग थे। महाराज छत्रसाल जी पर जो कुछ घटित हो रहा था वह उसके प्रत्यक्षदर्शी थे। अतैवउन्होंने (लाल कवि ने छत्रप्रकाश ग्रंथ में जो कुछ लिखा है, वह इतिहास की एक साथ धरोहर है। अभी तक कारों ने निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी के प्रति महाराजा छत्रसाल प्राकृत धीमान जी द्वारा संदेह प्रकट किए जाने का जो उल्लेख किया है उसका दर्द दर्शन लाल का भी प्रकाश में भी पाया जाता है। ईमान छत्रसाल के मन में जो संदेह उत्पन्न हुआ था, उसका उल्लेख वित को में यथार्थ रूप में ही हुआ, इस तथ्य को छत्रप्रकाश को ध्यान में रखकर, सही माना जा सकता है क्योंकि लाल कभी रचित ग्रंथ प्रकट छत्रप्रकाश ऐतिहासिक है और दीपक ग्रंथ तो धार्मिक है, जो संदर्भ में सत्य की कसौटी पर खरे उतरे हैं। संदेह निवारण के उपरांत ही दिमान छत्रसाल को निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी ने महाराजा पद पर आसीन कराया था। लाल कवि ने छत्रसाल जी के महाराजा बनने की घटना स्थिति का वर्णन अपने ग्रंथ क्षेत्र प्रकाश में निम्न प्रकार से किया है---

त्योंही प्राणनाथ प्रभु आये, दिल के कुल संदेह मिटाये।

उन ऐसो कछु ज्ञान बखान्यौ, अपनौ करि जातै जग जान्यौ॥

परमधाम की लीला गाई, प्रेमलच्छना भक्ति दृढ़ाई।

सब सौं कहयो जगो रे भाई, प्रगटि जागनी लीला आई॥

तुम हौ परमधाम के वासी, मत सौ ज्ञान डिढ़ाई।

जातै जग छत्रसाल कौ, लग्यौ स्वप्न सम भाई॥

छत्रसाल को ज्ञान सुनायो, परमतत्व प्रगट दरसायो।

करौ राज छत्रसाल मही को, रन में होई सदा जय टीको॥

यह महि तुम्हें दई नूरानी, जहां प्रगट हीरन की खानी।

राजतिलक छत्रसाल सिर, दयौ साखि दर साखि॥

(छत्रप्रकाश पृ.183)

छात्र प्रकाश कि उक्त पंक्तियों में इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख है जिसमें महाराजा छत्रसाल और श्री प्राणनाथ प्रभु के पारस्परिक मिलन का और उत्पन्न तत्कालिक परिस्थितियों का स्पष्ट निरूपण है।

महाराजा छत्रसाल जूदेव ने राज्य तिलक स्वीकार तो कर लिया था परंतु वह अपने को पूर्व की भांति धीमान ही लिखते रहे और सद्गुरु प्राणनाथ जी को महाराजा

मानकर राज्य करने लगे। इस तथ्य की पुष्टि कई इतिहासकारों ने भी की है। महाराजा छत्रसाल संधू व पत्रों में दिमाग शब्द लिखते रहे। संवत् 1747 से दिग्विजय यात्रा पर निकले एक महाराजा छत्रसाल ने अपनी और तीसरी वर्षगांठ मनाई थी, सभी चित्रकूट से वि.सं. 1744 में महाप्रभु प्राणनाथ जी ने दिव्य संदेश भेजा था,उसी के अनुसार महाराजा छत्रसाल ने (राजतिलक के 4 वर्ष बाद अपने को महाराजा लिखना प्रारंभ किया था। इसकी पुष्टि में अनेक प्रमाण मिलते हैं, इसी कारण से इतिहासकारों ने राज्य अभिषेक का होना संवत् 1744 मान लिया है जो कि उचित नहीं है।

(ii) राज्य तिलक के बाद की परिस्थितियां

(अ) पूरे बुन्देलखण्ड में महाराजा छत्रसाल के राज्य अभिषेक की सूचना सर्वत्र शीघ्रता से फैल गई थी संग्राम दिल्ली दरबार ने इस घटना को बड़ी गंभीरता से लिया था और एक संदेश के माध्यम से

महाराजा छत्रसाल को मनसबदारी देने की घोषणा की थी जिसका प्रत्युत्तर एक कविता के माध्यम से महाराजा छत्रसाल ने लिख भेजा था। प्रस्तुत है कवित:---

मानिकैं हुकुम जासु भानु तम नासु करें,

चंद्रमा प्रकाश करै नखत दराज कौ।

कहै छत्रसाल राज राज है भंडारी जासु,

जाकी कृपा-कोर राज-राजै सुर-राज कौ॥

जुग्म कर जोरि-जोरि हाजिर त्रिदेव रहैं,

देव परिचार गहैं जाके ग्रह-काज कौ।

नर की उदारता में कौन है सुधार, हौं तौ

मनसबदार सरदार व्रज-राज कौ॥3॥

(छत्रसाल काव्यांजलि पृष्ठ 41)

(आ) महाराजा छत्रसाल तो जन्मजात स्वयमेव नरेंद्रसिंह राम लौकिक व्यवहार में राजतिलक की बात बुन्देलखण्ड के कण-कण में गूंज रही थी। ओरछा, चन्देरी, दतिया एवं गड़ा के राम राजाओं ने मिलकर विरोध पत्र पन्ना में भेजा था। यथा---

---

श्री कृष्ण प्रणामी निजानन्द संप्रदाय के सुप्रसिद्ध प्रचारक इतिहासकार पंडित कृष्ण दत्त शास्त्री ने लिखा है---श्रीजी जमात सहित हुडा से रवाना होकर वि.सं. 1744 के चैत्र मास की रामनवमी के दिवस चित्रकूट पहुंचे।.... यहां पर श्री जी 1 वर्ष तक विराजे।..... इधर वीर छत्रसाल जी ने 1 वर्ष के अंदर यमुना किनारे तक के तमाम छोटे-बड़े नगरों पर अपने हुकुम हाकिम और खाने बैठा कर सब पर कब्जा कर लिया।..... इधर श्री जी ने सुना कि छत्रसाल जी यमुना तट से लौट चुके हैं और झांसी के पास आ पहुंचे हैं तो उन पर एक खत लिख भेजा थी--- हम सब पन्ना को वापस आ रहे हैं, उधर से आप भी पन्ना के लिए रवाना होना। निजानन्द सरिता मृत पृष्ठ 785 786 (प्रथम संस्करण)

दम्भ बड़ो उर चारों ल्याये। करि कै गर्व लिखे पठवाये।

राखि एक बैरागी दर में। लैके तिलक करायो घर में ॥23॥

ऐसे नृप तुम हुहौ कैसे। करहु कूह बालक बुधि जैसे।

हम चारों नृप थापैं जुरि कैं। करिहैं तिलक तबहिं अरि मुरकैं ॥24॥

महाराजा छत्रसाल, जो परमधाम की अंगना शकुन दल के अवतार एवं पूर्ण ब्रह्म श्याम श्यामा जी की शक्ति से संपन्न हैं तो मां ने इन चारों को निम्न प्रति उत्तर देकर सावधान कर दिया था।---

पूरन ब्रह्म सहित श्री श्यामा, चलि आये मेरे निजधामा।

कलिमल मेटन आज्ञा कीन्हीं, गैल परोक्ष हाथ में दीन्ही ॥27॥

हाथ सीस मेरे उन दीन्हों, तिलक भाल दै अपनो कीन्हों।

प्रभु की करी मिटत है नाही, नर करतूत उड़े छिन माहीं ॥28॥

तुम सुर होइ असुर मग थापौ, वाही को रुख निशदिन नापौ।

जिन सुर धर्म उच्छेदन किन्हों, सो मग चित्त आपने दीन्हों ॥29॥

ऐसी करि तुम हमको दुषौ, त्यों ढ़िग असुर होत ज्यों मूषौ।

तामैं श्यामवर वर दीन्हों, मेटै कौन लिलाटहिं कीन्हों ॥30॥

उक्त वचन वृत्तांत मुक्तावली के प्रकरण 79 में अंकित हैं,जिसके रचीयता महाराजा छत्रसाल के ही परम शिष्य विद्वान मनीषी आचार्य बृज भूषण स्वामी हैं, अतैवउक्त वचन ऐतिहासिक महत्व के हैं, स्वतः महाराजा छत्रसाल ने अपने शिष्य स्वामी बृजभूषण जी को इस घटना का पूरा ज्ञान कराया था। किस ग्रंथ की रचना महाराजा छत्रसाल के समय ही संवत् है 1751-1755 के मध्य हो चुकी थी, यह घटना वि.सं. 1740 की थी। अतैव महाराजा छत्रसाल द्वारा दिग्विजय यात्रा का किया जाना अपरिहार्य हो गया था।

(इ) राज-तिलक के पश्चात निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी ने महाराजा छत्रसाल जूदेव को राज्य धर्म की शिक्षा दी थी। राज्य के सुव्यवस्थित संचालन में द्रव्य का होना नितांत जरूरी होता है। त्रिकालदर्शी प्रभु ने महाराजा छत्रसाल के आंतरिक भाग 1 को पढ़कर हीरो का वरदान दिया था। इसका ऐतिहासिक प्रमाण तत्कालीन लाल कवि कृत छात्र प्रकार एवं स्वामी बृजभूषण कृति वृतांतमुक्तावली में मिलता है।

शेरों का वरदान छत्रसाल महाराजा को देते हुए निष्कलंक प्रभु श्री प्राणनाथ जी ने कहा था----

तुम तें प्रगट भयो फल सोई, दिन दिन प्रताप आति होई॥

सेवाकाज साथ फल धीरा। उगलै बसुधा तव बहू हीरा॥

---

1. पूरन आस करौ सो मेरी। आतम कंज पद नेरी ॥ 79/5 वृतांतमुक्तावली

ताते नृप तुम भली विचारी। करौ साथ की सेवा भारी॥

अब है रजा हमारी एही। निर्भय काज क'रौ जग जेही॥

बढ़े प्रताप धर्म तें दूनो। होइ जाति बिन शीलै ऊनो॥

प्रक. 79 वृतांतमुक्तावली

वत्स! धर्म में चित्र लगाकर अब प्रजा की सेवा करो। यह हीरे तुम्हें साथ ही सेवा भावना के कारण ही उप जाएंगे संग्राम वत्स! अब तुम निर्भय होकर राजकाज में अरुण सो जाओ। जाति विहीन साम्राज्य की स्थापना ही धर्म का सुमार्ग है। धर्म सास्वत है जातियां भ्रांतियां हैं। विधर्मी राजाओं को नष्ट करना अब तुम्हारा लक्ष्य है, आगे बढ़ो। यही परिस्थिति की पुकार है और यही तुम्हारे प्राकट्य का हेतु है।

(ई) राज-तिलक हुए 3 वर्ष (संवत् 1740-1743) हो रहे थे। अभी तक महाप्रभु प्राणनाथ जी अपनी जमात का भरण पोषण कर रहे थे जो निर्बाध रूप से मेड़ता से चल रहा था। सभी लोगों के मन में यह बात जमी हुई थी, कि श्री प्राणनाथ जी इस जमात का खर्च किसी रसायन ब्लैकेड बूटी के बल पर करते आ रहे हैं, अतैवइस व्यवस्था के लिए किसी ने कभी कुछ नहीं सोचा था। तत्कालीन वित्त के के निम्न वचन वास्तविकता का ज्ञान करा रहे हैं। यथा---

एक बात इत और भई, सब कुंवर ठाकुरों में।

खरच राज की बकसीस देखके, धोखे भयो मन में ॥32॥

खरच इतसे पहुंचे नहीं ए उठत है कहां से।

है इनके पास महाराज के सबों जानी मन में ॥33॥

सिवाए एक महाराज के, सबके मन में बस गई।

बरस तीन बीत गए, तब लग खरच की खबर ना भई ॥34॥

महाराजा छत्रसाल जी ने इसकी सत्यता जाने के लिए जहां महाप्रभु प्राणनाथ जी से जिज्ञासा प्रकट की एक, तब उन्होंने कहा। बस! छत्रसाल इस खर्च की संपूर्ण सेवा राजस्थान के ब्राह्मण इष्ट सुंदर साथ में रहता निवासी राजा राम भजन भाई अभी तक करते आ रहे हैं। दो वक्त, तुम इसके चिंता मत करो।

महाराजा छत्रसाल हकीकत जानकर अत्यंत लज्जित हुए और वापस राज महल में

1 तब एक दिन महाराज ने, पूछी श्रीराज से एह।

सबके मन में धोखो है, ए ख़रच होत हे जेह॥135॥

(वस्तुत, यह प्रसंग महाराजा छत्रसाल की दिग्विजय यात्रा की एक पृष्ठभूमि स्वरूप कारण था। क्योंकि बिन कारन कारज नहि होई कटुसत्य है।)

2 तब फुरमाई श्रीराज ने, ए आवत खरच साथ में से।

मेरता को साथ है, सो भेजत है हमें ॥36॥

आकर ग्लानि से भर उठे।दूसरे दिन भर दीवान को यह बात मालूम हुई एक तब समस्त राज परिवार ने इस सेवा का व्रत लेने के लिए संकल्प धारण किया। दो

महाराजा छत्रसाल ने दोनों हाथ जोड़कर परम प्रभु प्राणनाथ जी से निम्न प्रकार से याचना की, जिसका वर्णन भी तक पृष्ठ साथ में अंकित है।

॥छत्रसाल उवाच॥

तब सब साथ में आए के अरज करे आगे श्रीराज॥146॥

आवेश साथ प्रदेश के और रहे जो इस

इन सबके सेवा की मोहे है गरज॥147॥

अर्थात हे प्रभु! जो सुंदर साथ आए हैं और जो आयेंगे, उन सभी की सेवा करने की मेरी अभिलाषा है। इस अभिलाषा की पूर्ति हेतु सब ठाकुरों ने मिलकर एक रियासत जीतने का लक्ष्य लिया है। इस कार्य की पूर्ति हेतु हम सभी का आप से विनम्र निवेदन है। इस निवेदन को भी तक में निम्न प्रकार वर्णित किया गया है।

और करौ अरज हुजूर में, करो इलाज बाहिर निकलने को।

सब ठाकुरों मिल विचार कियो, एक जागा मारने को ॥148॥

हमको बड़ी उम्मीद है, आप हो असवार।

चले आगे असवारी में, हम जलेब में हो होसियार 149

प्र. 60 (वीतक)

निष्कर्ष--- ऐतिहासिक परिदृश्य में उपर्युक्त अभी तक कथन अति महत्व का है। इस कथन से कई ऐतिहासिक बातें प्रमाणित होती हैं जिसमें महाराजा छत्रसाल की राज्य अभिषेक तिथि का स्पष्टीकरण है तथा बुन्देल भूमि में छिपे आस्तीन के सांपों की गतिविधियां भी परिलक्षित होती हैं। अतैवदिग्विजय यात्रा के शुभारंभ की पूर्व की राजनैतिक गतिविधियों पर भी अच्छा खासा प्रकाश पड़ा है चाहे यह गतिविधियां दिल्ली दरबार की हो अथवा और अच्छा आदमी रियासतों की।

---

1. आवत खर्च साथ में से, ए सुन भयो दरद

   इन कैसे सेवक इनके हम पर गजब की रही ना हद 144 प्रा (वीतक)

2. तब बोले बलदिवान ए बात है सहेल।

   एक जागा मारिए, ताकौ चौथ दीजै मिल ॥145॥

   ए बात पक्को करके, लिखाए लई महाराज ॥146॥ प्र. 60 (वीतक)

दिग्विजय यात्रा का वृतांत

(वि.सं. 1743-1745)

प्राक्कथन---

इतिहास की यह एक अनूठी घटना है कि एक महाराजा अपने धर्म गुरुओं को दिग्विजय यात्रा में साथ लेकर प्रस्थान करता है, इतना ही नहीं वह उन्हें हाथी पर आसीन करवा कर सबसे आगे रखता है और सारी सेना उनके पीछे पीछे चलती है। स्वयं महाराजा उनकी रक्षा पंक्ति में सबसे आगे रहते हैं।

इतिहास की उक्त घटना एक वि.सं. 1743 की बुन्देलखण्ड भूभाग की है। जिसमें महाराजा हैं को महाराजा छत्रसाल तथा धर्मगुरु हैं साक्षात महाप्रभु स्वरूप निष्कलंक बुद्ध कल्कि अवतार श्री प्राणनाथ जी।

महाराजा छत्रसाल सैन्य दल बल के साथ पन्ना से चले और रात होकर कालपी की तरफ बढ़े। इस दिग्विजय यात्रा से बुन्देलखण्ड की प्रजा में प्रसन्नता एवं भयमुक्त वातावरण का प्रसार हुआ। मुग़ल सल्तनत की हिमायती आसुरी प्रवृत्तियां इस प्रकार भाग गई वह नष्ट हो गई जैसे कि प्रकाश होते ही

अंधकार विलीन हो जाता है। जगह-जगह आध्यात्मिक सभाएं एवं समारोह होते गए 2, जिस की खबर दिल्ली सर दरबार तक पहुंची थी। खौफ खाकर यवन और अंगने बुन्देलखण्ड पर किए जा रहे आक्रमणों को रोक दिया था। 3

महाराजा छत्रसाल ने भगवान वेदव्यास की जन्मस्थली कालपी में श्री प्राणनाथ प्रभु को ठहरा कर कनार क्षेत्र को पूर्ण आधीन करके सुंदर 7 की सेवा में सदैव के लिए अर्पण किया था। धन्य है यह क्षेत्र, जिसे सुंदर 7 की सेवा का परम सौभाग्य मिला। 4

महाराजा छत्रसाल दिग्विजय यात्रा बुन्देलखण्ड के पश्चिमी दक्षिणी भूभाग पर आगे बढ़े और महाप्रभु प्राणनाथ जी कालपी से जलालपुर, से हुडा होते हुए रामनवमी:

---

1. संवत् सत्रह सै तेंताले (1743), असवारी करी जब।

   हस्ती पर चढ़ाए के आगे, सेना चलाई तब ॥150॥

   राठ खड़ोत जलालपुर, नजीक कालपी पहुंचे ॥151॥

2. सातों निसान कयामत के, जाहिर किए जब।

   सुन के सिर नीचा किया, मुनकर हुए तब ॥156॥

   हकीकत मारफत के, खोल दिए दरबार।

   ए मेहर मोमिनो पर, सो आवे नहीं सु\मार ॥161॥ प्रक. (वीतक)

3. फेर रनमस्त खा ने, पादसाह के हुकुम।

   सात मजल आइया, लिखाके फेर जाओ तुम ॥26॥ प्रक. 60 (वीतक)

4. कालपी, जालौन, पचनद का भूभाग कनारा क्षेत्र कहलाता है।

1744 को चित्रकूट पधारे, वहां 1 वर्ष पर्यंत जमात सहित निवास किया था, तब तक महाराजा छत्रसाल स्वतंत्र बुन्देल की दिग्विजय यात्रा पर रथा रोड रहे। महाराजा छत्रसाल जी कालपी, जलालपुर एवं सेवड़ा में श्री प्राणनाथ जी के साथ साथ चले थे। इसके पश्चात राजकुमारों को जमा की सेवाएं साथ में भेजा था और स्वयं दिग्विजय यात्रा पर आगे बढ़ गए।

बसंत सुरखी का चित्रकूट से आना

चित्रकूट नरेश बसंत सुर्खी (सोलंकी) ने जब बुन्देलखण्ड के महाराजा छत्रसाल का आगमन से उड़ा में हुआ है ओमा ऐसा सुना तो वह दौड़कर आया तथा निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी के दर्शन कर आनंदित हुआ। उसने महाराजा छत्रसाल से याचना की, की वह निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी को चित्रकूट पधारने को कहें। बसंत सुर्खी के विशेष आग्रह वर्ष एवं मूल स्वरूप की प्रेरणा से महाराजा छत्रसाल ने चित्रकूट जाने की अनुमति दे दी। इसका विवरण भी तक साथ में दर्शाया गया है। यथा---

इहां से असवारी कर से उड़े पहुंचे जब

बसंत सुरखी आए मिला कदमो पकड़े तब ॥162॥

चित्रकूट फूल ले चला पर जुदा रखा आप

तो संसार की लहर का कबूल हुआ ताप ॥163॥

श्रीराज चले चित्रकूट लिया महाराज ए दिल में।

सेवा में भंग होता है, कोई इलाज करो इनसे ॥164॥

तब सेवा के वास्ते, पहुंचाए सब साथ।

कुंवर ठकुराए ने सबै, सौपें श्रीराज के हाथ ॥165॥

एक बरस तहां रहे इन खोले अल्लाह कलाम।

श्रीराज रोसनी जाहिर करी, खुल गए सब ठाम ॥166॥

बसंत सुर्खी ने सिहुड़ा आकर महाराजा छत्रसाल जी के आधीन होने का प्रमाण दे दिया था उनकी सर्वोत्तम निधि सुंदर 7 की सेवा का भी बाहर कुछ काल के लिए मांग लिया। अतैवश्री छत्रसाल महाराजा का बुन्देलखण्ड के पूर्वी एवं यमुना तट के समस्त भूभाग पर दिग्विजय ध्वज प्यार चुका था। अब उन्होंने पश्चिमी दक्षिणी भूभाग की तरफ प्रस्थान किया।

खटोला का संघर्ष -- (संवत् 1744)

ओरछा रियासत, महाराजा छत्रसाल से आंतरिक दुश्मनी रखती थी, इसकी प्रमुख वजह खटोला पर महाराज का आधिपत्य होना था। खटोला को हथियाने के लिए ओरछा

दरबार अनित चलाता रहता था दिनांक ने तथा दिनांक के लगते ही अर्थात 1744 45 मैं 1 वर्ष के ही अंदर तीन बार ओरछा की तरफ से खटोला पर भयंकर आक्रमण हुए।

(अ) (1) राजा ओरछा द्वारा

(2) ओरछा राज्य के द्वारा दवा के नेतृत्व में

(3) ओरछा राज्य के द्वारा पंडित (ओरछा वाले) के नेतृत्व में

इन तीनों बार के युद्ध में एक तथ्य यह भी उभर कर आया कि चन्देरी ओमा दतिया और गढ़ा के राजा राव एकजुट नहीं हुए। गलत है ओरछा राज्य को भयानक पराजयम का सिलसिला झेलना पड़ा। इनके एक साथ युद्ध करने का यह कारण था कि चारों राज्यों के राजाओं ने यदि मिलकर युद्ध किया तो इनकी मान्यता थी कि महाराजा छत्रसाल पूर्व आश्वासंन् को समाप्त कर देंगे तथा युद्ध हारने पर चारों राजाओं की रियासतें केवल इतिहास के पन्नों में ही रह जाएंगी और ओरछा दतिया, चन्देरी एवं गढ़ा का विलय पूर्ण रूप से पटना राजधानी में कर दिया जाएगा। इन चारों ने कूटनीति का सहारा लेकर दूसरी व तीसरी बार क्रमशः दोबारा पंडित को एक खटोला भेजकर विजय श्री का सपना संजोया था। तीनों युद्ध में ओरछा की जो दुर्गति हुई है उसका भी तक ग्रंथ में निम्न प्रकार उल्लेख आया है। यथा---

(1) लै मुहिम खटोला की, राजा ओरछे के।

उतहीं पटक्या हुकुमें, जड़ समेत उखाड़े ॥21॥ प्रक. 61

तब ओरछे के राजा ने, लिया खटोला ए।

लगी फटकार तिनकी, मौत हुआ तिन से ॥168॥ प्रक. 60

(2) फेर ओरछा के राजा का, आया दौवा खटोले पर।

खुवार हुआ भली-भांति सों, फिरा स्याह मुंह लेकर ॥23॥ प्रक. 61

(3) फेर पंडित ओरछे के, चढ़ आए लड़ने।

तब मारा मुलक ओरछे का, मुश्किल हुआ रखना अपने ॥22॥ प्रक.61

दो बार पराजय पाकर और शाका मंत्री (पंडित भी अहंकार में भरकर आग बबूला हो उठा और ग्राम वह भी लंबी सेना लेकर खटोला पर आ चढ़ा था। इसका भी वही हश्र हुआ।

(आ) ओरछा राज्य भयानक युद्ध से करा उठा। बेचारी कॉमेडी राजमाता महारानी अमर कुंवरि के विवेक से और अच्छा बच सका था पुण्य उमा राम राजमाता पालकी में बैठकर रणभूमि पहुंची थी और महाराजा छत्रसाल ने और अच्छा राज्य को आवेदन देकर चौथे युद्ध को

1. दौआ और पंडित पर, भया कसाला जोर।

विघ्न पड़े उतहीं, किया दज्जालें सोर ॥28॥ 61 (वीतक)

होने से रोक लिया था, क्योंकि तीसरे युद्ध में महाराज की सेना ने खटोला से ओरछा तक, ओरछा की सेना का पीछा करके भयानक मार दी थी और तभी महाराज ने ओरछा पर चढ़ाई हेतु घेराबंदी प्रारंभ कर दी थी।

मारा मुलक ओरछे का मुश्किल हुआ रखना अपने ॥27॥

दौआ और पंडित पर, भया कसाला जोर।

विघ्न पड़े उतहीं, कियां दज्जाले सोर ॥28॥

प्रक. 61 (वीतक)

चौथे युद्ध की भूमिका संवत् 1745 के प्रारंभिक में बनी थी। महाराज की उक्त नीति अपनाने का प्रमुख कारण था--- की ओरछा को उचित दंड देकर खटोला का भय मुक्ति बना दिया जाए।

जैतपुर के राजा का आक्रमण---(संवत् 1744)

दिग्विजय यात्रा के समय जैतपुर के राजा ने एक बड़ी सेना लेकर महाराज के ऊपर आक्रमण कर दिया। जैतपुर का राजा मद में चूर था। उसे विधर्मी ताकतों का सहयोग मिल रहा था। देव राज्य की स्थापना में इन विधर्मी ताकतों को भयानक मार सहनी पड़ी। इसकी सेना कालका वलित होने लगी, बेचारा मारने आया था खुद ही राक्षसी मौत मरा। उसकी यह सोच गलत सिद्ध हुई कि खटोला युद्ध में छत्रसाल व्यस्त हैं और वहीं हो चले हैं, ऐसे में उन पर मुहिम छेड़ कर सरलता से विजयश्री का वरण किया जा सकता है। जैतपुर का राजा भूल से कजली के बदले आज को खा बैठा ओमा जलकर राख हो गया। दिन को रात समझकर उड़ने वाले चमगादड़ की भांति ही इसका हश्र हुआ। जी तक प्रकरण 61 में स्वामी लाल दास महाराज ने इसका उल्लेख निम्न प्रकार किया है---

फेर जैतपुर के राजा ने, यहां आए मुहिम करी।

ताको खुवार ऐसा किया, पूरी लानत उतरी ॥22॥

इस वजह से छत्रपति ओके भी छत्रपति, महाराजाओं के महाराजा छत्रसाल की विजय दुंदुभी सर्वत्र गूंज उठी। प्रजा में खुशी की लहर सर्वत्र छा उठीं।

यवन सत्ता की मुहिम (1743-1744)

महाराजा छत्रसाल ने पश्चिमी बुन्देलखण्ड एवं मालवा के भूभाग सेवन सत्ता को उखाड़ फेंका था। इसका विरोध करने के लिए औरंगज़ेब ने बुन्देलखण्ड में बसी एवं

---

1. संभव तो यह है कि यह तिथि संवत् 1744 के समापन के समय पर घटी है, क्योंकि श्री प्राणनाथ जी संवत् 1745 के लगते ही पढ़ना आ चुके थे। इससे कुछ दिन ही पूर्व छत्रसाल जी पन्ना में पहुंचे थे।

सीपी आसुरी शक्तियों को समर्थन देकर दिग्विजय यात्रा को रोकने की पुनीत अपनाई थी, परंतु उसकी यह नीति कुछ भी करने में सफल ना हो सकी, अपितु ओरछा, चन्देरी, दतिया गड़ागा जैतपुर रियासतें भी दिग्विजय यात्रा की मारक शक्ति से सिर छुपा कर बैठ चुकी थी, जैतपुर रियासत अस्तित्व विहीन हो गई थी। तब उन्हें औरंगज़ेब के पास इस दिग्विजय यात्रा की सूचना पहुंची थी, उस समय औरंगज़ेब नौरंगाबाद में निर्वासित जीवन भोग रहा था तथा दक्षिण में डकैती मुग़ल सल्तनत को बचा रहा था। उसने अपने विशेष विश्वासपात्र प्रण मस्त था की अगुवाई में एक विशाल सेना दिल्ली से बुन्देलखण्ड पर चढ़ाई के लिए संदेश भेजकर भिजवाई थी।

विशाल लश्कर लेकर समस्त खां आगरा की तरफ चल दिया। इसी बीच एक चमत्कार हुआ, पीरजादा नामक एक व्यक्ति जो औरंगज़ेब का एक विशेष हिमायती व्यक्ति था। उसने ध्यान में देखा कि छत्रसाल के गुरु (निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी) बहिश्त में सिंहासंन पर आरूढ़ हैं इतना ही नहीं 17 साल के गुरु ही अल्लाह के रूप में नजर आ रहे हैं यह बात मिट्ठू पीरजादा ने औरंगज़ेब को लिखकर नौरंगाबाद भेजी। मजहर नामा, जो कालपी में लिखा गया था, वह भी उसे मिल चुका था। दोनों को पढ़कर औरंगज़ेब आश्चर्यचकित भी था और हैरान भी। उसकी अंतरात्मा ने शहर जाधव को दिल्ली से बुलवाया और सारे समाचार पूछे उन विराम समस्त कहां को वापस बुलाने का फरमान जारी कर दिया, तब तक समस्त का साथ मजल चलकर आगरा आ चुका था। वापसी का शाही फरमान पाकर अंदर खुशी छिपाए वापस, वह दिल्ली लौट गया। महाराजा छत्रसाल की इस चमत्कारिक विजय का उल्लेख भी तक ग्रंथ प्रकरण संख्या 61 में पाया जाता है। 1 सप्ताह बिना युद्ध की हार मान कर बैठ गई। एवं सत्ता की इस मुहिम पर बुन्देली जनता ने महाराजा छत्रसाल की अद्भुत विजय मानी थी।

फेर राजा के मुलक लिए की, पहुंची खबर नौरंगाबाद।

सुन साह ने रनमस्त खां को, फौज लेके भेजा विवाद ॥24॥

पीछे से परिजादे में हुईके, भई इसारत रसूल की जब।

तामें विचार करके, लिखा किया साह ने तक ॥25॥

फेर रनमस्त खां ने, पातसाह के हुकुम।

साथ मजल आइया, लिखा के फेर जाओ तुम ॥26॥

यवन सत्ता की भारी मुहिम दैवीय प्रताप से स्वतः भाग गई और महाराजा छत्रसाल की दिग्विजय यात्रा को दैवीय समर्थन मिला। दिग्विजय भोज औरंगज़ेब आत्मा में भी गढ़ गया। जिस प्रकार से प्रकाश होने पर अंधकार ले हो जाता है उसी प्रकार से परब्रह्म की शक्ति से परिपूर्ण युगपुरुष छत्रसाल के तेज से यवन मुहिम में विलीन हो गई।

राणा प्रतापसिंह का आक्रमण---(वि.सं. 1744)

आसुरी प्रवृत्ति के वश में होकर, राणा प्रतापसिंह ने दिग्विजय यात्रा पर दृष्टि डाली। उसने महाराजा छत्रसाल पर आक्रमण किया परंतु वह आपस में ही लड़ने लगा लो सब जिन्हें वह युद्ध में लाना चाहता था, वह उन सभी के ही कोप भाजन का शिकार हो गया। महाराजा छत्रसाल से युद्ध की चाहत लिए बेचारा राणा काल के गाल में समा गया था। अभी तक में इसका उल्लेख निम्न वत है---

फेर राणा परताप सिंह ने, बुरी करी नजर।

तो ख्वारी आपस में भई, है कयामत की फजर ॥29॥

प्रक. 61

महाराजा छत्रसाल जी की दिग्विजय यात्रा सफल अभियान की लक्ष्य गति को प्राप्त हुई बढ़ती रही। वस्तुतः महाराजा छत्रसाल की कीर्ति पाताल से आकाश तक फैल गई थी। कुंवर हृदयशाह युवराज के प्रकट होने पर कवि कर्म ने छत्रसाल देव की सत्ता का बखान निम्न शब्दों में किया था---

सत्ता जाकी समुद्र लों, तत्ता तेज दिनेस।

ता छत्ता नरनाह के, प्रगट्यो नृप हिरदेस॥

प्रथम ख्याति पुत्र को पिता के नाम से ही मिलती है करण कवि ने निर्देशों का परिचय पिताश्री की ख्याति के साथ किया है।

दिग्विजय का अंतिम चरण

(अ) दिग्विजय यात्रा का उपचार स्वामी लाल दास जी ने अभी तक 161 में सारांश में संक्षिप्त रूप से लिखा है परंतु वह वर्णन गागर में सागर की भांति रहस्यों को उद्घाटित कर रहा है।

महाराजा छत्रसाल जी ने समग्र बुन्देलखण्ड में दिग्विजय ध्वज लेकर सेना सहित भ्रमण किया। उन्होंने विधर्मी आसुरी प्रवृत्तियों को मारा और उसके घर ध्वस्त किए तथा अपनी स्थाई सत्ता स्थापित की।

जिनों जिनों जैसी करी, तीन सजा पाई तित।

जैसी जैसी जनों करी, ताए मारा उसी बखत ॥30॥

मरने के वक्त में, दज्जाल पटकत हाथ।

खुवार किया संसार को, जादा जो उनके साथ ॥31॥

दज्जाल की छाती कही, दूध पीवे-तिन सें।

सो खुवारी तिन से, रहे परेशानी में ॥32॥

उजाड़ सब सहरों का, काहू होए न आराम।

सब परेशान होएंगे, अपने-अपने काम ॥33॥ (वीतक)

इस प्रकार महाराजा छत्रसाल की इस दिग्विजय यात्रा का कार्य पूरा हुआ। निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी ने संदेश भेजकर महाराजा छत्रसाल जी को पढ़ना वापस लौटने को कहा पूर्व राम स्वामी बृज भूषण जी ने वृतांतमुक्तावली के प्रकरण 79 में यह वृत्तांत निम्न प्रकार उदित किया है।

करी ओरछे नृप तैयारी। इत को सेना जोरी भारी॥

काल ग्रास लीन्हों तब ताहीं। नाम निशान रहयो कहु नाहीं॥

श्रीजू हुकुम करयो यह कीजै। अब सब परना को पग दीजै॥

(आ) वि.सं. 1745 के लगते ही महाराजा छत्रसाल के धर्मगुरु निष्कलंक प्रभु श्री प्राणनाथ जी ने चित्रकूट से पन्ना की तरफ जमात सहित प्रस्थान किया। श्री प्राणनाथ जी के प्रस्थान की सूचना सारी जगह फैल गई थी। इस सूचना को सुनकर औरंगज़ेब के सिपहसालार ने जमुना पार करके शिमला के निकट गुप्त रूप से डेरा डाला, ताकि वह छत्रसाल जी के गुरु एवं उनकी जमात की लूट मार कर सके। लूटमार को इसे क्षेत्र की जनता का कृत्य मानकर छत्रसाल का कहर यहां की जनता पर पड़ेगा। इससे जनता त्रस्त होकर या एक सप्ताह की हिमायती बन जाएगी। छत्रसाल की सत्ता डिगने लगेगी। परंतु उल्टा हुआ होगा औरंगज़ेब का सिपहसालार मिट्ठू पीरजादा स्थानीय लोगों के हाथों से बुरी तरह पराजित हुआ। समकालीन बी तकोस का विशद वर्णन विद्यमान है। यथा--

फेर मिट्ठू पीरजादे ने, बुरी जो करी नजर।

पांच हजार असवार ले दौड़ा, राह में भई फजर ॥169॥

तिनको मारा चमारों ने, फिरा मुंह स्याह ले।

हुई लानत संसार में, काफर होने के ॥170॥

और पुन जिन जिन करी, तिन तिन की पाई सजा ॥171॥

(स्वामी लालदास कृत बीतक प्र. 60)

छत्रसाल गुरु यह मग आये। सुनि मिट्ठू पिरजवा धाये ॥56॥

निकस्यो पंच सहस लै सेना। मग में प्रातभयो तब ऐना॥

सिहुंड़ा गाम एक के माहीं। रहै चमार धनीश्वर ताहीं ॥57॥

रहै व्याह सुत ताके द्वारा। कुल्लि परगने जुरे चमारा॥

सुनि सेना ते सब उठि धाये। खूबनि सबरे यवन भगाये ॥58॥

गई तास इज्जत जग माही। घटयो करीना मुख पर स्याही॥

दाखिल रह्यो न साहि सभा में। बूड़ि मरयो माया सर्वा में ॥59॥

(स्वामी ब्रजभूषण कृत वृतान्तमुक्तावली प्र. 79)

मिट्ठू पीरजादा द्वारा संवत् है 1744 की समापन बेला में एक किस दुष्ट कृत्य को किए जाने पर ग्रामीणों ने जो भयंकर मार दी थी, उससे एक तथ्य उभरकर सामने आता है कि--- महाराजा छत्रसाल के नेतृत्व में बुन्देली जनता एकजुट सीमा चाहे वह किसी भी वर्ग जाति की रही हो। सबके अंदर मातृभूमि के प्रति प्रेम एवं महाराजा छत्रसाल के प्रति श्रद्धा का भाव था। वे सभी महाराजा छत्रसाल को हर वक्त अपना आरक्षक मानते थे। बुन्देली जनता की इसी भावना के कारण सिहुला के हरिजनों ने ही अपने बलबूते पर बिट्टू पीरजादा की 5000 आरोही सेना को परास्त कर दिया था उनको राम वस्तुतः जनता की यह विजय, महाराजा छत्रसाल की दिग्विजय यात्रा की सफलता की सूचक थी।

पांच हजार अश्वारोही सेना को छुड़ाने के जुड़े (जमा हुए) अतिथियों ने लाठी-डंडों के बल पर मार के भगाया जो कि एक अविश्वसनीय सी लगने वाली घटना है परंतु निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी के चमत्कार से यह सब घटित हुआ था। एक मार से सशस्त्र सेना के सिपाही रात के अंधेरे में तारों की तरह भाग खड़े हुए थे। बेचारा मिट्ठू पीरजादा,ते लोगों द्वारा प्राप्त होकर श्यामू के लिए जमुना पार करके चला गया था। यह समाचार समूचे बुन्देलखण्ड में विद्युत गति से फैल गया। यवन सिपहसालार की दुर्गति एवं श्री प्रभु प्राणनाथ जी के प्रताप की गाथा मेहराज चरित्र (बी तक में भी निम्न प्रकार गाई गई है।

मिट्ठू मियां एक सिरदारा। पांच हजार लिए असवारा ॥131॥

श्रीजी को लूटन सो धायो। भटकत रात भोर हवे आयो॥

काफर कुटिल अंधकार डारे। बीचहिं तिन्हें चमारन मारे ॥132॥

जिन साहिब सों कुंजरि कीनी। तिनकों सजा बेगि दै दीनी॥

श्रीजी को प्रताप अति भारी। देखो दिल के नैन उघारी ॥133॥

प्रकरण: 60

(इ) स्वामी लालदास जी कृतक में दिग्विजय यात्रा की सफलता एवं उस दौरान निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी के चमत्कार का वर्णन प्रकरण 5861 तक सूक्ष्म रूप से मिलता है। तक सूक्ष्म रूप से मिलता है।यह सुख में वर्णन इस काल की अनेकों ऐतिहासिक घटनाओं को मुखरित कर रहा है। दिग्विजय यात्रा में महाराजा छत्रसाल जी को संपूर्ण सफलता मिली, सर्वत्र दिग्विजय ध्वज लहराया, इसका विशद वर्णन भी तक में अंकित नहीं है, फिर भी निम्न पंक्ति से सारी तस्वीर साफ साफ दिखाई देती है और तब फिर कुछ भी जानने को शेष नहीं

---

1. यह घटना वि.सं. 1745 के शुभारंभ के दिनों की भी संभव है, कारण कि श्री प्राणनाथ जी संवत् 1745 के लगते ही सिहोरा होते हुए पन्ना पहुंचे थे।

बचता है। तथा--

और पुन जिन जिन करी, तिन तिन ही पाई सजा।

एक काफर कुरान में, एही लिखी ताले कजा ॥171॥

अर्थात दिग्विजय यात्रा के समय जिसने जैसा भाव दिखाया, उसे वैसा ही फल मिला--- आतंकियों को दंड भेद एवं सज्जनों को सुरक्षा संरक्षा एवं स्नेह। कर्मियों को सफल एवं विधियों को सजा; दिग्विजय यात्रा का लक्ष्य था--- भारत वसुंधरा में मानवीय गुणों की स्थापना तथा मानवीय गुणों का हनन मानवीय मूल्यों का प्रसारण करना।

उपसंहार

महाराजा छत्रसाल जी प्रभु आज्ञा पाकर ना लौटे आए तदोपरांत निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ भी वि.सं. 1745 के लगते ही चित्रकूट से पढ़ना आ गए विराम परना पुरी में सर्वत्र आनंद मंगल की लहर छा गई थी यथा

चित्रकूट से परना आये, पुरी अपनी में छवि छाये।

सत्रह शत पैंतालिस लगते, काढ़यो साथ सकल सब जग ते॥

(79/60 वृतांतमुक्तावली)

दिग्विजय यात्रा के समापन के अवसर पर पढ़ना नगरी में जो आनंद का वातावरण छाया हुआ था उसका दिग्दर्शन महान कवि बख्शी हंसराज ने स्वरचित महाकाव्य महाराज चरित्र में किया है। गीतिका में यह वर्णन अपार सुख को प्रदान कर रहा है यथा

श्रीराज सकल समाज ले परनापुर कहं आईयों,

महाराज आतुर खबर सुनि पुरजन सहित उठि धाइयो ॥1॥

अति प्रीत रीत बढ़ाय के कर जोर कें पायन परे,

करि कृपा पूरन प्रेम सों प्रभु हाथ सिर ऊपर धरे ॥2॥

श्रीराज श्री छत्रसाल के गुन जात नहि प्रगत कहे,

हिल मिल के निज प्रेम सों चख चाह हित सों रहे।

कीने कलस अरु पांवड़े फिर भवन भीतर ल्याइयो,

कहं लगि कहों सुख वरनि के ऊमगि आनंद छाइयों ॥3॥

---

1. और अमीर बहुत जे आये, तिन्हें मार जग जस बगराये।

राज मेहरे राज पर कीने, राजतिलक छत्ता को दीने ॥33॥ प्रक. 61

जिन जैसी बदफैली कीनी, तैसी तिन्हें सजा प्रभु दीनी।

जो बलाय इत उत्ततें आवें, सो बलाय कहूं रहन न पावे ॥34॥ (मिहराज चरित्र)

॥चौपाई॥

पदमावती पुरी छवि छाई। अति पावन पुरान मति गाई।

जम्बू दीप पवित्र बखानो। तिनमें भरतखण्ड शुभ जानो ॥4॥

भरतखण्ड में अति छवि छायो। विदित बुन्देल खण्ड मन भायो।

तिह मध्य परना पुरी बखानी। पावन तिहूं लोक में जानी ॥5॥

करहि राज तहं नृपति छतारो। जिनकों जस फैल्यौ अति भारो।

इन समान राजा नहि कोऊ। दान खड़ग सालिम कर दोऊ ॥6॥

(प्रकरण-61)

वस्तुतः दिग्विजय यात्रा का समापन, संवत् 1739 के लगते ही हो गया। महाराजा छत्रसाल जी सोमा महाप्रभु प्राणनाथ जी तथा समस्त सेना एवं सुंदर 7 समाज सहित पर ना लौट आए। सारे जगत में यह सब जाहिर हो गया।

महामति कहें सुनो साथ जी, यह कीमत की बात।

जब आए तुम परना मिने, तब की ए विख्यात॥

(60/172) वीतक

खैरन्देश खां से युद्ध [वि.सं. 1757 (1701 A.D.)]

औरंगज़ेब ने बुन्देलखण्ड के अति महत्वपूर्ण सामरिक केंद्र कालिंजर को इनके निराकरण हस्तगत करने की योजना बनाई थी गौ माता की एक छात्र हिंदू साम्राज्य बुन्देलखण्ड में मुग़ल सल्तनत कायम की जा सके। उसके अंतर्मन में यह योजना इसलिए उठी थी, कि बाबर (मुग़ल सल्तनत का संस्थापक जोकि मुग़ल वंश का प्रथम शासक था अर्थात वह (बाबर उसके पिता में का प्र पिता में था। बाबर ने भी बुन्देलखण्ड में तभी पांव पसार पाए थे, जब कालिंजर का किला अपने कब्जे में कर लिया। उसके पुत्र हुमायूं उसे जब शेर शाह सूरी ने यह किला छीन लिया था सब हुमायूं को दिल्ली से

15 वर्ष तक दूर रहना पड़ा था कालिंजर दुर्ग पर होने हुमायूं का कब्जा होने पर मुग़ल सल्तनत बुन्देलखण्ड में अपनी जड़े जमा पाई थी। औरंगज़ेब ने अपने पूर्वजों की नीति का गुप्त रूप से कार्यान्वित करने के लिए योजना बनाई।

इसी योजना के अनुसार औरंगज़ेब ने अति विश्वास पात्र एवं बहादुर सैन्य से पैसा ला खैर अंदेश खां को बुन्देलखण्ड भेजकर कालिंजर दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए भेजा। एक बहुत बड़ी सेना लेकर कालिंजर की ओर बढ़ा। महाराजा छत्रसाल ने इसकी सेना को बुरी तरह कुचलने के लिए उसे अंदर तक आ जाने का मौका दे दिया।

खैरन्देश खां चुपके से आगे बढ़ता चला आया, उसे क्या पता था कि यह शांति एक भयंकर तूफान की पूर्व चेतावनी थी। महाराजा छत्रसाल ने योजनाबद्ध तरीके से

मुग़ल सेना को घेर लिया। मांधाता चौबे, कालिंजर दुर्ग के फौजदार ने करारी मार दी। मुग़ल सेना बुन्देली सेना से चारों और गिर गई। महाराजा छत्रसाल ने खैर अंदेश खां की मंशा को चकनाचूर कर डाला। बेचारा युद्ध में असफल हुआ, जान बच गई। यह औरंगज़ेब योजना कपूर की तरह काफूर हो गई।

यह युद्ध अप्रैल, 1701 में हुआ था। बूढ़ा औरंग नवरंगी ख्वाबों से वंचित रह गया। मुग़ल सल्तनत उसके आंखों के सामने ही रहती चली जा रही थी।

पुरदिल खां से युद्ध [वि.सं. 1758 (1701 A.D.)]

औरंगज़ेब का अति पराक्रमी एवं चहेता एक सेनापति पुरदलखान था। महाराजा छत्रसाल के सम्मुख जितने भी सेनापति आए, उन सभी ने मुंह की खाई। अधिकांश चौथ देकर छूटे थे और अनेकों जख्मी होकर यमलोक पहुंच चुके थे तथा कई तो सीधे तलवार के वार से खण्ड खण्ड होकर रणभूमि में ही काल कब लेट हो गए थे। इन युद्धों से राज्य विस्तार भी हुआ तथा राज्य कोष भी बढ़ा।

बुन्देलखण्ड को पुनः अधीन करने की तमन्ना से बनाए हुए यवन औरंगज़ेब ने आखरी कश लगाते हुए एक विशालतम सेना देकर काल सदृश्य पूरे दिल था वह बुन्देलखण्ड छीनने के लिए भेजा। बुन्देलखण्ड पर मुग़ल झंडा फहराने के लिए फल खाने कुछ किया। अहंकार में मस्त और दिल खाने महाराजा छत्रसाल जी को सीधी चुनौती दी थी। महाराजा छत्रसाल तैयार बैठे थे इस आक्रमण को विध्वंस करने के लिए।

औरंगज़ेब के इस चहेते पुर्दल खाने महाराजा छत्रसाल को आ घेरा। परस्पर भयंकर युद्ध छिड़ गया ओ मां गणगौर स्वर गूंजने लगा। बुन्देली रणबांकुरे प्राण प्राण से भिड़ गए। मुग़ल सेना पर भीषण

प्रहार होने लगा, मगरपुर दिल खां लंबी तैयारी करके आया था। मुग़ल और बुन्देली सेना के बीच का यह घमासान युद्ध मौत को रेखांकित कर रहा था। और दिल था की विशाल सेना को महाराजा छत्रसाल ने खूब चकाचक आकर मारा, बुन्देली सेना के हौसले महाराजा छत्रसाल की व्यू रचना से और भी बढ़ गए विराम अब तो बुन्देली सेना पर खून सवार था सोमा मुग़ल सेना गाजर मूली की तरह कटने लगी। भीषण मारकाट से मुग़ल सेना में खलबली मच गई पुलिस ने अंतिम बाजी लगाकर सीधा मोर्चा छत्रसाल की विशिष्ट सैन्य टुकड़ी पर लगाया भयानक युद्ध चल गया 70 साल जूदेव की अपराजिता तलवार एक की चमक से चकाचौंध मुग़ल सेना आपस में भिड़ गई। मुग़ल सेना शहर में छूटी। मुग़ल सेना चूहों की तरह ढूंढने लगी, परंतु

---

1. ज्यों अब्बल में अली की, जाहिर जुलफीकार।

त्यों आखर छत्रसाल की, इलाही नूर तलवार ॥58/65॥ (वृतान्तमुक्तावली)

बुन्देले बाजो ने उन सब की इस अंतिम अभिलाषा को छीन छीन कर कॉल कमलेश कर लिया। यह युद्ध भीषण कम युद्धों में एक था। मुग़ल सेना निस्सहाय हो उठी। इतने में सामने आए पुर्दिल खां को अति क्रोधित होकर महाराजा छत्रसाल ने घेर लिया और अपनी तलवार से उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले, बेचारा पुर्दिल का, बंदी बनने की तमन्ना लिए ही रहा, सीधे हम लोग सुधर गया।

महाराजा छत्रसाल ने इसके पूर्व किसी भी मुग़ल सेनापति का इस प्रकार से वध नहीं किया था, इस बार महाराजा छत्रसाल ने शठे शाठ्यम समाचरेत का परिचय और गंजे को देकर अपनी बदली रणनीति का दर्द दर्शन कराया सुंदरम औरंगज़ेब इस शर्मनाक पराजय से बिल्कुल निराश हो गया, फिर उसने किसी भी अपने सेनापति को बुन्देलखण्ड नहीं भेजा।

अनुशीलन

परमपावन बुन्देल भूमि पर मुग़ल सल्तनत ने अनवरत अत्याचार ढाए थे संग्राम वि.सं. [वि.सं. (1627 A.D.)] के उपरांत शाहजहां के शासंन्काल में इस पावन भूमि को परतंत्र करने के लिए अनेकों कुचा ले चली, जिसमें वह सफल हुआ तथा महाराजा चम्पतराय जैसे विवेकशील प्रजा पालक को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। इन्हीं के लाल श्रीपाल कुमार छत्रसाल ने वि.सं. 1728 (1671 A.D.) की जेट शुक्ला पंचमी से मुगलों के विरुद्ध स्वराज्य अभियान का शुभारंभ किया था। 5 सवाल एवं 25 सवारों की नन्ही सी सेना ने मुग़ल सत्ता का अंत कर दिया था। स्वतंत्र बुन्देलखण्ड में छत्ता (छत्रसाल) की धाक नव मंडल में चमक उठी थी।

कुमार छत्रसाल की बुन्देलखण्ड स्वतंत्र की लौ को बुझाने के लिए मैदान में अत्याचारी कॉमेडी कॉमेडी एवं पोर्टल पर जेब ने सैकड़ों पराक्रमी अपने सेनापति सितारों को बुन्देलखण्ड भेजा था; जिन्होंने बुन्देल भूमि पर आकर भयानक संग्राम किए थे। धर्म रक्षक जनसेवक महाराजा छत्रसाल ने इन सभी को हमेशा पराजित किया था। उन्होंने देश काल एवं परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए रणनीति का निर्धारण किया था--- द्वंद युद्ध सोमा छापामार युद्ध का चक्रव्यू शैली आदि को अपनाया था।

औरंगज़ेब ने छत्रसाल जी के दमन के लिए एक से बढ़कर एक पराक्रमी व विश्वास पात्र फौजदार ओ को बड़ी-बड़ी सेनाएं देकर तथा लंबे लंबे प्रलोभन देकर बुन्देलखण्ड भेजा था, पर वे एक-एक कर गाजर मूली की तरह विध्वंस होते चले गए। बुन्देलखण्ड में युद्धों की आतिशबाजी सी चलती थी, और औरंगज़ेब के अंतर्मन में बुन्देलखण्ड हड़पने की कामना ही इस आतिशबाजी में घी का काम कर रही थी। औरंगज़ेब की सेना नष्ट हो रही थी, उसका कोर्स भी लुटा जा रहा था, शनै शनै उसका मानसिक

संतुलन भी धैर्य खोता जा रहा था। कुमार छत्रसाल इस आतिशबाजी को लंबा खींचना चाहते थे, गलत है वह मुगलों को खेल खिला खिला कर मारते थे, शॉट भी लेते, राजकोष भी लूटे (इससे बुन्देलखण्ड की वार्षिक आय में अतिशय वृद्धि हुई थी। कुमार छत्रसाल धरती पर उपजे वनों को मारने के लिए औरंगज़ेब सेना को बुन्देलखण्ड में काफी अंदर उसने का मौका दे देते थे, अलार्म में फंस कर रह जाता था पुलिस और फिर उसकी गति चूहे दानी में बंद चूहे जैसी बन जाती थी। बेचारा सेना कटवा कर एवं स्वास्थ्य करता था। जान बची तो लाखों पाए, लौट के बुद्धू घर को आए तो अपनी सफलता मानकर धन्य धन्य होते थे। हर एक के बाद आने वाला हर मुग़ल फौजदार अपनी जान सुरक्षित मानकर बुन्देलखण्ड में रंगी सेना के साथ आधा मकसद था। हर्ष सभी का एक ही था।

महाराजा छत्रसाल ने अपने सदगुरु श्री प्राणनाथ जी से हीरो का वरदान पाया था, जिससे उन्हें धन की आवश्यकता ना रही। बार-बार आक्रमणों से जनसामान्य भी परेशान हो रहा था तथा प्रजा में असुरक्षा पनप रही थी, महाराजा छत्रसाल ने रणनीति में परिवर्तन करते हुए मुग़ल सिपहसालार अब्दुल समद को आखरी बार समाधान किया था और इसी के माध्यम से सभी शुभ में अपनी खबर पहुंचाई थी---

.... सब जागा खबर भई सोमा के अब्दुल समद हार गए हो सोमा सब को डर भयो... (महाराजा छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम--- आषाढ़ 10 संवत् 1788 मु. मऊ) इसी पत्र का परिणाम था कि वि.सं. 1737 में जब बहलोल खां से राजगढ़ (पन्ना) के निकट युद्ध हुआ था तब महाराजा छत्रसाल ने इस का सिर धड़ से अलग कर दिया था, फल स्वरुप दस बारह वर्षों (वि.सं. 1745-1756) कोई भी मुग़ल सिपहसालार युद्ध करने को तैयार हुआ था एक, औरंगज़ेब अत्यंत परेशान व शर्मिंदा था तब उसने बड़ी मुश्किल से खैर अंदेश फौजदार को तैयार कर पाया था। उसे एक विशालतम से ना देकर

वि.सं. 1757 में बुन्देलखण्ड भेजा था, वह पराजित हुआ। तब पूरे दिल खा को भेजकर हम पूरीर हम पूरी करनी चाही, परंतु भयानक युद्ध में महाराजा छत्रसाल ने दिल कांच के टुकड़े टुकड़े कर डाले थे। इस भयानक युद्ध की परिणति देखकर मुग़ल सिपहसालार छत्रसाल के नाम से थर थर कांपने लगे। सभी मुग़ल

---

1. तहतहब्बर खांन हराय, अरु अनबर कि जंग हरि,

सतरुद्दीन बहलोल गए, अब्दुल्ल समद मुरि।

महमूद को मद मेटि, सेर अफगनहि जेर किय,

अति प्रचंड भुजदंड, बलन केहि ने दंड दिय॥

भूषण बुन्देल छत्रसाल, डर संग तज्यो अवरंग लजि,

इक्के निसान सक्के समर, (सो) मक्क मक्क तुरक्क भजि॥ (भूषण)

2. दिग्विजय यात्रा (वि.सं. 1743-44) के उपरांत

फ़ौजदारों ने मिलकर जीवन में कभी भी 17 साल से युद्ध ना करने की कसम खाकर औरंगज़ेब को अवगत करा दिया, जिसे सुनकर उसकी छाती को सांप सूंघ गया था। बेचारा औरंगज़ेब मरता क्या न करता-- वि.सं. 1761 में सोते हैं विवश होकर छत्रसाल से लड़ने के लिए आया था।

औरंगज़ेब से युद्ध [वि.सं. 1761 (संन् 1704 ई.)]

जनश्रुति है कि औरंगज़ेब अंतिम बार सोते हैं युद्ध एक करने के लिए 900000 सेना लेकर बुन्देलखण्ड की तरफ बड़ा। उसकी सेना पन्ना से पश्चिम के निकट के पहले 12 कोस में आकर ठहर गई। वि.सं. 1761 के लगते ही चैत्र शुक्ल पंचमी को युद्ध हुआ था। इस युद्ध में औरंगज़ेब को करारी मात खानी पड़ी थी।

इस युद्ध में उसकी सेना के 45 उमराव 38 खान सरदार और 5 लाख सिपाही मरे थे तथा 2 लाख घुड़सवार और 7 हजार हाथी मार डाले गए थे। सैनिकों में अरबी, मौना, मुग़ल, अमीर, रूबेल, हबसी, पीरजादे, शेख, मलेच्छ, मेवाड़ी आदि काफी संख्या में वीरगति पाए थे। महाराजा छत्रसाल जूदेव साक्षात मृत्युदंड लिए तीव्र गति से रणभूमि में युद्धकर रहे थे, मानव में उड़ते हुए कॉल वर्षा कर रहे हो। तत्कालीन राष्ट्र कवि भूषण ने ठीक ही कहा है---

निकसत म्यान तें मयूखै प्रलै भानु कैसी

फारै तमतोम से गयंदन के जाल कों।

लागति लपटि कंठ बैरिन के नागिन सी,

रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन के माल को॥

लाल छिितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,

कहां लौ बखान करौ तेरी करवाल कों।

प्रतिभट कटक कटीले केते काटि-काटि,

कालिका सी किलकि कलेऊ देती काल को ॥1॥

कीजो सनमान मान देखी बस आन वान,

शान दान झूझ में न कोऊ ठहरात है।

भूषण प्रचण्ड मार्तण्ड सौ प्रताप देख,

भागवे को पक्षी और पठान थररात हैं॥

---

1. वीतक ग्रंथ में युद्ध का उल्लेख नहीं है क्योंकि यह युद्ध बी तक रचना के नौ वर्ष बाद (संवत् 1761) में हुआ है अतैव इस परिवेश में तत्कालीन इतिहास के गहन शोध अभिनय की आवश्यकता है।
2. पाठ भेद: भूषण भनत वीर छत्रसाल बाहुबली।
3. पाठभेद: नियरात

शंका काम पत्र अमीर दिल्ली वाले,

चम्पत के लाल के नजारे यह रात है।

चहूं ओर ताके चकवा के दल ऊपर त्यौ,

सत्ता के प्रताप के पताके फहरात हैं॥2॥

तत्कालीन लाल कवि जो एक महान पराक्रमी योद्धा थे और महाराजा छत्रसाल के साथ ही थे उनके निम्न रचना इस परिवेश में अवलोकनीय है---

घन के समान दल दाब आयो चारों ओर,

पैठ के भाए में सारसौ पढ़त है।

रोस कर हमे अनगिनत अमीर डरे,

साई औ अगई मुख छप्पय पढ़त हैं॥

लाल कवि कहै सब चंपति के चक्कवै,

बोधे समसेर खोर-खोरव रढ़त है।

सत्रुन संहार रथ समुद विकार रतन,

बादर बिदार जैसे सूरज कढ़त है॥

महाराजा छत्रसाल की दैवीय तलवार 4 के प्रचंड प्रहार से उत्पन्न चमक की चकाचौंध से मुगलों को यही लगता था कि छत्रसाल ही हर एक से युद्ध कर रहे हैं, वे सभी भयंकर प्रहार से कालका वलित होते चले गए। औरंगज़ेब की लकी सेना तहस-नहस हो गई। विपुल सैन्य सहारा महाराजा छत्रसाल ने अब सीधा मोर्चा औरंगज़ेब पर लगाया और वह सरपट आगे बढ़े। उन्होंने तुरंत औरंगज़ेब को हाथी से नीचे गिरा लिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठे। महाराजा छत्रसाल औरंगज़ेब का सिर धड़ से अलग करने ही वाले थे कि उसके दोनों हाथ क्षमा याचना हेतु उड़ गए सोमा प्राणों की भीख मांगी। सभी बुन्देलखण्ड में आने की और जुल्म ना करने के लिए कुरान की कसम खाई। किसी पालक महाराज छत्रसाल से समाधान पाकर वह वापस लौट गया पांच। उसने महाराजा छत्रसाल जूदेव को महाराजा (सम्राट मानकर तथा मैत्री भाव रखकर फिर कभी बुन्देलखण्ड में प्रवेश नहीं किया और वह 3 वर्ष पश्चात ही 1707 संवत् 1764 में 89 वर्ष की आयु में अहमदनगर में दफन हो गया।

---

4. ज्यों अब्बल में अली की, जाहिर जुल्फिकार।

   त्यों आकर छत्रसाल की, इलाही नूर तरवार ॥58/65 (वृतांतमुक्तावली)

5. ओरछा का इतिहास--- ले. लक्ष्मणसिंह गौर (20 वां संस्करण) पृष्ठ 188-189

   [(जय अख. औरंगज़ेब 40-50 पृष्ठ 187 तथा 50-51 पृष्ठ 133-134 भीम 2 पृष्ठ 157 वी) मा. आ.

औरंगज़ेब परवर्ती यवनों से युद्ध

दिलेर खां से युद्ध [वि.सं. 1778 (1721 A.D.)]

दिलेर खां, मुहम्मद खां बंगश का हितैषी था संग्राम इसने मुहम्मद शाह की शह पर और मुहम्मद खां बंगश की प्रेरणा से 1721 (1778 के मई मास में उत्तरी बुन्देलखण्ड में प्रवेश किया था। किसकी सेना ने कालपी जलालपुर क्षेत्र पर अपना आधिपत्य जमाने की कोशिश की थी।दिलेर का विशाल सेना को लेकर आया था क्योंकि उसे दिल्ली सल्तनत व इलाहाबाद के नवाब बंग्स खाका भी सहयोग प्राप्त था सोमा अतैवउसने अजय सफलता की कामना से बुन्देलखण्ड में पद रखा था, छत्रसाल वृद्ध हो गए हैं, फतेह सफलता निसंदेह है, वह हंसी विश्वास से भरा हुआ था।

बुन्देली सेना दिलेरखां को कुचलने के लिए उतावली थी परंतु महाराज छत्रसाल ने उसके हौसले को बढ़ाने के लिए कुछ समय के लिए चुप्पी साध ली थी। दिलेर खाने मान लिया था कि बिना युद्ध के उसका सपना साकार हुआ जा रहा है। उसे तूफान आने के पूर्व की खामोशी का ज्ञान न था। बेचारा असावधान हो चला। भूखे शेर की भांति दहाड़ थी बुन्देली सेना ने आकर घेर लिया। भयंकर युद्ध हुआ वहां दिलेरखां की दिलेरी धूल दूसरे हो गई। उसकी काफी सेना कॉल कमलेश हो गई। महाराजा छत्रसाल ने दिलेरखां को तलवार के वार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। उसकी बच्ची खुशी सेना भी या तो भाग गई या फिर कॉल कमलेश हो गई। डॉक्टर बी डॉट डॉट गुप्ता ने दिलेर खां की मौत 15 मई 1721 (संवत् 1778) को होना माना है।

कटक बंद ग्रंथ में इस युद्ध का सांकेतिक उल्लेख मिलता है। बंगश का दूत महाराजा छत्रसाल के दरबार में कहता है---

मुहम्मद खां को वौ हतौ ईठ, परदेसखान पठयौ बसीत।

महाराज सौ कहौ बैन, हम आये अपने मुलुक लेन।

हिन्दू नरेस तुम जुरे चारि, मारे दिलेर क्यों रन पछारि।

यह दूध संवत् 1778 में जले रखा की मृत्यु के बाद ही बुन्देलखण्ड आया। इसी कारण कुंवर जगतराज एवं वर्षा की निगाह उत्तरी बुन्देलखण्ड के जमुना तट पर सुरक्षा हेतु लगी थी, अटेवा पहला आक्रमण (संवत् 1778) तुरंत विफल हुआ था।

बंगश से युद्ध

मुहम्मद खां बंगश--- कोहाट के पहाड़ी इलाके को बंगश कहा जाता है, अतैवयहां बसे हुए मुसलमान पठान भी बंगश कहलाते हैं। मुहम्मद खां बंगश यही का रहने वाला था। अतैवइसे इतिहासकारों ने बंगश कहा है। वह एक लुटेरा था। उसके पास

---

1. दिलेर खा, दलेल खा से भिन्न है, दलेल खा की मौत संवत् 1738 में हो चुकी थी।

2. आधुनिक नाम;

कई हजार पठानों की एक सेना थी। वह मऊ रशीदा बाद के आसपास लूटमार करता था। छोटे-बड़े रियासतों के बीच पढ़कर वह मदद के नाम से रख में वसूल करता था।

औरंगज़ेब की मृत्यु संन् 1707 (संवत् 1764) में हुई थी और उसके बेटे बहादुर शाह की मौत भी 1712 (संवत् 1769 में हो गई थी फॉर मा तब जहां दार शाह और फर्रूखसियर में राजगद्दी के लिए झगड़ा हुआ था उस समय मुहम्मद खां बंगश की मदद से फर्रूखसियर गद्दी पर बैठा था। सहायता के एवज में फर्रूखसियर ने मुहम्मद खां बंगश को चार हजार सेना की मनसबदारी प्रदान की थी। फर्रूखसियर की ऐसी उदारता ओं के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए बस में बम छैला बस में बम छैला राजपूतों को उजाड़ कर उस स्थान पर फर्रूखसियर के नाम पर फर्रुखाबाद नाम का एक नगर बसाया था फर्रूखसियर की मृत्यु संवत् है 1775 में होने पर उसका बेटा मुहम्मद शाह गद्दी पर बैठा था, तब उसने बंगाल के नवाब की पदवी दी थी। मुहम्मद शाह, महाराजा छत्रसाल से अंदर ही अंदर वह रखता था, अतैवउसने मुहम्मद खां बंगश को छत्रसाल के अधीनस्थ बुन्देलखण्ड के कालपी एरच भूभाग को हड़पने के लिए सहायता देकर उकसाया था। इसी कारण बंगश ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण करने शुरू कर दिए थे। बंगश ने इस भूभाग को अपना जानकर कुछ ठिकाने भी बनाने शुरू कर दिए थे। महाराजा छत्रसाल ने बंगश के दमन के लिए रणनीति पर विचार किया और कुंवर जगतराज को इस काम की बागडोर सौंपी थी।

1.

पहला युद्ध

(संन् 1721 संवत् 1778 में)

बंगश ने कालपी में तीर एक अली खां नामक व्यक्ति की नियुक्ति कर दी थी और उसकी सेना के रचियता का लूटपाट मचाती हुई जा पहुंची तभी महाराजा छत्रसाल कुंवर जगतराज दो ने चुपके से बंगश को सेना को आगे का। मंगत सेना इस आक्रमण से बेफिक्र थी। जगतराज की सेना की भयंकर मार से सेना में भगदड़ मच गई। भारतीय सेना पर बुन्देली सेना ने कालपी तक पीछा किया। हजारों सैनिक कॉल कमलेश हो गए जान बचाकर किसी तरह बंगश यमुना पर करके इलाहाबाद चला गया था।

1. कटक बंद के अनुसार ज्ञात होता है कि दिल्ली नरेश मुहम्मदशाह ने जाने महाराजा छत्रसाल अधीन बुन्देलखण्ड में मुहम्मद बंगश को जागीर का फरमान दे दिया था, इसी कारण वह भोगनीपुर घाट से यमुना पार करके बुन्देलखण्ड में आया था और कालपी में अपनी गतिविधियां शुरू कर दी थी।

2. भौंह चढ़ाई रोस भरि नैन, जगतराज पुनि बोले बैन।

बोले मोहनसिंह दिमान, यासौ हम बांधे किरवान॥ (कटक बंध)

3. छत्रसाल तथा उनके पुत्र हृदयशाह आदि ने देश पर फिर अधिकार जमाया था। उन्होंने बांदा और बघेलखण्ड पर अधिकार करके इलाहाबाद के पड़ोस तथा बंगाल के शाहाबाद जिले तक बढ़कर समस्त देश को दबा लिया था।-- इतिहासकार स्वर्गीय दीवान प्रतिपालसिंह

4 . बंगश वि.सं.1778 में इलाहाबाद का सूबेदार बन बैठा था, उसने अंतिम सांस लेती मुग़ल सल्तनत को करारा झटका दिया था।

कुं. जगतराज की सेना ने कालपी में मंगल द्वारा नियुक्त पीर अली खां को उसके बेटे सहित मौत के घाट उतार दिया और कालपी एरच तक उसके नियुक्त समस्त ठिकाने नष्ट कर डाले थे।

महाराजा छत्रसाल ने वैशाख शुक्ल अष्टमी संवत् 1778 को सवाई जयसिंह के नाम लिखे पत्र में इस युद्ध का जिक्र किया है, अतएव यह पहला युद्ध वि.सं. 1778 के लगते लड़ा जा चुका था। इस पत्र से यह भी स्पष्ट होता है कि महाराजा छत्रसाल इस युद्ध में स्वयं भी गए थे क्योंकि उक्त पत्र एरच में ही बैठकर उन्होंने युद्ध उपरांत सवाई जयसिंह के नाम भेजा था

2. द्वितीय युद्ध

(सन् 1724, वि.सं. 1781 में)

बंगाल की प्रथम युद्ध में जो दुर्गति हुई थी उससे वह बहुत बौखलाया हुआ था उसके जीवन की यह पहली शर्मनाक पराजय थी। इस कारण बंगश ने इस बार एक बड़ी सेना लेकर कुछ किया था। इस बार दोनों युवराज को वर्षा एवं कुंवर जगतराज पहले से तैयार थे। पंकज ने 15000 सेना लेकर कालपी में यमुना को पार किया। मदांध बंगश को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि दोनों छत्रसाल कुमार युद्ध को तैयार खड़े हैं पुनाराम बंगश ने घमासान युद्ध किया उसकी सेना ने भी कर्तव्य। महाराज छत्रसाल की नीति के अनुरूप बुन्देली सेना ने इन सभी को खेल खेला खेला कर स्वयं पीछे हटकर आगे बढ़ाया था। आगे बढ़ी सेना को बुन्देली सेना ने चारों तरफ से घेर लिया। बुन्देली सेना की भयंकर मार्ग से बंदर सेना बिलबिला उठी। बेचारी बंदर सेना चकनाचूर हो गई, छत्रसाल की रणनीति सफल हुई। सेना बुरी तरह खुश ली गई, बंगश की बहन कर पराजय हुई। वेश बदलकर बंगश जान बचाकर भाग निकला था और चुपके सेइलाहाबाद लौट गया इसलिए बंगश को बंदी नहीं बनाया जा सका था सोमा परंतु उसकी सेना लौटने लायक भी नहीं बची थी।

1. कुछेक इतिहासकार मानते हैं की दितीय विश्व युद्ध में कुंवर जगतराज बंदी बना लिए गए थे, तब कुंवर जगत जगतराज की पत्नी वीरांगना जैतपुरी ने अद्भुत पराक्रम दिखाकर बंगश शिविर से जबरन वह अपने पति को उठा लाई थी। इस वीर वीरता पूर्ण कार्य पर महाराज छत्रसाल ने वीरांगना जैतकुंवरि को दो परगनो की सनद की (जेठ सुदि 14 संवत् 1783 मुकाम महेवा, को) थी।... बंगश जैतपुर से लड़ने को आयो, धीमान जगतराज से लड़ाई भाई जगतराज के गांव आए फौज मारी गई कछु भागी गई पर तुमने सुनी तो तुम खुद जोध करीब 1 को निकली, 5 जुलाई फतेह करें हम तुम्हारे ऊपर खुशी हैं जो तुम करके ना लड़की तो बंगश करिया मुंह करके जाता तो सोना तुमने बड़ी साहस करो आदमी ना कर सकते तो तुमने पराक्रम करो तो खुशी पाए हमने तुम्हें दो परखने दे ओ मां परगने जलालपुर वापरने दर्शन डा सो पाए ओम आजा को दो ही प्रग्ने लाख के हैं उन सब जानकारी के अनुसार आखिरी युद्ध संवत् 1783 के लगते ही शुरू हो गया था। जेष्ठ शुक्ल चार शनिवार संवत् 1784 को छत्रसाल और पंकज के बीच अंतिम मोर्चे पर घमासान युद्ध हुआ था।

3. तृतीय युद्ध

(सन् 1726-1727, संवत् 1783-1784)

दो बार मुंह की खाई इस बार उसने बड़ी तैयारी की लिस्ट ऑफ दिल्ली दरबार का सैन्य समर्थन एवं कुछ बुन्देली रियासतों का परोक्ष समर्थन पाकर बुलंद हौसले लेकर वह तैयार हुआ।

इस बार बंगश ने महाराजा छत्रसाल की युद्ध नीति का बारीकी से विश्लेषण किया और अपनी सेना को तीन भागों में विभक्त कर दिया तथा तीनों भागों से एक साथ युद्ध की योजना बनाई।

कुं. जगतराज इस बार तैयार ना थे उन्होंने सोच रखा था कि बंगश अब कभी बुन्देलखण्ड में प्रवेश की बात सपने में भी नहीं सोचा था। कुंवर जगतराज का अनुमान गलत निकला बंदर सेना घिर आई। बने इस बार सेना के 1 भाग का नेतृत्व अपने भाई हाथी का को दूसरे भाग का नेतृत्व अपने पुत्र कायम खा को और तीसरे भाग का नेतृत्व स्वयं उसने संभाला। इन तीनों सेनाओं ने इलाहाबाद में ही इस बार यमुना नदी को पार किया और यमुना किनारे चलते चलते 3 भाग में बैठकर कालपी तक आदम की, जब शत्रु सेना ने दरवाजे पर दस्तक दे डाली, कुंवर जगतराज ने दौड़कर महाराजा छत्रसाल को सूचना दी और युद्ध की आपत्ति कालीन रूपरेखा ते कर रणभूमि की तरफ चल पड़े मणिराम महाराजा छत्रसाल ने रीवा पत्र भेजकर कुंवर हृदयशाह को बुलवाया।

1. (छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम)

.... अब हमारी राय जा है कै रीमा वारन को राज सौंप देव वा अपनौ कछू चिन्न (चिन्ह) बनाके यहां जल्दी चले आओ, तुमे कछू खबर नहीं आए कै बंगस लड़ने को आवत है, और तुम रिसा के रीमा को

चले गए, तुम तौ समझदार हौ ऐसी लराकई नहीं करने परती है, सो जल्दी आवो, ईतरा हिरदेशाह को लिखना हे, सो जानियो,

--कार्तिक शुदि 13 संवत् 1783 मु. मऊ

(छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम)

...तुमारी लिखी आई कै कब लड़न ऊके (बंगश) संगे तिहत्तर हजार फौज है वा संवार हैं, निवासी (89) तोपै हैं, आप जल्दी आवो ताको सुदन यहाँ से निगवे (प्रस्थान) को माह वदी नमें को है, सो हम यहां से निगहे, पैंतीस वा उन्तीस तोपै पठवाई हैं, सो पहुँच है

--माह बदी संवत् 1783 मुकाम मऊ

(छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम)

....तुम रीमा से जल्दी आइयौ, बंगस से लड़ाई हो रही है, तुमारे घर की बात बंगस लये जात है....देखत पाती के बेटा (हिरदेशाह) तुम बहुत जल्दी आओ, अकेले जगत लड़ रहे हैं, तुम जात रहे, तीसे महाराज मऊ से नहीं आवत, महाराज बड़े नाराज हैं.....कै सीधे जैतपुर को चले आओ,

--अघहन बदि 14 संवत् 1783 मु. मऊ

बंगश ने पचास मील अंदर घुस कर तार वाहन के क्षेत्र में युद्ध का बिगुल बजा दिया। भयंकर युद्ध हुआ, बंगाल के दो हजार सैनिक मार गिराए गए। बुन्देली रणबांकुरे ने बंदर सेना पर भयंकर प्रहार किए, परंतु जूझ रही विशाल मुग़ल सेना इतने पर भी कम होती ना दिखाई दे रही थी, आखिर बंगश अनगिनत फौज लेकर आया था। वृद्ध महाराजा छत्रसाल ने अपनी रणनीति के तहत बांदा से 10 मील हटकर इचौली में व्यू रचना की थी। मतवाली बंदर सेना मोर्चों पर टूट पड़ी फॉर महाराजा छत्रसाल ने अपार बल पराक्रम एवं अदम में पुरुष दिखाते हुए बंगश के हजारों सैनिकों को मार काट डाला सोमा उसके दो सेनापति भूरे खां और दिलावर खां मार गिराए गए। बंदशकी सेना में भगदड़ मच गई और बंगश असहाय बना सीख रहा था। दुर्भाग्यवश बंगश की मदद के लिए एक मुग़ल सैन्य टुकड़ी आदम की नहीं तो आज बंगश कालका वलित हुए बिना कदापि न बचता।

दूसरे और तीसरे मोर्चे पर दोनों राजकुमार भयंकर युद्ध कर रहे थे, इन दोनों राजकुमारों की मार से बंदर सेना में त्राहि-त्राहि मची सी फॉर मा परंतु अनगिनत सेना टिड्डी दल की भांति कहीं से प्रकट

होती थी। दोनों राजकुमारों (कुमार जगतराज और कुमार हृदयशाह ने क्रमशः साल हट के जंगल में हाथी कहां को और अजनार की पहाड़ियों में कायम खां को रोके रखा था, यह दोनों बंदर से इन्हें मिलने नहीं दे रहे थे। हाथी का एवं कायम खां बुरी तरह से मार खा रहे थे। इधर बंगश दोनों की सहायता की बात जो रहा था। परंतु बंगश को परोक्ष में बुन्देली दरमियां एक का सहयोग मिल रहा था, इसी से वह अपनी सेना में निरंतर वृद्धि करता जा रहा था दिल्ली मुग़ल सेना भी बराबर मदद कर रही थी।

बंगाल की सेना इस युद्ध के परिणाम को नहीं आने दे रही थी। महाराजा छत्रसाल के व्यक्तित्व को समाप्त करने के लिए घर में आस्तीन के सांप भी बंगश के सहायक बने हुए थे। युद्ध सामग्री राशन आदि बंगश को निरंतर मिल रही थी। महाराजा छत्रसाल ने विचार किया जब बंगश की सेना को चारों ओर से बनाकर घेर लिया जाएगा तब ही विजयश्री संभव है। अतैववह भोजन पानी हुआ बाहर से आ रही सैन्य सहायता पर रोक लगाना आवश्यक है।इस कार्य हेतु एक विशाल सेना की जरूरत है और इसकी

---

1. पारिवारिक कलह के कारण महाराजा छत्रसाल के विरोध में पुराने हो गए थे ओरछा दतिया और चन्देरी के राजा और इन रियासतों के परिवारी जन (भाई बंधु जागीरदार एकजुट होकर संघर्ष की अप्रत्यक्ष रूप में बड़ी मदद कर रहे थेकमा परंतु उदार मना महाराजा छत्रसाल जूदेव ने ओरछा, दतिया और चन्देरी के राजाओं को घर परिवार का मानकर सामर्थ्य वान रहते हुए भी इन रियासतों को समाप्त करने का कभी मन नहीं बनाया था। बुन्देलखण्ड में एक छत्र हिंदू साम्राज्य बना रहे, इस कारण से महाराजा छत्रसाल ने अपनों के ऊपर कभी भी हथियार नहीं उठाए। सदा ही वसुधैव कुटुंबकम का मार्ग अपनाया था।

भरपाई बुन्देली सेना से कभी संभव नहीं है, इसके लिए बाहरी मदद जरूरी है, बाहरी मदद लेने में समय की अतिरिक्त आवश्यकता है। महाराजा छत्रसाल ने इसके लिए 2 प्रयास किए--- पहला, तो युद्ध को लंबा खींचा जाए और दूसरा यह कि-- बाजीराव पेशवा से मदद ली जाए।

दोनों राजकुमारों को उक्त रणनीति समझा कर महाराजा छत्रसाल ने पं. रघुपति को जैतपुर से बाजीराव पेशवा के पास भेजा। पहुंचने में कई दिन लगे क्योंकि मध्य भारत की भौगोलिक संरचना आवागमन में बाधक थी। महाराजा छत्रसाल का काव्य मई पत्र पढ़ कर दो एवं दूध द्वारा जुबानी हाल सुनकर बाजीराव पेशवा ने अभिलंब सहायता की स्वीकृति देते हुए दूध को वापस कर दिया।

नई रणनीति के अनुसार हर मोर्चे पर एक बुन्देला सरदार सेना लेकर बंगश की सेना पर आक्रमण करता और भारी नुकसान करके वापस लौट आता। इसी क्रम में एक दिन स्वयंवर जगतराज ने सेना का नेतृत्व किया और बंगश को करारी मात दी परंतु अपने सैनिकों की सुरक्षा के लिए वह पीछे रह

गए थे तभी पठानी सेना की एक बड़ी टुकड़ी ने रात के अंधेरे में घेर लिया। कुंवर जगतराज ने इस सैन्य टुकड़ी पर भयानक प्रहार किया और तभी वह घायल होकर गिर पड़े, अन्य बुन्देली सैनिक मारकाट मचाते हुए शिविर में लौट आए परंतु अपने सेनानायक कुंवर जगतराज महाराज को ना पाकर अचंभित रह गए। इसी क्षण कु. जगतराज की वीरांगना धर्मपत्नी ने यह समाचार पाकर रात में एक सैन्य टुकड़ी लेकर पठान शिविर पर तीन भागों में आक्रमण कर दिया और रात में ही यह वीरांगना रानी जेट कोंगरी अपने पति कुंवर जगतराज को उठाकर शिविर में ले आई थी। तब इस विरोध चित्र कार्य पर महाराजा छत्रसाल ने अपनी इस पुत्रवधू को 2:00 पर अग्नि भेंट करके फिर अंगना की उपाधि दी थी।

इधर जीत की आशा लिए बंगश महीनों रणभूमि में डाटा रहा। वस्तुत है उसने इस बार विजय युद्ध की रूपरेखा तैयार करके तीसरी बार बुन्देलखण्ड में आया था। बंगश

---

1. ताकि दूसरी सेना (पेशवा की) आने तक युद्ध जारी रखा जा सके।
2. कहा जाता है कि महाराजा छत्रसाल ने इस पत्र में सौ दोहे लिखे थे। इन दोहों में निम्न दोहा काफी प्रचलित है--

   जो बीत गजराज पर, बीती अब आज।

   बाजी जात बुन्देल की, राखौ बाजी लाज॥

3. महाराजा छत्रसाल द्वारा रानी जनवरी को दी गयी सनद
4. आपर बंगस जैतपुर में लड़वे को आयो, जगतराज के घाव आए, फौज मारी गयी... तुमने सुनो सो तुम खुद जुध्य करिबे को निकरी... हम तुमारे ऊपर खुशी हैं, जो तुम निकर के ना लड़ती, तो बंगश करिया मुह करिकै जात हतो, तुमने बड़ा साहस करौ, आदमी ना कर सकते सो तुमने पराक्रम करौ, तौ खुशी पाए हमने दो परगने दए... जेठ सुदि 14 संवत् 1783 मु. महेवा

अब जीत के दिन गिरने लगा था, उसे अब जीत के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। दिन में ही उसे रतौंधी आने लगी थी, बूढ़े छत्रसाल अब उसे गए गुजरे नजर आने लगे थे, वस्तुतः यह तो प्रभात के पूर्व का ही अंधेरा था। बेचारा बंगश ताना-बाना बुन ही रहा था कि बाजीराव पेशवा की सेना आदम की। महाराजा छत्रसाल ने आगे बढ़कर पेशवा का स्वागत कियाऔर रणनीति बनाई। प्रातः होने के पहले ही मराठी सेना ने बंगश को चारों ओर से घेर लिया। मराठी और बुन्देली सेना के सम्मिलित फरार से बंगश सेना में खलबली मच गई। चारों ओर से गरीब अंग सेना का हाल सांप छछूंदर जैसा हो उठा। बाहर निकलने वाले बन गए सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया जाता। बंग्स बुरी तरह फस गया था। रसद पानी भी मिलना बंद हो गया, बेचारी बंगश सेना भूख प्यास से बेहाल थी। बंग्स अपने भाई एवं उत्तर की प्रतीक्षा कई दिनों तक करता रहा। परंतु पूर्वी भाग पर कायम खां मराठी पर

हृदयशाह की सेना से फंस गया और दूसरी तरफ जगतराज ने हाथी खां को परास्त कर डाला कॉम आदत है तीनों मोर्चों पर बंगश सेना छिन्न-भिन्न होकर परास्त हो गई। महाराजा छत्रसाल को जनता का भरपूर सहयोग मिला एक। भूख प्यास से विकट ने क्षमा याचना का प्रसाद भेजा और महाराजा छत्रसाल की उदारता का बखां भी किया। महाराजा छत्रसाल ने बंगश को कैद से मुक्त कर दिया। बुरी तरह आहत बंगश उसी क्षण उल्टे पांव चला गया फिर कभी उसने जीवन में बुन्देलखण्ड की तरफ आंख ना उठाई। महाराजा छत्रसाल की धाक बुन्देलखण्ड में पहले जैसी छा गई विधर्मी अंदर ही अंदर मन मसोस कर रह गए थे।

टिप्पणी: महाराजा छत्रसाल के समकालीन कवि ने अपने लघु प्रबंध काव्य छत्रसाल जूदेव को कटक बंद में बसे हुए तृतीय युद्ध का सजीव चित्रण किया है। दान कवि ने इस युद्ध में बंगश की स्थिति और शहीद हुए बुन्देली वीरों का नाम उल्लेख विशद रूप से किया है। इचौली में महाराजा छत्रसाल ने युद्ध व्यूह रचना के तहत बांधों को ध्वस्त कर दिया था, जिससे बंगश सेना भयंकर मुसीबत में फंस गई थी। पटकै हाथ में मियां पछताह, हमको ऐसी रची खुदाई। (कटक बंध) वस्तुतः बंगश सेना ने बुन्देली रणनीति के अनुरूप भयंकर मार खाई थी। भारत भयौ महीना दोई (कटक बंध) इस जगह दो माह तक भयानक युद्ध हुआ था। बंगश से सैनिकों के मुख से आर्तनाद हो उठा था। परौ बुन्देलनि सौ अब कामु (कटक बंध) का स्वर गूंजने लगा था। इस समय किसुनसिंह एवं सहाजुसिंह आदि पराक्रमी योद्धा शहीद हुए थे। यथा --- जूझे किसुनसिंह पड़ीहार, स्वामी धर्म में बड़े उदार। जूझे सिंहशाहजू और इंद्र आपुन कर ढारे (कटक बंध) महाराजा

---

1. ऐसा सुना जाता है कि बंगाली युद्ध के समय बुन्देलखण्ड में यह बात बहुत तेजी से फैली थी कि छत्रसाल महाराज के गुरु हिंदू धर्म रक्षक श्री प्राणनाथ जी आ गए हैं उन्होंने धर्म रक्षा के लिए पुकारा है। अतैवतब तीनो मूर्तियों पर घेराबंदी कर धर्म रक्षक बुन्देल जनों ने भरपूर साथ दिया था (तभी पेशवा भी आ गए थे, उन्हें इसका श्रेय मिल गया था, फिर भी छत्रसाल ने अपना वचन निभाया था)। तभी छत्रसाल की योजना साकार हुई थी। क्षमा याचना कर वापस जा सका था।

छत्रसाल का से आखरी मोर्चा जेष्ठ शुक्ल चौथ शनिवार संवत् 1784 को हुआ था। यथा-- संवतु सत्रह सै बरस, चौरासी की साल। चौथ सनीचर जेठ सुदि, जग जुरौ छत्रसाल॥ (कटक बंध)। इस दिन बंगश हाथी पर बैठकर युद्ध भूमि में बड़ी ठसक के साथ आया था, तब हिंदूसिंह चंदेल ने बंगश से भयानक युद्ध करके उसे घायल कर डाला था और उसके साथ सैनिकों को कालकवलित कर दिया था। इसी मैदान मैं जब महाराजा छत्रसाल ने बंगश को घेरा था, तब वह बेचारा अकेला रह गया था। सनमुख छत्रसाल सों खेला, मुहम्मद खां रह गयौ अकेला (कटक बंध)। महाराजा छत्रसाल की भयंकर मार से व्यथित बंगश रक्षा की गुहार कर उठा था तभी इस बार भी दैव योग से उसके सहायतार्थ एक मुग़ल सैन्य टुकड़ी आ पहुंची फॉर मा अन्यथा वह यमलोक पहुंच जाता। कुंवर निर्देश आने बंगश सेना

पर ऐसा प्रहार किया था, मानवेंद्र द्वारा गोकुल पर भीषण वर्षा की जा रही हो। इस युद्ध में पंचमसिंह ने बंगश के हाथी पर सांग से प्रहार करते हुए वीरगति पाई थी। पड़रिया के ठाकुर का अवलख घोड़ा उछलकर बंगश के हाथी के माथे पर जा टकराया था। ठाकुर ने बंगश का पौधा ध्वस्त करते हुए जान गवाई थी। बिजावर के अंचलसिंह दिमान, भरतसाह, महेवा के हिमांचल, फौज खां (भाई सहित), आरी वाले दिमान, हिम्मतसिंह, रामसैन बुन्देला, ककराटी के हृदयराम, जोधसिंह गौर, फतैहसिंह दौवा, नंदमनि सिलहदार, बिजावर के दिमान विजयसिंह, सूरतसिंह, अरुछ, राजमनि पुरोहित, मोहकम मिर्धा और मुहब्बत खां आदि शहीद हुए थे।

दानकवि ने सालहट, जैतपुर और अजनार में हुए युद्धों का भी चित्रण किया है। अजनार में वर्षा की सेना से बंगाली सेना का घनघोर युद्ध हुआ था। इस युद्ध में बुन्देली सेना की,न भगवंतसिंह, अमनसिंह और कुंवर नारायणसिंह के हाथों थी। बंगश युद्ध डेढ़-दो साल तक लंबा खींचा था। बंगश की छावनी में खाद्य सामग्री का अभाव हो गया था। तब उसने दिल्ली को एक पत्र सहायतार्थ याचना भरा भेजा था। यथा-- मेरौ सबै घटो असबाव (कटक बंध)। बुन्देली सेना भी असहाय दिखने लगी थी। बूढ़े छत्रसाल चिंतित हो उठे थे परंतु घेराबंदी की योजना से इस युद्ध में श्री छत्रसाल महाराज को विजय मिली थी।

उपसंहार

महाराजा छत्रसाल का जीवन कर्मियों से सदैव युद्ध करते हुए बीता। इतने भयंकर युद्ध किसी भी पुरुष द्वारा नहीं लड़े गए। ऐसा लगता है कि वह धरा धाम से दूर जनों का नाश करने एवं धर्म के पुनर्स्थापना हेतु अवतरित हुए थे, उन्होंने जो कर दिखाया वैसा आज तक कोई ना कर सका।

वि.सं. 1737 में महाराज ने निम्न विधर्मियों से युद्ध किये थे-- म(1) मुहम्मद हाशिम खां से युद्ध, (2) अब्दुल हमीद, (3) इखलाख खां, (4) अफ्रसियावखां रूमी, (5) लतीफ खां, (6) हामिद खान, (7) मिर्ज़ा सदरूद्दीन एवं, (8) अब्दुल समद; एक वर्ष के अंदर आठ विकराल युद्ध तो सर्वविदित हैं और ना जाने और कितने इतिहास के गर्भ में विलीन हैं। इस आकलन से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि महाराज छत्रसाल के अंदर एक ऐसी शक्ति विद्यमान थी जिसके द्वारा वह सदैव अजेय

एंव महान पराक्रमी व महाबली बने रहे। अतैव ऐसा लगता है कि इसी कारण से पं. सोमदत्त त्रिपाठी ने महाराजा छत्रसाल के परिवेश में जो ग्रंथ लिखा है उसका शीर्षक शक्तिपुत्र छत्रसाल रखा है। पवन पुत्र हनुमान जी को कहां जाता है, फतेह वन एक इतिहासकार ने महाराजा छत्रसाल को शक्तिपुत्र, पवनपुत्र, धर्मपुत्र, नाथ पुत्र आदि नामों से भी उल्लेख किया है।

वि.सं. 1738 में दलेल खां और मोराद खां से हुए भयंकर युद्ध में महाराजा छत्रसाल के बल पराक्रम की गाथा जन जन की जुबान पर छाई हुई थी, इसी वर्ष उन्होंने आस्तीन के सांपों को भी पूछना था। शक्ति के अनन्य स्त्रोत महाराजा छत्रसाल ने वि.सं. 1739 में भी विधर्मी ऊपर जो भयानक कहर ढाया था, उससे मुग़ल बादशाह, तिल मिलाकर रह गया था। उसने एक से बढ़कर एक हजारों को बुन्देलखण्ड भेजा था,या था (1) बसालत खा, (2) मुहम्मद अफजल, (3) शमशेर खां, (4) शेख अनवर और (5) शेर अफगत। महाराजा छत्रसाल की कालजयी तलवार ने विद्यार्थियों को काल कब लिख कर डाला था। इसी कारण से इतिहासकारों ने उन्हें कालजयी छत्रसाल कहकर पुकारा है। पौराणिक दृष्टि से कालजयी स्वरूप, विराट पुरुष भगवान शेषनारायण को माना जाता है। ज्योतिषियों ने इनके जन्म काल के समय नारायण अवतार एक की घोषणा की थी जो सत्य सिद्ध हुई है। अतैव महाराजा छत्रसाल को काला यही तो मान कर तमाम भक्तजन उनका नित्य प्रति पूजन अर्चन करते हैं। प्रणामी साहित्य में इन्हें पूर्ण ब्रहम परमात्मा की शक्ति से संपन्न एवं कुंडल ब्रहमा का अवतार माना गया है। आप ग्रंथों में इसके प्रमाण बताए जाते हैं।

अब्दुल समद (संवत् 1737), बहलोल खां (संवत् 1737), शेर अफगन (संवत् 1739), पुरदिल खां (संवत् 1758) और औरंगज़ेब (संवत् 1761) से महाराजा छत्रसाल की भयंकर युद्ध जल विद्युत हैं। सामान्य मानव इन युद्धों की भयंकर लपटों से ना जाने कब राख हो जाता है, उसका नाम लेवा भी न बचता। परंतु महाराजा छत्रसाल सामान्य मानव ना थे उनका धरती पर जन्म इन सब के विध्वंस करने के लिए ही हुआ था। श्री राम ने रावण को मारा मामा श्री कृष्ण ने कंस को पछाड़ा और महाराजा छत्रसाल ने इन वन असुरों का विपुल संघार किया। उन्होंने जगती तल पर देव राज्य की स्थापना की थी तभी उन्हें युगप्रवर्तक के रूप में याद किया जाता है।

कहा जाता है कि महाराजा छत्रसाल ने अपने जीवन काल में दो सौ बावन भयंकर युद्ध में विजय श्री का वरण किया था। इसमें किंचित मात्र भी संदेह नहीं है, यदि

---

1. लीन्हो नारायण आय के अवतार हैं.... (जन्म समय का एक कवित्त)
2. सुयश अमर कीर्ति अमर, करनी अमर विशाल।

   मुए कहत तेई मुए, सदा अमर छत्रसाल॥ (जनलोकोक्ति)

उनके जीवन पर व्यापकता से अध्ययन किए जाते हैं एक तो यह तथ्य सहजता में स्वीकार किया जाता जा सकता है। महाराजा छत्रसाल के आध्यात्मिक स्वरूप को प्रातः स्मरणीय रूप में माननीय वाले जनमानस को मा उन्हें आज भी जीवित मानकर प्रातः काल जागने पर निम्न मंत्र के द्वारा उनका आहवान करते हैं--- छत्रसाल महाबली करियो भली भली।

छत्रसाल जैसा महान पराक्रमी पुरुष ना तो कभी जगत में पैदा हुआ और ना ही कभी पैदा होगा। कलयुग में छत्रसाल पहले अंतिम कालजई पुरुष हैं। पूर्व के समस्त कालजई पुरुषों का संयुक्त पंजीयन में आकर ठहर गया है। इसी कारण से भयंकर युद्ध हो कि भीषण तम ज्वाला ए भी कालजई छत्रसाल को पथ से विचलित ना कर सकी थी, अपितु उन सभी पुरुषों की संचित अभिलाषा ओं को भी संतृप्त किया था। वास्तव में वह युगवतार युगपुरुष हैं।

विजय दर विजय से महाराजा छत्रसाल ने प्रदूषित एवं संस्कृति 2 को उखाड़ फेंका था और देव संस्कृति को पुनर्स्थापित किया था। यह सब वस्तुतः छत्ता (छत्रसाल का महत्व प्रदेश है 3, जिसे अनदेखा करना अपने आत्म संस्कृति सेड्रो करना है। ऐसे युगप्रवर्तक देव पुरुष के द्वारा स्थापित इस देव संस्कृति को अक्षुण्ण रखना, सभी देशवासियों का सर्वोपरि मानवीय कर्तव्य है

---

1. दान दया घमासान में, जाकै हिय उछाह।

   सोई वीर बखानिये, ज्यों छत्ता छितिनाह॥ (छत्रप्रकाश)

2. छत्ता न होतो तो सुन्नत होती सबन की। (भूषण कवि)
3. विनती नृप छत्रसाल की, कोऊ होऊ नरेश।

   पुण्य हमारी पालियो, कटि है सकल कलेश॥ (छत्रसाल)

भाग तृतीय

कृतित्व और व्यक्तित्व

1. **राज्य व्यवस्था**
2. **व्यक्तित्व-चित्रण**
3. **विभूति-खण्ड**
4. **कवि मण्डल**

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(1)

राज्य-व्यवस्था

प्रस्तुत अनुभाग में महाराजा छत्रसाल की राज्य व्यवस्था का विविध दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर मूल्यांकन किया जा रहा है।

श्री राज परमात्मने नमः

(1)

राज्य-व्यवस्था

महाराजा छत्रसाल जितने महान पराक्रमी थे, उतने ही महान थे राज्य संचालन में। उन्होंने जन शक्ति का दुरुपयोग कभी नहीं होने दिया। मुग़ल शासकों और ओरछा के राजाओं ने बड़ी-बड़ी इमारतों को मा किलो बराज महलों को बनवाने में जनता की गाड़ी श्रम शक्ति का प्रयोग किया था, भूखा रखकर ही जनता से जबरन काम लिया जाता था तथा आकस्मिक दुर्घटना वर्ष मृत्यु होने पर श्रमिकों को दीवारों में चुन दिया था, परंतु महाराजा छत्रसाल ने सदैव प्रजा के सुख शांति एवं समृद्धि में विश्वास रखकर उन्हें पाल पोस कर सहयोग दिया है[1]।श्रम शक्ति को व्यर्थ में नष्ट नहीं होने दिया है। अपाहिज 1 रही जनता के दुख दर्द को दूर ही किया था उन विराम ऐसी शासंन् व्यवस्था केवल देव तुल्य राजाओं के राज्यों में देखने को मिलती है। देव युग उन्हें लौट आया है ऐसी धारणा आम प्रजा के मन में छा गई थी।

न्याय-व्यवस्था

छत्रसाल महाराजा ने न्याय व्यवस्था की समग्र बागडोर अपने हाथों में केंद्रित नहीं की, अपितु उन्होंने न्याय की व्यवस्था को एक नया स्वरूप प्रदान किया था। नई न्याय व्यवस्था में महाराजा छत्रसाल का सीधा कोई हस्तक्षेप नहीं था, वह इस न्याय प्रक्रिया पर अपनी पैनी नजर अवश्य रखते थे। इसी का परिणाम था कि उनकी नवीन न्याय व्यवस्था लोकप्रिय एवं सर्वजन हितकारी थी। इसमें छोटे बड़े ऊंच-नीच का कोई भेदभाव बिल्कुल नहीं था।

महाराजा छत्रसाल ने इस न्याय व्यवस्था के अंतर्गत गांव गांव पंचायत में गठित कर आई थी। इस कार्यक्रम को पंचायती न्याय व्यवस्था के रूप में माना जाता था और जनमानस से प्राय अथैया कहा करते थे क्योंकि पंचायतें प्राय: सायंकालीन बेला में (अथई ज़ोर) हुआ करती थीं। सायंकाकाल होने से पहले ही लोग तब तक घर द्वार खेती संबंधी काम कर लेते थे। जनता का बहुमूल्य समय अधिक नष्ट न हो इस पर पूरा पूरा ध्यान रखा

---

1. छत्रसाल जन पालिबो, अरिहिं घालिबो दोय।
   नहीं बिसारियो धारियों, धरन धरा कोउ होय॥ (छत्रसाल काव्यांजलि पृष्ठ 119)

जाता था। गांवों की पंचायतों के बाद परिजनों की पंचायतें होती थी और सबसे बड़ी पंचायत मऊ महेवा (मऊ सहानिया के सानिप्य मेथी। इसे केंद्रीय पंचायत का दर्जा प्राप्त था। इन पंचायतों में सामाजिक प्रतिनिधित्व देने के लिए जातियों के अनुरूप प्रतिनिधि रखे जाते थे। गरीब एवं छोटी जातियों के लोगों को इसमें विशेष प्रतिनिधित्व का मौका दिया जाता था। अतैवजातिय वैमनस्य के पनपने का माहौल बुन्देलखण्ड में नहीं रहा ओमा जमीदार वह जागीरदार का इस पर सीधा हस्तक्षेप ना था।गरीबों व असहाय में भगवान का वास है, ऐसा मानकर महाराजा छत्रसाल ने पंचायतों में पंचों के प्रति इस भक्ति का संदेश दिया है। पंच (प्रतिनिधि) ही परमेश्वर होते हैं, इस धारणा को पूरा बलमा उनकी न्याय व्यवस्था में झलक रहा है।

महाराजा छत्रसाल ने इस व्यवस्था को नैतिक दृष्टि से न्याय संगत बनाकर राज्य के परिजनों में राजकीय एवं राष्ट्रीय पंचायतों का स्वरूप प्रदान किया था। न्याय ही राजा का प्रमुख धर्म है, इस पर उनकी अटूट आस्था थी। महाराजा छत्रसाल के अंतः करण में न्याय व्यवस्था का निम्न स्वरूप हिलोरे लेता रहता। उनके निम्न वचन, उनकी न्याय व्यवस्था के आधार स्तंभ थे---

सालियों उदंडनि कौ, दंडनि को दीजौ दंड,

करीकै घमंड घाव दीन पै न घालियौ।

विनती छत्रसाल करै होय जो नरेश देस,

रहै न कलेस लेस मेरो कह्वों पालियौ॥

इसी कारण उनके राज्य में प्रजा के अंतः करण में निम्न भावना कूट-कूट भरी हुई थी जो पूजा के सुख समृद्धि का प्रतीक है। यथा---

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यंती, मा कशिचद दुःख भाग भवेत्॥

धन्य है महाराजा छत्रसाल के शासंन की न्याय-व्यवस्था एवं उसका परिणाम।

युद्ध-नीति

हर मानव के उत्थान पतन में उसकी नीतियों की ही अहम भूमिका रहती है। महाराजा छत्रसाल ने अपने संघर्ष काल में मुग़ल सल्तनत को डराने के लिए बहुत ही सूक्ष्मता से गहन चिंतन किया था और सफलता की कुंजी हस्तगत की थी।

महाराजा छत्रसाल ने देखा और सोचा कि अपनी विवेक हीनता से यदि धर्म रक्षक व

1. राज धर्म न्याय बिन, बनिज उपाय बिन।
छत्रसाल लाल बिन राग की न दर है॥ (छत्रसाल काव्यांजलि पृष्ठ 29)

देश रक्षक मार दिया जाए तब कौन मातृभूमि की रक्षा करेगा वह मां अतैवएक नीति का सहारा लेकर और संगठन द्वारा उसके अनुरूप कार्य किया जाए। जब तक मैदान-ए-जंग लायक सैन्य शक्ति ना हो जाए तब तक विधर्मी उसे खुली टक्कर लेना मेरी मूर्खता है।

महाराजा छत्रसाल ने आकलन किया कि--- सारी जनता मुगलों की समर्थक नहीं है (अ) कुछ तो ट्रस्ट है और (ब) कुछ भैया बस मुगलों का साथ दे रहे हैं तथा (स) कुछ अपने स्वाभिमान को बेचकर मुग़ल सल्तनत का साथ देने में जो अपना बड़प्पन समझते हैं, यही मुगलों के अंधभक्त हैं। यदि इन्हें जीतकर अपने झंडे के नीचे लाया जाए तब तो तटस्थ और भय वर्ष मुग़ल सत्ता का साथ देने वाले लोग सोते ही आकर सहयोग करेंगे। तथा स्तनों में अनेक ऐसे योद्धा थे जो मुग़ल सत्ता के विरुद्ध सशक्त नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहे थे उन विराम

इस प्रकार का आकलन करके महाराजा छत्रसाल ने सर्वप्रथम (स) स्वाभिमान बेचकर मुग़ल सत्ता का साथ देने वालों पर आक्रमण शुरू कर दिए। धमधेरे सर्वप्रथम परास्त हुए और उनकी शरण में आए, कॉल और मवासी भी हारे और साथ देने लगे। केशव राय डांगी अपनी मूर्खता से छत्रसाल के हाथों मारा जाता था परंतु उसके पुत्रों ने आजीवन छत्रसाल का साथ दिया। अतैवमहाराजा छत्रसाल की नीति सफल हुई। फलित है (अ) तटस्थ और (ब) अरे लोगों ने उनके पास आना प्रारंभ कर दिया महाराजा छत्रसाल का आकलन ठीक निकला और योजना सफल हुई। इस प्रकार से महाराजा छत्रसाल ने बुन्देली जनता का सहयोग प्राप्त कर लिया बुन्देलखण्ड के स्वराज्य का सूर्य प्राची में लालिमा लिए दिखने लगा। भला, उदय हो रहे सूर्य को कौन रोक सकता था? कोई नहीं।

बुन्देली स्वराज्य का सूर्य उदय हो गया-- यह थी महाराजा छत्रसाल की प्रारंभिक नीति का परिणाम। महाराजा छत्रसाल ने बुन्देली जनता का नेतृत्व करके खुलकर मुग़ल सैन्य शिविरों पर आक्रमण करने शुरू कर दिए जिसमें उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

महाराजा छत्रसाल ने अपनी नीति में समय अनुकूल उदारता एवं सत्यम समाचार एक का भी समन्वय किया था। उसी के अनुरूप उन्होंने अनेकों मुग़ल सेना पतियों को घायल अवस्था में उनके शिविरों तक पहुंचाया था तथा शेर अफगान के शव को उसके शिविर में ले जाकर उसके पुत्र को सौंपा था। कैद बनाए मुग़ल सेनापति को साथ लेकर छोड़ देते थे, परंतु तीसरे बाढ़ आने पर मौत के घाट उतार देते थे। अनेकों मुग़ल सैनिकों ने

1. ये लोग अपने घमंड में चूर थे को मां शक्तिशाली थे और मुग़ल सत्ता से पोषित थे- इनसे प्रारंभ में टकराना अत्यंत जोखिम की बात थी, परंतु देव आदि छत्रसाल ने जोखिम को लेना सबसे पहले स्वीकार किया था। धन्य है महाराजा छत्रसाल की दूरदर्शिता और व्यवसाई संकल्प।
2. इस श्रेणी के लोगों का वध करना उनकी नीति थी, अतैवउनके पराजित होने पर उन्हें अपना समझते थे और समझ जाने पर उन्हें जीवनदान देते थे।

महाराजा छत्रसाल की नीतियों को पसंद करके उनका स्वामित्व कर लिया था। पुनः औरंगज़ेब के बार-बार के आक्रमणों से धैर्य धारी महाराजा छत्रसाल ने पहली बार युद्ध करने आए और अदलखा के रणभूमि में (वि.सं. 1758 सैकड़ों टुकड़े कर डाले थे। इसके बाद ना कोई मुग़ल सेनापति लड़ने आया और ना ही औरंगज़ेब ने किसी को भेजा। समय अनुकूल नीति में परिवर्तन करने के लिए छत्रसाल में अद्भुत दक्षता थी। इसी कारण महाराजा छत्रसाल जूदेव सदा विजई रहे।

राज्य विस्तार

महाराजा छत्रसाल ने जिस भूखण्ड पर स्वतंत्र हिंदू राष्ट्र की स्थापना की थी वह भारत माता का वक्त स्थल है। इतिहास के पन्नों में इसे बुन्देलखण्ड की संज्ञा मिली है। बुन्देलखण्ड से लगने वाले पश्चिमी का पूर्वी और दक्षिणी सीमांत राज्यों में महाराजा छत्रसाल की तूती बोलती थी। महाराजा छत्रसाल में कभी भी निजी महत्वाकांक्षा की परिलक्षित नहीं हुई यदि वह चाहते तो दिल्ली क्या समग्र अखण्ड भारत उनकी अधीन होता। वे मात्र सम्राट नहीं बनना चाहते थे, उनका दे आसुरी प्रवृत्तियों को समूल नष्ट करना था, इस देश की पूर्ति करने वालों को वहां का कार्यभार सौंपा- उनका काम रहा है। वास्तव में उनमें सारे जग के महाराजा होने के गुण थे। पुत्र जगतराज वह हृदयशाह की दिग्विजय यात्राएं इसके प्रमाण है। रीवा राज्य को जीतने के उपरांत उसे अपने पुत्र शिवराज कुमार हृदयशाह द्वारा वापस कराना, इसी देश का परिचायक है। दिल्ली मेट्रो का आश्वासंन् महाराजा छत्रसाल ने औरंगज़ेब को दिया था पांच। इसी परिप्रेक्ष्य में उनके

1. विरोधी सेना का सैनिक पाला बदलकर वफादारी निभाए, यह असंभव सी बात है परंतु महाराजा छत्रसाल एक ऐसी मिसाल हैं जिनके पास पाला बदलकर अपने हजारों सैनिकों ने जीवन भर वफादारी से युद्ध में साथ निभाया ओमा जिनमें कई बलिदान भी हुए, पर धोखा नहीं दिया। यह उनकी सहृदयता पूर्ण युद्ध नीति का परिणाम था।

2. बार-बार के आक्रमणों से बुन्देली जनता त्रस्त है ऐसा जानकर अत्यंत धीर गंभीर प्रजा पालक अहिंसा वादी धर्म मूर्ति महाराजा छत्रसाल ने यह कदम उठाया इसका परिणाम अति सुख एवं समृद्धि में सहायक हुआ

3. मुग़ल सेना पतियों की धारणा थी, की बुन्देला छत्रसाल हराने पर चौथ लेकर मुगलों को छोड़ देता है, आता है जान जोखिम हारने पर भी नहीं है, ऐसा सोचकर मुग़ल सेनापति लड़ने के लिए आ धमकता थे परंतु पुर्दिल का की घटना ने सबके होश उड़ा दिए थे, फिर कोई तैयार ना हुआ।

4. विरोधी सेना के सफल होने पर पीछे हट जाना, धोखा देकर धावा बोलना अर्थात समय अनुकूल छापामार युद्ध को अपनाना, वह सुरेश कर मानते थे। व्यर्थ में सैनिकों को कटवाने में सदा दूर रहते थे उन विराम वे जानते थे कि पवंदूर, कुटिल और धोखेबाज है इनके साथ धर्म युद्ध के अनुरूप (नियमानुसार) व्यवहार करना धोखा खाना कम आता है।

5. यह एक ऐतिहासिक घटना के समय की बात है। लगातार 27 वर्षों तक औरंगज़ेब को दिल्ली से बाहर रखकर भी छत्रसाल के विरुद्ध षड्यंत्र रचता रहा।

पुत्र कुं. जगतराज की दिग्विजय एवं महान बलशाली अप्रतिम योद्धा युवराज दशा के विजय अभियान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। एक बार दिल्ली नरेश मुहम्मद शाह ने अपनी पुत्री के विवाह (निकाय के समय युवराज है दशा से कहा था कि महाराज आते तो वे 12 परखने पुत्री को जरूर भेंट करते। निसंदेह महाराजा छत्रसाल का राज्य विस्तार केवल बुन्देलखण्ड तक ही सीमित न था इसके इर्द-गिर्द तक राज्य की सीमाएं थी।

महाराजा छत्रसाल के दिग्विजय स्वरूप का दर्शन निम्न लोकोक्ति में विद्यमान है--

छत्ता तेरे राज्य में, धक-धक धरती होय।

जित् जित् घोड़ा मुंह करे, तित् तित् फत्ते होय॥

महाराज बुन्देला छत्रसाल द्वारा स्थापित राज्य की सीमा को बखां करती लोकोक्तियां आज भी जनमानस के मुखारविंद उसे सुनी जाती हैं।

नर्मदा कालिंदी टौंस, चंबल महाबट तें।

बिरच बुन्देली हद्द बांधी हिंदूआन की॥ (करन कवि कृत)

इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस।

छत्रसाल सौं लड़न की, रही न काहूं हौंस॥ (लोकोक्ति)

अर्थात उत्तर में यमुना (पंचनंद कालपी हमीरपुर बांदा चाकघाट से लेकर दक्षिण में नर्मदा पर्यंत, पश्चिम में चंबल से लेकर पूर्व में टॉस (हर, बिरसिंहपुर एवं रीवा राज्य की सीमाओं तक पहला वृहद बुन्देलखण्ड का यह भूभाग महाराजा छत्रसाल के प्रशासनिक अधिकार में रहा। लगभग 75000 वर्ग किलोमीटर में फैले राज्य विस्तार को 44 पदों में बैठकर महाराज ने अच्छे लोगों के हाथों फलों की बागडोर सौंपी थी। संपूर्ण राज्य की देखरेख के लिए 36 मंत्रालयों को स्थापित किया था। जिन्हें

तत्कालीन समय में 36 कारखाने कहा जाता था इन मंत्रालयों की जिम्मेदारी गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त वैरागी संतों को भी सुपुर्द थी। इतिहास में महाराजा छत्रसाल की राज्य मोहर (मुद्रा छाप निम्न प्रकार से बताई गई है।

जगत विदित मुद्रा, सासनाया समुद्र:।

जगत जगत इन्द्रो, छत्रसालो नरेन्द्र:॥

---

1. महाराजा शब्द का प्रयोग छत्रसाल जूदेव के लिए किया गया है। वास्तव में मुग़ल सत्ता उन्हें महाराजा मानती थी।
2. जनपद मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) के निकट बुन्देली नाला आज भी बुन्देलखण्ड की पूर्वी सीमा की प्रमाणिकता को प्रमाणित कर रहा है।
3. महाप्रभु प्राणनाथ जी के पठानों गामी भक्तजन, जिन्हें महाराजा छत्रसाल सुंदर साथ कहकर सम्मान पूर्वक पुकारते थे।

उक्त वर्णित शब्दों से उनके राज्य सीमा का आकलन किया जा सकता है। इतिहास में महाराजा छत्रसाल की शासंन् व्यवस्था राज्य में आदर्श कहीं गई है जिस की प्रासंगिकता आज भी है।

राज्य-कोष

महाराजा छत्रसाल ने अपने बाहुबल से जिस स्वतंत्र राज्य बुन्देलखण्ड की स्थापना की थी, उस राज्य की जनता खुश एवं समृद्धि साली थी। महाराजा छत्रसाल ने कर वसूली का उधार स्वरूप अपनाकर राज्य की प्रजा को भरपूर आधारित किया था। उनका मानना था कि प्रजा की खुशहाली ही राज्य की अमूल्य धरोहर (कोर्स है, इसी के बलबूते एक विशाल समृद्धि शाली राष्ट्र की सुरक्षा और प्रजा का संरक्षण संभव है। उनका मानना था कि--

॥दोहा॥

राजी सब रैयत रहे, ताजी रहै सिपाही।

छत्रसाल ता राज को, बाल न बांको जाहि॥

॥कुण्डलिया॥

माली के सम नृप छत्ता सो संपति सुख लेहि।

सत बीजनि रोपहि थलनि, लघुहिं बड़ो करि देहि॥

लघुहिं बड़ो करि देहि, लेहि फूले फल याके।

फूटै देहि निकासि, मिलहिं फूटै वसुधा के॥

नत उन्नत करि देहि, करहि उन्नत कहं खाली।

कंटक छुद्र निवारि और सींचहि नृप माली॥

अपने ऐसे उदार एवं राम राज्य संघ परिकल्पना को साकार करने वाले महाराजा छत्रसाल के राज्य की वार्षिक आय डेढ़ करोड़ रुपये के लगभग थी। यह उनकी स्थायी और नियमित आय थी। बंदी बनाए जाने वाले मुग़ल से पैसा लारों द्वारा चौथ वसूली होती थी एवं दक्षिण भारत से आने वाले मुग़ल कोर्स को लूटने से प्राप्त धन की आय अतिरिक्त थी। निसंदेह, बुन्देली साम्राज्य सुराज बनकर पल्ला और पूरा पूरा

बहुत बड़ी राशि का एक गुप्त कोष था जिसे महाराज ने बगैरा के लिए सुरक्षित कर रखा था, जनश्रुति के अनुसार यह राशि नौ करोड़ रुपयों से अधिक थी। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि महाराजा छत्रसाल जी कभी अवैध वसूली प्रजा से नहीं करते थे, आशा माइक युद्धों के समय में ऐसी राशि बखत बैरा ही उपयोग में लाई जाती थी।

---

1. जनता की सुख-समृद्धि ही राज्य की अमूल्य निधि है, ऐसा विचार महाराजा छत्रसाल जी का था।

सैन्य गतिविधि

महाराजा छत्रसाल को पैतृक विरासत में सैन्य शक्ति के नाम से कुछ भी ना मिला था। स्वयं के आत्म बल एवं दैवीय शक्ति के सहारे उन्होंने अपने लक्ष्य को कार्यान्वित किया था। 5 घुड़सवार और 25 सैनिकों के अल्प संगठन से उन्हें चमत्कारिक सफलताएं मिली थी। जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को वानर सेना ने सहयोग देकर लंका विजय कराई थी, वैसे ही छत्रसाल को नितांत असहाय अवस्था में विंध्यांचल की जनजातियों ने भरपूर साथ दिया था और बुन्देलखण्ड की असंभव आजादी को संभव कर दिखाया था। उन्हें सब के बलबूते महाराजा छत्रसाल ने बड़ी से बड़ी लड़ाइयां जीती थी धामौनी के फौजदार को परास्त करके उससे तो पूछी नहीं थी, इसके पूर्व उनके पास एक भी तो अपना थी। केशव राय डांगी को द्वंद युद्ध में परास्त करके युवा बुंदेलों की शहीद होने वाली संभावित शक्ति को बचाकर उन्होंने अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया था। इन सफलताओं को देखकर कटेरा और शाहगढ़ के

जमीदारों सहित बुन्देलखण्ड के लगभग 70 छोटे-बड़े जमीदार और जागीरदार छत्रसाल की ध्वज पताका के नीचे आ गए थे। उनके भाई रतन सा और अंगद राय भी उनसे मिले थे। मुगलों से छीनी तमाम तोपे बुन्देली सेना के रण कौशल एवं उत्साह वर्धन में सहायक थी। आगे चलकर तोपों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई थी।

महाराजा छत्रसाल को जब सैन्य गतिविधि के संचालन में धन की समस्या आई थी, तभी उन्हें परमात्मा के स्वरूप महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के दर्शन हुए थे पूर्व राम उन्हीं के वरदान से पन्ना नगरी रतन गरबा हो गई थी। पन्ना में हीरो की खानों से धन की समस्या निर्मूल हो गई। श्री प्राणनाथ जी की प्रेरणा से जनमानस में छत्रसाल के प्रति भारी जनसमर्थन मिला। इसी संबंध में परशुराम गोस्वामी लिखते हैं--- स्वामी प्राणनाथ ने लोगों में प्रेरणा उत्पन्न करके भारी जनसमर्थन दिलाया इतना ही नहीं, स्वामी जी छत्रसाल के अनेकों आक्रमणों में स्वयं 7 गए।.... मुगलों के विरुद्ध युद्ध में जाते समय छत्रसाल के सैनिक जब प्राणनाथ जी जैसे संत को अपने बीच में पाते होंगे, तो कितने अधिक उत्साह से लड़ते होंगे, इसकी कल्पना की जा सकती है।

---

1. तहां गौड़ जोरै वनवासी, मिल्यो दामनीराय मवासी (छत्रप्रकाश)
2. धंधेरों के युद्ध में परास्त हो जाने पर विजय छत्रसाल के अहिंसक रणनीति से प्रभावित होकर कुंवर सेन का हृदय परिवर्तित हो गया था। इसी कारण उसने महाराज छत्रसाल से मैत्री का हाथ बढ़ाया था और जीवन भर छत्रसाल की सेना का सहायक बना रहा कभी धोखा न दिया था उसने। महाराजा छत्रसाल की यह पहली सफल विजय थी, जिसका बुन्देल वासियों पर बहुत गहरा दूरगामी प्रभाव पड़ा। छत्रसाल की सैन्य गतिविधि विद्युत गति से बड़ी थी।
3. राजकुमारों को बंटवारे में भी पर्याप्त मात्रा में तो पे मिली थीं।
4. बुन्देलखण्ड दिग्विजय यात्रा (सं 1743) के दौरान;
5. हिंदू कुलगौरव: वीर छत्रसाल: पृष्ठ 91

महाराजा छत्रसाल, थोड़े ही समय में सैन्य शक्ति में आत्मनिर्भर हो गए थे। तोपों का निर्माण बुन्देलखण्ड में ही होने लगा था, गोला बारूद सब देश में ही बनने लगे थे। अच्छे नस्ल के घोड़े भी यहां तैयार होने लगे थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी महाराजा छत्रसाल ने सब कुछ बुन्देलखण्ड में ही ऊपर जाना वह बनाना सिखा दिया था। विदेशी वस्तुओं की जरूरत है अब बुन्देलखण्ड में नए रही थी। हर हाथ को काम था और हर एक की हर काम में लगन थी और सभी का मातृभूमि के प्रति गहरा लगाव था।

तत्कालीन वीतक के प्रकरण 60 में उल्लेख मिलता है कि अप्रैल 1688 ई. में राठ पनवारी के असहाय कहे जाने वाले लोगों ने लाठी डंडों के बलपर मुग़ल सिपहसालार मिट्ठू पीरजादा के पांच हजार सवारों को मार भगा दिया था।

मुग़ल सल्तनत के प्रति विद्रोह पूर्ण रूप से सुनियोजित सुविचार इट एवं मां भारती की राजनैतिक मुक्ति का आंदोलन था, जो बुन्देलखण्ड में साकार हुआ था।

महाराजा छत्रसाल की सैन्य गतिविधि का बारीकी से व्यापक अध्ययन करना अति आवश्यक है। संभव है कि इसमें निहित, भविष्य का मार्गदर्शन उजागर हो विद्वान हो।

सैन्य संसाधन

महाराजा छत्रसाल के पास प्रारंभ में युद्ध का मुख्य अंग तो खाना नहीं था परंतु उन्होंने धामौनी युद्ध में तोपे मुगलों से छीनी थी। प्रारंभ में इनकी संख्या अल्प थि, फिर छत्रसाल ने तो पर डालने का कारखाना श्रीनगर (जनपद महोबा) में स्थापित किया था जहां से तोपों और बारूदी गोलू का विपुल मात्रा में निर्माण होने लगा था। फौजी मियां इसका अधिकारी था, स्वयं महाराजा छत्रसाल समय-समय पर निरीक्षण करते थे। धीरे-धीरे सैन्य सामग्री के लिए छत्रसाल जी आत्मनिर्भर हो गए फोन विराम विदेशी नस्ल के अच्छे घोड़े भी बुन्देलखण्ड में तैयार होने लगे थे। समूचे बुन्देलखण्ड में नव युवकों को विशेष ढंग से सैन्य शिक्षा के लिए तैयार किया जाने लगा था। सैन्य शक्ति के प्रबल स्तंभ घोड़े और सिपाही हैं। इसी पर महाराज ने विशेष ध्यान देकर सैन्य शक्ति की तैयारी की थी। यथा---

---

1. *फेर मिट्ठू पीरजादे ने, बुरी जो करी नजर।*
   पांच हजार असवार ले दौड़ा, रहा में भाई फजर ॥169॥

   तिनको मारा चमारों ने, फिरा मुंह स्याह ले।

   हुई लानत संसार में, काफर होने के ॥170॥ (वीतक प्र. 60)

2. कालिंजर से लेकर जमुना तट के सिमनी क्षेत्र तक प्रत्येक घर से एक पुत्र को खिलापिलाकर सैनिक बनाया जाता था, किस प्रकार हर घर में सैन्य गतिविधि कार्य करने लगी थी।

तोड़ादार घोड़ादार बीरनि सों प्रीति करि,

साहस सों जीति जंग, खेत तें न चालियौ।

(छत्रसाल नीति वाले कवित्त के अंश)

उनकी सेना में 40 हजार पैदल सिपाही थे, अश्वारोही दल में 12 हजार सैनिक थे। युद्ध के समय सैनिकों की संख्या एक लाख के ऊपर हो जाती थी। निःसन्देह सैन्य-वृद्धि दिन दूनी रात सौगुनी की भांति विद्युत गति से हो रही थी, जो सफलता की सूचना दे रही थी।

महाराजा छत्रसाल के युवराज पुत्र कुं. विजय शाह के सीधे नियंत्रण में तीन हजार अशवरोही सैनिक रहते थे। इस संदर्भ में निम्न लोकोक्ति प्रचलित है---

गढ़ी कोटि पल छन्न में टोरत, जो नृप करें विरोधा।

तीन सहस हिरदेशा कै, हनुमान से जोधा॥

सेना में काफी संख्या में ऊंट भी रहते थे। प्रशिक्षित हाथी भी युद्ध में ले जाए जाते थे। ऑटो में कई किसमें थी, यह उनकी दौड़ पर निर्भर थी। समय-समय पर कठिन घाटियों में सैन्य अभियान चलता था इन सभी के कारण कभी-कभी बुन्देलखण्ड के बाहर की सीमाओं के भी अतिक्रमण हुए। यदा-कदा कोई आदम का तब उसे ऐसी करारी मार पड़ी कि वह नेस्तनाबूद हो गया। यह सैन्य सामग्री के समुचित उपलब्धि का प्रभाव था।

महाराजा छत्रसाल ने जगह-जगह तो पहन रखी थी ताकि बुन्देलखण्ड में सुरक्षा की कमी ना रहे। राजधानी पटना में सदैव 7000 सैनिक तथा ₹50 रहती थी।

महाराजा छत्रसाल के निम्नलिखित आदेश पत्र में सैन्य सामग्री की प्रमाणिकता का पता चल रहा है---

जेठ सुदी पंचमी वि.सं. 1787 मु. महेवा में छत्रसाल जी द्वारा लिखा गया जायदाद सेना और तोपों के बंटवारे संबंधी आदेश

,,,,,, हम चाहत हैं कै जौ फौज हमारी है वा तोपै तीकौ सवायो हींसा हिरदेसाह पावै बा पौन हींसा जगतराज पावै चालीस (चवालीस?) परगने हमने पराक्रम से कमाए, उन परगनन में तोपै जैसे पर गने हैं उसकी सिपाही-बंदोबस्त के लाने हैं कौनहूं परगने में दो सौ सिपाही कौनहूं परगने तीन सौ हद पान सौ लों परगनन में है अंदाजन नौ दस हजार सिपाही हूं हैं और अवुसरन (मौकों के लिए) वा एक एक मुतसदी....सात हजार सिपाही परना (पन्ना) के बंदोबस्ती पै हैं वा बीस हजार फौज हमारे साथ में हैं, तीन हजार फौज जैतपुर में हैं, ऐसी एकतालीस बियालीस हजार फौज हैं... हलकी बड़ी तोपें हैं हर एक परगने में दौ तोपें कतहीं 5 जमा हैं (125) तोपें परगनिन में हू हैं

सौ (100) तोप हमारे संग में हैं पचास (50) तोप परना में है बीस पच्चीस तोप जैतपुर में हैं।.... बीस हजार सवार तिनके पीछे एक एक घोड़ा सवार.... और पांच किरोड़ रुपैइया परना महेवा मऊ, जैतपुर के खाता में जेमाह तीन किरोड़ हिरदेशाह पावे दो किरोड़ जगतराज पावै, फुटकर सामान सोना चांदी जवाहरात हीरा बगैरह दोउ जनन को बांट दयो गवो है....

महाराजा छत्रसाल जी द्वारा संग्रहित सैन्य-सामग्री का विपुल भंडार बुन्देलखण्ड के सैन्य समृद्धि का अनुपम खजाना रहा है। संडे को मास अन्य संसाधनों की आत्मनिर्भरता नहीं कुमार छत्रसाल को हिंदकेसरी महाराजा छत्रसाल बना दिया था।

सन्धि की राजनीति

ओरछा नरेश महाराजा वीरसिंह जूदेव (संवत् 1663-1684) के उपरांत ओरछा गादी पर संक्रमण के बादल छा गए थे। मुग़ल सल्तनत बुन्देलखण्ड के ऊपर हावी हो गई थी। जिसका विरोध स्वर्गीय चम्पतराय ने प्राणों की बाजी लगाकर किया था पूर्व राम इन्हीं के होनहार सुपुत्र कुमार छत्रसाल ने मदांध औरंगज़ेब की सत्ता बुन्देल भूभाग से उखाड़ फेंकने का कर्म प्रारंभ कर दिया था, तब असहाय औरंगज़ेब ने रणभूमि के बजाय कूटनीति का सहारा लेना उचित समझा था।

महाराजा छत्रसाल की अपार बल पर उसके सम्मुख वह बौना हो गया था, धीरे-धीरे मुग़ल सल्तनत समाप्त होती जा रही थी। आए दिन युद्धों से प्रजा भी तंग आ चुकी थी जिसका अनुभव महाराजा छत्रसाल ने किया था। संयुक्त युद्धों के अभियानों में महाराजा छत्रसाल को काफी कुछ अनुभव करा दिया था।

मुग़ल बादशाह से अनेक बार संध्या हुई और टूटी, जिसका लाभ महाराजा छत्रसाल ने उठाया था। अभी तक की संधियों का क्षेत्र बुन्देलखण्ड ही रहा था। औरंगज़ेब के मन में एक बात घर कर गई थी कि जब तक छत्रसाल बुन्देलखण्ड के अंदर रहेंगे तब तक किसी भी युद्ध में सफलता मिलने वाली नहीं है। यह बात उसे तहब्बर खां ने (संवत् 1735 के उपरांत) औरंगज़ेब को भलीभांति समझा दी थी तभी उसने थलवारा ताना-बाना बुनने की राय विचारी थी क्योंकि उसे बुन्देलखण्ड छिन जाने की चिंता सताती रहती थी।

तहब्बर खां की यह कूटनीति भरी चाल औरंगज़ेब को तुरंत समझ में आ गई जिससे औरंगज़ेब ने एक संधि का मसौदा तैयार किया और एक दूध के माध्यम से प्रेषित किया था। इधर तहब्बर खां ने वाकपटुता से महाराजा छत्रसाल को अपना

1, घोड़ों और तोपों के विशाल भंडार का पता परवर्ती काल की निम्न लोकोक्ति में भी झलक रहा है-

नौ से तपेला (घोड़े) कै एकै अनी, छोड़ गए बेनी (नाम) अठारह पनी (तोपें)।

विश्वासपात्र बना लिया था जिसकी झलक उनके एक पत्र में मिलती है। उसने महाराजा छत्रसाल को एक देवता के रूप में बताया था। शाही पत्र की मध्यस्थता इसी तरह खाने की थी।

संधि में औरंगज़ेब का गुप्त आशय था कि छत्रसाल के बुन्देलखण्ड से चले जाने पर छीना गया भूभाग वापस लेना और दक्षिण भारत में उनके साथ यथासंभव विश्वासघात करना। संधि की राजनीति में पढ़कर महाराजा छत्रसाल को लगभग 1 वर्ष संवत् 1736 में दक्षिण भारत रहना पड़ा।

महाराजा छत्रसाल द्वारा दक्षिण भारत में

मुग़ल सत्ता को सैन्य मदद

(वि.सं. 1736)

महाराजा छत्रसाल की बढ़ती शक्ति को देखकर औरंगज़ेब ने कूटनीति का सहारा लेकर तहब्बर खां की मध्यस्थता लेकर मार्च (1679 (संवत् 1735) के उपरांत छत्रसाल जी से एक संधि की थी। संधि पत्र में औरंगज़ेब ने छत्रसाल जी को आश्वासंन् दिया था कि हम बुन्देलखण्ड में आपकी सत्ता स्वीकार करते हैं इसके बदले में आप मुझे दक्षिण भारत में सैन्य मदद करें ताकि हम वहां मुग़ल सत्ता के प्रति उपज रहे स्थानीय विरोध को दबा सके और मुझे दक्षिण भारत में मुग़ल सत्ता का निर्णय फैलाव कायम करने में सफलता मिल सके।

---

1. तहब्बरखां तीन चार बार महाराजा छत्रसाल जी द्वारा पराजित हो चुका था। धामौनी में तहब्बरखां की एक भयंकर हार शिवराम प्राण दान मांग करते तहब्बरखां जीवित बच सका था। उसने महाराजा छत्रसाल की इस युद्ध धामौनी 1735 में वीरता देखकर कहा था--- छत्रसाल शो कबाहु ना लड़ो छत्रसाल आदमी ना हो देवता आए... (महाराजा छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम--- जेठ बदि 30 संवत् 1687 मु. मऊ.)।
2. तहब्बरखां मार्च 1679 (संवत 1735) में औरंगज़ेब को छत्रसाल की दैवीय शक्ति का परिचय उस समय कराया था जब उसे औरंगज़ेब द्वारा अजमेर की फौजदारी प्राप्त हुई थी। दोनों ने मिलकर 119 की तैयारी की थी--- बुन्देलखण्ड को छीनने के लिए एवं छत्रसाल का दमन करने के लिए। इसके लिए आवश्यक था-- छत्रसाल से दोस्ती एवं छत्रसाल को बुन्देल भूमि से कुछ काल के लिए बहुत दूर भेजना पहुंचाना। से तहब्बर खां जीवनदान पाकर छत्रसाल का प्रशंसक बन गया था दीन की कसम खाकर उसने धोखा ना देने का वचन छत्रसाल जी को दिया था, अतैवमहाराजा छत्रसाल जी ने उसकी मध्य स्वीकार कर औरंगज़ेब के संधि प्रस्ताव को मंजूर कर लिया था आस्तीन का सांप निकला उसने वैसा फल भी पाया। अक्टूबर 1678 (संवत् 1735 क्वार मास) तक तहब्बरखां की नियुक्ति अवध के फौजदार के पद पर रही, तत्पश्चात 6 माह (अक्टू. 1678 से मार्च 1679) तक वह बुंदेलखंड में रहा, इसी दौरान (वि.सं.1735 में) धामौनी में इसकी भयंकर हार हुई थी। जनवरी 1681 (सं 1737) में इसकी मृत्यु (हत्या) शाही दरबार की ड्योढ़ी पर हुई थी।
3. बीजापुर और गोलकुंडा की रियासतें।

महाराजा छत्रसाल ने इस संधि प्रस्ताव को बुन्देल भूमि के हित में मानकर स्वीकार किया था तथा दक्षिण में जो मुग़ल विरोधी थे, वह सभी मुग़ल समुदाय के ही लोग थे, उन्हीं का दमन करने के लिए औरंगज़ेब ने मदद चाहिए थी वह यह प्रस्ताव भी उन्हें अनुकूल लगा था। महाराजा छत्रसाल ने दूध के माध्यम से संधि प्रस्ताव की स्वीकृति दिल्ली दरबार भिजवा दी थी।

संधि के अनुसार महाराजा छत्रसाल संवत् 1736 में दक्षिण भारत सैन्य प्रस्थान कर गए और औरंगज़ेब की सेना में सम्मिलित होकर मुग़ल सत्ता विरोधी स्थानीय मुग़ल सेना को ध्वस्त करने लगे। प्रदीप को इसमें भारी सफलता मिली। छत्रसाल जी के छोरे को देखकर औरंगज़ेब डर गया। उसने चुपचाप बुन्देलखण्ड में संदीप पत्र के प्रतिकूल शाही फरमान जारी कर दिए,ते महाराजा छत्रसाल द्वारा जीते गए क्षेत्र मुग़ल सेना अपने अधीन करने लगी। महाराजा छत्रसाल का औरंगज़ेब के इस कुकृत्य एवं संधि विरोधी हरकत से अनभिज्ञ थे। इस समय छत्रसाल जी इमानदारी से मुग़ल सेना का दक्षिण में साथ दे रहे थे।

मुग़ल सेना ने अनेक महत्वपूर्ण सामरिक ठिकानों पर आधिपत्य जमा लिया। कोटरा धामौनी, कालिंजर आदि दुर्ग महाराज के नियंत्रण से मुक्त हो गए थे।

एक दूध गुप्त रूप से बुन्देलखण्ड से महाराजा छत्रसाल के पास पहुंचा। उसने औरंगज़ेब की सारी हरकतें बताकर मुगलों द्वारा चुने गए ठिकानों की भी जानकारी दी। नीति निपुण महाराजा छत्रसाल को औरंगज़ेब की कूटनीति समझ में आ गई। उन्होंने भी उन्नति का सहारा लेते हुए और दक्षिण की ओर चलते हुए रामेश्वरम तीर्थ यात्रा का छलावा दिया। औरंगज़ेब यही मात खा गया। महाराज अपनी समग्र सेना को लेकर चक्कर काटते हुए रात दिन चलकर नर्मदा तट पर आकर रो के। यहीं बैठ कर उन्होंने छीने गए सामरिक ठिकानों को वापस लेने की नीति बनाई थी।

महाराजा छत्रसाल जी लगभग 1 वर्ष (संवत् 1736 दक्षिण भारत में रहे थे। इतने काल में उनके जीते गए अनेक भूभाग (बुन्देलखण्ड विवादित हो गए थे उन्हें संवत् 1737 में बुन्देलखण्ड में जो युद्ध की झड़ी लगी थी वह इसी का परिणाम थी।

राज्य बंटवारा

महाराजा छत्रसाल ने अपने विशाल राज्य को तीन भागों में बांटा था छत्रपति शिवाजी के पुत्र बाजीराव पेशवा को महाराजा छत्रसाल के तक पुत्र मानकर राज्य का एक तिहाई भाग दिथा। समूचे उत्तर एवं दक्षिण भारत को एक सूत्र में पिरोने के लिए वसुधैव कुटुंबकम की भावना दर्शा कर यह तीसरा भाग

उन्होंने बाजीराव पेशवा को दिया था। युवराज और हृदयशाह एवं राजकुमार कुंवर जगतराज को विशेष राज्य का आधा-आधा

भाग सौंप दिया था।

राज्य बंटवारे संबंधी निम्न दस्तावेज अवलोकन किया है जो महाराजा छत्रसाल ने मुंह मऊ में मिती कार्तिक सुदी 13 संवत् 1787 का लिखा था---

.... आपर एक करोड़ तिरपन लाख की जागा हमने अपने पराक्रम से कमाई है, तीमै तेईस लाख की जाघा अपने कुंवरादल को दई, बाकी रही एक करोड़ तीस लाख की और हमारो आखीर बखत आयौ, तीसै हम लिख देते हैं कि सवावां हीसा दिमान हिरदेसाह जू देव पावै वा पौन हीसा श्री दिमान जगतराज जू देव पावै व बाजूराव पेसवा को जो लड़का कहकर हमनै मानो है..... तीसरा हीसा देन कहो, एतरा पेसवा को हीसा दवौ जायके जो हिरदेसाह कौ सवावां हीसा बैठे..... धामौनी और सिमौनी की बड़ी मुश्किल में फतै पाई है सो जै हिरदेसाह के हीसा में बांटे जावै, और हमारे माफक तीन ही जनन कौ कहि देवे.....

ओरछा का इतिहास (पृ.195) पर उल्लेख मिलता है कि महाराजा छत्रसाल ने अपने जीवनकाल में बाजीराव पेशवा को तीसरा पुत्र (दत्तक पुत्र) मान लिया था। इससे पन्ना राज्य को तीन भागों में विभाजित कर दिया था।

1. कुं. हृदयशाह पन्ना के राजा हुए। पन्ना, मऊ, गढ़ाकोटा, कालिंजर, शाहगढ़ और आसपास का इलाका। जिसकी आमदनी 42 लाख रुपया थी।
2. कुं जगतराज को जैतपुर, अजय गढ़, चरखारी, बिजावर, सरीला, भूरागढ़ और बांदा राज्य में मिला था। जिसकी आमदनी 36 लाख रुपया थी।
3. बाजीराव पेशवा को कालपी, हटा, जालौन, गुरसराय झांसी, सरोज, गुना, कॉमर्स सागर और छोटी-मोटी जागीर भी मिली थी जिसकी आमदनी 36 लाख रुपया थी।

इस समय महाराजा छत्रसाल ने बाजीराव पेशवा और दोनों पुत्रों के बीच कुछ शर्तें रखी थी:---

1. दोनों भाई (कुं हृदयशाह और कुं. जगतराज) चंबल और यमुना के उस पार का भूभाग छोड़कर सब स्थानों पर युद्ध के लिए बाजीराव के साथ जाएंगे और जो लूट में मिलेगा उसे बराबर बराबर बांट लेंगे।

2. यदि बाजीराव दक्षिण के किसी युद्ध में व्यस्त होंगे तो दोनों भाई दो माह तक इनके भूभाग (बुन्देलखण्ड) की रक्षा करेंगे।

3. बाजीराव, महाराजा छत्रसाल के पुत्रगणों (कुं हृदयशाह एवं कुं. जगतराज) को भाई के समान सम्मान देंगे।

---

1. यह पत्र, महाराजा छत्रसाल के वनगमन पर्व (अंतर्ध्यान) के चार दिन पूर्व का लिखा हुआ है।

बखत-बैरा के स्पष्टीकरण के संबंध में महाराजा छत्रसाल का निम्न पत्र, जो हृदयशाह के नाम लिखा था ओमा राज्य बंटवारे पर भी प्रकाश डालता है तथा भविष्य के लिए कुंवर विजय शाह के लिए मार्गदर्शन भी इसमें निहित है:---

लिख दई श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा छत्रसाल जू देव ने येते श्री महाराज कोमार श्री दिवान हिरदेसाह जू देव कौ आपर हमने तुमकौ बुलायौ आये सो अच्छी भई, तुम्हारे आये से कुल काम तुम्हारे निकर आए। पांच किरौड़ रुपेयन के मध्यै, आगे हुकम पटवादयौ है सो वही माफक करियौ वा किरोड़ रुपैइया धरे है व कछु मुहरै हैं सो तुम सै जबानी कह दयौ है, परना के खजाने में जैसे तैसे लिलवा जइयो व अपने सुपरस (देखरेख) रखियौ (रक्खो), ई मैं काऊ को अख्तियार नहीं आय। वखतबैरा के लाने हमने तुमको दए है तुमको चाहिए कै वखतबैरा कौ काम परै तब रुपैई इन में हाथ डारियौ, काहै सै कै हमने चौदह पदरह करोड़ रुपैइया बड़ी मुसकिल में जमा कर पाए हैं। चालीस पचास लाख की साल जमाकरी है, समझ कै चलहौ तो पुसतन कौ रुपैइया पूज जै है, मुख मुख बातै हमने तुमसे सब कह दई हैं, अच्छी तरा से राज को समारियौ, काम कौ व राज कौ दैखै रहियौ।

--- पूस 14 संवत् 1788 मऊ---

तीनों पुत्रों के विभाजन के इस राज्य बंटवारे को पूर्वी, मध्य एवं पश्चिमी बुन्देलखण्ड के रूप में भी देखा जा सकता है।

युद्ध कला

प्रस्तावना: युद्ध का पर्याय महाराजा छत्रसाल की युद्ध कला का गहन मूल्यांकन करना समीचीन पहलू है सैकड़ों अनुभवी सितारों को करारी मात देने में महाराजा छत्रसाल कैसे सफल हुए जबकि यह सिपहसालार साम दाम दंड भेद आदि नीतियों को अपनाने में पीछे ना थे। राजपूत क्षत्रिय छत्रसाल कुमार ने अकेले अल्फा वस्था से ही इनका सामना किया था आखिर यह कुमार जीवन भर सफलता की तर्ज पर कैसे आगे बढ़ता रहा? बचपन में ही माता-पिता का अवसान इन्हें अनाथ बना चुका था। देशभर के क्षत्रिय राजपूत जिस मुकाम पर कभी न पहुंचे थे उस समय यह कुमार अपनी लक्षित

मुकाम के अनेकों पायदानों को पार कर चुका था और उसने 34 वर्ष की अवस्था में ही बुन्देलखण्ड भूभाग का महाराजा बंद कर मुग़ल सल्तनत को करारा झटका दिया था। निसंदेह इस कुमार में अनेकों खूबियां थी जो अन्य क्षत्रिय को मारो व पराक्रमी वीरों में ना थीं।

(*) भारतीय वीरों की वीरता की कहानियां पूरे विश्व में व्याप्त रही हैं। इन वीरों की वीरता शत्रु सैनिकों का भी मन मोह लेने वाली होती हैं। यह भारतीय वीर रणभूमि

में विजयी लक्ष्य को लेकर उतरते हैं और लौह स्तंभ की तरह अडिग रहकर पराजय के बजाय मर मिटना सुरेश कर मानते हैं। अतैवविरोधी सेनाओं के मुकाबले भारतीय सेना को भारी धन और जन की हानि उठानी पड़ती है, यह परम पराक्रमी पीर युद्ध से पीठ दिखाना कलंक मानते आए हैं, गलत है कभी-कभी लक्ष्य हासिल किए बिना समूची अल्प से ना कॉल कमलेश होती रही है। चांद पर मर मिटने छत्रिय वीरों की आन रही है, जिसके अनेकों दुष्परिणाम सामने आए हैं। महाराजा छत्रसाल की रणनीति ने इतिहास के इस क्रम को उलट दिया था, लक्ष्य पाए बिना क्षत्रिय (वीरों का मर जाना वह कदापि उचित नहीं मानते थे अपितु रणभूमि से शत्रु को चकमा देना उन्हें श्रेष्ठ कर लगा था इसी गुण के कारण उन्हें धन भजन की न्यूनतम हानि हुई थी। सावधान शत्रु पर बिना समय गवाएं उन्हें आक्रमण करना वह बेहतर मानते थे। इसी गुण के कारण छात्र साली सैनिक एक विशिष्ट रणनीति बनाकर लड़ते थे और रणनीति असफल होते ही भाग निकलते थे, सिर छापामार नीति अपनाकर विरोधी सेना को कुचल डालते थे। इसी कारण से महाराजा छत्रसाल की युद्ध कला की धाक चारों तरफ फैल रही थी। भूषण कवि ने उस समय ठीक ही कहा था---

चाक चक-चमू अचाक चक चहूं ओर।

चाक-सी फिरत धाक चम्पत के लाल की॥

छत्रसाल की यह युद्ध कला भारतीय सैन्य इतिहास का स्वर्णिम माना जा सकता है।

(*) महाराजा छत्रसाल में व्यक्तिगत क्षमता और नैसर्गिक योग्यता के अतिरिक्त और भी विशिष्ट गुण थे। उनमें सैन्य बल को सफल और सफल बनाने वाले तत्वों में जिन गुणों को विशेष रूप से महत्व दिया जा सकता है उनमें पहला कौन था--- उनकी सेना को बुन्देलखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों का परिपूर्ण (हंसता मलक ज्ञान। दूसरा गुण था--- बुन्देलखण्ड में पूर्व काले की युद्ध कलाओं का बोध और युद्ध कला के बोध का युद्ध भूमि में सफल प्रयोग किया जाना। तीसरा कोण था--- युद्ध भूमि में हत्यारों की भूमिका और इसके मातम में की समझदारी, इसे महाराजा छत्रसाल ने भरपूर ध्यान देकर पूरा किया था। बुन्देली सेना में आधुनिक तोपों बंदूकों, आग्नेय अस्त्रों, सड़क

पर आदि के प्रयोग में हंसता मलक ज्ञान था, जो रणभूमि में आवश्यकतानुसार प्रयोग हुई थी, फलत है बुन्देली सेना हथियारों की दृष्टि में हीन भावना से पूर्णतया मुक्त थी।

(*) महाराजा छत्रसाल की रणनीति बुद्धि चातुर्य से परिपूर्ण थी, वह स्वयं ही सैनिकों के आगे रहकर रणभूमि में शत्रुओं को परास्त करने में सैनिकों का मनोबल बढ़ाते थे। पूरी सेना को एक साथ रणभूमि में सम्यक ज्ञान किए बिना नहीं भेजते थे। सुरक्षित सेना की टुकड़ियों आरती बाजी को विजय दिलाने में कामयाबी दिला दी थी, अन्यथा वे सतर्क

रहकर रणभूमि पर निगाह रखती थी। शत्रु सेना को भ्रम में डालकर रणनीतियां बनाने में वह परिपक्व थे। दूर से ही सैन्य गतिविधि का आंकलन करने में उन्हें पूर्ण ज्ञान था। इसी कारण से महाराजा छत्रसाल ने अफरासियाब खां रूमी और कुलीन को भयंकर मार देकर उनके विजय ख्वाबों को चकनाचूर कर डाला था। यह यथार्थ है--- यदि छत्रसाल ने बुद्धि चातुर्य से रणनीति ने बनाई होती, तो वह इन भयंकर युद्धों में कदापि सफल ना होते। इन्हीं रणनीतियों के अनुसार वह शत्रु दल को काफी भीतर घुसने का मौका देते थे और फिर चक्रव्यूह युद्ध रचना द्वारा उनका सफाया करते थे। परंतु विशाल सेना के आगमन पर रणनीति बदल कर सीमांत मुहाने पर ही उसे कालका वलित कर डालते थे। फिर आई खां की सेना की दुर्गति इसी नीति का परिचायक है। शत्रु पक्ष की रणनीति को पहले से ही टाल (भांप) लेना और फिर रणनीति द्वारा शत्रु सेना को भ्रमित कर डालना एक कुशल रणनीतिकार का ही काम हो सकता है। देखना ओमा ओमा सोचना और करना इन चारों क्रियाओं को जो नायक एक ही क्षण में, एक ही बार में एक ही साथ में और एक ही स्थान पर कर सकता है, वह व्यक्ति ही जन्मजात सेनानायक कहलाने का पात्र है। वे समस्त गुण महाराजा छत्रसाल में विद्यमान थे।

(*) मुग़ल सेना अति विशाल थी, उसके पास एक से एक बढ़कर शूरवीर योद्धा थे। इन में अनेकों बहादुर सिपहसालार काबुली कॉम आईरानी, इराकी भी थे। ईरानी आंसुओं की मुग़ल सेना मैं भरमार थी, जो रणभूमि में सर्वाधिक तेज धावक एवं शत्रु दल पर स्वाभाविक रूप से टूट पड़ने वाले माने जाते थे। एवं सेनापतियों में रणनीति बनाने की महारत पाई जाती है जिस पर औरंगज़ेब को विशेष नाज था। फिर भी चक्रव्यू के साथ में द्वार की तरह इस कला को विध्वंस वाली क्षमता मुग़ल सेना के पास नहीं थी गलत है औरंगज़ेब के हाथ से बुन्देलखण्ड और उसके आसपास का काफी भूभाग छिन गया था। उसके मृत्यु के समय तो मुग़ल सप्ताह सिक्योर कर थोड़े से ही भूभाग पर रह गई थी। आखिर कुमार छत्रसाल की विवेकपूर्ण रणनीति एवं भरपूर स्वाभिमान सैन्य संगठन ने ही उसे चारों खाने चित कर दिया था बेचारे ने जीवन के अंतिम 27 वर्ष दिल्ली से निर्वाचित होकर काटे थे। औरंगज़ेब की पराजय का प्रमुख कारण यह था कि--- महाराजा छत्रसाल ने औरंगज़ेब के विरुद्ध जो संघर्ष प्रारंभ किया था वह न्याय पूर्ण होने के कारण बुन्देली जनता का स्वाभिमान बन गया और

और अंगी अत्याचारों के खिलाफ इस संघर्ष को जनसमर्थन व्यापक रूप से मिला हुआ था। छत्रसाल जी बुन्देली जन नेता (नायक) के रूप में उभर कर सामने आए थे। बुन्देल वासियों की आत्मा में न्याय का वास है, न्याय के विरुद्ध अन्याय होने के कारण औरंगज़ेब को समर्थन नहीं मिला और छत्रसाल न्याय के प्रतीक बने हुए थे। वह न्याय देवता के रूप में बुन्देलखण्ड के हर प्राणी के अंदर आत्मा में बस गए थे। इसी न्याय के देवता (छत्रसाल) ने दिल्ली ढहारनहार

के रूप में ख्याति अर्जित की थी। तत्कालीन कवि भूषण ने ठीक ही लिखा है:---

भूषण प्रचंड मारतंड सो प्रताप देख, भागवे को पक्षी और पठान नियरात हैं।

शंका मान कांपत अमीर दिल्लीवारे जब, चम्पत के लाल के नगारे घहरात हैं।

कुमार छत्रसाल को न्याय-देव बनाने में उनके स्वर्गीय माता-पिता का एक वसीयतनामा प्रेरणास्त्रोत रहा है। इतिहासकारों ने इस वसीयतनामा के संदर्भ में लिखा है कि-- एक योग्य राष्ट्र नेता के चरित्र निर्माण की नसीहत के साथ जन संगठन और सैनिक सफलताओं के रहस्य की शिक्षा देने वाला एक वसीयतनामा महाराजा चम्पतराय अपने पुत्र कुमार छत्रसाल के लिए लिख गए थे और अपने दिलवाड़ा निवासी साथी भानुभक्त नवयुवक के हाथों सौंप गए थे। यह वसीयतनामा कुमार छत्रसाल को ऐतिहासिक महापुरुष बना गया। निर्भीक कुमार छत्रसाल अकेले 100 शत्रुओं से युद्ध ले लेते थे और बड़ी से बड़ी विपत्तियों में अपने बुद्धि विवेक को क्षमा भाव में रखकर विजयश्री प्राप्त करते थे। यही गुण उन्हें अजय बनाने में सक्षम रहे हैं।

(*) रणभूमि में अस्त्र-शस्त्रों की प्रमुख भूमिका होती है, जिनके सहारे युद्धरत सैनिक अपना रण-कौशल दिखलाते हैं। महाराज छत्रसाल की सेना में इसका समुचित भंडार था। छत्रसाल जी ने मुग़ल सेना में रहकर रणनीति एवं युद्ध उपकरणों की विशेष जानकारी प्राप्त की थी तथा वीर शिवाजी के पास पहुंच कर उन्होंने युद्ध विद्या का विविध आयामों में ज्ञान प्राप्त किया था। शिवाजी के यहां उन्होंने कैसी-कैसी विद्या सीखी थी, उसका विवरण उन्होंने संस्मरण के रूप में अपने पुत्र कुमार जगतराज को लिखकर भेजे थे जो आज भी अमूल्य धरोहर है। बाण चलाना सलवार विद्या वापस करना, (बंदूक चलाना, तो चलाना वह कुछ आग्नेय अस्त्रों की भी शिक्षा यहां पाई थी। कहा जाता है कि महाराजा छत्रसाल को तक चलाने का बेहद शौक था, रहे इसके विशिष्ट विशेषज्ञ थे। सड़क पदों का प्रयोग उनकी एक विशिष्ट वाहनी करती थी, घाटियों एवं जंगली मार्गो में इसका प्रयोग विकराल शत्रु बल को भी रोने डालता है। अनेकों गूगल से पैसा लाल भ्रम देने के चक्कर में स्वयं सड़क पन्नों में फंसकर काल कंप्लीट हो गए थे। अस्त्र शस्त्रों के संबंधों में नवीन खोजें कराने में महाराजा छत्रसाल अभिरुचि रखते थे। महोबा और खजुराहो के मध्य स्थित गांव श्रीनगर आयुध निर्माण करने

वाला था। तरह-तरह के शस्त्र यहां डाले जाते थे। बड़ी-बड़ी तोपों की निर्माण स्थली यही थीप्ले स्टोर एप लक्ष्य भेदी बाण और उसको प्रक्षेपित करने वाली चक्राकार मशीनें यही बनती थी। इस

---

1. जुद्ध न जुरै है अकेले सौ से,
2. विपत्ति माहि हिम्मत ठिक ठानै,
3. बढ़ती विजय भए क्षमा कर जानै,
4. महोबा से दस मील दक्षिण में स्थित एक आयुध उत्पादक प्राचीन गांव।

यांत्रिक मशीन के द्वारा लक्ष्य भेदी बाण चलाए जाते थे जिनकी मारक क्षमता 10 मील तक होती थी। इनका प्रयोग संदेश पहुंचाने के लिए भी हुआ करता था। शत्रु शिविरों में रात्रि के वक्त कोसों दूर से इसी की सहायता से आक्रमण किया जाता था। शत्रु दलों को भ्रमित करने की रणनीति का प्रयोग इसके द्वारा सुगमता से किया जाता था पुलिस वर्क आग्नेय अस्त्रों का निर्माण बुन्देलखण्ड में ही होने से महाराजा छत्रसाल सैन्य सामग्री के मामले में आत्मनिर्भर थे। बुन्देली धन इस कार्य हेतु दूसरे राज्यों में नहीं भेजना पड़ता था जनता में आत्मनिर्भरता एवं सुख समृद्धि छा गई थी। गढ़ाकोटा के युद्ध में मुग़ल सेना की रणनीति को आगे अस्त्रों के बल पर विफल करने में बुन्देली सेना ने अद्भुत रण कौशल का परिचय दिया था। बुन्देलखण्ड की भौगोलिक स्थिति अस्त्रों के प्रयोग के लिए उपयुक्त थी, महाराजा छत्रसाल ने इनका विविध रूपों में भरपूर प्रयोग किया था तत्कालीन ऐतिहासिक ग्रंथों में इसका उल्लेख पाया जाता है। छत्रसाल जी की सफलताओं का वर्णन क्षेत्र प्रकाश भी तक आदि तत्कालीन ग्रंथों में मिलता है। वस्तुतः अस्त्र-शस्त्र वहां की भौगोलिक परिस्थितियों की देन है जो विभिन्न वैज्ञानिक रूप लिए हुए थे ब्लॉक

(*) महाराजा छत्रसाल के रणकौशल की एक और बड़ी विशेषता थी, जिसके कारण मुग़ल हाकिम भी अति हैरान थे, वह थी उनके आक्रमणों में अति तीव्र-गति का होना। अतैव उनका पीछा करना और उन्हें पकड़ना किसी के बस की बात नहीं थी। वह एक एक दिन में साठ साठ कोस तक धावा का (आक्रमण) किया करते थे। विद्युतगति से वह दुश्मनों पर टूटते और उसी गति से फले मचा कर गायब हो जाते। महाराजा छत्रसाल के दूध के कारण ही विद्रोह काल की शुरुआत से ही इलाहाबाद, मालवा और आगरा के तीनों सूबेदारों (हाकिमों) पर उनका वह छा गया था, न जाने कब कुमार छत्रसाल आकर सरकारी खजाने को उठा ले जाए। वस्तुतः यह स्थल छत्रसाल जी की एक दिवसीय (राष्ट्रीय मारक क्षमता के भीतर थे। सुशासंन् और स्वराज को पूर्णतया स्थापित करने में यही गुण एक प्रमुख सहायक रहा। मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब कुमार छत्रसाल के अति वेगी आक्रमणों से अति

आतंकित था, तभी उसने अनेकों बार संदीप पत्र भेजकर दिल्ली दरबार की सुरक्षा की मांग की थी। मुग़ल सैनिकों ने कुमार छत्रसाल के अतिवेगी

---

1. साठ कोस की दौरन दौरै---(लालकवि कृत छत्रप्रकाश के अनुसार)

2. आपर आलमगीर बादशाह जब सब तरां थक चुके तब हमारे पास संधि को अपनों एक सेनापति भेजो और लिखौ कै क्या तुम चम्पतराय के लड़का अब। बड़े पराक्रमी व औतारी और बड़े शूरवीर हो। बड़ी बड़ी लड़ाई फते करी एक सुबा मार कै भगा दए अब तुमे चाहिए के ऐसी उधम ने मचाओ अब हम तुम्हारे ऊपर कौनऊ भेज हैं और बादसाह ने अपनी हीनताई की बातें लिख भेजी हो मां हमें दया आ गई। हमने लिखवा दो कि तुमने हमारे कक्काजू को मरवा वो और हमारे ऊपर (आक्रमण) सुबह भेजी, हमने तुम्हारी कछु नाहीं बिगार पाओ। तुमारे लिखे से हमने तुमारे सब बातें भुला दे। हमारो विचार दिल्ली टोबेको रहो, अब ना तो रवि। (छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम)

आक्रमणों से घबराकर युद्ध से किनारा करने की ठान ली थी। पवन सदृश्य दौड़ने वाले कुमार छत्रसाल को इतिहासकारों ने शक्तिपुत्र के रूप में भी माना है।

उपसंहार: वस्तुतः महाराजा छत्रसाल की युद्ध कला, अनंत कलाओं से पूर्ण मानी जा सकती है। इन्हीं कलाओं के बल पर वे समूचे जग के सूरज बने थे और भारत वसुंधरा पर ईश्वरीय राज्य की स्थापना करने में सफल हुए थे।

महाराजा छत्रसाल के राज्य-काल का जनजीवन

प्रस्तावना--- महाराजा छत्रसाल के राज्य काल में बुन्देलखण्ड के निवासियों का रहन-सहन एवं सामाजिक दशा बहुत अच्छी थी पुलिस आप लोगों के अंतः करण से मुग़ल दासता के भाव नष्ट हो गए थे।वि.सं. 1685 से लेकर महाराजा छत्रसाल के विद्रोह काल वि.सं. 1728 के पूर्व तक बुन्देल भूभाग मुग़ल सल्तनत के कहर से पीड़ित रहा था। यही कारण है कि जब कुमार छत्रसाल ने अपने विवेक एवं बाहुबल से बुन्देलखण्ड पर उन्हें बुन्देली शासंन् स्थापित किया था, तब बुन्देली संस्कृति का पुनः सूर्योदय हुआ था। महाराजा छत्रसाल ने पूर्व बुन्देली शासंन् व्यवस्था को और भी उदार एवं प्रजा के अनुकूल बना दिया था। महाराज वीरसिंह जूदेव (सं.1663-1684) के शासन की वापसी हो गई है, ऐसा जनजीवन प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने लगा था।

सामाजिक दशा

इस काल में भारतीय समाज मुख्यतः तीन भागों में विभक्त था--- (i) निम्न वर्ग (ii) मध्यम वर्ग एवं (iii) उच्च वर्ग। इन तीनों वर्गों में हिंदू एवं मुस्लिम प्रजा समान रूप से रहती थी। तीनों वर्गों में राज्य की ओर से समान अधिकार प्राप्त थे। ऊंच-नीच की भावना थी। शासंन् में हर वर्ग को समान प्रतिनिधित्व प्राप्त था। सेना में वर्ग विशेष का कोई वर्चस्व था कोमल है सैन्य अनुशासंन् भेदभाव रही प्रथा। निम्न जाति कहे जाने वाले चमार जाति के लोगों के अंदर भी स्वाभिमान की झलक देखने को मिलती थी। सभी संपन्न थे एवं परस्पर सद्भावना पूर्वक मेलजोल से रहते थे।

उच्चवर्ग शालीनता से रहता था। जाति विदेश नगर नेता। हर वर्ग में संपन्न लोग थे। हर वर्ग के प्रतिभा संपन्न लोगों को सम्मान प्राप्त था। राज्य शासंन् में भेदभाव

---

1. उस शैतान (छत्रसाल) को खुद अपनी आंखों से उड़ते देखा था। तूफान की रफ्तार से वह उड़ा था।... शास्त्रों लोग इधर-उधर भाग गए थे। जूली भटकी हुई मकोड़ों की यह टुकड़ी इधर को निकली थी।
(वीर बुंदेले भाग 2: विजय ही विजय पृष्ठ 67-68)

2. शक्तिपुत्र छत्रसाल--- पंडित सुमत त्रिपाठी

की नीतियां ना थी। जनमानस रामराज्य की अनुभूति कर रहा था। हिंदू मुस्लिम समुदाय में बड़ी एकता एवं महाराजा छत्रसाल के प्रति अपार श्रद्धा थी। राज्य की सर्वोच्च सत्ता महाराजा के हाथ में थी। सभी जनमानस महाराजा छत्रसाल को बुन्देलखण्ड का महाराजा मानते थे, इतना ही नहीं वह सब उन्हें एक देव के रूप में पूजे तेज भी थे। राजा, ईश्वर का प्रतिनिधि है, यह भावना जनमानस में महाराजा छत्रसाल जूदेव के प्रति थी।

सामंत वर्ग, किसी भी वर्ग का शोषण करने की कुटिलता नहीं कर सकता था। कृषक, शिल्पी व श्रमिक जनों का जीवन स्तर सुख में था। जमीदारों व सरकारी कर्मचारियों का इन पर कोई अत्याचार नहीं होता था। राजस्व की वसूली कठोरता से करना पूर्ण वर्जित था इसलिए जन जीवन सुखी एवं खुश था।

न्याय दशा

इस शासंन्काल में न्याय दशा का अच्छा स्वरूप देखने में आया था। महाराजा छत्रसाल ने विशाल बुन्देलखण्ड में केंद्रीय और प्रज्ञा प्रशासंन् को सुव्यवस्थित रूप से स्थापित किया था। इस शासंन्काल की न्याय दशा का स्वरूप निम्न वत था---

(अ) केंद्रीय शासंन्:--- महाराजा की शक्ति सर्वोच्च थी। उनकी सहायता के लिए अनेक मंत्री दीवाने थे, जो समग्र बुन्देलखण्ड की देखभाल करते थे। हर परगना के ऊपर क्षेत्रफल के अनुसार मंत्री नियुक्त थे जो परगना व किलेदार आदि पर सतत निगाह रखते थे। केंद्रीय पंचायत मऊ महेवा में थी, जहां समग्र बुन्देलखण्ड के वह मुकदमे होते थे जो परगना पंचायतों द्वारा भेजे जाते थे। पंचायतों में सदस्यों का चयन हर वर्ग से होकर आता था। फलत है न्याय प्रक्रिया पूर्ण तह सत्य पर आधारित थी। हरगांव, कस्बा और नगर में एक एक कवि भी शासंन् की तरफ से नियुक्त किया जाता था जो राज्य शासंन् की जनमानस में छवि का वर्णन महाराजा तक पहुंचाता था।

सैनिक विभाग में सर्वोच्च नियंत्रण बक्शी द्वारा किया जाता था उन। महान कवि हंसराज बख्शी के पिता में हैं बक्शी पद पर नियुक्त थे। घर पर अग्नि जिले में नियमित सेना की संख्या इनके द्वारा महाराजा के आदेश पर की जाती थी।

केंद्रीय शासंन्, दैवीय आपदा व अन्य परिस्थितियों में किसानों से हो रही राजस्व वसूली पर उदारता पूर्वक रोक लगाते थे। व्यापार आदि के नियमों का मानवीय निरूपण में केंद्रीय सत्ता के भागी रहती थी। इन के शासंन्काल में न्यायिक व्यवस्था उत्तम होने के कारण बुन्देलखण्ड धन-धान्य से भरपूर हो चला था। यहां का जनमानस रोजी-रोटी की तलाश में कभी भी बुन्देलखण्ड से बाहर नहीं भागा।

(आ) परगना शासंन्:--- इस काल में बुन्देलखण्ड कृष्ण कवि के अनुसार (44) वर्गों में विभक्त था। महाराजा ने इन पदों में योग्य एवं बलिष्ठ

व्यक्तियों को नियुक्त किया था। इन लोगों को महाराजा ने विशेष पदवी दे रखी थी। हर परखने का मूल्यांकन उसकी आमदनी से किया जाता था उन। परिजनों के अंदर जमीदारों की नियुक्तियां महाराजा की सहमति होती थी। परगना का प्रशासंन्, पर अग्नि में शांति एवं सुरक्षा के प्रति जिम्मेदार होता था। वह बाजार में नापतोल की जांच करता था। चोर बाजारी रोकता था पुलिस और अपराधियों का ना होने देना उसका दायित्व था तथा वह यह भी देखता था कि कर्मचारी व व्यापारी वर्ग से सामान्य जनता को किसी भी तरह की असुविधा ना हो। बाहरी अतिक्रमण एवं अराजकता के प्रति निगाह रखना परगना शासंन् का विशेष दायित्व था।

(इ) क्षेत्रीय शासंन्:- इस काल में गांव राज्य की सबसे छोटी इकाई थी। गांवों को मिलाकर रियासतें बनती थी, जिनका संचालन जमीदार वराव लोगों के द्वारा होता था। क्षेत्रीय शासंन् के अधिकार प्राप्त

थे। रियासतें छोटी बड़ी हो सकती थी। उसी के अनुरूप ही यह लोग जमीदार, राव आदि पदवी पाते थे।

हर गांव में न्याय पंचायत की व्यवस्था थी। इस व्यवस्था पर जमीदार भैरव का नियंत्रण न था। गांव के लोग मिलकर हर वर्ग से लोगों को चुनकर न्याय पंचायत में भेजते थे। इसी कारण से जनमानस को जमीदार आदि का कोप भाजन नहीं सहन करना पड़ता था। जनमानस सत्यता के साथ जीवन यापन करता था।

अंग्रेजी काल में यह न्याय व्यवस्था जमीदारों के अधीन हो गई थी कॉम आदत है जमीदारों के अमानवीय कृत्य की मिसाल ए आज भी बूढ़े लोगों के द्वारा सुनने को मिलती है। स्वतंत्र भारत में न्याय व्यवस्था महाराजा छत्रसाल कालीन दृष्टिगोचर होने लगी है क्योंकि हर वर्ग को समान अधिकार मिलने लगे हैं सहभागिता भी सुनिश्चित हो रही है।

वेशभूषा तथा आभूषण

इस काल में हर वर्ग के सामंत जनों की वेशभूषा बहुमूल्य होती थी। खासकर उच्च वर्ग में वेशभूषा तथा आभूषणों का रखरखाव व पहनावा विशिष्ट था हिंदू एवं मुस्लिम धनंजय जनों की वेशभूषा लगभग एक समान थी। विद्वानों एवं सामाजिक कार्यों में लीन लोगों की वेशभूषा पति शालीन एवं आकर्षित थी। महाराजा जनमानस से भेंट आदि नहीं लेते थे, समाज में चाटुकारिता आदि को स्थान न था। महाराजा विशेष पर्व पर जनमानस को दान में काफी धन दौलत वितरित करते थे। पहाड़ों व कंधों में रहने वाले लोग भी पर्वों पर महाराजा के दर्शन करते थे और पुरस्कार पाते थे। महाराजा का स्वयं का जीवन भी सादगी पूर्ण था। पुणे तो राज जनक की संज्ञा प्राप्त थी। औरतें आभूषणों से लदी रहती थी वह बहुत ही खूबसूरत धारण करती थी। धने

जंगलों में भी वे सभी बेखौफ कार्य करती रहती थी। पुरुष भी आभूषण धारण करते थे। उच्च वर्ग व सामंत समुदाय में पर्दा प्रथा विशेष रूप से थी। नैतिक चरित्र जनमानस की एक पूंजी थी। कुर्ता धोती एवं पगड़ी पहनने का चलन पुरुषों में काफी था।

खान-पान तथा आमोद प्रमोद

इस काल में खांपान तथा आमोद प्रमोद का चलन सदियों पुराना ही प्रचलित रहा। बुन्देलखण्ड की भौगोलिक विविधता के कारण खांपान और आमोद प्रमोद भी भिन्न-भिन्न स्थानों पर निवेदिता से युक्त हैं। सातवीं की भोजन यहां की प्रधानता है। कथा, सुपारी व पान खाने का रिवाज, यहां की

पुरातन संस्कृति की धरोहर है। गले में माला एवं मस्तक पर तिलक लगाना भी आम प्रचलन में रहा है। बहादुरी की मिसाल, इस भूभाग की अनुपम देन है।

आमोद प्रमोद के अन्यान्य साधन हैं। जलाशय, झरने, झीलें एवं पर्वत श्रृंखलाएं नैसर्गिक छटा से भरपूर हैं। शिकार, पशु युद्ध, पक्षियों की लड़ाइयां, कुश्ती,न नाटो के करिश्मे आदि मनोरंजन के साधन रहे हैं। अनेक खेलकूद यहां प्रचलित रहे हैं। मनोरंजन के प्रति जनमानस का लगाओ, यहां की एक स्वाभाविक वृत्ति कहीं जा सकती है।

विभिन्न पर्व, मेले एवं उत्सव

बुन्देलखण्ड में सामाजिक प्रोसोमा विवाह उत्सव एवं मेले हिंदू एवं मुस्लिम लोगों द्वारा धूमधाम से मनाए जाने की परंपरा विद्यमान रही है। एवन सल्तनत द्वारा हिंदू पर्व पर पाबंदियां लगा दी गई थी। अतैवमहाराजा छत्रसाल द्वारा देव सत्ता स्थापित होने पर इन पर्वों पर हिंदू जनता ने जमकर धूमधाम से आनंद मनाया था। महाराजा छत्रसाल ने जनमानस को निर्भीकता एवं सादगी से मनाने के लिए प्रोत्साहित किया था। मेलों के विशेष आयोजन होते थे। वसंतोत्सवम होली, अक्षय तृतीया को रक्षाबंधन दशहरा एवं दीपावली आदि पर्व, यहां के प्रमुख पर्व हैं।

आर्थिक दशा

छत्रसाल महाराजा के काल में बुन्देलखण्ड में आर्थिक क्रांति आ गई थी। उन्होंने जलाशयों को माझी लो एवं नेहरू आदि के द्वारा कृषकों को फसलों के लिए जल उपलब्ध कराया था। विशेष बड़ी-2 बावलिया भी बनवाई थी, समूचा बुन्देलखण्ड धन-धान्य से परिपूर्ण हो गया था। जनमानस की आर्थिक दशा अच्छी हो गई थी। प्रजा खुशहाल रहे, इसके लिए छत्रसाल महाराजा ने सदैव ध्यान रखा था। इस काल में प्रजा की आर्थिक दशा सर्वाधिक अच्छी रही थी इसी कारण से महाराजा छत्रसाल के

शासनकाल को स्वर्णकाल की संज्ञा दी जाती है। दूध दही भरपूर उपलब्धता। फल फूलों की बहुतायत थी। इसी संपन्नता के कारण हर घर में एक एक बेटे को मातृभूमि के सेवार्थ खिला पिलाकर पट्ठा बनाया जाता था। इस काल की आर्थिक समृद्धि का पता इसी बात से लग जाता है कि बुन्देलखण्ड पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर था प्रस्ताव यहां तक कि सैन्य साजो सामान का निर्माण बुन्देलखण्ड में ही हो रहा था।

भवन निर्माण कला

महाराजा छत्रसाल ने आवश्यकता के अनुरूप ही भवन निर्माण को प्राथमिकता दी थी। पुरानी इमारत है के जीर्णोद्धार पर विशेष ध्यान दिया था। उन्होंने जनता के परिश्रम को व्यर्थ में बर्बाद नहीं होने दिया था अतैवनवीन किलो, बड़ी-बड़ी इमारतों आदि को कम ही बनवाया था। समूचा जनमानस महाराजा छत्रसाल के इस दृष्टिकोण से बहुत ही प्रभावित था। तत्कालीन निम्न लोकोक्ति से इस दृष्टिकोण की प्रमाणिकता मिलती है---

लाल छड़ी चमकाउत जैहैं। टीले से घुडला कुदाउत जैहैं।

फते ताल बंधाउत जैहैं। अंधे कुआं उघराउत जैहैं

बन के चिरैया चुनाउत हैं।.....

(बुन्देलखंडी लोकगीत)

आलीशान इमारतों के निर्माण से अच्छा है कि जनमानस के समृद्धि जीवन का निर्माण करना--- छत्रसाल श्रेष्कर मानते थे। प्रस्तुत है महाराजा छत्रसाल के काल में नव निर्माण कम हुआ है। फिर भी गुम्मट (परना में) का निर्माण वास्तु कला का एक बेजोड़ नमूना है। छत्रप्रकाश, मऊ सहानिया, मऊ करवा कॉमऊ महेवा आदि में सृजित भवन छत्रसाल कालीन वास्तुकला को मुखरित कर रहे हैं।

शिक्षा एवं साहित्य

शिक्षा एवं साहित्य का इस काल में अच्छा विकास हुआ है। महाराजा छत्रसाल ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु काफी जागृति पैदा की थी। विशाल कवि कुल समुदाय की पन्ना में उपस्थिति, इसी का प्रतीक है। शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के कारण उन्हें जगत गुरु के रूप में भी ख्याति मिली थी--- **धन्य धन्य छत्रसाल बुन्देला, आप गुरु से गुरु चेला।** (लोकोक्ति वचन)

महाराजा छत्रसाल के शासंन्काल में अपार साहित्य का सृजन हुआ है। महाप्रभु बुन्देला जी ने बुन्देल भूमि में ही आकर खुलासा,, परिक्रमा, सागर सिंधी, मार्फत सागर एवं कयामत नामा आदि ग्रंथों का वर्णन (संवत् 1740 से 1748 तक)

किया। स्वामी लाल दास जी ने अभी तक, बड़ा मजा मा छु टीवी आदि ग्रंथ रचे। नवरंग स्वामी ने 24 ग्रंथ रचे थे। बृजभूषण स्वामी ने सखी, बक्शी हंसराज ओमा लाल कवि (छात्र प्रकाश, राज विनोद), राष्ट्रकवि भूषण आदि ने वृद्ध काव्य रचनाएं की हैं। महाराजा छत्रसाल के दरबार में बयासी कवि थे अतैव इनके द्वारा रचित साहित्य निसंदेह रूप में रहा होगा। महाराजा छत्रसाल जी के युवराज

को ह्रदयशाह द्वारा रचित ह्रदय प्रकाश, आध्यात्मिक जगत की अनुपम नदी है पर। कभी ह्रदय सम्राट स्वयं महाराजा भी थे, उन्होंने भी विपुल काव्य की रचना की है। जिनका संपादन वियोगी हरि ने संवत् 1983 में छत्रसाल ग्रंथावली के रूप में [प्रारंभिक (पूर्वार्ध) रचनाओं का] किया है तथा उत्तरार्ध रचनाओं का संपादन धर्म भूषण कुंज बिहारीसिंह ने संवत् 2055 में छत्रसाल काव्यांजलि के रूप में किया है तथा इसका प्रकाशन श्रीमती उमा देवी कुशवंशी ने किया है।

यथार्थ में, महाराजा छत्रसाल के राज्य काल में विपुल साहित्य की रचना हुई है और शिक्षा का भी व्यापक प्रसार हुआ। इस काल से ही देश में शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ है। महाराजा छत्रसाल की धारणा यही रही कि ज्ञानवान पुरुष ही अपने स्वाभिमान की रक्षा करता है अतैवसर्वत्र शिक्षा का प्रसार और उनका एक आंदोलन था।

चित्रकला

महाराजा छत्रसाल के काल में चित्रकला का विशेष महत्व रहा है। कहा जाता है कि उनके सद्गुरु भी अच्छी चित्रकला का ज्ञान रखते थे। उनके बने हुए तैलीय चित्र आज भी उपलब्ध हैं जिनमें सोने एवं चांदी युक्त रंगों का प्रयोग हुआ है। छत्रप्रकाश स्थित छत्रसाल चबूतरा में दीवारों पर बने चित्र अनुपम चित्र कला को प्रदर्शित करते रहे हैं समूचे बुन्देलखण्ड में इस काल में चित्रकला का कार्य चरम सीमा पर था।

इतिहास तक बताते हैं कि औरंगज़ेब को चित्रकला में रुचि ना थी गलत है चित्रकार मुग़ल दरबार छोड़कर अन्य राज्यों में चले गए थे। इस कारण से भी इस काल में यहां पर चित्रकला का वृहद कार्य हुआ था।

संगीत

यह कल संगीत क्षेत्र में भी श्रेष्ठ रहा है। महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के साथ पधारे सैकड़ों ब्रह्म मुनि सुंदर साथ संगीत मर्मज्ञ थे। इतना ही नहीं महाराजा छत्रसाल का राज दरबार भी संगीतकारों से संपन्न था। बुन्देलखण्ड की आत्मा में संगीत का वास है, अतैववह संगीतकला से समूचा जनमानस ओतप्रोत था।

इस काल में दिल्ली दरबार वीरान हो गया था, औरंगज़ेब ने लगातार 27 वर्ष (संवत्

1738 से 1764 तक) निर्वासित जीवन जिया था। पलता है संगीत दुनिया भी मुग़ल दरबार से प्रस्थान कर चुकी थी जिसे महाराजा छत्रसाल के दरबार में अच्छा प्रश्न मिला था। अस्तु इस काल में यहां पर भरपूर संगीत पनपा था।

उपसंहार

यह काल बुन्देलखण्ड का स्वर्ण युग रहा है। प्रजा धन-धान्य से समृद्धि थी और वह एक देव राज्य राज्य शासंन् का सुख भोग रही थी। प्रजा की दशा सामाजिक न्याय का आर्थिक, मनोरंजन कॉमर्स शिक्षा साहित्य चित्र कला और संगीत कला आदि में विकास उन्मुख थी। विकसित स्वाभिमान रहन-सहन खां-पान, आमोद प्रमोद का अनुभव प्रजा को हो रहा था।

वस्तुतः छत्रसाल महाराजा के राज्य काल का जनजीवन पूर्ण स्वस्थ एवं विकसित था। सत्ता एवं मातृभूमि के प्रति जनमानस में असीम श्रद्धा एवं समर्पण भाव था प्रस्ताव राजकाज की त्रिस्तरीय शासंन् व्यवस्था सराहनीय थी। प्रजा के राज्य शासंन् के संचालन में सहभागिता प्राप्त थी जो जनमानस को अति हर्षित करने वाली थी सभी को ऐसी अनूठी शासंन् व्यवस्था से मानवीय अधिकारों का बोध सर्वप्रथम हुआ था।

वास्तव में, महाराजा छत्रसाल ने अपनी प्रजा को किस प्रकार पाला पोषा है उसकी झलक उनके रचित काव्य में ही निहित है।

दोहा

छत्रसाल जन पालिवो, अरिहिं घालिबो दोय।

नहिं बिसारियो धारियो, धरन धरा कोउ होय ॥1॥

बालक लौं पालहिं प्रजा, प्रजापाल छत्रसाल।

ज्यों सिसु-हित अनहित सुहित, करत पिता प्रतिपाल ॥2॥

काल कर्म सुभ धर्म के, वर्ग चर्म असि जान।

छत्रसाल नर पाल, ए नर पालक पहिचान ॥3॥

छत्रसाल नृप तेज तैं, दुष्ट प्रभाव न होय।

जिमि रवि उड्गन निस करहूं, करत छीन छवि सोय ॥4॥

छत्रसाल राजान कों, वर्जित सदा अनीति।

द्विरद-दन्त की रीति सौं, करत न रैयत प्रीति ॥5॥

यथार्थ में आदर्श शासंन् के दर्शन महाराजा छत्रसाल के राज्य में होते हैं। व आदर्श महाराजा थे। महाराजा के समस्त लक्षणों का पुंज उनमें समाहित थाकथिकाल में वह महाराजा के रूप में पूजे जाने के पात्र हैं। इसी कारण से उनके राज्य की प्रजा का जनजीवन ईश्वरीय राज्य का सुख प्राप्त की थी।

श्री राज्य परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(2)

व्यक्तित्व-चित्रण

महाराजा छत्रसाल जी के विशाल व्यक्तित्व का निरूपण विविध आयामों में, बहू को सीए दृष्टिकोण को सामने रखकर प्रस्तुत अनुभाग में किया जा रहा है, उनके चरित्र का चित्रण करने के लिए प्रस्तुत अनुभव एक प्रयास है।

श्री राज परमात्मने नमः

(2)

व्यक्तित्व-चित्रण

प्राक्कथन

महाराजा छत्रसाल जी के अदम में पुरुष एवं अनूठे व्यक्तित्व के कारण उत्तर मध्यकालीन समय के इतिहास पर दृष्टिकोण डालने वाले इतिहासकार उनसे अत्याधिक प्रभावित हुए हैं। इतिहासकारों ने महाराजा छत्रसाल के विशाल व्यक्तित्व का पूर्व काल में विधिवत आंकलन न किए जाने पर गहरा अफसोस जाहिर किया है और तत्कालीन दस्तावेजों एवं राजकीय संग्रहालय में बंद इतिहास के पृष्ठों पर जनता के साथ पुनर्मूल्यांकन पर बल दिया है। मुग़लकालीन इतिहासकारों ने बुन्देलखण्ड के साथ

न्याय नहीं किया है, अपितु ऐतिहासिक घटनाओं को नजरअंदाज किया है। इस काल के इतिहास का सम्यक निरूपण अत्यावश्यक है, कारण की--- इतिहास ही भविष्य का मार्गदर्शक होता है। इतिहास और ऐतिहासिक पुरुष--- भविष्य की दो आंखें हैं इसके अभाव में समाज एवं राष्ट्र अंधे होते हैं। उसका विकास असंभव हो जाता है।

इतिहास पुरुष महाराजा छत्रसाल के महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन किया जाना नितांत अपेक्षित है। बीते काल में वैदिक संस्कृति में आई ही फराक का प्रमुख कारण यही है कि भूतकाल में ऐसे युग पुरुषों के जीवन दर्शन पर दृष्टि नहीं डाली गई है। जिस की पुनरावृति आज भी हो रही है प्रस्ताव धूल दूसरी पोती को विलेजर नहीं पहचान पाते हैं पहचान के लिए जौहरी आंख की जरूरत होती है। शायद पाश्चात्य संस्कृति के पठन-पाठन की अनिवार्यता ने समाज को जोहरी आंख खुलने दी होगी। सुबह का भूला शाम को घर लौट आए का अनुगमन कर लेना ही अब लाभप्रद रहेगा।

युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल का चरित्त्रानुशीलन

महाराजा छत्रसाल के महान व्यक्तित्व को हरदम करने के पूर्व अनेकानेक इतिहासकारों के विचारों का जानना आवश्यक है ताकि महासागर के समान उनके विशालतम व्यक्तित्व के अवलोकन अनुशीलन में सुविधा रहे और पूर्वाग्रह बाधक ना सके।

मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब के साथ उस छत्रसाल का संघर्ष क्रमशः साम्राज्यवादी एवं जनवादी शक्तियों के संघर्ष का प्रतीक था। .... महाराजा छत्रसाल ने मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के जीवन काल में ही उसके साम्राज्य को तोड़कर बुन्देलखण्ड में एक स्वतंत्र सत्ता की स्थापना कर ली।

प्राणनाथ की बुद्धि द्वीप से प्रकाशित छत्रसाल की राजनीति और राजनीतिक गतिविधियों का आकलन किए बिना इस देश के राष्ट्रीय इतिहास का स्वर्ण पृष्ठ कभी प्रकाश में नहीं आ सकता।

छत्रसाल जैसे जनचेतना के विंडो की अवहेलना करके लिखा गया 17वीं और 18वीं शताब्दी का इतिहास अपनी नैसर्गिक प्रभाव से वंचित हो गया है।

औरंगज़ेब के शासंन्काल में जब मुग़ल राज्य सत्ता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई थी, उसी समय छत्रसाल जैसे जनसामान्य ने बुन्देलखण्ड के एक बहुत बड़े भूभाग से औरंगज़ेब की राज्य सत्ता को मिटा कर उसके स्थान पर एक शुद्ध स्वायत्तता की स्थापना की थी।

संपूर्ण जनता का ब्रेनवाश करने के लिए यह जरूरी है कि इसके इतिहास खुद को बदल दिया जाए।

----- सेंसर युग के इतिहास की असलियत सिर्फ जनता की जुबान में ही लिखी हुई मिल सकती है।

औरंगज़ेब कालीन भारत वर्ष में जो भी विद्रोह एवं जन आंदोलन हुए हैं उनमें बुन्देलखण्ड के आंदोलन को ही सर्वाधिक सफलता प्राप्त हुई।

छत्रसाल की इन सफलताओं से दूर दूर तक जाती फैल गई। बुन्देलखण्ड में क्या सारे भारतवर्ष में उसकी वीरता प्रसिद्ध हो गई। छत्रसाल की ख्याति ने ही स्वामी प्राणनाथ को बुन्देलखण्ड की ओर जाने को प्रेरित किया हो, यह संभावित है।

केवल बुंदेले राजा छत्रसाल के शत्रु नहीं थे बल्कि आगरा बुन्देलखण्ड के बीच स्थित नरवर के कछवाहा और अटेर के भदौरिया राजपूतों के ठिकाने भी छत्रसाल के शत्रु थे। (अटेर के नष्ट होने पर आगरा जिले में भदौरिया ने नया ठिकाना बनाया था)

---

1. डॉ. बी. बी. मिश्र डी.लिट (लंदन) प्रो0/अध्यक्ष: इतिहास विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली प्राक्कथन लेखक ऐतिहासिक प्रमाण आवली और छत्रसाल पृष्ठ भूमिका

2-7. डॉ महेंद्र प्रतापसिंह (ऐतिहासिक प्रमाण आवली और छत्रसाल क्रमशः पृष्ठ 16, 32, 42, पृष्ठ 55, पृष्ठ 63, 83;

परिस्थितियों की विषमता में छत्रसाल की उपलब्धियों का मूल्यांकन उचित होगा।

ओरछा, दतिया और चन्देरी के बुन्देला राजाओं को घर का मानकर छत्रसाल ने सामर्थ्य रहते हुए भी इन राज्यों को तोड़ने का पर्यटन नहीं किया था बस।

छत्रसाल का विद्रोह का पूर्ण रूप से सुविचार इत एवं देश की राजनीतिक मुक्ति का आंदोलन था।

अपने कर्तव्य के कारण बुन्देलखण्ड में छत्रसाल भगवान बनकर पूजे जाने लगे। लोग रोज प्रातः काल उठकर आज भी छत्रसाल को स्मरण करते हैं--- छत्रसाल महाबली करियो भली भली एक यह उच्चारण पर दिन की शुभ शुरुआत के लिए कामना करते हैं।

साधनों के होते हुए भी से एक स्वतंत्र हिंदू राज्य स्थापित करने में सफल हुए कुल टॉप इन कारणों से यदि बुन्देलखण्ड वासी उन्हें एक अलौकिक पुरुष माननीय लगे हो तो क्या आश्चर्य है। आज भी बुन्देलखण्ड वासी प्रातः काल एक देवता के समान महाराजा छत्रसाल का पुण्य स्मरण करते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं कि उनका दिन अच्छी तरह बीते--- छत्रसाल महाबली करियो बली बली

इनको मुगलों के विरुद्ध जो सफलता मिली उसे डॉक्टर जदुनाथ सरकार ने स्वीकार किया कि उनका 81 वर्ष का दीर्घ जीवन मुग़ल सत्ता के बुन्देलखण्ड में ही नहीं भारत में भी पूर्णत नष्ट होने के साथ ही ईस्वी सन् 1731 में समाप्त हो गया।

17 वीं शताब्दी में भारत के इतिहास में छत्रसाल एक ऐसे वीर राजा हुए जिन्होंने बुन्देलखण्ड में हिंदू राज्य की स्थापना ही नहीं की बल्कि ऊंची दीवारों को नजरअंदाज करके सभी जाति और धर्मों के लोगों को समान अधिकार दिए। आज भी बुन्देलखण्ड की जनता कोई शुभ कार्य करने से पहले उन्हें याद करती है छत्रसाल महाबली करियो बली बली।

महाराजा छत्रसाल के चरित्र में जो व्यक्तित्व लगता रहा है उसी के परिप्रेक्ष्य में इतिहासकारों ने उल्लेख किए हैं। वस्तुतः किसी ऐतिहासिक महापुरुष के संबंध में प्रचलित जनवाणी एक ऐसा जीवन प्रमाण है जिसके लिए इतिहास के पृष्ठ उलट ने की भी गुंजाइश नहीं रहती। इन हवाओं में चापलूसी का पूर्वाग्रह अथवा पक्षपात को स्थान नहीं मिलता, अनुशीलन इसी का पर्याय है। इतिहास खोजने में जो मिले यदि वही जनवाणी में आज अनपढ़ लोगों की जुबान में रच बस रहा हो तो वह अनुशीलन

9-11. ऐतिहासिक प्रमाणावली और छत्रसाल--- डॉ महेंद्र प्रताप सिंह पृष्ठ 94, 147, और पृष्ठ 154;

12. वीर बुन्देले भाग 2: विजय ही विजय-- परशुराम गोस्वामी, पृ. 111:

14. प्रणामी दर्शन विशेषांक: युगपुरुष महाराजा छत्रसाल 196, पृष्ठ 109

15. उपर्युक्त, पृष्ठ 120;

शतशः सही होता है अन्यथा पूर्व लिखे इतिहास में कोई न कोई पूर्वाग्रह का सम्मिश्रण निसंदेह होगा।

अतैव महाराज के चरित्र अनुशीलन का मिलान बुन्देलखण्ड व देश में व्याप्त लोकोक्तियों (जन-वाणी) से करना नितांत समीचीन है। जनवाणी काल में के गर्भ में टपक लोकोक्ति का रूप धारण करती है। लोकोक्तियां चरित्र अनुशीलन का महत्व स्तंभ है। लोक गाथाओं को लोकोक्तियां भी जीवित रखती हैं। महाराजा छत्रसाल के व्यक्तित्व को मुखरित करती हुई लोकोक्तियां आज भी जनमानस की जुबान पर चढ़ी हुई हैं। वस्तुतः महाराज के विशालतम व्यक्तित्व का अनुशीलन करने के लिए निरपेक्ष दृष्टिकोण एवं अध्यवसाय चिंतन की जरूरत है। निम्नांकित लोकोक्तियों में उनके महानतम चरित्र का विशाल सागर छिपा है:---

छत्रसाल महाबली करियो भली भली। (प्रातःकालीन मंत्र)

हे महान बल के आधार महाराज छत्रसाल! आप हमारी सदा रक्षा करें।

बादल की छाया हुसैन पातशाही सर्व,

अकेली रहो धाम सो प्रताप छत्रसाल को।

सूर्य के प्रकाश (गांव को कोई भी आच्छादित नहीं कर सकता है, वैसे ही महाराज के यश को रोक पाना किसी के बस की बात नहीं है--- यह है उनके रवि तेजस्वी स्वरूप का प्रदर्शन।

सुयश अमर कीरति अमर, करनी अमर विशाल।

मुए कहत तेई मुए, सदा अमर छत्रसाल॥

अजर अमर व्यक्तित्व की ऐसी मिसाल, किसी भी महापुरुष के संदर्भ में नहीं पाई जाती है।

इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस।

छत्रसाल सों लड़न की, रही न कांहु हौंस॥

महाराजा छत्रसाल के अपर राजे पराक्रम को मुखरित करती हुई उक्त लोगों से उनके महानतम बल पराक्रम व्यक्तित्व की दो तक रसिया हैं और।

दृढ़ संकल्प, अदम्य उत्साह और अध्यवसाय प्रयास के बलबूते पर टिका हुआ छत्रसाल का व्यक्तित्व युगों युगों तक गगन मंडल में रवि सम चमकता रहेगा। सूर्यवंश का यह सूर्य कभी अस्त ना होगा। निरंतर जनमानस को प्रकाश देता रहेगा। महाराजा छत्रसाल के इस दिव्य व्यक्तित्व के अंदर समाहित रहे हैं--- दैवीय गुण, वसुधैव कुटुंबकम की भावना, सर्वजन हिताय बहुजन सुखाय का आदर्श, प्रवर्तक की दक्षता वाले लक्षण एवं उनके सदगुरु महाराज श्री प्राणनाथ जी का वरदहस्त। क्षमता के कारण महाराजा

छत्रसाल मुग़ल सल्तनत को ढाकर एक स्वाधीन राज्य की स्थापना करने में सफल हुए थे।

प्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकार के निम्न बिंदु अवलोकनीय हैं---

कोई आधी शताब्दी तक वह (छत्रसाल) सफलतापूर्वक मुग़ल साम्राज्य का सामना करता रहा और अंत में उसने एक स्वाधीन राज्य की स्थापना की।... हिंदू धर्म के रक्षक और क्षत्रियों के मान को बढ़ाने वाले के रूप में लोगों ने उनका स्वागत किया।

राष्ट्रगौरव: छत्रसाल स्मारिका--- 3 जून 1982

इतिहासकार रघुवीर के विचार---

मुग़ल साम्राज्य के विरुद्ध समय-समय पर चलते रहने वाली विद्रोह की परंपरा में छत्रसाल के विरोध तथा विद्रोह का बहुत ही उल्लेखनीय स्थान है।.... तब छत्रसाल के विद्रोह होने बुंदेलों के साथ ही अन्य जनसाधारण में भी एक नई आशा तथा उत्साह का संचार किया था। (वही)

महाराजा छत्रसाल बुन्देला के लेखक डॉक्टर भगवान दास गुप्ता के विचार----

छत्रसाल की प्रतिभा बहुमुखी थी। वह तलवार तथा कलम दोनों के धनी थे।.... उनमें असाधारण क्षमता थी...... बुन्देलखण्ड में जनसाधारण के हृदय मैं छत्रसाल के प्रति अभी भी जो गहरी श्रद्धा है, वही उनके कार्यों के मूल्यांकन की सही कसौटी है। (वही

विद्यानिवास मिश्र प्रकट कुलपति सेसा विश्वविद्यालय वाराणसी के विचार:---

उन्हें (छत्रसाल कुशल प्रशासक, महान योद्धा के साथ ही साथ हिंदी के महान साहित्यकार थे। (वही)

पंडित श्रीनिवास शुक्ल के विचार:---

छत्रसाल के इस प्रक्रम पूर्ण और यशस्वी संघर्ष के फल स्वरुप न केवल बुन्देलखण्ड स्वतंत्र हुआ, बल्कि भारत में मुग़ल साम्राज्य की जड़ें खिल गई, औरंगज़ेब हताश हो गया। ... स्वामी प्राणनाथ को एक गुरु के रूप में स्वीकार करना; उनके समन्वय मूलक प्रणामी मत को सम्मान देना और मत का देश विदेश में प्रचार प्रसार करने की व्यवस्था करना यह सब इस बात के प्रमाण हैं कि छत्रसाल मुसलमान वर्ग को हिंदू समाज से कटने नहीं देना चाहते थे और इस प्रकार राष्ट्रीय को अक्षुण्ण रखना चाहते थे पुलिस टो

(वही पृष्ठ 22)

गंगा प्रसाद सैया के विचार---

छत्रसाल की नीति आदर्श्रसाल की नीति आदर्श पर आधारित सुनीति थी, जिसमें ए मानवीयता और अनीति का कोई स्थान नहीं था। इसी का परिणाम है कि 5 घोड़े और 25 साथियों से राष्ट्र गौरव तथा मातृभूमि की रक्षा का अभियान छेड़ने वाले छत्रसाल अतुल संपत्ति

के स्वामी तथा जन जन के आदरणीय महापुरुष बन सके। (वही पृ. 28)

यथार्थ में, महाराजा छत्रसाल के अंदर विद्यमान अपार सहनशीलता,, दया भाव क्षमा भाव एवं उदारता का व्यक्तित्व के चमकते नक्षत्र हैं। परास्त सेना नायकों को छोड़ना घायल अवस्था में पड़े शत्रु को शत्रु शिविर में रिजवाना, औरंगज़ेब को प्राण दान देना, हत्यारों को क्षमा कर देना, दृष्टोर का दलन एवं तीन जनों का पोषण करना, इत्यादि गुण उनके महान चरित्र को मुखरित करते हैं। विशाल बुन्देलखण्ड भू-भाग को अपने बाहुबल से जितना, उनके महान व्यक्तित्व की एक झलक है।

जितेन्द्रिय छत्रसाल

महाराजा छत्रसाल अत्यंत रूपवान थे, उनकी मनमोहक छवि को देख कर आए मन ही मन पार्वती से प्रार्थना करती थी कि मुझे छत्रसाल जैसा वर मिले। छत्रसाल की छवि का वर्णन किसी कवि ने बड़े ही सुंदर शब्दों में किया है। किया था:---

औसत कद वक्ष सिंह कैसा सुहाना बना।

बाहु थे विशाल, लाल आंख वीर वेष था।

भौंहें सघन काली, रम्य प्रकट भुजाली सी।

कन्ध वृषभ कैसे, पराक्रम अजेय था।

तेज तपता था रवि कैसा बीर माथे पर।

वंश अवतंश अंश-अंश वीर लेश था।

तापे वरदानी विंध्यवासिनी सुहासिनी का।

दाहिनी बनी जो भव्य, दायिनी विशेष था।

गर्मियों के दिन थे। भगवान भास्कर मध्य मंडल में चमचमाते थे। तेज करने अंगार के गोले के समान बरस रही थी। बुन्देल भूमि का समूचा अंचल पाषाण पहाड़ी होने के कारण भयंकर तपन से जल रहा था फिर भी कुमार छत्रसाल ऐसे भयंकर ग्रीष्म ऋतु की दुपहरिया में सरपट दौड़े चले जा रहे थे। उनका स्वामी भक्त घोड़ा मारे तपन के हावड़ा। प्यारे घोड़े को ऐसी हालत में देखकर दयालु परम कृपालु महाराजा छत्रसाल एक बावड़ी पर जाकर पेड़ के नीचे रुके और घोड़े को वृक्ष के नीचे बांधकर उसे ठंडा जल पिलाया और फिर स्वयं भी पिया। घोड़ा दम भर ले सभी प्रस्थान करुंगा ऐसा विचार करके स्वयं भी विश्राम करने लगे। ठंडी बयार के झोंकों और सघन छाया के कारण न जाने कब उनकी आंख लग गई, वह बेसुध सो गए। तभी अचानक घोड़े की पहल कदमी से उनकी आंख खुल गई। एक नव्या बना, कुमार छत्रसाल के पास आकर खड़ी हो गई

---

1. दान दया घमासान में, जाके हिये उछाह।
   सोई वीर बखानिये, ज्यों छत्ता छितिनाह॥ (छत्रप्रकाश)

थी, उनका रक्षक अश्व यह देखकर ही उन्हें जगाने का उपक्रम करने लगा था।

गांव से अत्यंत दूर, भयंकर दुपहरिया में नव्या बना महिला को एकाकी देखकर कुमार छत्रसाल अचंभित रह गए। वह उनकी ही तरफ काम मद भरी निगाहों से निहार रही थी। कुमार छत्रसाल से न रहा गया। वह बोले--- देवी! तुम कौन हो, इस एकाकी निर्जन बावड़ी पर इस समय क्यों आई? प्रत्युत्तर में वह मोहन बनी खड़ी रही, उसके अंग अंग में नवयुवक झलक रहा था उमा देवी शब्द ने तो उसे और भी उद्वेलित कर डाला था। उत्तर पाए बिना कुमार छत्रसाल फिर बोले--- बताओ ना देवी! तुम पर कौन सा संकट टूट पड़ा है, जिसके लिए तुम मेरी सहायता इसी समय चाह रही हो ऐसा मुझे एहसास हो रहा है। छत्रसाल के बार-बार कुरेद ने पर उस रूपवती महिला ने साहस बटोर कर बिना रुके एक क्षण में अपनी सब बात कह डाली।

कुमार छत्रसाल बात सुनकर दंग रह गए, काटो तो खून नहीं-- मुझे तुम जैसा ही पुत्र पाने की लालसा है, कुमार! तुम मुझे आलिंगन करो। कामनी के यह शब्द सुनकर छत्रसाल के मस्तिष्क में तीर्थ के समान छुप गए। कुमार छत्रसाल तुरंत समझ गए कि यह काम नहीं पर काम का मत चढ़ा है। यह सुनसान निर्जन स्थली इसके मध्य में निरंतर वृद्धि कर रही है, ऐसा सोचकर कुमार छत्रसाल विचार करने लगे, उनकी आंखें बंद हो गई। उनकी अंतरात्मा बोल उठी--- कुमार आज ही वह मौका है जब तू अपने वंश के उस कलंक को मिटा दे, जिसके लिए तू ही कलंकित है। अरे तेरे वंशज लक्ष्मण के हाथों मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के कहने पर ही एक रूपवती नव्या बना स्वर्ण नखराली (सुपनखा स्त्री की नाक काट ली गई थी, अब मिटा दे उस कलंक को, और मिटा ले उससे उपजी अपनी सिर्फ नेता और वेदना को। अंतरात्मा फिर कह उठी--- अरे कुमार, जितेंद्रिय वही होता है जो सुनसान में प्राण दान मांग रही रूपवती अबला को देखकर अधिक बना रहे। तू तो बड़े-बड़े साधकों और तपस्वी जनों से भी बड़ा है, तू महर्षि विश्वामित्र भी नहीं है, तुम तो इन सभी से महान हो, अपने मूल स्वरूप को पहचानो, तुम तो माया और दुनिया से परे हो, तुम्हें धर्म की स्थापना और दुर्जन ओके वध करने के लिए आना पड़ा है। वीर कुमार! तुम किस सोच में हो, उठो कुमार--- इतिहास तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

कुमार छत्रसाल के मुख्य मंडल पर आभा चमक उठी, उनका रोम-रोम दैवीय शक्ति से परिपूर्ण हो उठा। कुमार छत्रसाल ने बढ़कर इस रूपवती अपना के दोनों चरण पकड़ लिए और बोले माई में हो तो रोलर का छत्ता (अर्थात हे मां को मां मुझे अपना पुत्र समझो। हे मां ओ मां मैं तेरा लड़का छत्रसाल हूं।)

---

1. शेषावतार लक्ष्मण के समय में एक पंचवटी की घटना;
2. छत्रसाल का प्रभाव पृथ्वी पर देवी आयोग की स्थापना के लिए;

यह सुनकर वह महिला को शर्म के मारे पानी पानी हो गई। उसका यौवन कपूर की भांति उड़ गया उसे कुमार छत्रसाल से ऐसे उत्तर की लेश मात्र भी उम्मीद ना थी छत्रसाल ने सच्चे दिल से उसे मां कहकर पुकारा था अतैवउस रूपवती अभी कुमार छत्रसाल को जीवन भर एक पुत्र की भांति प्यार दिया था। महाराज छत्रसाल ने अपनी मां के लिए पन्ना के समीप एक हवेली का निर्माण करवाया था।

मुंह बोली मां की हवेली हवेली के नाम से आज भी खण्डहर के रूप में पन्ना में देखने को मिलती है। बुन्देलखण्ड में मां के लिए एक अति सम्माननीय संबोधन है। धर्मपुत्र छत्रसाल ने जीवन भर बेटे का फर्ज निभाया। जब तक जीवित रहे महाराजा छत्रसाल ने उन्हें राजमाता के रूप में ही माना। हवेली के करो उसे आज भी जितेंद्र साल की गौरव उज्ज्वल चरित्र की गाथा हवा के झोंकों के साथ अनवरत सर्वत्र चल रही है।

धर्मदूत-छत्रसाल

महाराजा छत्रसाल को विजय अभिनंदन बुध निष्कलंक महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी ने गुम्मट जी (पढ़ना में भ्रम योग में लीन होने के पूर्व देश विदेश में सब धर्म स्थापना जागने प्रचार का भार सौंपा था।इस दायित्व का निर्वाह महाराजा छत्रसाल ने सदा सर्वदा निभाया।

---

1. चरित्र का एक जाज्वल्यमान उपमान
   सौंदर्य और यौवन की दीप शिखा पर जहां

   दूसरे शलभ खाक हो जाते वहां वह

   खड़ा रहा योगी सा

   तुम्हारे जैसा पुत्र चाहिए कहा था उस

   काम पिपासित नायिका ने कि

   छत्रसाल पुकार उठे मां गोद में लेटकर

   करने लगे शिशु क्रीड़ायें

   नायिका का सारा विकार नेत्रों से बह गया था

   उसे छत्रसाल सा बेटा मिल गया था

   आज फिर जरूरत है ऐसे चरित्र की

   सारंधा के लाल की छत्रसाल की।

2. अभी देश अवशेष बहुत हैं, जिनमें पहुंचाना सन्देश।

जागृति के इस मुक्ति यज्ञ से रहे शेष ने कोई देश॥

सबको आत्म सम्मान मानकर, करना छत्ता धर्म प्रचार।

तन से होता लीन ध्यान में, खुला रहेगा मन का द्वार॥

करना है अभी पूरा उनको, पड़े अधूरे जितने काम।

किए बिना कर्तव्य छतारे, पाओगे कैसे आराम। (मुक्तिपीठ)

जिस प्रकार सम्राट अशोक ने भगवान गौतम बुद्ध के मानव आदर्शों के प्रचार प्रसार हेतु एक धर्म दूध के रूप में काम किया और पुत्र पुत्री को इस कार्य हेतु सुदूर देशों तक भेजा था उसी प्रकार महाराजा छत्रसाल ने निष्कलंक महाप्रभु प्राणनाथ जी के दिव्य जागरण के सुख संसार आदि उपदेशों को सुदूर देशों तक फैलाया था हां जिसमें उन्होंने वैरागी साथी जनों का भी उपयोग किया था। वैरागी साथी देश विदेश गए थे। विश्व के एकमात्र हिंदू राष्ट्र नेपाल में लाखों लोग महाराजा छत्रसाल के धर्म प्रचार प्रसार से प्रभावित हुए थे। आज भी वहां हजारों मंदिरों में रोजाना महाराजा छत्रसाल जू देव की जय का स्वर गूंजता है।

श्री मंजीत आनंद स्वामी श्री देव चंद्र जी द्वारा स्थापित श्री 5 नवतनपुरी धाम (जामनगर गुजरात एवं निष्कलंक महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी स्थापित श्री 5 महामंगल पुरी धाम आधे जागने पीठ (सूरत गुजरात पर महाराजा छत्रसाल जी का वरदहस्त स्थान रहा है। इन नामों पर विराजमान पीठाधीश्वर ओ को जगद्गुरु कहा जाता है उन।

एक दीपक से असंख्य दीपक जलाए जा सकते हैं। धर्म दूध छत्रसाल रूपी दीपक

---

1. शेष गुरुतर कार्य धर्म के, उन पर होने लगा विचार।
   जो जैसे थे योग्य उन्हीं पर, छत्रसाल ने डाला भार॥

   जीवन वृत्त लाल को सौंपा, केशव को श्री मुखवाणी।

   देश देश में धर्म प्रचारक किए नियुक्त ब्रह्म ज्ञानी॥

   श्री नवरंग मेवाड़ पहुंचकर करने लगे धर्म विस्तार।

   धर्म ध्वजा अपनी लहराई जाकर राणा के दरबार॥

   श्री मुकुंद की वाणी गूंजी देखकर नक्कारे की चोट।

   लखनऊ की जुम्मा मस्जिद जिसका गर्जन सकीना रोग॥

केशर को किया समर्पित श्री मुख वाणी करी प्रदान।

गुरुत्व कार्य धर्म को लेकर केशर जग में हुई महान॥

सोरठ कोकण कच्छ मराठा गुर्जर मालव मध्य प्रदेश।

केरल आंध्र आसाम उड़ीसा झूमा पाकर प्रभु संदेश॥

यहां धर्म की निधि नियत कर और महाप्रभु के उपदेश।

देश काल की दशा सोच कर भेजे साथी देश-विदेश॥ (मुक्तिपीठ)

2. महाराजा छत्रसाल के धार्मिक साथी श्री प्राणनाथ जी के पथनुगामी जन (सुंदरसाथ)।
3. किसको भेजूं कहूं मैं किसको, है जाने को कौन तैयार?
   परम पुरी नवतन सेवा का, बोलो कौन संभाले भार?

   देश देश धर्म केंद्र नियत कर डोरी पकड़ी अपने हाथ

   प्रेम मार्ग पर सदा चलाया लेकर सब को अपने साथ (मुक्ति पीठ
4. वि.सं. 1687 में स्थापित हुई थी।
5. वि.सं. 1729 में स्थापित हुई थी।
6. लेकिन शेष अभी की चिंता श्री नवतनपुरी ही विरान
   जहां धर्म का अंकुर दीक्षा पुष्पित जिससे हुआ जहान (शेष पृष्ठ 219 पर)

से अनेकों दीप जले जिनके द्वारा महाराजा छत्रसाल ने धर्म संस्था अपना के लक्ष्य में सफलता पाई थी। वह (छत्रसाल इन धर्म दूतों को वैरागी साथी कहा करते थे, उनके निम्न तत्कालीन पत्रों से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है।

छत्रसाल के पत्र: सवाई जयसिंह के नाम---

..... यहां के समाचार भले हैं आप अपाचे आई। समाचार पाए।.... और ओ साथी आए दिन कहीं। सांपों यह बात चर्चा की है तू महाराज सो राजा हुई सुजाने.....

---- वैशाख सुदि 3 संवत् 1780

... अब कछु महाराज सिखावन उठे हैं सुकरी है। आगे वैरागी साथी चर्चा के सुनने को बुलाए हते यहां से विदा कर हैं पुलिस चौकी के पीछे वहां पहुंची हैं।

---- अब कछु महाराज शिखा बना रहे हैं पुकारी है। आगे वैरागी साथी चर्चा के सुनने को बुलाए होते हुए यहां से विदा करें हैं। पति के पीछे वहां पहुंची हैं।

---- मारग बदि 8 संव. 1779, मुकामु जोरपहार

विजयराज-छत्रसाल

त्रेता में सीता का पालन पोषण करने वाले मिथिला नरेश राजा जनक थे, जो विजय राज कहे जाते थे। वह माया मुंह से पूर्णता है न लिफ्ट थे। महाराजा छत्रसाल में इन्हीं जैसे गुणों का समावेश था। जनक राज दरबार में ब्रह्म चर्चा संबंधी व्रत आयोजन होने के अनेकों प्रमाण मिलते हैं। उनके यहां ऋषि मुनियों की राज्यसभा में निरंतर ब्रह्म चर्चा चलती रहती थी जैसा कि याज्ञवल्क्य और गार्गी का ब्रह्म तत्व विषयक संवाद जनक के राज दरबार में हुआ था। ऐसा ही सबकुछ महाराजा छत्रसाल के राज दरबार में हुआ करता था उनके धर्म गुरु शब्द गुरु महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी 5000 ब्रह्म मुनियों की टोली लेकर उनके यहां विराजे थे। दरबार में नित्य निरंतर ब्रह्म ज्ञान की चर्चा होती रहती थी। महाराजा छत्रसाल ने स्वयं बड़े-बड़े शास्त्रार्थ में विजयश्री प्राप्त की थी।

सोरठ प्रांत की एक नग्न योगिनी, नग्न अवस्था में ही महाराज के सम्मुख आई थी, उन्होंने ब्रह्म ज्ञान की दिव्य आभा से उसे जागृत किया था और उनकी रानी ने स्नान करवाकर उसे सुंदर वचन पर आए थे और महाराज ने उसे ब्रह्म ज्ञान की दीक्षा दी थी पुलिस चौक यही योगिनी जगत में जगतगुरु केशर बाई के नाम से विभूषित हुई थी।

संसार में विदेश नीति विदुर नीति और चाणक्य नीति का सहारा लिया जाता है, उसी प्रकार छत्रसाल नीति का भी ऊंचा स्थान है। महाराजा छत्रसाल के द्वारा दिए गये

(पृष्ठ 218 का शेष)

कर प्रदान छत्ता ने दीक्षा, रक्खा केशरबाई नाम।

कार्य धर्म का शेष अभी था, नवतनपुरी सेवा का काम॥

केशर को वह किया समर्पित, श्री मुखवाणी करी प्रदान।

गुरुतम कार्य धर्म का लेकर, केसर जग में हुई महान॥ (मुक्तिपीठ)

उपदेशों का काव्य रूप में कुछ संग्रह छत्रसाल काव्यांजलि के रूप में मिलता है।

महाराजा छत्रसाल का अंतः करण निशाचर ब्रह्म ज्ञान में लीन रहता था। संसार यह काम काज वह जल में नहाए और कोरे रहिए के रूप में करते थे। वस्तुतः उनका जीवन जनक सदृश्य ही था। निसंदेह महाराजा छत्रसाल विजय राज हैं उन्हें ब्रह्मर्षि कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

कालजयी छत्रसाल

महाराजा छत्रसाल का अवसान एक विचित्र पहेली है, वह साडे 82 वर्ष तक जनमानस के सम्मुख रहे सोमा तत्पश्चात वह सौभाग्यशाली लोगों को अभी भी दर्शन देते हैं, ऐसी मान्यता है। वह सदेह अदृश्य है, उनकी गणना कालजई पुरुषों में होती है। यथा---हनुमान जी, अश्वत्थामा इत्यादि।

महाराजा छत्रसाल में देव तुल्य आस्था रखने वाले लोग प्रातः जाकर छत्रसाल महाबली करियो बली बली का मंत्र जप करते हैं। आस्थावान लोग बताते हैं कि शुभ दिन की शुरुआत हेतु छत्रसाल का नाम लेना उत्तम होता है। महाराजा छत्रसाल अजर अमर हैं उनकी मृत्यु नहीं हुई है तो मैं ऐसी जनश्रुति है, जनमानस उन्हें कालजई जानकर उनकी पूजा-अर्चना करते हैं।

बुन्देली जनमानस में उनके कार्य होने की प्रबल भावना लोकोक्तियों के माध्यम से सुनने को मिलती हैं:---

सुयश अमर कीरति अमर, करनी अमर विशाल।

मुए कहत तेई मुए, सदा अमर छत्रसाल॥

महाराजा छत्रसाल को मृतक मानने वाले लोगों के लिए यह लोकोक्ति पर्याप्त है। महाराजा छत्रसाल की गणना 8 में कालजई पुरुष के रूप में होती है। वह संसारी लोगों द्वारा विराट पुरुष भगवान शेष नारायण के अवतार कहे जाते हैं शेष नारायण को कॉल शक्ति संचालित किए हुए हैं अतैवइन्हें काल पुरुष भी कहा जाता है। काल पुरुष के कलेवर होने के कारण इन्हें कालजई कहना उचित है। ऐसे ही पुरुष प्रातः स्मरणीय कहे जाते हैं तभी किसी ने महाराज छत्रसाल की प्रातः कालीन वंदना निम्न शब्दों में की है:--

ज्ञानी लेत लेत पंडित पुरानी लेत पण्डित पुरानी लेत,

---

1. (श्री) प्राणनाथ प्रताप से, भये कालजयी छत्रसाल।

मरे कहें ते मर गये, अमर सदा छत्रसाल॥ (लोकोक्ति)

2. वस्तुतः यह दिव्य परधाम की एक साकुण्डल प्रिया के अवतार हैं, उनमें परब्रहम परमात्मा की विशिष्ट शक्ति विद्यमान है। इसी कारण से विराट ब्रहमाण्ड की समस्त शक्तियाँ भी उनमें समाहित हुई हैं। अतः उन्हें केवल शेषवतार तक सीमित नहीं किया जाता है।

लेत बढ़े दौलत घटे दिन काल कौ।

सिद्ध लेत साधु लेत, जती और सती लेत,

लेत फल पावै ज्यों दर्श नंदलाल को॥

भनत प्रचंड शूरवीर रणधीर लेत,

जीतत समर मुख देखत न चाल को।

राजा लेत राव लेत साहू शहजादे लेत,

प्रातः उठ नाम लेत वीर छत्रसाल को॥

धन्य है, छत्रसाल महाराजा का कालजयी स्वरूप।

छत्रसाल लोकोक्तियां

महाराजा छत्रसाल के कहे वचन ऐसे हैं जो सर्वकाल मैं ग्रहणी यहां शिक्षाप्रद हैं तथा प्रेरणादायक स्वरूप कंठ आसीन हैं। इन वचनों पर दोनों ने जनमानस के दैनिक क्रियाकलापों पर अमिट छाप छोड़ी है। कालांतर में यही वचन को माओवादी अब लोकोक्तियों के रूप में सर्वत्र प्रचलित हैं। इन दोनों की एक लघु झलक प्रस्तुत है---

रैयत सब राजी रहै, ताजी रहै सिपाहि।

छत्रसाल तेहि राज को, बार न बांको जाहि॥

छत्रसाल के दान को, जो करि है खोद विनोद।

जय जैहै जरमूर ते, मर जैहै बिरखोद॥

बिना मौत मरहौ नहीं, यही हमारी सीख।

मुहम्मद खां न मार हौ, (तौ) घर-घर मांगौ भीख॥

बारे तै पालो हतो, फीहन दूध पियाय।

जगत अकेले लरत है, जा दुख सहो न जाय।

रेखांकित पंक्तियां लोक कंठ पर आरूढ़ होकर सर्वत्र जनमानस की मार्गदर्शक बनी हुई हैं

बुन्देली काव्य लोकोक्तियों में महाराजा छत्रसाल

महिमा मई पावन वीर अश्वनी भूमि बुन्देलखण्ड में अनेक लोक गाथाएं एवं लोकोक्तियां विद्यमान है, जिनमें वहां का पावन इतिहास सुरक्षित है। युग पुरुषों का अभिनंदन हमेशा इनके द्वारा होता आया है। इन्हीं में युगा अवतार महाराजा छत्रसाल भी हैं।

महाराजा छत्रसाल के अप्रतिम व्यक्तित्व एवं स्वरूप को मुखरित करती हुई अनेकानेक लोक गाथाएं बुन्देलखण्ड में ही नहीं अपितु समग्र राष्ट्र में सुनने को मिलती हैं। जिस प्रकार से भगवान भास्कर विश्व को अपने आलोक से आलोकित करते हैं उसी प्रकार

से बुन्देली लोकोक्तियां महाराजा छत्रसाल के बहुमुखी व्यक्तित्व व कृतित्व को सारे संसार में प्रतिबिंबित करती हैं। प्रस्तुत है इसी परिवेश में कुछ बुन्देली लोकोक्तियां:---

धन्य धन्य छत्रसाल बुन्देला

आप गुरु से सिगरो जग चेला।

तालन में भीमताल, और सब तलईयां,

राजन में छत्रसाल और सब रजईयां।

नर्मदा कालिंदी टौंस, चंबल महावत तें।

बिरज बुन्देली हद बांधी हिंदुआन की।

बादर की छाहिं लौं उसेल पातसाही सर्व।

फैल रहो घाम सो, प्रताप छत्रसाल को।

लाल छड़ी चमकाउत जैहैं

टीले से घुड़ला कुदाउत जैहैं

फटे ताल बंधाउत जैहैं

अंधे कुआं उघराउत जैहैं

बन के चिरैयां चुनाउत जैहैं।

राज लेत राव लेत साह शहजादे लेत,

प्रातः उठ नाम लेत वीर छत्रसाल कौ।

छत्ता न होतो तो सुन्नत होती सबन की।

महाराजा छत्रसाल के विपुल पराक्रम का उल्लेख आज भी बुन्देलखण्ड के लोक काव्य-गीतों (लोकोक्तियों) में विद्यमान है, जिन्हें जनमानस बड़ी लगन से गुनगुना उठता है यथा:---

चौकि चौकि सब दिसि उठे सूबा खान खुमान।

कब धौ धावै कौन पै छत्रसाल बलवान (छत्रप्रकाश)

॥छंद॥

विश्व भर छाना न राना सा राजपूत, मिलो न कहूं दूसरो शिवाजी,ल सौ।

सिख सरदार सो न मिलो गुरु गोबिन्द सो; बैरियों की वाहनी पै परबै भूचाल सौ।

झांसी माह दूसरी प्रमोद न बिलोकि चाल, गोरन को काल होत कसै पीठ लाल सौ।

बज्र तेग झेला शत्रु सरपट पछेला, न ऐसो युद्ध खेला बुन्देला छत्रसाल सौ।

देश-काल परिस्थिति का प्रभाव बाल जगत पर भी पढ़े बिना नहीं रहता है अतैव बच्चों के लुकाछिपी खेल, कबड्डी व अन्य खेलों पर भी इसकी विविध झलक दिखाई

पड़ती है। प्रस्तुत है बालक्रीड़ा लोकगीत--

ऐंचना कौ खेंचना। लपेटा की पाग।

सोने का तुर्ग बुन्देलखण्ड राज।

कोउ छू लो मोरे लाल। कहो जय छत्रसाल।

ऐंचना कौ खेंचना अर्थात तीर धनुष का तलवार और सिर पर लपेटा की पाद (साफा) जिस पर सोने का ताला लगा हो। यह तोरा महाराजा छत्रसाल की फाग में लगा होता है। जिससे बुन्देलखण्ड का यश को महाराजा छत्रसाल की जय और यहां की वेशभूषा जग जाहिर होती है।

अब्बक। बब्बक। दांय। दीन। गोलचा चऊअर। पाय। पीन,

रंग। रूप। सरूप। राय। राज। बुन्देलखण्ड बज्जा। जय। छत्ता

वस्तुत है इस खेल के लोकगीत में नन्हे-मुन्ने बच्चे बच्चियां बुन्देलखण्ड बजा जय छत्ता अर्थात महाराजा छत्रसाल का यशोगान आधा अवधि गा रहे हैं।

महाराजा छत्रसाल जी एक अवतारी पुरुष हैं। उन्होंने अपने शरीर का त्याग नहीं किया है, यह वास्तव में महाराजा छत्रसाल की अद्भुत कहानी है, जिस पर अभी तक विशेष शोध नहीं हुआ है। जनश्रुति है कि पोस्ट शुक्ला तृतीय शुक्र (भृगु) वार वि.सं. 1788 (1912 1731 ई.) को गोधूलि बेला में महाराजा छत्रसाल मऊ करवा में धुबेला ताल के किनारे बाग में स्थित एक चट्टान पर अपने कपड़े (पीले रंग का अंगरक्खा, मुकुट) तलवार आदि रखकर चले अंतर्ध्यान हो गए हैं पुलिस चौक समूचा जब उन्हें कालजई मानकर पूछता है।

कहा जाता है कि जब कोई व्यापारी जन अपना व्यापार करने के लिए बाहर जाता है वक्ता व्यापार कर्म शुरू करता है तब वह छत्रसाल को एक स्थित देवता के रूप में है दम दम कर इनका ही नाम एक मंत्र के रूप में लेता है यथा:---

छत्रसाल महाबली करियो भली भली।

निम्न के दोहे भी अपनी अलग छटा भी बिखेरते हैं, जो भावुक जनों के कंठ पर आते ही उनका ध्यान बरबस महाराजा छत्रसाल के स्वरूप का चिंतन करने लगता है।

छत्ता तेरे राज में, धक् धक् होय

जित जित घोड़ा मुख करे, तित तित फत्ते होय॥

इत जमुना उत नर्मदा, इत चंबल उत टौंस।

छत्रसाल सों लरन की, रही ना काहू हौंस॥

गंगा त्रिपथ गामिनी जैसी, छत्रसाल की कीरति तैसी।

तौ गुन छत्रसाल के गैयै, कैयक सहस जीभ जो पैयै

सुयश अमर कीरति अमर, करनी अमर विसाल।

मुए कहत तेई मुए, सदा अमर छत्रसाल॥

श्री कृष्ण स्यामाजू देवचंद्र, श्री प्राणनाथ जी छत्रसाल।

इन पंचन को भजे, काज सरै तत्काल॥

देव पुरुष के रूप में उपास्य छत्रसाल

युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल की वंदना एक देव के रूप में की जाती है, यह उपलब्धि सामान्य मनुष्य को सुलभ नहीं होती है। इसी तथ्य से उनके चरित्र का महानतम रूप स्वयं सिद्ध होता है।

उनकी वंदना कृष्ण के साथ होती है, जैसे राम के साथ हनुमान की। निम्न पंक्तियां हृदय ग्राही हैं

सिद्ध लेत साधु लेत, जती और सती लेत,

लेत फल पावै ज्यों दर्श नंदलाल कौ।...

राजा लेत राव लेत साहु सहजादे लेत,

प्रातः उठ नाम लेत वीर छत्रसाल कौ॥

श्री कृष्ण सयामाजू देवचन्द्र, श्री प्राणनाथ जी छत्रसाल।

इन पांचों को जो भजै, काज सरै तत्काल॥

सदा महामति दाहिने, सम्मुख सुन्दर साथ।

नाम लेत छत्रसाल को, होत सिद्ध सब काज॥

महाराजा छत्रसाल के उपासक उनसे सिद्धि प्राप्ति की कामना करते हैं। विघ्न बाधाओं को हरने तथा दुख भाग के शमन की अभिलाषा रखते हैं मुक्ति पाने की लालसा भी उनके भक्तों में देखी गई है।

नन्हे मुन्ने बालक भी उनकी वंदना करते हैं और उनसे उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं प्रस्ताव प्रस्तुत है उनकी वंदना का एक बालगीत:--

---

1. प्रातहिं लेत आप कर नामा। ताकर सिद्ध होहिं स कामा। (श्री छत्रसाल चालीसा)

2. विघ्न हरण मंगल करन, चंपत सुत छत्रसाल।
   दीन जान जाम आपनो, मेतहु जग जंजाल॥ (श्री छत्रसाल चालीसा)

3. जो जन छत्रसाल गुण गावै। दारुण दुःख दूर जावें॥
   ताके उर नहि भय संचरही। आप नाम उच्चारण करही॥
   टेर सुनो मेरी छत्रसाला नरेशा। दूर करहु मन मांहि क्लेशा॥ (श्री छत्रसाल चालीसा)

3. होऊ दास पर सदा सहाई। भव से देवो पार लगाई॥
जो जन छत्रसाल चितलावै। ताकर आवागमन नशावै॥ (श्री छत्रसाल चालीसा)

हे छत्रसाल! हे छत्रसाल!

दूर करो मम कष्ट विशाल॥ हे छत्रसाल....

बने सभी हम शत्रु विनाशक।

मातृभूमि के रक्षा कारक॥ हे छत्रसाल....

विद्यावान बने सब बालक।

सारे जग के तुम संचालक॥ हे छत्रसाल....

करते तुम्हें प्रणाम सभी।

फेर न पाऊँ दुःख कभी॥ हे छत्रसाल....

क्यों नहीं याद रखे इतिहास

लोहागढ़ का किला जमुना और नाहन की पहाड़ियों के बीच फंसा है। इसके लिए की मरम्मत करवा कर एक जागीरदार वैरागी ने इसे अपनी राजधानी बनाया था। यह दुर्ग अजय था, इसे मुग़ल सल्तनत जीतने में असफल रही थी। बड़े नामी-गिरामी मुग़ल सेनापति अपना भाग्य आजमा चुके थे, फिर भी किला जीता जा ना सका था।

युक्ति और प्रयत्न के सहारे क्या कुछ नहीं किया जा सकता? अर्थात सब कुछ किया जा सकता है। महाराजा छत्रसाल ने ऐसे अपराधी दुर्ग को जीतने के लिए लोहागढ़ प्रस्थान किया था उनके साथ केवल 50 शूरवीर से कम 1 से कम 50 शूरवीर थे एक से एक बढ़कर थे वह सब पुलिस महाराजा छत्रसाल ने लोहागढ़ पहुंचने के पूर्व अपनी रणनीति को कार्यान्वित करने के लिए गधे रे लोगों से संपर्क कर 20 गधे खरीदे और 8-10 हल्के खच्चर लिए और 20 25 छोटे लड़के संग लिए। एक पाल की सजा कर इसमें एक योद्धा को दूल्हा बनाया। नगाड़ा बाजे को मदुरई, रमतूला आदि बजाने वाले बालकों वालों की टोली बनाई। गधों का खर्चा रुपैया छिपाकर बांधे। योद्धा जन बाराती के रूप में ऊपर से सज गए बारात के रूप में चलते-चलते लोहागढ़ के समीप में पहुंच गए। लोहागढ़ का किला सामरिक दृष्टि से अति कठिन था इसके चारों ओर जल से भरे गहरी खाई थी और दरवाजे में प्रवेश हेतु खाई के ऊपर हाथ भरे का चौड़े लोहा का पटिया पड़ा था फतेह पटिया पर चलकर किले में प्रवेश करना टेढ़ी खीर थी। बाराती भेष में योद्धा द्वारपालों से बोले--- महाराज हम लोग पधारे हैं, बरात

लेकर वापस लौटे हैं। अपनी कुल परंपरा के अनुसार ओरिया बाबा पर हम लोग हर बार नारियल चढ़ाते हैं इसलिए हम लोगों को बरात सहित किले के अंदर पोरिया बाबा का नारियल चढ़ाने

---

1. यह रणनीति आ बैल मुझे मार वाली थी पर काल के गाल में पहुंचकर भी छत्रसाल विजय बनकर लौटे थे, ऐसा जोखिम पूर्ण साहस सेवाएं छत्रसाल के किसी ने नहीं उठाया था।

के लिए जाने दे, हम लोग सभी गरीब है और तुम्हारे गुलाम है। आप लोग किसी तरह की कतई चिंता ना करें। पहरेदार बोले--- जाओ, जल्दी जाकर पोरिया बाबा को नारियल चढ़ाकर लौट आओ। आज्ञा होते ही सभी बाराती किले के अंदर घुस गए और कोरिया बाबा पर पांच नारियल चढ़ाएं और रक्षा में लगे सिपाही बच्चों का नाच गाना देखने लगे, बच्चों के हाव भाव बड़े अनोखे नृत्य को देखकर मुक्त हो गए। प्रसाद बांटा जाने लगा, सभी किले के रक्षक व कर्मचारी प्रसाद लेने व खाने में बेसुध हो गए। कितने समय में ही बाराती विषधारी योद्धाओं ने गधों वचनों पर लदे हथियार निकाल लिए और टूट पड़े रक्षकों पर। महाराजा छत्रसाल के नेतृत्व में 50 योद्धाओं ने दुर्ग के भीतर प्रवेश दृश्य दृश्य उपस्थित कर दिया।

कोई सिपाही नहा रहा था, तो कोई खाना बना रहा था और कोई खा रहा था। थोड़े से सिपाही ड्यूटी पर सशस्त्र तैनात थे। इन खाली रणबांकुरे इन्हें कॉल कर डाला और किले का दरवाजा बंद कर दिया। छत्रसाल ने लोहागढ़ दुर्ग पर चढ़कर अपना विजय ध्वज लहरा दिया।

महाराजा छत्रसाल ने इस प्रकार इस अजय दुर्ग को बिना किसी सैन्य अभियान के बल पर जीता। क्यों नहीं याद रखें इतिहास--- ऐसे अपराधी शौर्य एवं पराक्रम चाली हिंदुत्व के सूर्य महाराजाधिराज छत्रसाल को।

महाराजा छत्रसाल का मुस्लिम प्रेम

महाराजा छत्रसाल के अंतर्मन में कभी भी हिंदुओं और मुसलमानों के प्रति पाल गांव जैसी भावना थी पुलिस चौक समूची मानव जाति को उनके लिए एक ही जाती थी। बस को मानवीय विचारों से युक्त लोग ही उनकी दृष्टि में सूरत है और मानवीय गुणों से परिपूर्ण लोग असुर यवन थे।

महाराजा छत्रसाल को उक्त कथन की कसौटी पर परखा जा सकता है। उन्होंने कभी भी मुस्लिम कौम पर अत्याचार नहीं किए। उनके राज्य में हिंदू-मुसलमान समान रूप से रहते थे। जब औरंगज़ेब अपनी

---

1. लोहागढ़ चोर बे मैं सब को हार गए हो, अपने घंटा भर में लोहागढ़ तो रोको मां इतरा बादशाह को पाती पटवा दही, जो सामान बादशाह को लूटो है तो दे रहे हो।
(महाराजा छत्रसाल का पत्र जगतराज के नाम, आषाढ़ सुदी 13 संवत् 1788 मुंह मऊ)

2. (i) महासिंह (महाराजा छत्रसाल के वकील का पत्र: सवाई जयसिंह के नाम
.... अरुण महाराज हिंदू अनी के सूरज हैं हिंदुस्तान की मरजाद सब महाराज लगी है और यह बात महाराज की के प्रमाण के लाइक हती,.... --- आषाढ़ सुदी 80 संवत् 1789 सरवाड़

(ii) यह रोमांच पैदा करने वाली लोहागढ़ विजय की घटना दिसंबर 1710 ईस्वी (संवत् 1765) में घटित हुई थी।

अमानवीय हरकतों से हिंदुओं पर जजिया वसूल तथा तथा जबरन हिंदुओं को मुसलमान बना रहा था तभी महाराजा छत्रसाल जी ने किसी भी मुसलमान व्यक्ति को बदले की भावना से प्रताड़ित नहीं किया था। वस्तुत है हिंदू मुसलमान एक ही परमात्मा की संताने हैं, फिर उन में भेदभाव कैसा--ऐसा था, सम दृष्टि के पोषक थे वे।

औरंगज़ेब दिल्ली का बादशाह था, मुसलमान कौम का था, इसलिए छत्रसाल महाराजा ने उस से युद्ध किया था ऐसा नहीं। औरंगज़ेब तथा काव्य प्रवृत्तियों से परिपूर्ण था भाइयों को मारकर दिल्ली की गाड़ी पर बैठा था पिता को जेल में घुसा था। भाइयों की जीवित संतानों से भी उसका बर्ताव अच्छा न था अधिक क्या लिखूं? इतिहास के पन्ने इस संदर्भ में रक्त रंजित है। अट महाराजा छत्रसाल ने औरंगज़ेब से इस कारण युद्ध किए कि वह अश्वत्थामा का मानवीय प्रवृत्ति का था। जैसे ब्रिज में असुर कृष्ण को मारने आते थे और कृष्ण का वध कर देते थे और वह असुरों का दमन करने ब्रज छोड़कर नहीं गए। वैसे ही औरंगज़ेब की भांति असुर दलों को बुन्देलखण्ड में भेजता था, महाराजा छत्रसाल उनका दमन करते थे। बुन्देलखण्ड के अंदर महाराजा छत्रसाल ने आसुरी प्रवृत्तियों का दमन किया था उन्होंने ना तो हिंदू जनता पर कहर ढाया और ना ही मुसलमानों पर।

महाराजा छत्रसाल राज्य के भूखे ना थे, इस तथ्य का अनुशीलन इसी से किया जा सकता है कि महाराजा छत्रसाल ने और अच्छा, दतिया, चन्देरी की रियासतों पर आक्रमण नहीं किए और ना ही इनकी जागी रे झीनी, हां इनमें उपजी आसुरी प्रवृत्तियों के सम्मुख आने पर समुचित उत्तर दिया था, तभी तो उन रियासतों की प्रजा अपना महाराजा छत्रसाल को ही मानती थी।

औरंगज़ेब को मानवीय संदेश लेकर दिल्ली न चोरों का वचन देना, उनके मानवीय प्रेम का प्रतीक है। असुरों द्वारा क्षमा मांगे जाने पर उन्हें छोड़ देना, उनके ऐसे प्रसंग इतिहास प्रसिद्ध हैं।

सर्व समर्थ बलशाली होते हुए भी उनका निम्न उपदेश उनके मानवीय चरित्र को मुखरित करता है---

सालियौ उदंडनि कौ, दंडनि को दीजौ दंड,

करिकै घमंड घाव, दीन पै घालियौ।

बाकी खाकर पुत्र खां जहां को दत्तक पुत्र बनाना उनके उत्तम चरित्र का प्रतीक है। औरंगज़ेब की बेटी रुणिचा की प्रार्थना पर औरंगज़ेब के प्राण बचाना, यह महाराजा छत्रसाल की मानवीय मूल्यों की श्रद्धा का उच्चतम उदाहरण है। महाराजा छत्रसाल शठे

शाठ्यम समाचरेत की नीति यदि अपनाते तो वह औरंगज़ेब के हिंदू विरोधी नीतियों का जवाब दे सकते थे, परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। घायल मुग़ल सिपहसालार ओं को उन्होंने मुग़ल शिविरों में पहुंचाया पुलिस चौक महाराजा छत्रसाल, हमेशा मुस्लिम प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करते रहे। महाराजा छत्रसाल की सेना में बाकी था और फौजी मियां मुसलमान थे। इन दोनों के पास प्रमुख सैन्य सामग्री बारूद और तोपों की जिम्मेदारी थी, यदि महाराजा छत्रसाल मुसलमान विरोधी होते तो यह दोनों कभी भी धोखा दे सकते थे, परंतु ऐसा नहीं हुआ। इन दोनों ने प्राण पद से छत्रसाल जी की सेवा की यह दोनों महाराजा छत्रसाल को सखा मानकर जिंदगी जिए।

वि.सं. 1739 के अंत में शेर अफगान की बची हुई काफी सेना और महाराजा छत्रसाल के अधीनस्थ हो गई थी। उन सैनिकों ने महाराजा छत्रसाल के मानवीय भावों को पढ़कर ही कुरान की कसम खाकर जीवन पर्यंत साथ निभाया था इतिहास में कोई भी ऐसी घटना नहीं है जिसमें महाराजा छत्रसाल का चरित्र मुस्लिम विरोधी दृष्टिगोचर हो रहा हो दिल्ली दरबार का विशिष्ट व्यक्ति मुनीम का महाराजा छत्रसाल के स्वरूप को जानकर आदर के साथ नाम लेता था। उसके विचार थे कि--- महाराजा छत्रसाल मुग़ल सल्तनत तोड़ देंगे परंतु दिल्ली दरबार को तोप के गोलों से कभी नहीं उड़ाएंगे। वह मानवीय सहार कभी नहीं कर सकते, हां अमानवीय जनों का सहारा अवश्य कर डालते हैं महाराजा छत्रसाल में धार्मिक कट्टरता नहीं है। ऐसा उसका अधिक विश्वास था। वह मुनीम का भली-भांति जानता था कि महाराजा छत्रसाल में हिंदू मुस्लिम प्रेम आजाद है, में दोनों को एक ही माला से मोती मानते हैं। और उनके सद्गुरु महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी सॉरी खुदा सोई भ्रम के सूत्रधार हैं।

महाराजा छत्रसाल की दृष्टि में जगत का हर प्राणी समान है जाती पाती काव्य मनुष्य रखना आसुरी गुणों का प्रतीक है। हिंदू मुस्लिम ही नहीं अपितु विश्व की सारी मानव जाति के लोग समान हैं जन को पालना और असुरों (विधर्मियों) का दमन करना उनकी इसी धारणा का सूचक है। यथा---

छत्रसाल जन पालिबो, अरिहि घालिबो दोय।

नहिं बिसारियो धारियो, धरन धरा कोऊ होय॥

बालक लौं पालहिं प्रजा, प्रजापाल छत्रसाल।

ज्यो सिसु-हित अनहित सुहित, करत पिता प्रतिपाल॥

(महाराजा छत्रसाल के नीति परक दोहे)

महाराजा छत्रसाल की कथनी और करनी में तनिक भी फरक न था। निःसन्देह वे मानवीय गुणों से परिपूर्ण महामानव थे। उनके अन्तःकरण में हर मानव के प्रति असीम सम्मान, प्रेम व श्रद्धा थी।

उन लोगों का प्रेम दूर हो जाना चाहिए जो महाराजा छत्रसाल को सिर्फ हिंदू प्रेमी कहकर मुसलमान विरोधी मानते हों। महाराजा छत्रसाल के धर्म में हिंदू और मुसलमानों के प्रति भेदभाव नहीं है। यथा--

या कुरान या पुराण, एक कागद दोउ परमान।

याके मगज मायने हम पास, अंदर आय के खोले प्राणनाथ॥

मुहम्मद शाह बादशाह की भतीजी के निकाह में महाराजा छत्रसाल ने निमंत्रण मिलने पर दोनों राजकुमारों को बेचकर एक लाख रु. व्यवहार किए थे, तब मुहम्मद शाह ने कहा था, यदि महाराजा थे तुम नहीं भतीजी को दान में 12 जागी रे जरूर देते। उक्त कथन महाराजा छत्रसाल के मुस्लिम प्रेम का अनूठा उदाहरण है।

वस्तुतः मानवीय गुणों से परिपूर्ण महाराजा छत्रसाल में हिंदू-मुस्लिम जैसी पृथक कोई भी भावना न थी। उनके घर में सारे मुस्लिम जनों के प्रति आगाध प्रेम था।

काव्य प्रतिभा के धनी महाराजा छत्रसाल

छत्रसाल जी बचपन में अनाथ हो गए थे पर्ल हैं उनकी अंतः करण में जगत नियंता के प्रति असीम श्रद्धा उमरी होगी, तभी उनके अंतर्मन में काव्य धारा प्रस्फुटित हुई होगी, संघर्ष में जीवन ही उनके काव्य बढ़ने की प्रेरणा शक्ति रही है। काव्य अनुशीलन से उनके काव्य में प्रारंभिक एवं प्रकार की धाराएं होती हैं।

प्रारंभिक काल में, उनकी विभिन्न देवी-देवताओं के प्रति प्रसून झरते दिखाई देते हैं, जबकि प्रोढ़-काव्य के दर्शन में एकैश्वरवाद की झलक है। कवि वियोगी हरि द्वारा संपादित श्री छत्रसाल ग्रंथावली में प्रारंभिक काव्य का ही दिग्दर्शन है जबकि धर्म भूषण कुंज बिहारीसिंह द्वारा संपादित श्री छत्रसाल

काव्यांजलि में और गांव के दर्शन होते हैं। रचनाएं ब्रज भाषा से ओतप्रोत है, कहीं-कहीं पर बुंदेलखंडी, अवधी एवं खड़ी बोली के भी दर्शन होते हैं। रचनाओं में यदि भाग आदि अन्य कवियों की तुलना में बहुत कम है। शास्त्र का विवश रचनाओं में दिखाई देता है।

भक्ति, विश्व बंगाल और नीति पर हृदयग्राही काव्य धारा का प्रवाह झलक रहा है। यह विशुद्ध काव्यधारा जन-जन में गए हैं। यथा--

॥छप्पय॥

सतगुरु बिन नहिं ज्ञान, ज्ञान बिन नहिं विराग कह।

बिन विराग नहीं ध्यान, ध्यान बिन नहिं भक्ति लह॥

---

1. महाराजा छत्रसाल के सद्गुरु निष्कलंक बुध महामति प्राणनाथ जी।
2. कुंवर हृदयशाह एवं कुंवर जगतराज

भक्ति बिना सुख सत्य तत्व, अनुभवै न कबहूं।

अनुभव बिन श्रम सकल विफल, यह बूझहूं सबहूं॥

कह छत्रसाल दृढ़ पच्छ करि, प्रेम लच्छ्ना लच्छ लखु।

सब श्रुति पुरान कोविद कहैं, हरि चरननि निज सुरत रखु॥

॥कवित्त॥

जुगल किशोर चंद्र-बिम्बहि बिलोक ठाड़े,

तीर जमुना के निज-नीरज हिलोर कैं।

कारन कहा है तौन बूझै राधा माधव सों,

सौंह दे, दै नैन सैन, जुग्म कर जोरि कैं॥

छत्रसाल स्वामिनी के बैन सुनि बोले स्याम,

तेरो मुख-शशि शशि निरखि निहोरि कैं॥

मेरे गुरु चंद्र, मोसों कहें ब्रजचन्द लोग,

तेरो मुख चंद्र तौन कारन चकोरि कैं॥

छत्रसाल जी ने स्वयंवर घटित कुछ घटनाओं को निम्न प्रकार से व्यक्त किया है---

॥**दोहा**॥

जो बीती गजराज पर, सो बीती अब आज।

बाजी जात बुन्देल की, राखौ बाजी लाज॥

बिना मौत मरहौ नहीं, यहै हमारी सीख।

मुहम्मद खां न मार हौ, (तौ) घर-घर मांगौ भीख॥

पहले दाता हम भए, गुरु को दीन्हों शीश।

फिर दाता सद्गुरु भए, सब कुछ कियो बखशीश॥

श्री वियोगी हरि के अनुसार--- मिश्र बंधु: विनोद में उल्लेखित राज विनोद और गीतों का संग्रह के अतिरिक्त छत्रसाल जी के तीन संग्रह और प्राप्त हुए हैं।

(i) छत्र विलास, (ii) नीति मंजरी और (iii) महाराजा छत्रसाल जी की काव्य--- बताए गए हैं।

वस्तुतः अथ श्री छत्रसाल ग्रंथावली और अथ श्री छत्रसाल काव्यांजलि में अधिकांश काव्य का संकलन हो चुका है फिर भी उनकी और रचनाओं के संदर्भ में प्रबल आशा है।

हिंदी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान श्री हरि योगी के विचार महाराजा छत्रसाल की

---

1. पांच शुक्ला 5, संवत् 1983; प्रयाग, सं. वियोगी हरि
2. श्री छत्रसाल जयंती: 2055 गुरुवार 2905 1998;
   प्रकाशक--- उमा देवी कुशवंशी (जटियापुर-कानपुर निवासिनी) अजीतमल (इटावा), उ.प्र. 20612

काव्य प्रतिभा के परिवेश में अच्छा प्रकाश डालते हैं---

हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती, जब हम देखते हैं कि महाराजा छत्रसाल कभी जगत में भी एक ऊंचा स्थान रखते हैं। आश्चर्य इस बात पर नहीं है कि राजे महाराजे कवि पद प्राप्त करने योग्य हैं। यह बात नहीं है। अनेक नरेश ओं ने कविताएं लिखी हैं उनमें कई तो वास्तव में, बड़े ऊंचे कवि हुए

हैं। पर यहां एक दूसरी ही बात उपस्थित होती है। प्राय सरस्वती के लाडले जिन पतियों और श्री मानव ने कवि कीर्ति,ई है, शांति को मां सुख पूर्ण वातावरण में उतरे और रहे और छत्रसाल? यहां तो घोड़ों की रकाब पर से पैर ही नहीं हटाया। बीहड़ जंगलों निर्जन उपत्यका और भीषण रण क्षेत्रों में सारा जीवन बिताया। यहां तो हिंदू जातीयता ही एकमात्र साध्य। ऐसी दशा में को मां भगवती भारती की उपासना करनी सचमुच ही कुतुबुल वर्धिनी है। और उपासना से उपासना की। लक्ष्मी को मां काली और सरस्वती--- इन तीनों महा शक्तियों की साधना एक साथ ही हो मां यदि किसी साधक से बनी है, तो वह बुन्देलखण्ड का रक्षक वीर शार्दुल छत्रसाल है। निसंदेह महाराजा छत्रसाल के समान इस संसार में दूसरा कोई पैदा नहीं हुआ है। संसार की समस्त खूबियों का केंद्र यदि कोई बन सका है, तो वह है एकमात्र युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल। कविता उनकी विरासत नहीं थी, पर देव का विधि विधान कौन टाल सकता है? कोई नहीं। इस परिवेश में प्रणामी श्याम का निम्न कवित्री दे ग्राही है:---

छितिमाही सूर्य एक, क्षितिमाही चंद्र एक,

केसरी ने कानन में, एकहि को जायो है।

कहत परनामी श्याम, एकहि ब्रहम जान,

वेदन और सुवेदन में एकहि बतायो है॥

जनम मरण जीवन में एकहि बार होत,

एकहि ने सारो संसार रचायो है।

राजन में एकहि कवियन में एक जानो,

ऋषियन में ब्रहमऋषि, छत्रसाल कहायो है॥

सागर सम व्यक्तितत्व के आधार महाराजा छत्रसाल की आप रोड ब्रेकर आरंभिक रचनाओं का काल 1739 संवत् तक रहा है तत्पश्चात रचनाएं उनके अंतः करण से टच फूट हुई हैं।

॥**दोहा**॥

यह टीका यह पावड़ो, ये ही निछावर आय।

(श्री) प्राणनाथ के चरण पर, छत्ता बलि बलि जाय॥

॥पद॥

पूर्णब्रह्म ब्रह्म से न्यारे, आनंद अखण्ड अपारे।

सिंहासंन् आसंन बैठारे, छत्रसाल गुण गावे॥

प्रौढ़ रचनाओं का आधार उनकी एकेश्वरवाद ई उपासना का फल है। निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी के ऊपर अपार श्रद्धा रखते हुए महाराजा छत्रसाल ने उन्हें अपना प्राण आधार और स्वामी माना है। अपने में ब्रज गोपी का भाव अंतर नहीं करते हुए जो पद उन्होंने रचे हैं उनमें प्राय सतावे छत्रसाल की नाम छाप ना होकर स कुंडल का उल्लेख हुआ है। इन्होंने ज्ञान, भक्ति एवं वैराग्ययुक्त पदों का सृजन किया है।

बिन कुंजी खुले नहीं ताला ॥टेक॥

काहे की कुंजी काहे का ताला, काहे के लगे किवारा ॥1॥

तन की कुंजी सुरत का ताला, प्रेम के लगे हैं किवारा ॥2॥

छत्रसाल भजो नाम धनी का, धनी के चरन चित लागा ॥3॥

महाराजा छत्रसाल ने श्री कृष्ण को मां राधा (श्यामा एवं ब्रिज गोपियों का अनुपम चित्रण पार्क दानलीला का शब्द कीर्तन ओं में किया है। प्रस्तुत है उनकी रचनाओं में ब्रज लीला, रासलीला और जागने लीला का हृदय ग्राही वर्णन प्रस्फुटित हुआ है।

ठाड़ी रहौ न अहीर की, तू दै जा मेरो दान ॥टेक॥

लेकै हंसौ बसौ जियरा में, हम तुमसे नहि न्यारी।

बचन तुम्हारे ऐसे लागै, प्राणन हूं ते प्यारी ॥8॥

बाढ़ी प्रीत रस रीति परस्पर, दोऊ को सुख चाहिये।

छत्रसाल को दियो कृपा कर, दरस पदारथ पईये ॥9॥

यह रचनाएं पूर्व रचनाओं की भांति भाषा में विविधा हो गई हैं कारण कि--- राष्ट्रपिता महात्मा गादी के पूर्वज परमहंस स्वामी लालदास जी (पोरबंदर) स्वामी जी सूरत (गुजरात) व अन्य कवि गणों (महाप्रभु प्राणनाथ जी के शिष्यों को मां जो पढ़ना में महाप्रभु के साथ पधारे थे) की काव्य भाषा का उन पर प्रभाव पड़ा है।

1. साधो छत्रसाल ने बाना बाधा, नाम सरन को आया ॥टेक॥

तीन लोक आन चलाई, ऐसा दुन्द मचाया ॥1॥

पंडित वेद पुरान पढ़ेया, तिनके डिंभे भानो।

कोईक दिन चली माया की बाजी, फेर हुकम तले आना ॥2॥

देवी और देवता छोड़े, छोड़ी कुल की आसा।

कीन्हों एक संग साधुन को, जिनको धाम में बासा ॥3॥

एते दिन माया भरमाया, ठीक लगन नहीं पाया।

सखी सकुण्डल के पिया प्रगटे, श्री धामधनी लव लाया ॥4॥

निष्कलंक श्री मुख वाणी में सर्व देशीय भाषा का अनुपम प्रज्ज्वलित स्वरूप देदीप्यमान हो रहा है। यह वाणी उनके सद्गुरु महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी की है। इसका पूर्ण प्रभाव महाराजा छत्रसाल पर पड़ा है पलक है उनके काव्य में बहु भाषा के दर्शन होते हैं फिर भी अधिकांश रचनाएं हिंदी का विशुद्ध स्वरूप लिए दृष्टिगोचर होती हैं। उनकी रचनाओं में एक तथ्य स्पष्ट दिखाई देता है कि उनकी भक्ति पतिव्रत साधना में है जिस पर वह पूर्ण रुप से निछावर हैं।

पशुता है छत्रसाल महाराज के समूचे काव्य में अनेक विधाओं का पलायन हुआ है। हिंदी साहित्य इतिहास की दृष्टि से उनका काव्य एक महान कवि की कोटि में आता है। रीतिकालीन कवियों के समय उदित यह काव्य अनेक विधाओं से परिपूर्ण है। भक्ति ज्ञान वैराग्य का राजनीति का वीर रस एवं लोक शुभकामना से परिपूर्ण इस काव्य को बहुजन सुखाय एवं बहुजन हिताय का प्रतिपादक होने के कारण सत्यम शिवम सुंदरम कहा जा सकता है। दोहे चौपाई, कवित्त, सवैया छंद, पदों (भजन शब्द कीर्तन आदि में रचित यह काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

आदि कवि वाल्मीकि से लेकर अब तक जितने भी कवि हुए हैं उन सभी के अंतर्मन में लौकिक वासना का अंकुरण अवश्य ही बना है परंतु महाराजा छत्रसाल की आत्मा पूर्ण गोपी स्वरूप धारण कर अपने प्राण आधार प्रियतम के रंग में कुंडल बनकर निछावर (बलिहारी) हो गयी है।

---

1. तुमहीं ग्यारहीं सदी महेंदी हुए, कुल्ल पार लगे आय दीन दोये।
तुमहीं साहब होय हिसाब करे, चूक माफ के पहुंचावे घरे॥
मन चाहत सो होय हिसाब करे, चूक माफ के पहुंचावे घरे॥
मन चाहत सो सबही कों दियो, कुल्ल आलम ए थे पाक कियो।
जब शुद्ध हो बुद्ध ध्यान धरो, तुम ईश महेश को पार करो॥

2. गौतम कहें न्याय में–त्रिदेह परिरूप ब्रहम, जैमुनि मीमांसा में कर्म विध गाथी है।
कपिल देव सांख्य विषे-प्रकृति पुरुष कहें, शेष पातांजली में ज्योति कर नाथी है॥
कर्ण देव वैशेषिक मांहि काल, शिवबानी वेदान्त सर्वत्र कर भाखी है।
पूर्ण श्री प्राननाथ सो सतगुरु पाये बिन, षट् दर्शन ज्यों षट् अन्धन में हाथी है॥

3. तुम पौढ़ो पिय सेज बिछाऊं ॥टेक॥
चापो चरन पाटी तर सोऊ, मधुरे सुरन विहाग रुगाऊ ॥1॥
चरचो चन्दन अतर लागाऊं, सज सिनगार में सेजे आऊ ॥2॥
छत्रसाल नागर बलिहारी, इंद्रावती रंग सेजे प्यारी ॥4॥

4. सदा आनन्द मंगल में रहिये ॥टेक॥
अष्ट प्रहर दिन चौसठ घड़ियां, निशदिन पिउ पिउ पिउ कहिये ॥4॥
छत्रसाल भजो धाम धनी को, और देवन सों क्या चाहिये ॥5॥

हिंडोला

झूले झूले झूले रे मारा राजा हिंडोला झूले रे ॥टेक॥

कञ्चन के दोऊ थंभ मनोहर, डांडी चार अमोलक रे ॥1॥

एक कोने श्रीराज बिराजे, बीजी कोरे श्री श्यामा जी रे ॥2॥

जेम जेम साथ झुलावत झूले रे, तेम तेम मारूं मन फूले रे ॥3॥

कहत सकुण्डल अपनी वारी रे, हम लीनी अब तुम लियो रे ॥4॥

निसंदेह प्रातः स्मरणीय महाराजा छत्रसाल जिस प्रकार से वीरों में महावीर, ऋषि यों में महर्षि, राजाओं में महाराजा हैं और गुरुओं में महागुरु हैं और सारा जग उनका शिष्य है उसी प्रकार से वह कवियों में महा कवि के रूप में कविराज हैं।

महान गुरु--- धन्य धन्य छत्रसाल बुन्देला, आप गुरु सिगरो जग चेला।

वस्तुतः महाराजा छत्रसाल ने धर्म शास्त्रार्थ में आए समस्त विद्वानों को पराजित कर गुरु पदवी धारण की थी। उनके शिष्य परंपरा में सैकड़ों महान विभूतियां हैं यथा:-- सौराष्ट्र की योगिनी केशरबाई जी (जो श्री 5 नवतनपुरीधाम की प्रथम आचर्या हुई थीं), स्वामी ब्रज्भूषन जी (जो वृतांतमुक्तावली आदि ग्रंथों के रचयिता) थे। बालककों, जवानों, वृद्धों एवं राजाओं को उन्होंने सामाजिक एवं उपयोगी शिक्षा देकर पथ प्रदर्शन किया है। महात्मा अक्षर अनन्य जी के प्रश्नों का उत्तर देकर महाराजा छत्रसाल ने उनके अभाव को तोड़ा था।

हौ अनन्य नहिं अन्य कोउ, अच्छर मता अनन्य।

इत रस में रस मानिबी, आय कीजिबी धन्य॥

पुत्र जगतराज को शिक्षा--- एक बार कुंवर जगतराज जी गड़ा हुआ धन मिलने पर अति प्रसन्न हुए थे, और महाराजा छत्रसाल को अपनी प्रसन्नता गर्व के साथ सूचित की थी। महाराजा छत्रसाल ने जो शिक्षा अपने इस पुत्र को कविता के माध्यम से दी है। वह कर्म योगी व्यक्ति के लिए महान प्रेरणा का स्त्रोत है। पराए धन का उपयोग अनुचित है।

जाहि भोगि भोगी होत, जन्म प्रति रोगी होत,

कुटुम्ब वियोगी औ अयोगी होत जानि कै।

जगत दिमान जू ने धर्म नीति छान कै॥

ऐसो धन ख़्वारी करै, जुवारी और लबारी करै,

चोर व्याभिचारी करै, त्यागौ याहिं मानिकै।

---

1. ॥झीलना॥

मारा वाला जी चलो जमुना जल झीलिए॥टेक॥

******

हंसि के राज खुशी भये, पहराये वनमाल।

सखी सकुंडल अरज करत हैं, बलि बलि राजकुमार ॥4॥

जो पै या कुबुद्धिहु सों, कछु सिद्धि होय जाय,

फेरि न कुबुद्धि कीजै याहि उर आनि कै॥

काव्य के माध्यम से दी गई है शिक्षा वर्तमान में भी समूचे संसार के लिए लाभप्रद एवं पथ प्रदर्शक है। महाराजा छत्रसाल ने अनेकों पत्र जगतराज के नाम लिखकर भेजे थे, जिनमें तत्कालीन इतिहास की विशेष जानकारी समाहित है।

देश-विदेश के राजाओं को शिक्षा--- महाराजा छत्रसाल राजाओं के भी महाराजा हैं, जे ते महिपाल देते देखिए स्विच माल हम आ जाएं फिर फिर देखो तो सुमेरू छत्रसाल हैं। नव मंडल में रात के समय

तारा गणों के बीच जिस भांति चंद्रमा सुशोभित होता है उसी भांति राजा गणों के बीच महाराजा छत्रसाल सुमेरु पर्वत के समान सुशोभित होते हैं। राजा जनों को निम्न कविता के माध्यम से जो शिक्षा महाराजा छत्रसाल ने दी है वही रामराज्य की कल्पना को साकार करने में सक्षम है। आज भी उनका उपदेश प्रासंगिक है:---

चाहौ धन, धाम, भूमि, भूषन, भलाई, भूरि,

सुजस सहूरजुत रैयत कौं लालियौ।

तोड़ादार घोड़ादार बीरनि सों प्रीति करि,

साहस सौ जीति जंग, खेत ते न चालियौ॥

सालियो उदंडनि कों, दंडनि को दीजौ दंड,

करिकैं घमण्ड घाव, दीन पै न घालियौ।

विनती छत्रसाल करै, होय जो नरेस देस,

रै है न कलेस लेस, मेरो कहो पालियौ॥

प्रजा को शिक्षा--- व्यक्ति जिस दशा में हो (कृषक, श्रमिक ओमा सैनिक, वनिक आधी काम करने वाले, उसे महाराजा छत्रसाल ने निम्न सवैया के माध्यम अति उपयोगी शिक्षा दी है:---

लाख घटै कुल-साख न छाड़िये, वस्त्र फटै प्रभु औरहू दैहै।

द्रव्य घटै घटता नहिं कीजिये, दैहै न कोउ पै लोक हंसेहै॥

भूप छत्ता जल-रासि को पैरिबो, कौनिहूं बेर किनारे लगै है।

हिम्मत छोड़े ते किस्मत जायेगी, जायगो काल कलंक न जैहै।

हर मानव को कर्म योगी बनने पर निसंदेह सफलता मिलती है वहां जीवन की चतुराई और कब काम आएगी? अतैववह महाराजा छत्रसाल ने सदैव धैर्य रखकर कार्य करने की शिक्षा दी है।

---

1. चातुरी;
2. गीता में वर्णित कर्म योग की पुष्टि;

स्वकाज की शिक्षा--- महाराजा छत्रसाल ने निम्न कविता के माध्यम से विवेद जनमानस को चौक आज की सफलता हेतु सारगर्भित शिक्षा दी है। जिसके द्वारा हर प्राणी को अपने मार्ग की कुंजी भगत हो सकती है। मार्ग का धरना ही सफलता का प्रथम सोपान है।

॥कवित्त॥

लगन विराग बिन, ज्ञान अनुराग बिन,

पुहुप पराग बिन, पाग बिन सर है।

राज धर्म न्याय बिन, दान बिन कर है॥

नारि निज-नाह बिन, हाटक सुहाग बिन,

छत्रसाल ताल बिन राग की न दर है॥

॥कवित्त॥

सूजसु सो न भूषन, विचार सो न मंत्री त्यों,

साहस सो सूर कहूं, ज्योतिषी न पौन सो।

संयम सी औषधि न, विद्या सो अटूट धन,

नेह सो न बन्धु, औ दया सो पुन्य कौन सो॥

कहैं छत्रसाल कहूं सील सो न जीतवान,

आलस सो बैरी नाहिं, मीठो कछु नॉन सो।

सोक कैसी चोट है, न भक्ति कैसी ओट कहूं,

राज सो न जप और तप है न मौन सो॥

कभी धर्म एवं कवि सम्मान का निरूपण----

(i) महाराज छत्रसाल ने कवि को सत्य का पर्याय माना है। वह कभी की अंतरात्मा में सत्य के शाश्वत स्वरूप की झांकी देखते हैं उनकी दृष्टि में ऐसे ही व्यक्ति को

---

1. महाराजा छत्रसाल ने उक्त समिति के माध्यम से शिक्षा दी है कि--- वैराग के लिए लगन, ज्ञान के लिए अनुराग. पुष्प के लिए पराग, सिर के लिए पगड़ी, राज धर्म के लिए न्याय, व्यापार के लिए उद्यम, घोड़े के लिए शुभम, हाथ के लिए

दान, नारी के लिए पति, देश के लिए राजा, योद्धा के लिए कवच,... आदि आवश्यक हैं, उसी प्रकार से--- जिस प्रकार से राग के लिए ताल की आवश्यकता है अर्थात राग की दर (सम्मान इज्जत) तभी है जब उसमें ताल का सही सामंजस्य हो।

2. उक्त कविता के माध्यम से महाराजा छत्रसाल ने आत्म विश्लेषण द्वारा हर मानव को संदर्भित शिक्षा को जीवन में धारण करके उतारने को कहा है।

कवि की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। निम्न कविता के अंत में उन्होंने कभी धर्म का चित्रांकन किया है:--

॥कवित्त॥

राज गुन गान भलो, वेद को प्रमान भलो,

ध्यान भलो स्यामा-स्याम जू की चारू छब कौ।

गंग जल-पान भलो, संभु बरदान भलो,

साहब सुजान भलो, जानिबो आदब कौ।

अविचल चित्त भलो, धर्म नित नित भलो,

छत्रसाल सत्य भलो भाषिवो सुकब कौ॥

(ii) कवि को समाज व राष्ट्र में कैसे सम्मान मिलना चाहिए इसकी झलक उनकी निम्न रचना में इस प्रकार मिलती है:--

॥**सवैया**॥

आवत आप कृपा करिके, छत्रसाल कहैं उठ आदर कीजे।

सारद कंठ बसे जिनके, तिनके ढिग बैठ सुधा-रस पीजे॥

तार जराय जवाहिर दै, गज वाजन दै सनमानहि कीजे।

कीरति के बिरवा कवि हैं, इनको कबहूं कुम्हलान न दीजे॥

महाराजा छत्रसाल की कथनी और करनी में अंतर ना था रस्टोक इसका प्रत्यक्ष उस समय कटरा से मिलता है जब कवि भूषण उनके यहां पधारे थे। महाराजा छत्रसाल के दरबार में भूषण कवि को जो सम्मान मिला था, उसके संबंध में इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णिम शब्द अंकित है।

राजा सवाई जयसिंह को शिक्षा--- महाराजा छत्रसाल ने चैत्र कृष्ण एकादशी संवत् 1783 को एक पत्र में सवाई जयसिंह को भेजा था जिसमें स्वधर्म

---

1. उच्च स्वर,
2. जलाकर, त्यागकर;
   पाठभेद: ता रज चढ़ाय = ता रज चढ़ाय

महाराजा छत्रसाल ने भूषण कवि के सम्मान में स्वयं पालकी में अपना कंधा लगाया था। जब भूषणकवि को इसका पता लगा वह उसी क्षण पालकी से कूद पड़े थे उनके मुख से निम्न शब्द फूट निकले थे। किया था---

नाती को हाथी दियो, जापै ढुरकट ढ़ाल,

साहू के जस कलश पर, धुज बांधी छत्रसाल॥ ...

और राव राजा एक चित्त में न ल्याऊं अब,

साहू को सराहौं के सराहौं छत्रसाल को। (भूषण कवि)

पर चलकर राज्य करने का सार्वभौमिक उपदेश मुखरित है:---

पग अमग्ग नहि धरिय, डरिय नहि चलत धर्मपथा।

नहिं संपति मद करिय, निरख असु नर गयंद रया॥

थापिम्म निम्न नहि डुलिय, अनत बुल्लिम न जिम्भ रसा॥

नहि हरिहु तै निडरिय, परिय नहि हर प्रपंच वसा॥

गुन दान खग्ग स्वामि त्रसत न रहिय समैं न चूक्कियो।

साहन हरखि इमि सिख्यवै, सु जिय लगि जसु नय मुक्कियो॥

राजा सवाई जयसिंह के माध्यम से यह शिक्षा पद,,,,,,समग्र शासकों के लिए आज भी प्रासंगिक है। काव्य प्रेमी महाराजा छत्रसाल जूदेव ने समग्र विश्व के प्राणियों को शिक्षा दी है, वह सर्वकालिक है। आज भी अनुकरणीय एवं प्रसारण योग्य है।

उपसंहार--- समग्र जगत को विविध रूपों में शिक्षा देकर महाराजा छत्रसाल ने जो आदर्श प्रस्तुत किया है, वह अनूठा है। विकट संघर्षपूर्ण जीवन में सदा देश पूर्ण काव्य में शिक्षा का उनके अंतः

करण से प्रस्फुटन, आश्चर्य प्रकट करता है, निसंदेह वह एक पूर्ण अवतारी पुरुष हैं और सारे जगत के एकमात्र महाराजा रूप में काव्य जगत में भी जगद्गुरु दृष्टिगोचर होते हैं। निम्न लोकोक्ति अक्षर से सत्य है:---

धन्य धन्य छत्रसाल बुन्देला आप गुरु श्री गुरु जगत जिला

धन्य है महाराजा छत्रसाल जी की काव्य साधना और काव्य प्रेम!

शास्त्रार्थ महारथी छत्रसाल

महाराजा छत्रसाल शस्त्र पुराण उपनिषदों और वेदों के परम ज्ञाता थे। निष्कलंक परब्रह्म परमात्मा स्वरुप श्री प्राणनाथ जी का सानिध्य पाकर उनके अंदर ज्ञान का महासागर समा गया था उन। इसी कारण से उन्होंने सभी शास्त्रों में विजय श्री पाई थी। गुजरात की नग्न योगिनी केशरबाई, पंडित बृजभूषण जी तथा महात्मा अक्षर अनन्य जी को शास्त्रार्थ में

अप्लाई

1. ॥कुण्डलिया॥

मन-भायौ आपुनो कियौ, गहि गोरी सुलतान।

सात बार छाड्यौ नृपति, कुमति करी चहुवान॥

कुमति करीं चहुवान, ताहि निदंत सब कोउ।

असुर बैर इक बार पकरि काढ़े दृग दोउ॥

दोउ दीन को बैर आदि अंतहि चलि आयो।

कहि नृप छत्ता विचार, कियौ अपुनौ मन भायौ॥

(छत्रसाल काव्यांजलि पृ. 90)

पराजित किया था। हिंदी साहित्य में महात्मा अक्षर और महाराजा छत्रसाल के बीच हुए शास्त्रार्थ का प्रमुख उल्लेख मिलता है महाराजा छत्रसाल जी ने जैन महात्मा अक्षरा के प्रश्नों का उत्तर काव्य में ही दिया है। महात्मा अक्षर अनन्य जुए कवि थे उन्होंने अपने प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर पाकर निम्न पद महाराजा छत्रसाल के पास लिख कर भेजा था, इससे स्पष्ट है कि महाराजा छत्रसाल जूदेव शास्त्रार्थ विजेता थे।

आयो झुक प्रथम जोश पूर्णब्रहम प्रीतम को,

दूजो संग श्यामा महारानी जी की आत्मा।

तीजो पुन आय मिलो तेज रूप तारतम्य,

चौथी है हुकुम धनीधाम को संगात्मा॥

भई आय भेली है सुबुद्ध ब्रहम अक्षर की,

ये पांचो भये एक सद्गुरु महात्मा।

मान गये श्री प्राणनाथ जू पूरन परमात्मा॥*

महाराजा छत्रसाल के शास्त्रार्थ मारुति के स्वरूप को हृदय ंगम करने के लिए इस शास्त्रार्थ का उल्लेख करना समीचीन जान पड़ता है। प्रस्तुत है इस शास्त्रार्थ की विषय वस्तु---

अक्षर अनन्य के प्रश्न और महाराजा छत्रसाल के उत्तर

(श्री छत्रसाल प्रति अक्षर अनन्य जू के प्रश्न)

सवैया

(1)

धर्म की टेक तुम्हारे बंधी, नृप! दूसरी बात कहें दुख पावत।

टेक न राखत हैं हम काहू की, जैसे को तैसो प्रमाण बटावत॥

मानै कोई भली या बुरी, नाहि आसरो काहू को चित्त में लावत।

टेक विवेक तें बीच बड़ो, केहि कारण अच्छर राज बुलावत॥

---

* ओरछा के राजा और दतिया की राई, छत्रसाल अपने मुंह बने बना भाई यह शब्द महात्मा अक्षर अनन्य ने महाराजा छत्रसाल के पास उस समय लिख कर भेजे थे, जब उनका राज्याभिषेक महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी ने वि.सं. 1740 में किया था। उक्त पद से ऐसा लगता है जब अक्षर अनन्य जी को अपनी भूल का आभास हुआ था तब उन्होंने उक्त पद लिखकर छत्रसाल के पास भेजा था उन। ऐसा इतिहासकार मानते हैं।

(2)

जो धरिये हठि टेक उपासन, तो चरचा में चित्त न दीजै।

जो चरचा महिं राखिये चित्त तौ, ज्ञान विषय हठि टेक न कीजै॥

जो धरिये उर ज्ञान विचार तौ, अच्छर सार कृपा गुन लीजै।

अच्छर में छर-अच्छर है, छर अच्छर अच्छर अच्छरातीत कही जै॥

(3)

प्रानी सबै छर रूप कहावत, अच्छर ब्रहम काऊ नाम प्रमानी।

जीव की स्वप्न, सुषुप्ति अरु जाग्रत, ब्रहम तुरीय दसा ठहरानी॥

क्यों? तेहि में सुपनो जग भासत, छत्र नरेश! विचच्छन ज्ञानी।

अच्छर है कि अनच्छर? हमकों लिखि भेजवी एक जुबानी॥

(4)

छत्र नरेश! विचच्छन बुद्धि, रहें तुम संग बड़े बड़े ज्ञानी।

ध्यान अखण्ड स्वरूप को राखत, भाषत पूरन ब्रहम अमानी।

क्यों सिसुपाल की जोति गई, उत यें फिर कान्ह में आनि समानी।

खण्डित है कै अखण्डित है, हमको लिखि भेजवी एक जुबानी॥

(5)

नारि तें होत नहीं नररूप, नहिं नर तें पुनि नारी बखानी।

जाति नहीं पलटै सपने हूं, मरेहूं, पै भूत चुरैल प्रमानी॥

क्यों? सखियां निजधाम की आय, भई नर रूप क्यों जाति हिरानी।

वेद सही कैधों बात सही? हमकों लिखि भेजवी एक जुबानी॥

(6)

जाति नहीं पलटै नर नारि की, क्यों सखियां नर रूप बखानी?

जो नर-रूप भई तौ भई, पुरुषोत्तम सों ऋतु कैसै कें मानी॥

जो पुरुषोत्तम सों ऋतु होय, तौ केतिक नारिन के रससानी?

या दुविधा में प्रमान नहीं, हमको लिखि भेजवी एक जुबानी॥

महाराजा छत्रसाल ने उक्त प्रश्नों का उत्तर मात्र 4 शब्दों में लिखकर पर आमंत्रण हेतु एक दुआ रचकर अक्षर अनन्य जी के पास भेजा था। महाराजा छत्रसाल प्रेषित 4 सवालों में अगाध ज्ञान का महासागर हिलोर ले रहा है जो कि आज भी जिज्ञासु जनों के लिए आत्म हितकारी है।

अक्षर अनन्य प्रति महाराजा छत्रसाल जू के उत्तर

(सवैया)

(1)

राखत हैं हम टेक टेक उपासन, बात यथारथ वेद प्रमानी।
पीवत है चरचा करि अमृत, भूप छत्ता रस रस में रसरानी॥
देखत हैं नर-नारि कहावतु, जीव-स्वरूप की एक निसानी।
कारन की तजबीज करौ, हमतें सुनि लीजिये एक जुबानी॥

(2)

दूर करौ दुविधा दिल सौं, सत ब्रहम स्वरूप कौ रूप बखानी।
जाग्रति स्वप्न सुषुप्तिहु कौं, तजि कै तुरिया उनकों पहिचानौ॥
तीन हूँ श्रेष्ठ कहे सब वेदन, पूर्व ऋषि हमहूं ठहरानौ।
कारन ज्यों भसमासुर-तारन, कामिनी सों प्रभु आप दिखानौ॥

(3)

एक समै लच्छमी पति सों, हठ पूंछी ए निज ध्यान की बानी।
कही नही कर देन कही, भये सोलह अंस कला के निधानी॥
जोति गई इततें सिसुपाल की, उततें फिर कृष्ण में आनि समानी।
खण्डित ऐसो अखंडित है, हमतें सुनि लीजिये एक जुबानी॥

(4)

वाद भयो पुरुषोत्तम सों, सनेह बढ़ावत की उर आनी।

ब्रहम प्रताप तें यो पलटै तनु, ज्यों पलटै सब रंग में पानी॥

जो नर नारि कहैं हमुसों, अजहूं तिनकी मति जाति हिरानी।

भूत-चुरैल हैं झूठ महा, हमतें सुनि लीजिये एक जुबानी॥

॥दोहा॥

हौ अनन्य, नहिं अन्य कोउ, अच्छर छत्ता अनन्य।

इत रस में रस मानिबी, आय कीजिबी धन्य॥

शास्त्रार्थ महारथी महाराजा छत्रसाल के उत्तर का अच्छर अनन्य जू पर गहरा प्रभाव डालता था। जनश्रुति यह भी है कि अक्सर अनन्य पत्र उत्तर पाकर अत्यंत लज्जित हुए थे, वे चाहते हुए भी इसी कारण महाराजा छत्रसाल के बुलाने पर पन्ना नहीं पधारे थे।

महाराजा छत्रसाल द्वारा किए गए शास्त्रों का उल्लेख समकालीन पॉकेट डायरी में प्रचुर रूप में विद्यमान है। वास्तव में महाराजा छत्रसाल का राज दरबार आध्यात्मिक चर्चा का भी केंद्र रहा। देश विदेश से विद्वान जन यहां आते थे और अपनी विद्वता का परिचय देते थे। वह सब अपने अंतर्मन में महाराजा छत्रसाल को शास्त्रार्थ में परास्त कर देने का संकल्प लेकर आते थे परंतु कोई भी विद्वान उन्हें कभी भी परास्त ना कर सका था। प्रस्तुत कविता में शास्त्रार्थ की झलक परिलक्षित होती है, जिससे स्वत सिद्ध होता है कि महाराजा छत्रसाल जी एक महान शास्त्रार्थ महारथी थे।

गौतम कहें न्याय में त्रिदेव परिरूप ब्रहम,

जैमुनि मीमांसा में कर्म विध गाती है।

कपिल देव सांख्य विषे-प्रकृति पुरुष कहें';

शेष पाताजंलि में ज्योति कर नाथी है॥

कर्णदेव वैशेषिक माहि काल,

शिवबानी वेदान्त सर्वत्र कर भाखी है।

पूर्ण श्री प्राणनाथ सो सतगुरु पाये बिन,

षट दर्शन ज्यों षट् अंधन में हाथी है॥

छन्द के प्रबन्ध को अनेकगति व्यन्जन हैं,

नैना बीच धस ज्ञान अंजन लगावहीं।

भरम रूप धुन्धकार कर ले तू मुकुल साफ,

आतम के परे-परआतम सिधावहीं॥

परमपुरुष सो तो अगम निगम परे,

अनुभव अमित निज धर्म को बढ़ावहीं।

कहत छत्रपति श्रीकृष्ण चंद्र प्राणनाथ,

निर्विकार काम क्रोध मोक्ष पद पावहीं॥ (छत्रसाल ग्रंथावली से)

अनुशीलन

महाराजा छत्रसाल का व्यक्तित्व-चित्रण के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वह इस युग के महानतम दिव्य पुरुषों में एक हैं। महासागर समुद्र के पावन चरित्र को हर व्यक्ति अपनी अंतरात्मा से श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। ऐसे पावन चरित्र को एकदम करने से उनमें परब्रह्म परमात्मा की अनुभूति होती है। निसंदेह, उनका परम पावन व्यक्तित्व उन्हें युगप्रवर्तक एवं प्रातः स्मरणीय युग पुरुषों की कोठी में स्थान रखता है।

श्री राज्य परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(3)

विभूति-खण्ड

महाराजा छत्रसाल जिन पुरुषों के संपर्क में आए अथवा जो पुरुष उनके संपर्क में आए तथा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जिन विभूतियों का उनके जीवन में प्रभाव पड़ा, ऐसी कुछ विभूतियों व जन सामान्य जनों का संक्षिप्त परिचय इस अनुभाग में प्रस्तुत किया जा रहा है।

श्री राज परमात्मने नमः

(3)

विभूति-खण्ड

प्रस्तावना

महाराजा छत्रसाल (वि.सं. 1706 कालजई के व्यक्तित्व के मूल्यांकन के पूर्व उनके समय की कुछ विभूतियों वजन सामान्य लोगों के संदर्भ में जानना अति आवश्यक है, बुन्देलखण्ड के राजघराने व स्वयं महाराजा छत्रसाल के राज्य परिवार का भी दिग्दर्शन करना अत्यावश्यक है।

तत्कालीन ऐतिहासिक व राजनैतिक परिवेश को महाराजा छत्रसाल ने कैसे जिया और प्रभावित किया, इन तथ्यों को भी उनके परिवेश में आए महानुभावों एवं परिस्थितियों के साथ मूल्यांकन किया जाना अति आवश्यक है। इसके अभाव में उनके महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जनमानस में सही तस्वीर के रूप में प्रस्तुत कर पाना, संभव नहीं।

श्री निजानन्द स्वामी

[1638-1712 वि.सं. (1581-1655 ई)]

महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के सद्गुरु। इनका आविर्भाव मारवाड़ देश के उमरकोट गांव में वि.सं. 1638 को अश्विनी शुक्ला चतुर्दशी बुधवार को हुआ था इनके बचपन का नाम देवचंद्र था। कुंवर बाई एवं मधु मेहता कायस्थ इनके माता-पिता थे बस। वह अवस्था में ही चुपचाप परम तत्व की खोज में भोजनगर आ गए थे, इसके बाद इनके माता-पिता भी उमरकोट छोड़कर इनके पास आकर रहने लगे थे। 25 वर्ष की अवस्था में यह अपने साथ माता-पिता को लेकर काठियावाड़ प्रांत की नगरी नवानगर में आकर बस गए थे इसे छोटीकाशी भी कहा जाता है वर्तमान समय में इस नगरी का नाम जामनगर है जो गुजरात प्रांत के अंतर्गत है। यही पर रह कर अपने अपने साधना के बल पर श्याम जी के मंदिर में साक्षात श्री कृष्ण परब्रह्म का दर्शन पाया था। कालांतर में वह निजानन्द स्वामी के लाए और परमात्मा की आज्ञा से ही उन्होंने एक धर्म पीठ की स्थापना यहां वि.सं. 1687 में की थी। इस धर्म पीठ की प्रसिद्धि आजकल श्री 5 नवतनपुरी धाम के नाम से है। इसी धर्मप्रीत से इन्होंने 25 वर्ष पर यंत्र श्री कृष्ण अक्षरातीत

परमात्मा की भक्ति का विश्वव्यापी प्रचार प्रसार किया था इनका अंतर्ध्यान वि.सं. 1712 में अनंत चतुर्दशी को हुआ था उनकी समाधि जामनगर में है। देश-विदेश से लाखों लोग श्री 5 नवतनपुरी धर्मप्रीत के दर्शनार्थ प्रतिवर्ष यहां आते जाते हैं।

श्री कृष्ण प्रणामी निजानन्द संप्रदाय के मतानुसार आप श्री राधा महारानी के अवतार हैं जिन्हें अखण्ड धाम में श्यामा महारानी के नाम से जाना जाता है जो परमात्मा की आनंद अंश स्वरूपा अर्धांगिनी सकती हैं। कलयुग में इन्हें बुद्ध अवतार माना गया है। संप्रदायिक मान्यता के अनुसार इन्हें नित्य श्री कृष्ण जी के दर्शन होते थे और वे अपने विशिष्ट भक्तों (ब्रह्म सृष्टि समुदाय को भी दर्शन कराते थे, जिनकी संख्या 313 तक हो गई थी। जनश्रुति है कि यह अपनी संपूर्ण शक्ति अपने प्रिय शिष्य नहीं राज ठाकुर की अंतरात्मा में समाहित कर ब्रह्मलीन हुए हैं श्री नीरज ठाकुर ने अपने सद्गुरु के जागने अभियान धर्म प्रचार को आगे बढ़ाते हुए पन्ना (मध्य प्रदेश पधारे थे तब वह गुरुगादी साथ में लाए थे जिसे उन्होंने पन्ना में गुम्मट बंगला जी के सामने दाहिनी और स्थापित की थी उगादि को महाराजा छत्रसाल ने भव्य रुप दिया था जो आज कल सद्गुरु श्री देव चंद्र जी मंदिर के रूप में जानी जाती है। श्री निजानन्द स्वामी की स्मृति में यही एकमात्र मंदिर है।

महाप्रभु-प्राणनाथ जी

[1675-1751 वि.सं. (1618-1694 ई०)]

महाराजा छत्रसाल के सद्गुरु और श्री कृष्ण प्रणामी श्री निजानन्द संप्रदाय के प्रवर्धक। इनका प्रादुर्भाव जामनगर (गुजरात में लववंशी है क्षत्रिय परिवार में वि.सं. 1675 की अश्विनी कृष्णा चतुर्दशी रविवार को प्रथम प्रहर में हुआ था आप के बचपन का नाम मिहिर राज ठाकुर था इनके पिता श्री श्याम राजा के प्रधानमंत्री थे जिनका नाम केशव राय ठाकुर था और मां का नाम धन भाई था अतैवइन्हें धन भाई नंदन व केशव नंदन के नाम से भी पुकारा जाता है। इनका लालन-पालन राज परिवार की तरह हुआ। बचपन में ही इनके अंदर ध्रुव प्रह्लाद की तरह भक्ति भावना का अंकुर था। 12 वर्ष की अवस्था में वे जामनगर के प्रतिष्ठित तब उपदेशक बुद्धा अवतार श्री निजानन्द स्वामी के सानिध्य में आ गए थे। वहां उन्हें खूब आत्मिक शांति मिली। प्रखर बुद्धि के कारण अल्प अवस्था में ही वेद शास्त्रों का मंथन कर वह प्रकांड ज्ञानी बन गए थे। श्री निजानन्द स्वामी जी की धर्म पिता एक गुरुकुल परंपरा की कड़ी थी। 25 वर्ष की अवस्था

---

1. श्री कृष्ण प्रणामी श्रीमन्निजानन्द संप्रदाय के वे मूल प्रवर्तक माने जाते हैं।
2. एते दिन त्रिलोक में, हुती जो बुद्ध सुपन।
   सो बुद्धजी बुद्ध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नवतन। (श्रीमुखवाणी-तारतमसागर)

मैं इन्हें गुरु आज्ञा से बसरा बगदाद (अरब जाना पड़ा, वहां 4 वर्ष रहकर गुरु ज्ञान का खूब प्रचार किया और अलौकिक कार्य को भी संपूर्ण किया।

इन्होंने श्री निजानन्द स्वामी जी से अंतिम दिनों जो उपदेश पाया था, उसी का संसार में जीवन भर प्रचार प्रसार किया। उनका उपदेश धर्म की संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर था, जिससे धर्म, राष्ट्र और विश्व को नूतन संदेश मिलता है। वि.सं. 1739 की माघ पूर्णिमा को, इसी उपदेश को सुनकर वीरसिंह बुन्देला छत्रसाल इनके चरणों में आकर बैठ गए थे और उनके उपदेशों पर चलकर ही महाराजा छत्रसाल ने हिंदू धर्म की स्थापना बुन्देलखण्ड में की थी।

सद्गुरु उपदेशों का विश्वव्यापी नाड करते हुए उन्होंने पश्चिमी भारत में अरब की यात्रा की थी, तदोपरांत वि.सं. 1729 में सूरत पधारे थे तब इन्होंने सूर्यनगरी सूरत में ताप्ती तीर पर श्री 5 महामंगल पुरी धाम धर्म सीट की स्थापना की थी, तभी इन्हें भक्त जन समुदाय ने प्राणनाथ कहकर पुकारा था। सूरत धर्मप्रीत में 17 माह निवास करके वह जब आगे बढ़े थे, तब भक्त समुदाय (सुंदर साथ-ब्रह्ममुनि जनों) के मुख से निकले थे निम्न शब्द---

मंगलपुरी महिमा बड़ी है, सबका गुरु द्वार।

चले जगावन साथ को, श्री प्राणनाथ भरतार॥

इन्होंने यहां से गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, मध्य और उत्तर प्रदेश का भ्रमण किया, वि.सं. 1735 में मैं दिल्ली, हरिद्वार पधारे थे, तत्पश्चात राजस्थान महाराष्ट्र का पुणे भ्रमण करते हुए वि.सं. 1739 में गढ़ा (जबलपुर के पास) आये। महामति प्राणनाथ जी का अंतिम प्रवास (1739 1751 वि.सं. पन्ना में रहा। वही इन्होंने अपने साथ आए पांच अनुयायियों को बसाया, जिन्हें धामी (अखण्ड परमधाम के वासी) कहा जाता है। इन्हीं लोगों को भेजकर महाराजा छत्रसाल ने देश-विदेश में अपने सदगुरु (पर ब्रह्म स्वरूप महाप्रभु प्राणनाथ जी) के उपदेशों को फैलाया था।

महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी, परमधाम बिहारी अनादि अक्षरा 30 श्री कृष्ण जी के स्वरूप हैं, इन्हें कलयुग में जिया अभिनंदन बुद्ध- निष्कलंक स्वरूप कल्कि अवतार माना गया है, ऐसी मान्यता है। इनके द्वारा अवतरित दिव्य वाणी को श्री मुख वाणी श्री तारतम सागर वेदों से पुकारा जाता है। इतिहास साहित्यकारों ने इसे श्री तारतम वाणी स्वरूप स्वरूप साहेब आदि नामों से भी अभिहित किया है। विश्व का यह एकमात्र अनूठा ग्रंथ है, जिसमें लगभग एक आदर्श भाषाओं का मूल रूप से

समावेश है। इस दिव्य वाणी के माध्यम से वह आज भी समूचे विश्व को धर्म जागने की शिक्षा दे रहे हैं। यह दिव्य ग्रंथ

---

1. राजा ने मारो रे रानी, रायत अनुपमा धर्म जाता रे कोई दौड़ो (चिरंतन पृष्ठ 58)

श्री 5 पद्मावती पुरी धाम (पन्ना) में श्रीगुम्मट जी में सिहासंन् नर्सिंग इन हैं। यहीं पर महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी ने वि.सं. 1751 में श्रावण कृष्ण पंचमी को अखण्ड ब्रह्म में लीन होकर जीवित समाधि ली है। इनका जीवन वृत्त समकालीन ग्रंथों में मिलता है।

महाराजा चम्पतराय

(वि.सं. 1644-1721)

महाराजा छत्रसाल के पिता। ओरछा दादी के प्रथम महाराजा श्री रूद्र प्रताप के पुत्र उदया जीत के पुत्र के बेटे थे, महाराजा चम्पतराय। इनका जन्म वि.सं. 1644 में महेवा के पास मोटी गांव में हुआ था। महेवा जैकेट लूना ओरछा राज्य की जागीर है। यहीं पर रूद्र प्रताप महाराजा के तीसरे बेटे उद्या जीत के वंशीधर राज्य करते थे। उदया जीत के पौत्र भगवंत राय की रानी मान कुंवरि से चार पुत्र पैदा हुए--- चम्पतराय, राय, चंद और सुजान राय। इन चारों पुत्रों को क्रमशः, माही अनु नहा, अनुवाद बैठकें मिली थी।

महाराजा चम्पतराय के चार रानियां थी--- भगवंत कुंवरि, हीरा, लाल कुंवरि (सारंधा और जलकल कुंवरि। इन रानियों से उत्पन्न हुए सात पुत्रों में से 2 पुत्र शिशु अवस्था में तथा एक (सर वाहन किशोरावस्था में स्वर्गवासी हो गए थे। अंगद राय, रतन शाह, छत्रसाल और गोपाल राय ही 4 पुत्र बचे थे।

चम्पतराय ने बुन्देलखण्ड की एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए निजी महत्वाकांक्षा को कभी स्थान नहीं दिया था। इन्होंने ओरछा राज्य के संक्रमण काल में वि.सं. 1694- 1698 तक राज्य गादी संभाली, तत्पश्चात निर्वासित जीवन बिताया। इन्होंने अपने जीवन काल में ओरछा की गाड़ी पर 5 राजा बैठे और उनकी सेवा की। ओरछा नरेश पहाड़सिंह (शासंन्: सत्रह सौ- 17 विक्रम द्वारा विश्वासघात करने पर वे ओरछा छोड़कर अपनी बैठक महेवा चले गए थे। मुग़ल शासक शाहजहां के समय में इन्होंने बुन्देलखण्ड के मंदिरों और धार्मिक स्थलों की रक्षा की। वि.सं. 1713 में शामगढ़ में धारा को पराजित कर दिल्ली का ताज औरंगज़ेब के सिर पर रखा। औरंगज़ेब की बढ़ती आशा एवं विश्वास घात ने इन्हें उन्हें विद्रोही बनने पर मजबूर कर दिया था ग्राम

1. महाप्रभु जी प्राणनाथ जी के जीवित होने के अनेकों प्रमाण कई वर्षों तक मिलते रहे।
2. स्वामी लाल दास जी की भी तक में निष्कलंक बुध महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी का संपूर्ण जीवन चरित्र प्रमाणिक रूप में उपलब्ध है। स्वामी लालदास जी इनके शिष्य थे और 22 वर्ष साथ में रहे थे, इनकी लिखित वित्त ग्रंथ को समकालीन डायरी के रूप में माना जाता है।
3. उदयाजीत (महाराजा रुद्र प्रताप के तीसरे पुत्र) जन्म 1775- मृत्यु 1732 वि.सं.:
   प्रेम शाह (पुत्र उदयाजीत) जन्म वि.सं. 1599 मृत्यु 1661

   भगवंतराय (पुत्र प्रेमशाह) जन्म वि.सं. 1625- मृत्यु-1685 वि.सं.:

   चंपतराय (पुत्र भगवंतराय) जन्म वि.सं. 1644-मृत्यु 1718 वि.सं.

वि.सं. 1718 में इन्होंने औरंगज़ेब से युद्ध लड़ा था। वि.सं. 1718 में ही घर के दीपक ने उन्हें जला दिया, ओरछा नरेश पालसिंह और रानी हीरा देवी ने मुग़ल सर यंत्र के तहत उन्हें मरवा डाला। कार्तिक शुक्ल एकादशी वि.सं. 1718 की गोधूलि बेला ने छत्रसाल को अनाथ बना दिया। माता पिता का साया उनके सर से छिन गया। चम्पतराय और रानी सारंधा की चिंताओं की ज्वाला भले ही शांत हो गई थी, परंतु अबोध और अनाथ छत्रसाल के अंतः करण में यह वाला जीवन भर रही, जिसकी प्रज्वलित लपटों ने विशाल मुग़ल सल्तनत को वशीभूत कर डाला।

रानी लाड़कुंवरि

महाराजा छत्रसाल की ममतामई मां। उनके अंतः करण में रामायण भागवत और महाभारत की शौर्य गाथाएं सुनाकर बाल हृदय में भविष्य के सुनहरे बीज बोए थे पुलिस टो

रानी लाड़कुंवरि (जिन्हें लालकुंवरि और सारन्धा नाम से भी जाना जाता है) का बचपन वीर बालक को जैसा था। इन्होंने किशोरावस्था पर आते-आते अस्त्र शस्त्र चलाने में निपुणता वाली थी, घुड़सवारी उनका प्रिय शौक था एक दिन उनके भाई अनिरुद्धसिंह तेरे दर युद्ध से भाग आए थे तभी नन्ही सारंधा ने अपने भाई को कटु वचन बोलकर सक्रियता का पाठ पढ़ाया था जिसे सुनकर उनकी भाभी शीतला ने सारंधा के साथ विवाद किया था। यही बात विवाद इन्हें जीवन भर प्रेरणा देता रहा। वीर चम्पतराय से विवाह होने पर उनका जीवन रणभूमि तक जा पहुंचा था वह निरंतर अपने पति का साथ देने लगी थी और।

इन्हीं की कोख से वि.सं. 1706 को युगपुरुष युगप्रवर्तक कुमार छत्रसाल का जन्म हुआ था। रानी और लालपरी अपने लाडले का लालन-पालन राज महलों में ना कर सकी थी विद्रोही जीवनकाल इसमें आड़े आता था।

इनका समग्र जीवन वीरों के समान व्यतीत हुआ था। इन्होंने अपने पति चम्पतराय को कभी हतोत्साहित नहीं होने दिया वस्तुतः वीरता में चम्पत दंपत्ति एक सिक्के के दो पहलू थे। इन दोनों की देशभक्ति का प्रभाव नन्हे छत्रसाल पर भी पड़ा था रानी

---

1. (महाराजा छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम, जो विद्रोह की प्रेरणा और पृष्ठभूमि से संबंधित है) ....आपर हमारे कक्का जू (पिता चंपतराय) सै बा औरंगज़ेब बादशाह सै बड़ो युद्ध भयो, हिन्दू धरम के नष्ट करवे की मनसा बागसाह की हती,.....बीच में कहूँ एक ठाम में लड़ाई भई, कक्का जू की हार भई, बादशाह की खुशी हती की चंपतराय को पकड़ लइए, बहुत उपाव करो, रही ना पकर पाए, बउवा जू साहिबा (मां) संग में हतीं सो...या लड़ाइ संवत् सतरा सौ अठारा की साल मैं भई, हम ऊ बखत ममा के घर में हते। (आषाढ़ सुदी संवत् 1787 मु. मऊ)

2. कुमार छत्रसाल की आयु इससे समय साढे 12 साल की थी।

लाड़कुंवरि ने अपने पुत्र छत्रसाल में वही बीज अंकुरित किए हो मां जिसे वे अंतः करण में संजय हुई थी।

वह दैलवाड़ा के फतेहसिंह अंधेरे की बेटी थी। कुछ बड़े होने पर छत्रसाल को इन्होंने नहीं रख छोड़ा था, तभी वि.सं. 1718 की कार्तिक शुक्ल एकादशी की गोधूलि बेला आ गई अपनों ने ही विश्वासघात कर दिया था। वीरांगना रानी लाल परी ने शत्रु के हाथों पढ़ने से मृत्यु सुरेश कर है--- ऐसा सोचकर, अपनी कटार पेट में भूख ली। वह पति के चरणों में लुट गई। जोर से पीड़ित चम्पतराय ने यह देखकर अपनी कमर से कटार जोश में खींच ली और ताकत भरकर अपने कलेजे में दे मारी। रानी लाल परी और चम्पतराय सदैव के लिए चिर निद्रा में धरती मां की गोद में सो गए।

कुमार छत्रसाल अनाथ हो गए उनकी अवस्था इस समय साढे 12 वर्ष की थी। माला कुंवरि, उनसे सदा के लिए चल बसी थी।

धन्य है मातृभूमि के लिए वीरगति को पाने वाली रानी लाल परी और महाराजा चम्पतराय

(सारवाहन (वि.सं. 1683-1697)

सारवाहन चम्पतराय की रानी भगवन्तकुंवरि के पुत्र थे बस। इनका जन्म वि.सं. 1683 में हुआ था। इनकी ननिहाल तरबेना के बलवंतसिंह परमार के यहां थी। बचपन में ही इनके अंदर एक वीर के गुण परिलक्षित होते थे। इन्होंने कई युद्धों में पिता चम्पतराय को बहुत सहयोग दिया था। मुग़ल सैनिकों को इनकी वीरता की कहानी सताने लगी थी। इन्हें बुन्देलखण्ड का अभिमन्यु कहां जाने लगा था उन विराम अल्पायु में ही वह सुर वीरों के दांत खट्टे करने लगे थे।

वि.सं. 1697 में इनका वध एक मुग़ल सिपहसालार ने कर दिया था, जब वह बालकों के साथ युद्ध खेल रहे थे। अभिमन्यु की भांति वे निहत्थे थे और पिता चम्पतराय भी घर पर ना थे। बुन्देलखण्ड का यह फूल खिलने के पहले ही काल का अंत हो गया।

रानी सारंधा चार वाहन की वीरता की बातें कुमार छत्रसाल को बचपन में सुनाया करती थी। चम्पतराय के जीवन में चार वाहन की कमी की पूर्ति उस समय नन्हे छत्रसाल के रूप में हुई थी, जब सारा वाहन की वीरगति के 20 वर्ष बाद 10 वर्षीय कुमार छत्रसाल ने एक मुग़ल सिपहसालार को मौत के घाट उतार दिया था।

---

1. अनाथ छतरसाल को उत्तराधिकार के रूप में घर द्वार उमा घड़ी जागीर कुछ भी ना प्राप्त हो सकी: जो कुछ शेष रहा वह था-- माता-पिता का वियोग, कुल का विरोध, माता-पिता का व्यास, लोकमानस की शुभकामना और सांत्वना।

महाराजा हिरदैशाह (हृदयशाह)

(वि.सं. 1737-1796)

महाराजा छत्रसाल के युवराज पुत्र। महाराजा छत्रसाल की बड़ी रानी देव को मरी   (जो कि पवार कुल की सुकन्या थी कि उधर से इनका जन्म भादो मास में वि.सं. 1737 को किलकिला सरिता के तट पर स्थित चोपड़ा महल में हुआ था। इन के जन्मोत्सव में महाराजा छत्रसाल ने सोलह लाख रुपए खर्च किए थे। रानी देवकुंवरि थोड़े वर्षों के उपरांत ही परलोक सिधार गई थी। तब महाराज ने उन्हें निर्देशक को बड़े प्यार से पाला था। इनकी शिक्षा दीक्षा का उत्तम प्रबंध महाराजा छत्रसाल ने किया था और रण कौशल की शिक्षा स्वयं छत्रसाल जी ने दी थी। इसी का परिणाम था कि वह अपने पिता छत्रसाल के समान वीर थे। इनकी वीरता पर मुग्ध होकर महाराजा छत्रसाल ने निम्न संघ के माध्यम से उनकी वीरता का बखां किया है:--

जौ लौ रहिब तुरकांदल पंचम, तौलों रहिब हिंदुबान उधारौ।

निर्जीव हते फिर जीव उठे, अरु देखत ही छत्ता दल भारौ॥

देश-प्रदेशह डंक परी, हिरदेश जियै जौ लो ध्रुव तारौ।

एकन सौ नदीयां न बंधे, मोरो आयो समुद्र को बांधन हारौ।

महाराजा छत्रसाल ने राजनीतिक उद्देश्य एवं भविष्य की चिंता से प्रेरित होकर बखत बहरा हेतु 9 करोड़ की राशि (गुप्त) इनके ही नाम वसीयत की थी। महाराजा छत्रसाल को किसी अन्य पर इतना भरोसा वह विश्वास नहीं था जितना कि हृदयशाह की योग्यता पर।

युवराज कुं. हिरदैशाह मछली रानी के पुत्र कुंवर जगतराज से 56 माह छोटे थे, फिर बीजेपी रानी के जेटे पुत्र होने के कारण कुंवर जगतराज के स्थान पर युवराज का पद हृदयशाह को मिला था और पन्ना की राजगद्दी के उत्तराधिकारी घोषित किए गए थे। इसी कारण से एक बार मछली रानी (को और जगतराज की मां के कहने से को हृदय से पढ़ना छोड़ कर चले गए थे और अपने बाहुबल से रीवा का राज्य जीतकर वहीं रहने लगे थे, तब महाराजा छत्रसाल के कहने पर इन्होंने रीवा राज्य वापस कर दिया और वहां एक स्मारक (विजय स्तंभ बुन्देली दरवाजा बनवा कर वापस आ गए थे।

कहा जाता है कि इनकी सेना में 3000 योद्धा एक समान बल पराक्रम एवं

---

1. सत्ता की समुद्र तथा तेज दिनेश शर्मा के प्रगट प्रदेश (कवि
2. छत्रसाल की मछली रानी ने इसी कारण से गृह कलह की स्थिति बना दी थी। छत्रसाल महाराज ने तो थी रानी के मरते समय दिए गए वचन की पूर्ति की थी।

समान ऊंचाई के थे, जो हनुमान सदस्य बल पराक्रम वाले थे। इन्हें स्वयं भोजन कराने के उपरांत ही वे भोजन करते थे। उनकी सेना में अनुशासंन् एवं देश प्रेम की विशेष भावना बसी हुई थी। महाराज हृदयशाह के संबंध में निम्न लोकोक्तियां प्रचलित हैं:--

जो खावै सो ताह को, बचे सो हिरदैसाह को।

गढ़ी कोट पल छन में टोरत, जो नृप करें विरोधा।

तीन सहस हिरदेशा के, हनुमान से जोधा॥

इन्होंने अपने पिता (महाराजा छत्रसाल के वन गमन के उपरांत यह केवल 6 वर्ष (वि.सं. 1788-1794) तक पन्ना गद्दी पर रहेगा तत्पश्चात अपने सुयोग्य पुत्र महाराजा सभासिंह को गाली पर बैठाया और स्वयं स्थित राजी होकर श्री राजभजन में लीन हो गए।

इन्होंने सद्गुरु महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के उपदेशों पर चलते हुए महाराजा छत्रसाल के समय में ही कर दे प्रकाश (कर दे प्रकाश नामक एक अध्यात्म ग्रंथ की रचना की थी, यह ग्रंथ परम तत्व खोजी साधकों के लिए परम कल्याणकारी उपयोगी है। इनकी परम धाम गमन अतिथि माघ शुक्ला नोबी वि.सं. 1796 है।

इनके राज दरबार में अनेक कवि थे, जिससे पता चलता है कि वह कविता प्रेमी थे। अनेकों दरबारी कवियों एवं परवर्ती कवियों ने भारत वसुंधरा के इस हृदय सम्राट महाराज हृदयशाह की प्रशंसा में अनेक ग्रंथों की रचनाएं की हैं। कुछ कवि गणों की रचनाओं के निम्न प्रकार हैं---

महाकवि भूषण के वचन:--

चीतन के झुंडन पे, नजर गजेन्द्र राखे, नजर गजेंन्द्रिय पैसिंह मृगराज की।

सिंहन पे नजर, एक राखत है बाज अरू, बाज पे नजर गरुड़ पच्छराज की।

नदियन पे नजर सदा राखत समुन्द्र समुन्द्र पे नजर अगस्त ऋषिराज की।

राजन पे नजर ज्यों राखत है बादशाह, बादशाहन पे नजर हिरदेश महाराज की॥

कवि हरिकेश के उद्‌गार:---

भूपति हिसदेस यों बोलयौ यह बचन, वेश पेलि रणवेश लोह लंगर लचावेंगे।

जाहिर बुन्देल वंश युद्‌ध अवतंस वीर, मीरन को मारि आज शान कौ सचावेंगे।

हार दैतो हर को आहार दैहो गिद्‌धन, बहार दैहो योधन को जोगिनी नचावेंगे।

कहे-हरिकेश आज रार असराड झारि, सारन सों सार महामार को मचावेंगे॥

कवि हरिवंश:--

संवत् 1788 में इस कवि ने गीतगोविंद में निम्न प्रकार लिखा है। समकालीन कवि कृत यह रचना एक धरोहर है:---

भानुवंश भूषण भये भू पालक हिरदेश।

गहिवार बुन्देल मनिचन्द प्रकास दिनेस॥

रणिजा से दाखिन दिशा सोम सुता लो जाइ।

कियो राजमंडल इतौ भुव जल दियो दबाइ॥

माच्यौ जस जाको दिसन सात सिंधु जब गाहि।

मौज फौज के सुख दुखहि जलत जाचक साहि।

.....

काठन में कामतरू पशुन में कामधेनु; चिंतामणि पाहन में पाह मानियत है।

पतन में वृजपति कथन में हरिवंश जैसे, तीरथ में तीरथ प्रयाग मानियत हैं।

भनत हरिवंश अवतारिन में राम जा के, तीन लोक यश के वितान तानियत हैं।

बलि दानन में महेश देव तन में, नरेशन में योद्धा हिरदेश तानियत है।

लाल कवि:---

लाल कवि ने ऐतिहासिक महाकाव्य छत्रप्रकाश में हृदयशाह के प्रति निम्न उद्गार व्यक्त किए हैं:---

खेत परना को खिज्यौ छत्र सुत हिरदेसाह। आए दल उमड़ि अफगान जोम मन से।

धुन्ध दे नगाड़े बजे, धुन्ध दे निसान सजे। धुन्ध दे सुभट साजे, अकड़ दलन से।

लाल कवि कहे मार माची शेर अफगन तें। कटै वीर सात सो पठान पै जयन से।

मुख से हांके चलें, हांतन से हथियार चले। प्राण चले तन से पांव टरे रन से।

कवि लच्छीराम के उद्गार-:

मृगन में केहरी, खगन में गरुड़ जैसे। नगन में मेरुनग कहयो आगमन में।

भनत लच्छीराम द्वजन में परसराम। रूपन में काम वेदन गमन में।

नामन में राम नाम, धामन में सध्रुव धाम। बामन में गौरी, बेग मारुति पवन में।

सक्तिन में महासक्ति, भक्तिन में परा भक्ति। छत्र नृप नरेंद्र हिरदेसाह वीरगन में॥

अन्य कवि:-

॥ बंगस युद्ध॥

मुहम्मद खां हिरदेसाह से मिलाप होत, हिल्यौ दलसागर ज्यों रण के रसौदा में।

लाल मुख वीर रूप दरसौ दिमान इतै, हुमसा हुमस मची मन के मसौदा में।

शागै उलछारें ऐकें ढालें हतु वासे हत, झारत पलीता ऐकें गांवें देत रौदा में।

हुंक देकें हाथी सों हूंमक ऐसो, दाव के नवाब के हृदेश बैठो हौदा में॥

कुंवर हृदय स्वयं कवि भी थे उनकी रचनाओं से महाराजा छत्रसाल जूदेव के सद्गुरु श्री प्राणनाथ जी पर अपार श्रद्धा झलकती है। अतैववह कुंवर विजय शाह ने अपने परिचय

मैं इस तथ्य का चौथे प्रमुखता के साथ उल्लेख किया है जिससे महामति प्राणनाथ जी एवं महाराजा छत्रसाल का ऐतिहासिक सानिध्य की पुष्टि होती है, अल्पज्ञ इतिहासकारों को अपनी भूल पर पश्चाताप कर लेना चाहिए।

श्री प्राणनाथ सनाथ किये, छत्रसाल सुत जान।

हिरदै हिरदै साहि के, दीन्ही भक्ति निदान॥

----¼ (हृदयप्रकाश)

महाराज कुंवर जगतराज

महाराजा छत्रसाल की मछली रानी के जेष्ठ पुत्र। इनका जन्म वि.सं. 1737 (1680 ईस्वी में हुआ था। इनके जन्मोत्सव में महाराजा छत्रसाल ने 78 लाख रुपए खर्च किए थे। पराक्रम में वह बड़े बड़े वीरों को भी माफ कर देते थे सारे जगत में राज करेगा ऐसी धारणा बना कर उनका नाम जगतराज पड़ा था। निसंदेह महाबल शाली थे, महाराज की उन पर अपार कृपा दृष्टि थी। महाराजा छत्रसाल उमा कुंवर जगतराज एवं वर्षा के बल पर सदैव गर्व करते रहे। इंजॉय पुत्रों ने अपने पिता महाराजा छत्रसाल को कभी निराश ना होने दिया। महाराजा छत्रसाल की ताकत के दो दलों के रूप में यह दोनों उभरे थे।

कुं. जगतराज के प्रति महाराजा छत्रसाल के निम्न वचन उनके प्रति असीम प्रेम को प्रदर्शित कर रहे हैं---

बारे ते पालो हतो, फीहन दूध पिलाय।

जगत अकेले लड़त हैं, जा दुःख सहो न जाय॥

(लोकोक्ति)

महाराजा छत्रसाल ने जगतराज को जो शिक्षा पत्रों के माध्यम से दी है, वह इतिहास के महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। युवराज परदेशा से वह जीते थे परंतु मछली रानी के पुत्र होने के कारण युवराज पद से वंचित हो गए थे और इसी कारण वह महाराजा छत्रसाल से कुछ खिन्न थे ओमा और पास में न रहकर पत्रों से शिक्षा पाई थी। कुछ भी हो, इन पत्रों ने बुन्देलखण्ड के इतिहास पर अमिट छाप डाली है, इसके अभाव में इस भूभाग

1. हिरदेशाह आवत, दीदार करत हक। आरती आनंद शो करें, है इन्हें पहचान बुजुर्ग

(स्वामी लाल- दासबीतक)

2. (छत्रसाल का पत्र: जगतराज के नाम)

अपार जब तू मारो (जगतराज) जन्म भयो है तो तब सात आठ लाख रुपया खर्च भयो है तो और यही तारा विदेशा को जन्म भयो तब 15 16 लाख रुपया खर्च मजे हो रहे हैं तुमने वन से दो-तीन महीना की बुराई जताई है, वरना टी राजा सभासिंह को जन्म भयो तब 25 लाख रुपया खर्च भाई यह तो...

(फागुन सदी 15 संवत् 1778 मुकाम मऊ)

का काफी इतिहास अतीत के गर्भ में समा जाता। इन पत्रों में राजनीति और युद्ध की विशेष शिक्षा है।

महाराज कुमार जगतराज ने बुन्देलखण्ड के बाहर भी अनेकों युद्धों में शानदार विजय हासिल की थी। दिल्ली पटना क्षेत्र उनकी उपलब्धि के दायरे में है। जगतराज: दिग्विजय नामक पुस्तक में उनकी वजह से गाथाएं लिखी हुई हैं।

महाराजा छत्रसाल ने एक तिहाई राज्य पृथक करके कुंवर जगतराज को सौंपा था, इस राज्य की राजधानी जैतपुर थी, जैतपुर नगर इनकी वीरांगना रानी के नाम बताया गया है। **राव पद्मसिंह**

महाराजा छत्रसाल के सबसे छोटे पुत्र। राव पदमसिंह का जन्म महाराज की परिहार इन रानी की कोख से हुआ था। महाराजा छत्रसाल ने इन्हें युद्ध कला का अच्छा प्रशिक्षण दिया था उन्होंने बुन्देलखण्ड के बाहर भी कई युद्धों में विजय प्राप्त की है जिससे महाराजा छत्रसाल जी को इन पर खूब भरोसा था। राजनीतिक एवं सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण जिगनी की जागीर इन्हें देकर महाराजा छत्रसाल उत्तर भारत की तरफ से निश्चिंत हो गए थे।

दीमान भारतीचंद्र

महाराजा छत्रसाल के पुत्र। धीमान भारती चंद्र का जन्म महाराजा छत्रसाल की बघेली रानी के गर्भ से हुआ था यह राव पदमसिंह से छोटे थे, परंतु अन्य सभी बघेली रानी के राजकुमारों से बड़े थे। महाराज का इन पर बड़ा प्यार था, इनकी योग्यता पर उन्हें गर्व था अतैवइन्हें धीमान का पद देकर बसों की दो लाख की जागीर प्रदान की थी।

महाराजा सभासिंह

(शासनकाल: वि.सं. 1794-1809)

महाराजा छत्रसाल के पुत्र एवं युवराज को वर्षा के पुत्र। पुत्र जन्मोत्सव में महाराज ने 25 लाख रुपया खर्च किया था। सभापति योग्य एवं वीर थे। सभा के मध्य में वह अत्यंत सुशोभित होते थे जिस प्रकार से देव गणों के बीच स्वर्ग में राजा इंद्र। इसीलिए इनका नाम कुंवर सभासिंह पड़ा था। वि.सं. 1794 में पिता हृदयशाह

---

1. पटना के आस पास बहुत से बुंदेले बस गए थे, जो अपने साथ बुन्देलखण्ड की संस्कृति (संगीत परिपाटी भी ले गए थे। हृदयशाह कवि कृत जगतराज दिग्विजय के अतिरिक्त प्रजा छात्र एवं भरत जी व्यास का संगीत- संग भी इस तथ्य की पुष्टि करता है।

के वीतरागी होने पर वह पन्ना के महाराजा पद पर सुशोभित हुए थे। यह प्रजा पालन एवं सुरक्षा व्यवस्था को विशेष प्राथमिकता देते रहे।

बलदीवान

महाराजा छत्रसाल के चाचा जात भाई। इन्होंने छत्रसाल के संजोए अभियानों में सक्रियता से सहयोग दिया था। अंधेरा पर प्रथम आक्रमण के समय इन्होंने कुमार छत्रसाल का वि.सं. 1728 में साथ दिया था। कहा जाता है कि प्रारंभिक संगठन काल में जब छत्रसाल दतिया पहुंचे थे और शुभकरण से भेंट की थी, परंतु वह इस अभियान हेतु तैयार नहीं हुआ था तब छत्रसाल जी अपने चचेरे भाई बलदाऊ (बल दीवान के पास गए थे, तो वे तुरंत तैयार हो गए थे और कुमार छत्रसाल को प्रोत्साहित भी किया था। महाराजा छत्रसाल ने योग्य समझकर इन्हें अपना दीवान बनाकर पन्ना राजधानी में रखा था। पन्ना में दीवान होने के कारण इनका नामवर दीवान पड़ा था।

देवकरन

महाराजा छत्रसाल के भतीजे एवं उनके अग्रज अंगद राय के पुत्र। इनके ही प्रयास से महाराजा छत्रसाल की महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के दर्शन वि.सं. 1739 में हुए थे। देवकरण को महाराजा छत्रसाल को कक्काजू कहकर पुकारते थे। इन्होंने वि.सं. 1739 में महाप्रभु प्राणनाथ जी से गड़ा (जबलपुर के नाम की एक रियासत में दीक्षा ली थी। इन्हें महाराजा छत्रसाल ने अपना सचिव बनाकर राज्य प्रशासंन् का बड़ा काम सौंपा था।

जेठे भैया श्री अंगद के, श्री देवकरन जी पूत भले।

राजा के प्रमुख सचिव बनकर, हरदम रहते थे गले लगे॥

(वीर भक्त चम्पत छत्रसाल, पृष्ठ 154)

महारानी देवकुंवरी

महाराजा छत्रसाल की महारानी। चम्पतराय ने देवरी से छत्रसाल का संबंध पक्का कर लिया था परंतु उनके वीरगति होने जाने से छत्रसाल का विवाह उनके सामने न हो सका था। यह विवाह वि.सं. 1722 में हुआ था। देव कुंवरि पवार कुल की सुकन्या थी

---

1. बलवान, चम्पतराय के पिता श्री भगवंत राय के भाई कुंवर सेन सिमरा वालों के पुत्र थे और जाम शाह बीहट वालों के परिवार (घर के थे अतैवधीमान, महाराजा छत्रसाल के काका (चाचा जाट भाई थे।
2. वैशाख शुक्ल तृतीया को मास 1722;
3. यह महाराज की रानी थी।

महारानी देव कुंवरि रणभूमि में भी जाती थी और वह हमेशा वीरगति पाए साथ ससुर के अरमानों को साकार करने के लिए छत्रसाल को उत्साहित करती रहती, वह कहती थी कि मैं एक क्षत्राणी हूं अबला बनकर जीना मुझे स्वीकार नहीं है ओ मां मैं तो सपना बनकर शेरनी की भांति ही जीवन जिऊंगी।

तब देवकुंवरि अर्द्धांगिनी वा, छत्रसाल शक्ति परिपूर्ण बने।

यम को भी रण में नहिं गिनते, अरि आएं चाहे घने जने॥

अरि आगे छत्रसाल लड़ते, पीछे से महिला सेना ले।

आती थी देवकुंवरि रानी, अरि काट पीट कर लेना ले॥

(वीर भक्त चम्पत छत्रसाल, पृ. 147)

रानी देवी कुंवरि पतिव्रता नारी थी, वह पति भक्ति एवं देश सेवा में रत महान वीरांगना भी थी। मऊ में सद्गुरु श्री प्राणनाथ प्रभु को पाकर वह बिल्कुल निर्भय हो गई थी और स्टॉक वि.सं. 1737 में जाए को हृदय से जब शिशु अवस्था में थे तभी विधि की विडंबना से वह लगभग 30 वर्ष की आयु में संसार से चली गई थी।

छत्रप्रकाश में इस वीरांगना देवरी के विवाह का वर्णन लाल कवि ने बड़े मार्मिक ढंग से किया है। किया यथा---

त्यों ही लगन ब्याह की आई, पहिलहि तै है रही सगाई।

जे पवार कुलवार कुरी के, लै अवतार रूकमिनी आई।

कुल पवित्र भूषित भव ऐसे, दीपक दीप सिखा तें जैसे।

दूलह छत्रसाल तिन पाए, करि विवाह कीनै मनभाए।

रूप सील पतिव्रत सरसानी, भई भूप की जैठी रानी।

(पृष्ठ 77)

मझली रानी

महाराजा छत्रसाल की छोटी पटरानी, जो मछली रानी के नाम से विख्यात थी। इन्हें बहू के नाम से भी ख्याति मिली थी (मां के लिए यह एक अति सम्मान सूचक शब्द यहां माना जाता है मछली रानी को राज परिवार में दानकुंवरि के नाम से जाना दानकुंवरि

---

1. रानी देवकुंवर थी मऊ में शनि महाराज मुख मएह
ब्राह्मणों में भेस बदल के दर्शन किए इन्हें 30 (बी तक: प्रकरण चार्ट

2. श्री प्राणनाथ स्नातकीय छत्रसाल सुजान
हृदय हृदयशाह के दिन ही भक्ति निदान 1 (महाराज हृदयशाह रचित हृदय प्रकाश से)

जाता है। सुशीला भी इनका नाम पड़ा था, सुशील गुणों की वह खां थी। यह सहारा वाले बंदरों की पुत्री थी, इन्हीं की कोख से वि.सं. 1737 के फाल्गुन मास में महापुरा कर्मी कुंवर जगतराज का जन्म हुआ था। वह ज्ञान वैराग्य से परिपूर्ण थी। जब महाप्रभु प्राणनाथ जी वि.सं. 1739 के अंत में चोपड़ा महल में पधारे थे, सभी इन्होंने अपनी साड़ी का भी पावड़ा बनाकर उनका स्वागत किया क्योंकि पावडे के रूप में महाराजा छत्रसाल की पकड़ी छोटी पड़ गई थी इन्होंने बाईजू राज महारानी का उस समय श्रृंगार किया था जब वह चोपड़ा में प्रभु के संग पधारी थी मछली रानी के ऊपर श्यामा स्वरूपा स्वाभिमानी भाई युवराज महारानी का वरद हस्त था उन्होंने धर्म प्रचार में काफी सहयोग दिया था। दिगंबरी केशरबाई को नूतन वस्त्र पहनाकर उनको कुमार की राह बताई थी।

वीरांगना जैतकुंवरि

महाराजा छत्रसाल की पुत्रवधू और और जगतराज की धर्मपत्नी। रानी लाड़कुंवरि में अपार साहस एवं पराक्रम था। वह अपने पति को हर जगतराज के साथ युद्ध के मैदानों में भी जाती थी। वि.सं.

1783 की बात है जब मुहम्मद खां बंगश से जगतराज का युद्ध हो रहा था और उस टॉप 1 दिन दुर्भाग्य से कुंवर जगतराज की सैन्य टुकड़ी के हाथ धोकर में आ गए उन्हें बंदी बना लिया गया जब यह पता उनकी वीरांगना पत्नी को लगा तो वह उसी क्षण एक छोटी बड़ी लेकर अदम्य साहस के साथ चल पड़ी। ऐसे मौके पर उनके उन शब्दों से सैन्य टुकड़ी में असीमित जोश भर आया था। वीरांगना ने कहा था--- क्या हम अपनी वीरांगना दादी मां और बुन्देलकेशरी पिता में है चम्पतराय के साहसी कार्यों को भूल गए हैं? इस समय कक्काजू (महाराजा छत्रसाल यहां नहीं है, तो उनका वर्धक हम सब पर नहीं है क्या? उनका कथन है कि जब तक मेरे वंशज सद्गुरु प्राणनाथ महाप्रभु पर श्रद्धा भाव रखेंगे, तब तक दुनिया की कोई विधर्मी ताकत हम सबका बाल बांका नहीं कर सकती। वीरांगना के ऐसे जोश भरे शब्द क्षण प्रशिक्षण सैन्य टुकड़ी में नवीन शक्ति का संचार कर उठे। रानी ने पलक झपकते ही रणनीति के अनुरूप बंगश सेना के शिविर में खलबली मचा दी और अपने घायल पति को शत्रु शिविर से सकुशल उठा लाई थी।

इस विरोध इस कार्य पर प्रसन्न होकर महाराजा छत्रसाल ने अपनी इस पुत्रवधू को

ऑफलाइन

1. भीतर जाते द्वार से रानी मछली ने आए
2. क्यों पकड़ो साड़ी को अति प्रेम दिल में तू आए 52 पृष्ठ से आठवीं तक
   और मजे लिए अपने भूषण श्री भाई जी को पहनाए 74 पृ. 60 वीतक

वीरांगना की उपाधि देते हुए दो पर अग्नि भेंट किए थे। वीरांगना जातक ओवरी इतिहास में अमर हो गई थी।

महाराजा सुजानसिंह

ओरछा नरेश पहाड़सिंह की मृत्यु के बाद और अच्छा गाड़ी पर महाराजा के रूप में सुजानसिंह आसीन हुए थे। वि.सं. 1720-1729 तक इन्होंने ओरछा का राज्य भोगा। चम्पतराय एवं रानी सारंधा के मौत के बाद हकीकत खोलने पर इन्हें बहुत कष्ट हुआ था। इन्होंने कुमार छत्रसाल को (विद्रोह काल में इसमें से सुभाषित देकर उत्साहित किया था। इसी प्रसंग में इतिहासकारों ने निम्न प्रकार से भी लिखा है--- छत्रसाल के नेतृत्व में उभरने वाले इस विद्रोह के मूल में पिता चम्पतराय और माता लाल को वरी (सारंधा के बलिदान की कमी ना बुझने वाली प्रेरणा का अनीता, शिवाजी की मंत्रणा और आशीर्वाद के साथ कमर में बांधी गई भवानी की लाज तथा कुल के राजा सुजानसिंह का आशीर्वाद भी विद्यमान था।

महाराज सुजानसिंह के सम्मुख कुमार छत्रसाल ने तलवार बांधते हुए कहा था---

महाराज! हम हुकुम तें, बांधत हैं किरपान।

तौ लौ फिकर न आई है, जो लौं घट में प्रान॥ (छत्रप्रकाश)

राजा सुजानसिंह ने उन्हें कुमार छत्रसाल की आभा को देखकर गदगद हो गए थे और शुभ आशीष देकर उन्होंने कहा था---

हिंदू-धरम जग जाय चलाओ।

दौरि दिली-दल हलनि हलानि॥

अभय देहु निज बंस को फतह लेहु फरमाह।

छत्रसाल, तुम पै सदा, करें विस्मभर छांह (छत्रप्रकाश)

1. (महाराजा छत्रसाल द्वारा लिखी गई रानी जैन कुंवरि को पुरस्कार रूप में दी गई दोनों की संन्द) .... बंग्स जैतपुर में लड़ने को आयोग, धीमान जगतराज से लड़ाई भाई, जगतराज के गांव आए, फौज मारी गई वहां कुछ भाग गई, से तुम ने सुनी तो तुम खुद युद्ध करीबो को निकरी, 5 जुलाई को माथे करी, फिर पेशवा को बोलो बाबू उनके पूर्व विधायक करो, बंगश हार गए हो, हम तुम्हारे ऊपर खुशी हैं, जो तुमने करके ना लड़की तो बंगश करिया मुंह करी के जाट हाथों, तुमने बढ़ो साहस करो, आदमी ना कर सकते तो तुमने पराक्रम करो, तो खुशी पाए हमने तुम्हें दो पढ़ने दे, परखने जलालपुर व प्रदर्शन डा सोमा सो पाए, को दीपक ने छह लाख के हैं। (जेठ सुदी 14 संवत् 1783 मु. महेवा)
2. कुमार छत्रसाल के नेतृत्व में उड़ने वाला यह जन संघर्ष, राज्य सत्ता (मुग़ल सल्तनत की नीतियों के विरुद्ध खेला गया एक सुनिश्चित आंदोलन ही था और कुछ नहीं।
3. ऐतिहासिक प्रमाणों वाली और छत्रसाल, पृष्ठ 88
4. (i) महाराजा छत्रसाल के राजपरिवार का उल्लेख बुन्देलखण्ड के संक्षिप्त इतिहास नामक ग्रंथ के 231 पर मिलता है

   (ii) ओरछा का इतिहास 193- 194 (संस्करण 20वां)

छत्रपति शिवाजी

छत्रपति शिवाजी का जन्म 8 मार्च 1627 ईस्वी (संवत् 1683 को महाराष्ट्र के शिवनेर के दुर्ग में हुआ था। इनकी मां जीजाबाई धार्मिक विचारों की थी और पिता शाह जी एक वीर योद्धा थे जो अहमदनगर की सेना में सैनिक थे।

शिवाजी पर मां के धार्मिक विचारों का गहन प्रभाव पड़ा था। इन्होंने संत रामदास समर्थ गुरु का शिष्य त्व स्वीकार किया था। मातृभूमि के प्रबल हिमायती शिवाजी ने भावल क्षेत्र के साहसी नवयुवकों से सहयोग लेकर आसपास के खेलों पर अधिकार करना प्रारंभ कर दिया। शिवाजी की बढ़ती हुई ताकत से मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब चिंतित हो उठा। औरंगज़ेब ने एक षड्यंत्र के तहत जयसिंह के

माध्यम से वीर शिवाजी को आगरा में कैद कर लिया उस समय इनकी अवस्था 40 वर्ष की थी। सभी एक दिन योजनाबद्ध तरीके से आगरा से बाहर निकल आए और अपनी राजधानी से ही गढ़ (रायगढ़ आ गए। इसी समय चम्पत सूत छत्रसाल जी मुगलों की फौज को धोखा देकर फिर शिवाजी से आ मिले। सेवा और सत्ता का मिलन इतिहास की एक यादगार घटना है पंडित कृष्ण दास के अनुसार मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष पंचमी गुरुवार संवत् 1724 1667 कुमार छत्रसाल ने छत्रपति शिवाजी से भेंट की थी और कुछ वर्ष रहकर समय अनुकूल युद्ध विद्या का अभ्यास एवं ज्ञान प्राप्त किया था। लाल कवि ने क्षेत्र प्रकाश ग्रंथ में शिवाजी द्वारा छत्रसाल जी के प्रति कहे गए विदाई उदगार निम्न प्रकार से रेखांकित किए हैं--

करौ देश कौ राज छतारे। हम तुमतें कबहूं नहि न्यारे॥

तुरकन की परतीत न मानौ। तुम केहरि तुरकनगज जानौ॥

हम तुरकन पर कसी कृपानी। मारि करेगे कीचक घानी॥

तुमहू जाय देश दल जोरौ। तुरुक मारि तरवारिन तोरौ॥

छत्रिन की यह वृति सदाई। घाव ऐड़ धारिन पर घाले॥

तुम हौ महावीर मरदाने। करिहौ भूमि भोग हम जाने॥

जौ इतही तुमकौ हम राखैं। तौ सब सुजसु हमारौ भाखैं॥

ताते जाय मुग़ल दल मारौ। सुनिये श्रवननि सुजसु तिहारौ॥

(पृष्ठ 88-89)

शिवाजी से आशीष पाकर छत्रसाल जी ने बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता की जो 9 जुलाई को मा वह महाप्रभु प्राणनाथ जी के सानिध्य से साकार हुई थी।

शिवाजी का राज्याभिषेक सन 1674 में हुआ था और उनकी मृत्यु 5 अप्रैल 1680 (वि.सं. 1737 में हुई थी।

महाराजा छत्रसाल जी ने जगतराज को शिवाजी से संबंधित कुछ संस्मरण पत्रों में लिख कर भेजे थे यथा---

काहे से कम शिवाजी के पास गए रईसों वहां हम नए गुण पाई तो सीख लाई हती, अनवर खाने मुठ हमें मरवाई, रही हमने लौटा दे ओमा जी ने मुझे हमारे लाने थोड़ी तो वही मारो गोगो--- आषाढ़ बदी 9 संवत् ए 1788

मैं शिवाजी के पास पुणे खो गए,,,,, वहां से बड़ी मुश्किल में बादशाह से धोखा देके शिवाजी के पास गए. खबर नहीं आए के हम कौन साल में गए रही,,,,, यह शिवाजी के पास हम बहुत दिन रहे, विद्या, बान चला वो बगैरा, जो हम वहां से आए तो बादशाह से हमने बैर ठान लयौ,,,,,

---- भादो बदी पांच संवत् 1787 मुं. मऊ

हमारे पिता मारे गए थे जब हम उम्र में हल्के,,,,, वहां (शिवाजी से बहुत सी बातें सीखी, कई तरह लड़ाई कराई जात है वह दूसरे के ऊपर हथियार करो जात है बान बगैरा घाल वो सब सीखे, फौज के भरोसे नहीं रहने पर हैं

---- जेठ सुदी 13 संवत् 1788 मुं. मऊ

महाराजा छत्रसाल ने यह संस्मरण लगभग 63- 64 वर्ष के बाद लिखें, इसका आभास उन्होंने रेखांकित पंक्तियों द्वारा कराया है।

छत्रपति शिवाजी ने कुमार छत्रसाल को क्षत्रिय उचित ढंग से सम्मानित किया था। भवानी नाम की तलवार प्रदान की थी। लाल कवि ने इस पावन प्रसंग में हृदय ग्राही चित्रण किया है---

॥शिवाजी उवाच॥

शक्ति हमारी सदा तुम्हारे साथ रहेगी, हिम्मत बांधो,

स्वयं शत्रुओं को तुम अपने, वीर देश से शीघ्र भगा दो।

छत्रसाल का तेज चमककर, क्षण भर में दूना हो आया।

फड़का दायां हाथ शस्त्र को, वीर व्रती ने शीश झुकाया॥

(छत्रप्रकाश)

छत्रपति शिवाजी ने कुमार छत्रसाल को सिरोपा पहनाकर बुन्देलखण्ड की ओर प्रस्थान कर आया था। यही कुमार छत्रसाल कालांतर में हिंदुओं के सूरज बनकर कॉलेज यही महाराजा छत्रसाल जूदेव के नाम से जगत में प्रसिद्ध हुए। छत्रपति शिवाजी के गादी के कालांतर में बने वारिस बाजीराव पेशवा को

महाराजा छत्रसाल ने अपना मुंह बोला बेटा माना था और राज्य का तिहाई भाग (पश्चिमी बुन्देलखण्ड दिया था।

वस्तुतः छत्रपति शिवाजी और महाराजा छत्रसाल धन्य हैं।

महाबली

जिस व्यक्ति ने प्रत्यक्ष रुप से नन्हे छत्रसाल को मुग़ल सल्तनत के विरुद्ध विद्रोह की प्रेरणा एवं सहायता दी थी, उसी का नाम था--- महाबली। वह तेली जाति का था जिन्हें शुभ कार्यों के समय मोदी नाम से पुकारते हैं। यह देलवाड़ा के निवासी थे, यहां कुमार छत्रसाल की ननिहाल बताई जाती है। वीर चम्पतराय की पत्नी लांगरी (सारंधा ने मरने के पूर्व अपनी अमूल्य धरोहर (जेवरात वगैरह एक बछड़ा इन्हीं महाबली के पास भविष्य के लिए रख छोड़ा था। उनके लिए यह अति विश्वास पात्र व्यक्ति था। पिता के निधन के बाद जब उन्हें छत्रसाल की मुलाकात इन्हीं महाबली से हुई थी तब उसने रानी लाल कुंवरि द्वारा सौंपी गई थी वापस करते हुए ज्योतिषियों की भविष्यवाणी बता कर छत्रसाल के अंदर अपार साहस का संचरण किया था। यह सुनकर छत्रसाल का मलिन मुख्य वत खिल उठा था (आखिर थे तो सूर्यवंशी ही। इस प्रकार निराशा के स्थान पर आशा का संचरण करने वाले इन महाबली वाइन की जाति ने समूचे बुन्देलखण्ड में छत्रसाल का नाम जन-जन की जुबान पर ला खड़ा किया।

महाराजा छत्रसाल ने इन्हीं मावली के नाती शिवदयाल को अपना मुंह बोला बेटा बनाया था और महाबली के मरने के उपरांत कालिंजर के उत्तर में से मोनी और दोहरा का जीता हुआ क्षेत्र इन्हें सौंपा था और दर्शन डा गांव को परखने का मुख्यालय बनाकर रियासत (शिवदयाल को सौंपी थी। इसी गांव के निकट पुरानी सड़क पर अब भी तेली का कुआं, इस बात की पुष्टि कर रहा है।धन्य है महाराजा छत्रसाल की महाबली के प्रति आस्था, तभी तो इन्हीं गुणों के कारण महाराजा छत्रसाल सर्वत्र जननायक के रूप में पूजे जाते थे।

राममनि दौवा

महाराजा छत्रसाल के दाहिने हाथ तथा छत्रप्रकाश जिले में नौगांवा छावनी (यहां महाराजा छत्रसाल की सैन्य छावनी थी के निकट बसे रेन वहीं गांव का निवासी। इन्हें महाराजा छत्रसाल ने खंडेराव की उपाधि दी थी। महाराज ने इन्हें एक जागीर दी थी, जिसका मुख्यालय कुलपहाड़ में था। वि.सं. 1783 के युद्ध में यह वीरगति को प्राप्त हुए थे। इनका नाम महाराजा छत्रसाल कालीन इतिहास में अमर हो गया।

फौजदार मान्धाता चौबे

पन्ना में महाराजा छत्रसाल के प्रमुख सैन्य अधिकारी। महाराजा छत्रसाल ने कालिंजर आधीन करने पर इन्हें पहले यहां का फौजदार नियुक्त किया था और पूर्वोत्तर बुन्देलखण्ड की सुरक्षा को सुदृढ़ बनाया था। वह महाराजा छत्रसाल के अति विशिष्ट विश्वस्त लोगों में से थे।

इनके वंशजों ने पन्ना गादी कमजोर होते ही कालिंजर दुर्ग एवं आसपास का इलाका अपने अधिकार में कर लिया था। 1812 वि.सं. 1849 में अंग्रेजों ने 24 से कालिंजर दुर्ग छीनकर उन्हें आसपास के इलाके की जागीर स्वर संधि कर ली थी।

कुं. खानजहां

महाराजा छत्रसाल के अभिन्न सहयोगी और प्रधान सैन्य अधिकारी बाकी खां के पुत्र। धामौनी में बाकी वीरगति को प्राप्त हो गए थे, तभी महाराजा छत्रसाल ने उनके पुत्र कुंवर खां जहां को अपना मुंह बोला बेटा बनाया था। इस मुंह बोले बेटे ने 1 ओवर की भांति महाराजा छत्रसाल को कक्का यू कहकर हमेशा सम्मान दिया था। यह जीवन पर्यंत बुंदेलों के शुभचिंतक रहे। महाराजा छत्रसाल के ना रहने पर कुंवर खां जहां ने पाचवी राजकुमारों में सदैव मातृत्व में फर्क ना आने के लिए मध्यस्था कायम रखी थी।

फौजे मियां

महाराजा छत्रसाल के प्रधान तोपची और बाकी खां के अभिन्न मित्र।यह महाराजा छत्रसाल के झंडे के नीचे आकर पूर्ण श्रद्धा के साथ बुन्देलखण्ड के स्वतंत्रता की ज्वाला में शरीक हुए थे, औरंगज़ेब की मनसबदारी छोड़कर। महाराजा छत्रसाल के प्रारंभिक संगठन में जिन 25 व्यक्तियों के नाम हैं उनमें यह भी एक हैं।

फौजी मियां समर अतिशू रो लो लाख शिरोमणि पूर्व

(छत्रप्रकाश)

फौजी मियां किशोरी सागर रावत रावत सर्वे उजागर

(प्रजा छत्र/241)

छत्रसाल ने संवत् 1743 (1687 में नौगांव छावनी के निकटवर्ती गांव के मांधाता चौबे नामक जीजोतिया ब्राहमण को कालिंजर का दुर्ग पति (किलेदार नियुक्त किया था

-- डॉ महेंद्र प्रतापसिंह (ऐतिहासिक प्रमाण वली और छत्रसाल पृष्ठ 117

(नोट:--- महाराजा छत्रसाल ने कालिंजर दुर्ग 1735 में जीत लिया था 1677- 78 में-- उपर्युक्त पृ. 117

उक्त दोनों परमाणु से फौजी मियां की शूरवीर ता प्रकट हो रही है। श्रीनगर में तो बारूद के निर्माण में पहुंचे मियां ही मुख्य कर्ताधर्ता थे जिसके बलबूते पर छत्रसाल महाराजा का यह महान अभियान की गति से चला था।

बाकी खां

औरंगज़ेब की मनसबदारी छोड़कर महाराजा छत्रसाल का दामन थाम कर बुन्देली ध्वज के नीचे समर्पित होने वाले महावीर छत्रसाल के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाला इंसान। जिसे मजहब की संख्या धारणाएं नहीं बांध रखी थी एक बार (धामौनी) के समीप जंगल में स्थापित मुग़ल सल्तनत के अस्त्रागार (छावनी मैं सदा मवेशी रूप में, दिल्ली दरबार के प्रधान तोपखाने के सिपहसालार बंद कर पहुंचे थे तथा एक गुप्त रणनीति के अनुसार इस छावनी पर कब्जा करके महाराजा छत्रसाल की योजना को कार्यान्वित किया था। निम्न कथन से बाकी था और महाराजा छत्रसाल जी की मित्रता को व्यापक रूप में समझा जा सकता है:---

बाकी खां सौं मिलि छत्ता, दई दुन्द की नींव।

लंक लैन को राम ज्यों, किए मित्र सुग्रीव॥

(छत्रप्रकाश, पृष्ठ 104)

सवाई जैसिंह

राजस्थान के छत्रसाल तत्कालीन समय के ताकतवर राजा, जो महाराजा छत्रसाल के सिद्धांतों में श्रद्धा रखते थे और उन्हें हिंदकेसरी मानते थे। महाराजा छत्रसाल ने अपने जीवन काल के उत्तरार्ध में परस्पर काफी मित्रता रखी थी, और राजस्थान में हिंदू धर्म पर आंच ना आने का पूर्ण वचन दिया था। महाराजा छत्रसाल ने इन्हें पन्नू के माध्यम से राजनीति व धर्म की शिक्षा दी थी।

बंगश से युद्ध में महाराजा छत्रसाल ने सवाई जयसिंह के सामने सहायता का प्रस्ताव ना भेजकर दूरदर्शिता का परिचय दिया था और बाजीराव पेशवा को ही उपयुक्त समझकर बुलाया था कारण कि उस समय हिंदुत्व राजस्थान के मुकाबले महाराष्ट्र में शुद्ध एवं अपेक्षाकृत फूल फल रहा था।

बाजीराव पेशवा

छत्रपति शिवाजी के पुत्र के वारिस। इन्होंने वि.सं. 1784 में महाराजा छत्रसाल की

॥छप्पय॥ पग अमग्ग नहि धरिय....(छत्रसाल काव्यांजलि, पृष्ठ 91)

चैत्र बदी ॥संo 1783 [महाराजा छत्रसाल का पत्र: सवाई जैसिंह के नाम]

बंगश युद्ध में सहायता की थी। इन्हें महाराजा छत्रसाल ने अपना मुंह बोला (दत्तक) पुत्र माना था और राज्य का एक तिहाई भाग दिया था।

झांसी सिरोंज सागर कालपी का, राज पेशवा को अर्पा।

आगरा सुबह से लगने वाला बुन्देलखण्ड का यह दक्षिण उत्तर पश्चिमी क्षेत्र वि.सं. 1788 तक महाराजा छत्रसाल के प्रशासनिक अधिकार में बना रहा था, इस भूभाग को महाराजा छत्रसाल के वन गमन उपरांत इन हस्तांतरित कर दिया गया था।

बंगाली युद्ध का एक पहलू बड़ा ही सुखद रहा, जिसने महाराष्ट्र और बुन्देलखण्ड की हिंदू धर्म रक्षक शक्तियों के मिलन से देश में एक नवीन अध्याय का श्रीगणेश किया था। इसने आगे के कुछ वर्षों में ही भारत से बची खुची मुग़ल सत्ता को पूर्ण तरह ध्वस्त कर दिया था, मात्र दिल्ली के आसपास के थोड़े से भूभाग पर नाम मात्र की मुग़ल सत्ता बची थी।

राव धुरमंगद

रावत नदी गांव का जागरण था। दतिया के राव शुभकरण इनके जेष्ठ भ्राता थे परंतु सिद्धांत अनबन होने के कारण दुर्बन जागीर छोड़कर और अच्छा चले आए थे। शुभकरण और ओमपालसिंह एक जैसी मानसिकता के थे, परंतु राव धर्मेंद्र चम्पतराय के अनुगामी एवं पात्र थे। चम्पतराय की मृत्यु के बाद केवल यही ऐसा वीर बुन्देलखण्ड में बचा था जो परम पराक्रमी देश प्रेमी और न्याय कारी था। राजा सुजानसिंह ने इन्हें पलेरा गांव की जागीर दी थी यह दो सहोदर भ्राता थे इनके अनुज शक्तिसिंह थे जो निसंतान दुर्ग के उत्तराधिकारी बने थे।

इन्हीं दुर्ग ने वि.सं. 1727 में ओरछा की सेना का छत्रसाल के साथ नेतृत्व कर के विदाई खां को धूम घाट में हराया था तभी से उनके संदर्भ में एक चंद की निम्न पंक्ति लोकोक्ति बनकर बुन्देलखण्ड में छा गई थी---

धन्य बली धुरमंगत जू,

जिन पंजन के बलसिंह बिदारयो।

पराक्रमी, उदार मना नीति निपुण निर्भीक एवं जन नेता धुरमंगद ने 22 वर्षीय कुमार छत्रसाल को अपना नेता मान कर वि.सं. 1728 (ज्येष्ठ शुक्ला 5) में उनके झंडे के नीचे

1. (छत्रसाल का पत्र: पेशवा बाजीराव प्रथम के नाम)

.... बंगस की लड़ाई में हमनै तुमकौ बुलाबौ, तुमने फते करी ऊको भगादयौ, हम तुमारे ऊपर खुशी हैं, तुमने बुढ़ापे में बड़ी मरजाद राखी तुम कौ लड़े भिरे से कुछ जागा और मिल गई..... तौ फिर सब हिसाब लगाकै तीसरौ हीसा दवो जैहै, ईमै सो अपना समझिऔ, हाल में दो लाख रुपैया तुमारे खर्च को दए जात हैं सो लियौ व और बखत बैरा....

---- वैशाख सुदि 3 संवत् 1783 मुकाम जैतपुर

आकर बुन्देलखण्ड की स्वतंत्रता का बिगुल फूंका। कुमार छत्रसाल ने ऐसे अनुभवी एवं पराक्रमी युवा वीर का सानिध्य पाकर 1 वर्ष में ही पचास लाख की आमदनी वाला भूभाग अर्जित कर लिया था।

काश! ओरछा की रानी हीरा देवी (1601 क्या- सो की कुदृष्टि रामपुर मंगत पर ना पड़ती। कुमार छत्रसाल का यह परम सहायक अनुभवी वीर इस रानी के धोखे में आकर दिल्ली चला गया और उसे सोते समय पकड़कर औरंगज़ेब ने जिंदा ही दीवाल में चुनवा दिया था।

भले भाई

महाराजा छत्रसाल का एक अभिन्न बेजुबान साथी, जो हमेशा उनके दुख सुख में बहुत ख्याल रखता था। एक दूसरे ने आपत्ति के समय बढ़ चढ़कर साथ निभाया था।

जनश्रुति के अनुसार, उनका यह साथी कोई सामान्य प्राणी न था अपितु हिमालय की कराओ में ऋषि मुनियों द्वारा प्रज्वलित हवन कुंड की प्रचंड आरोपियों की दिव्य ज्योति यों के सम्मिश्रण से यह उत्पन्न हुआ था। कहने को तो यह एक प्राणी था--- दिव्य अश्व, महाराज ऐसे पुत्रवती स्नेह देते थे। इसी आशा को उन्होंने बड़े भाई के नाम से पुकारा था। दिव्या तेजपुंज समूह से उत्पन्न हुए इस दिव्य अश्वनी महाराज का जीवन भर साथ निभाया था और उनके वन गमन के साथ महाराजा छत्रसाल को अदृश्य देखकर उन्हीं जनक कराओ के समीप पहुंचकर अंतिम पथ पर चला गया था। आज ने तो यह घोड़ा है और ना ही उसके देखने वाले, परंतु इसकी सैकड़ों गाथाएं जनमानस की जुबान पर रची बसी हुई हैं।

महाराजा छत्रसाल के पांचों अश्वों का वर्णन कृष्ण कवि कृत प्रजा पालक छत्रसाल नामक ग्रंथ में मिलता है। 1. भले भाई, 2. भभूखा, 3. लच्छी, 4. मरदाना तथा 5. मृगछोनी।

भल्ले भाई भभूखा लच्छी, मरदाना मृगछोन।

पांच कच्छ ए कच्छनी, देहधरी मृग यौन॥

(पृष्ठ, 241)

इन पांचों में से भले भाई को ही ख्याति विशेष रूप से मिली थी। इसी अश्व ने देवगढ़ विजय [सितम्बर 1667 (संवत् 1724)] में महाराजा छत्रसाल की मूर्छित अवस्था में रात भर रक्षा की थी।

श्री राज परमात्मने नमः

युग प्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

(4)

कवि-मण्डल

विविध व्यक्तित्व के धनी महाराजा छत्रसाल जी कविता प्रेमी थे 1 ग्राम कवियों का बहुत आदर करते थे, स्वयं भी एक सफल कवि थे। उनका राज दरबार कभी संपन्न था। इन कवियों ने महाराजा छत्रसाल के जीवन पर काव्य रचना है एवं परवर्ती कवियों का भी ध्यान महाराजा छत्रसाल की ओर गया है तथा आधुनिक काल में भी वह कवियों की साधना के एक अंग हैं। इसी परिवेश में प्रस्तुत अनुभाग में प्रकाश डाला जा रहा है।

श्री राज परमात्मने नमः

(4)

कवि-मण्डल

(अ) राज- दरबारी कविगण

प्रस्तावना

महाराजा छत्रसाल के राज दरबार में 82 कवियों की उपस्थिति सुनी जाती है और स्टॉक उनमें ख्याति प्राप्त कवियों के नाम भी हैं--- भूषण कवि, लाल कभी कम ऑफ ब्रिज भूषण व स्वामी लाल दास जी आदि। उन्होंने कवि भूषण जी को भी दरबारी कवि का सम्मान दिया था।

कवियों को स्वतंत्र एवं स्वच्छ वातावरण मिला हुआ था। इन कवियों को महाराज ने आश्चर्य दाता कवि श्रेणी से भी ऊंचा माना है वस्तुतः कवियों को जो सम्मान नरवीर हिंदकेसरी महाराजा छत्रसाल ने दिया है, वह किसी भी राजा ने नहीं दे पाया। कारण की--- महाराज निजी महत्वाकांक्षा से परे एक ब्रह्मर्षि से, विद ए राजा जनक की भांति उनमें भी राज्य लिप्सा नहीं थी और। उन्होंने कभी उसे अपनी प्रशंसा के गीत नहीं लिखवाए, जनमानस के अंतर्मन में रची बसी भावनाओं व तत्कालीन राष्ट्रीय परिस्थितियों का ही चित्रण इन कवियों की रचनाओं में विद्यमान है।

महाराजा छत्रसाल के 82 कवि रत्नों में निम्न कवि विशेष स्थान रखते हैं--- लाल कवि को मां चिंतामणि आवाज भगवत हरिकेश कुमार नवरंग लाल दास बाबा हंसराज केशवराज स्वामी बृजभूषण हिम्मतसिंह प्रतापसिंह मुरलीधर आदि।

महाराजा छत्रसाल के काव्य में तत्कालीन इतिहास की झलक मिलती है और इस काव्य का आधुनिक परिवेश में भी बड़ा ही मूल्य निहित है। चौधरी जन विविध आयामों में इसका मूल्यांकन करते दिखाई देते हैं। महाराजा छत्रसाल के दृष्टिकोण की झलक इसमें परिलक्षित होती है। नीति, उपदेश युक्त शिक्षाप्रद उनका यह काव्य- साहित्य जगत में सदा अजर अमर रहेगा।

---

1. ॥सवैया॥ कीरत के बिरवा कवि हैं, इनको कबहूं कुम्हलान न दीजै

॥कवित्त॥

चाहौं-धन-धाम-भूमि भूषन-भलाई-भूरि,
सुजस सहुरजुत रैयत कौं लालियौ,
तोड़दार घोड़ादार वीरानि सौं प्रीति करि,
साहस सौं जीती जंग, खेत तें न चालियौ॥
सालियौ उदंडनि कौं दंडनि को दीजौ दंड,
कारिकै घमंड घाव दीन पै न घालियौ॥
विनती छत्रसाल करें होय जो नरेस देस,
रेहै न कलेस लेस, मेरो कहो पालियौ॥1॥

पालै पाक सासन हूं जाके अनुसासन कों

जाके लोक-लोकप भंडारी राज राज हैं।
कहैं छत्रसाल ब्रह्म-रचित जहान-जीव,
ग्यानी गुन गावैं ध्यावै शंभू सिद्धराज हैं॥
भानु- शशि रैन-दिन करत प्रणाम जाहिं,
दंडधर देत दंड दंडित दराज हैं।
दीन-प्रतिपालक प्रवीण देव-देवन में,
धरम-धुरीन सो हमारै ब्रजराज हैं ॥2॥

तुम घनश्याम हम जाचक मयूर मत्त,
तुम सुचि स्वाति हम चातक तुम्हारे हैं।
चारु चंद्र प्यारे तुम लोचन चकोर मोर,
तुम जग तारे हम छतारे उचारे हैं॥
छत्रसाल मीत मित्र जाके तुम ब्रजराज,
हमहूं कालिंदजा के कूल पै पुकारे हैं।
तुम गिरिधारी हम कृष्ण व्रतधारी, तुम
धनुष प्रहारे हम यवन प्रहारे हैं ॥3॥

ध्याननि में ध्यानी और ज्ञानिन में ज्ञानी अहौं,
पंडित पुरानी प्रेम-वानी अरथाने का।
साहब सों सच्चा, क्रूर कर्मनि में कच्चा छत्ता,
चंपत कौ बच्चा सेर, शूरबीर वाने का॥
मित्रन को छत्ता दीह शत्रुन को कत्ता सदा,
ब्रह्म- रस-रत्ता, एक कायम ठिकाने का।

नाही परवाहही न्यारा नौकिया सिपाही, मैं तो--
नेही चाह चाही एक स्यामा स्याम पाने का॥ 4॥

मानि कैं हुकुम जासु भानु तासु करै,
चंद्रमा प्रकाश करै नखत दराज कौं।
कहैं छत्रसाल राज राज है भण्डारी जासु,
जाकी कृपा कोर राज राजै सुर राज कौं॥
जुग्म कर जोरि जोरि हाजिर त्रिदेव रहें,
देव परिचार गहैं जाके गृह काज कौं।
नल की उदारता में कौन है सुधार,
हौं तो मनसबदार सरदार ब्रजराज कौं॥5॥*

॥सवैया॥

छान करौ गुनमान सबै मिलि, मान वीहाय करहु चतुराई।
भूप छत्ता कहें लेहु मता करि जो लिखी साह हमैं पहुंचाई॥
कारन कौन कहो सुविचार, गहौ नहिं मौन, जू, होऊ सहाई।
चोर उजागर साहू भये, कब चौर नै साहू को चोरी लगाई॥

माखन चोर सुनंद लला घुसि ग्वालिन-गेह घनी दधि खाई।
आय गई जबहिं वह ग्वालिनि, धाय धरयौ तब बेगि कन्हाई॥
लै जसुदा ढिग ठाड़ कियौ, वह वाम को कंत बन्यौ बलभाई।
जोर उजागर साहू भये इमि, चोर नै साहू को चोरी लगाई॥

शब्दनि अर्थ ज्यों, काठ हुतासन, तार के जंत्र में राग कलोलै।
सुद्ध सुभावनि में, छत्रसाल, रमै हरि ज्यौं संग संतनि डालै॥
सैन में जीव ज्यों, धेनु में क्षीर रहे, दही में घृत सार अमोलै।
फूल में गंध बसे, मही कंचन, पंचनि त्यों परमेसुर बोलै॥

लाख घटै, कुल साख न छाड़िये, वस्त्र फटै प्रभु औरहू देहै।
द्रव्य घटै घटता नहिं कीजिये, देहै न कोऊ पै लोक हंसैहै॥

---

* इन कविताओं से ऐसा लगता है की मुग़ल सल्तनत महाराजा छत्रसाल को प्रलोभन भरे संदेश भिजवा दी थी, इन संन् है। उन्होंने सदा (मन मनसबदार,श्याम को स्वीकार किया है। कालांतर में इसी मनसबदार ने आसुरी सत्ता को वह आकर देव राज्य स्थापित किया था।

भूप छत्ता जल-रासि कौ पैरिबौ, कौनिहूं बेर किनारे लगै है।
हिम्मत छोड़े तें किम्मत जाएगी, जाएगो काल कलंक न जैहै॥

॥कुण्डलिया॥

माली के सम नृप छत्ता सो संपत्ति सुख लेहि।
सत बिजनि रोपहि थलनि, लघुहि बड़ो देहि॥
लघुहि बड़ो करि देहि, लेहि फूले फल याके।
फूटै देहि निकासि, मिलहिं फूटै बसुधा के॥
नत उन्नत करि देहि, करहि उन्नत कहं खाली।
कंटक छुद्र निवारि, और सींचहि नृप माली॥

मन-भायौ, अपनौ कियौ, गहि गोरी सुल्तान।
सात बार छाँडियौ नृपति, कुमति करी चहुवान॥
कुमति करी चहुवान, ताहि निंदत सब कोउ।
असुर बैर इक बार, पकरि काढे दृग दोउ॥
दोउ दीन को वैर, आदि अंतहि चलि आयौ।
कहि नृप छत्ता, विचारि कियौ अपनौ मन भायौ॥

॥दोहा॥

श्री प्राणनाथ के धर्म पर, जो ल्यावे ईमान
छत्रसाल तिन ऊपर, तन-मन-धन कुर्वान॥
छत्रसाल जन पालीवो, अरिहिं घालिबो दोय।
नहिं विसारियो, धारियो, धरा धरन कोउ होय॥
छत्रसाल राजान को, बर्जित सदा अनीति।
द्विद-दंत की रीति सौं, करत न रैयत प्रीति॥
कुलवारो एकहि भलो, अकुल भले नाहिं लाख।
तुलत न सेर सियार सम, छत्रसाल नृप भाख॥

उक्त सवैयों, कुण्डलियों एवं दोहों में महाराजा छत्रसाल ने जीवंत काव्य का सृजन किया है। समूचा जनमानस- दुख और दरिद्रता से मुक्त होकर सुखी और संपन्न हो यह उनकी मूल धारणा है। राजा को उन्होंने परमात्मा का प्रतिनिधि माना है अतैवराजा को भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञाता होना जरूरी है। इतिहास से सबक लेकर राजा को अंतर और ब्रह्मा नीतियां सरजीत करनी चाहिए। पृथ्वीराज चौहान का उदाहरण देकर उन्होंने उक्त तथ्यों को प्रमाणित किया है।

महाराजा छत्रसाल के काव्य में गुरु भक्ति, सुंदर साथ भक्ति का अनूठा चित्रण मिलता है। उनके सदगुरु श्री प्राणनाथ महाप्रभु के अनुगामी भक्तों सुंदर साथ कह लाए और यह सभी राजधानी पटना में स्थाई रूप से रच बस गए, इन्हें सारे जगत में धामी समाज के रूप में ख्याति मिली। महाराजा छत्रसाल के मुखारविंद से इन्हें बहुत सुबह प्राप्त हुई। महाराजा छत्रसाल ने जीवन भर इन सभी की सेवा अपने सद्गुरु के सामान की थी।

॥दोहा॥

यह टीका यह पावड़ो, यही निछावर आय।

(श्री) प्राणनाथ के चरण पर, छत्ता बलि-बलि जाय॥

भजन करें श्रीराज को, अरु सखियों सों हेत

छत्रसाल के वंश को, सोई है सिर नेत

॥कवित्त॥

सर्व अंग भंग होत, गुरु की जो निन्दा करे,

नर्क माँहें बास होत, पर नारी के सताए सै।

ज्ञान बुद्धि नष्ट होत, नीच धन खाए सैं।

भक्ति तोह अधूरी होत, ध्यान न लगाए जौन,

अन्धे और मूक होत, मुनिन को सताए जौन,

ज्ञान बुद्धि नष्ट होत, नीच धन खाये सैं॥

भक्ति तो अधूरी होत, ध्यान न लगाए जौन,

दान पुण्य नष्ट होत, नाम के बताए सैं।

कहैं छत्रसाल, सुनियो हो सयाने-सब,

वंश को विनाश होत, धामिन के सताए सैं॥

महाराजा छत्रसाल जी अपने को सभी कवियों से छोटा मानते थे। भूषण कवि ने जब उनसे राजदरबारी कवियों का परिचय पूछा था तब उन्होंने अपने को सबसे अंतिम कभी बताकर उन्हें आश्चर्यचकित कर डाला था।

निसंदेह, महाराजा छत्रसाल को काव्य जगत में बहुत ही ऊंचा स्थान देना, कोई अतिशयोक्ति भरा कथन नहीं है।

कवि भूषण जी

उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल के कवियों में कवि भूषण को राष्ट्र कवि के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। इनका जन्म कानपुर (उत्तर प्रदेश जिले के टिकवा पुर गांव में हुआ था, इनका जन्म काल 1670 वि.सं. माना जाता है और मृत्यु वि.सं. 1772 में हुई।

1. तत्कालीन राष्ट्रपति भी कवि भूषण के निम्न शब्द इसी का प्रतिपादन करते हैं---
कविता सेवा को बकानो, की बकानो छत्रसाल को।

कहा जाता है कि एक बार भूषण कवि अपने नाती के साथ पन्ना पधारे थे, उस समय महाराजा छत्रसाल ने अपने राज्य शाही हाथी पर उनके नाती को आसीन कराया था और जिस पालकी में भूषण जी बैठे थे, उसमें महाराजा ने अपना कंधा लगाया था। भूषण कवि को जब पता चला कि स्वयं महाराजा छत्रसाल पालकी धो रहे हैं, तब वह अचंभित होकर उससे खुद पड़े थे तथा अपने नाती को राजेशाही हाथी पर बैठा देखकर भावविभोर हो गए। उस समय उनके मुख से निर्धारित हुआ था---

॥दोहा॥

नाती को हाथी दियो, तापर ढुलकत ढाल।

साहू के यश कलस पर, धुज बांधी छत्रसाल॥

कवि भूषण के प्रारंभिक नाम का उनकी रचनाओं में कहीं उल्लेख नहीं है। कहा जाता है कि चित्रकूट के राजा रुद्र सोलंकी ने इन्हें कवि भूषण की पदवी दी थी, तभी से इनको जनमानस कवि भूषण नाम से पुकारने लगा था। इन्होंने छत्रपति महाराजा शिवाजी के अतिरिक्त महाराजा छत्रसाल के संबंध में रचनाएं की हैं छत्रसाल दशक उनमें एक है। छत्रसाल बावनी नामक ग्रंथ भी उन्होंने लिखा है ऐसा सुना जाता है।

इन्हें हिंदी साहित्योइतिहास (रीतिकाल) का प्रथम कवि माना जाता है इनकी रचनाओं का यदि देश काल एवं परिस्थिति के अनुरूप त्रिवेंद्रम करते हुए अनुशीलन किया जाए तो विदित होता है कि इनकी रचनाओं में विशुद्ध हिंदुत्व का संदेश ही भारतीयता और तत्कालीन राष्ट्रीयता का उद्बोधन दिग्दर्शन एवं संदेश है।

उनके द्वारा रचित कवित्त अवलोकनीय हैं:---

निकसत म्यान तें मयूखै प्रलै भानु कैसी,

फारै तम तोम से गयंदन के जाल कों।

लागति लपटि कंठ बैरिन के नागिन सी,

रूद्रहिं रिझावै दै दै मुंडन के माल कों॥

लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली,

कहां लौं बखान करों तेरी करवाल कों।

प्रतिभट कटक कंटीले केते काटि-काटि

कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल कों॥

---

1. उक्त दोहे से महाराजा छत्रसाल की गरिमा महाराजा साहू जी से उचित प्रतीत होती है, जिनके राज आश्रित कवि भूषण जी थे।
2. भूषण जी का नाम परमानंद त्रिपाठी था। ---आ० रामचंद्र शुक्ल

भुज-भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी-सी,
खेदि खेदि खाती दीह दारुन दलन के।
बखतर पाखरन बीच धंसि जाति, मीन,
पैरि पार जात परवाह ज्यों जलन के॥
रैयाराव चम्पत के छत्रसाल महाराजा,
भूषन सकत करि बखानि को बलन के॥
पच्छी पर छीने ऐसे परे पर छीने वीर,
तेरी बरछीने वर छीने हैं खलन के॥

॥छंद॥

तहबर खान हराए, अरे अनवर की जंग हरि,
सत्र उद्दीन बहलोल गए, अब्दुल समद मुरी
महमूद को मत मेटी, शेर अब गा नहीं जेर किय,
अति प्रचंड भुज दंड, बलम केही न दंड दिय
भूषण बुंदेल छत्रसाल, दर्शन गज्जू आवरण जी,
झक के निशान तक के समर, (सो) सक्क तक्क तुरक्क भाजि

॥कवित्त॥

असि गहि छत्रसाल खिझयौ खेत वेतवै के,
उततें पठानन हूं कीनी झुकि झपटै।
हिम्मति बड़ी के गबड़ी के खिलवारन लौं,
देत सै हजारन हजार बार चपटै॥

भूषण भनत काली हुलसी असीसन कों,
सीसन कों ईस की जमाति जोर जपटै।
समद लौं समद की सेना त्यों बुन्देलन की,
सेलैं समसैरै भई बाड़व की लपटै॥

॥कवित्त॥

चाक चक चमू के अचाक चक चहूं ओर,
चाक सी फिरत धाक चम्पत के लाल की।
भूषन भनत बादशाही, मार जेर कीन्हीं,
काहू उमराव न करेरी करवाल की।

सुन सुन रीति विरुदैत के बडप्पन की,
थप्पन अथप्पन की नीति छत्रसाल की।
जंग जीत लेवा जे ते ह्वेके दाम देवा भूप,
सेवा लागे करन महेबा महिपाल की॥

॥छन्द॥

हैवर हरद साज गैवर गरद्ध समै, पैदर के ठट्ट फौज जुरी तुरकाने की।
भूषन भनत राव चंपत को छत्रसाल, रूप्यौ रण ख्याल ह्वेके ढाल हिंदूवाने की।
कैयक करोर एक बार बैरी मार डारे, रंजक दृगन मानो अगिनी रिसाने की।
सेर अफगन सेन सगर सुतन, लगी कपिल सराय लौ तराय तोपखाने की।
रैयाराव चंपत को चढ़ो छत्रसालसिंह, भूषन भनत गजराज जोम जमकैं।
भादौं की घटा सी उठीं गरजैं गगन घेरें, सेलैं समसेरें फेरै दामिनी सी दमकैं।
खान उमराव के आन राजा राउन के सुनि सुनि उर लागैं घन कैसी घमकैं॥
बेघर बगारन की अरि के अगारन की लांघती पगारन नगारन की धमकैं॥

महाराजा छत्रसाल की पता होता है कभी पूछूं द्वारा उनके संदर्भ में लिखे गए जिनमें छंद और कभी का बड़ा ही महातमय में है--

॥छन्द॥

बालपने में तहब्बरखान को, सेन समेत अचै गयो भाई।

ज्वानी में रूंडी और खुंडी हते, औ समदद अंचै कहु थाह न पाई॥

बैस बुढ़ापे की भूख बढ़ी, गयो बंगस बंस* समेत चबाई।

खाये मलेच्छन के छोकरा पै तऊ डोकरा को डकार न आई॥

॥कवित्त॥

राजत अखण्ड तेज, छातज-सुजसु बड़ो,

गाजत गयंद दिग्गज हिय साल को।

जाहि गयंद दिग्गज हिय साल को।

जाहि के प्रताप सों मलीन आफताप होत,

ताप तजि दुजन करत बहु ख्याल को॥

साज सजि गज तुरी पैदर कतार दीने,

भूषण भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को।

और राव राजा एक मन में न ल्याऊं अब,

शिवा को सराहौ के सराहौ छत्रसाल को॥

- अतैव यह चंद्रभूषण (1670- 1672 वि.सं.) रचित प्रतीत नहीं होता है।

कीजो सनमान मान देखी सब आन वान,

शान दान युद्ध में न कोऊ ठहरात हैं।

भूषण प्रचंड मारतंड सौ प्रताप देख,

भागवे को पक्षी औ पठान नियरात हैं॥

शंका मान कांपत अमीर दिल्ली वाले जब,

चम्पत के लाल के नगारे घहरात हें।

चहूं ओर ताके चकता के दल ऊपर त्यौ,

छत्ता के प्रताप के पताके फहरात हैं॥

वस्तुत है कभी भूषण ने जो महाराजा छत्रसाल का वीर उचित यशोदा किया है, वह सटीक एवं एक ऐतिहासिक धरोहर है वीर शिवाजी के अवसान के पश्चात उनके चित्र को तभी शांति मिली थी जब उन्होंने महाराजा छत्रसाल का यशोगान किया था। 56 हो तो तो सुन्नत होती संबंध की (पोषण इसी का परिणाम है।

लाल कवि

(अ) महाराजा छत्रसाल के प्रमुख युद्ध एवं प्रमुख दरबारी कवि। इन्होंने महाराजा छत्रसाल एवं तत्कालीन परिवेश में छत्रप्रकाश नामक ग्रंथ की रचना की है। वि.सं. 1764 में वीरगति हो जाने के कारण यह कालखण्ड अधूरा ही रह गया प्रतीत होता है, कारण कि महाराजा छत्रसाल के उत्तरार्ध जीवन काल के 25 वर्ष का वर्णन इसमें नहीं मिलता है। इस ग्रंथ में आंखों देखा हाल की घटनाओं का चित्रण किया है क्योंकि वह हमेशा महाराजा छत्रसाल की छाया बनकर सेवक अंगरक्षक रहे हैं। इन्होंने रणभूमि में महाराजा छत्रसाल को देखा है। ये स्वयं भी योद्धा थे, महान पराक्रमी थे, फिर भी इन्होंने स्वरचित छत्रप्रकाश में छत्रसाल की अतुलित बल पराक्रम किशोरी की गाथा गाई है अतैवइन्होंने मोहे ना नारी, नारी के रूपा के कथन को गलत कर दिखाया है।

---

1. कहा जाता है कि छत्रपति शिवाजी ने इनके एक कवित्त को बावन बार सुना था और इतने ही बार पुरस्कार दिया था। वह कवित्त निम्नलिखित बताया जाता है।

इन्द्र जिमि जंभ पर, बाडब सुअंभ पर,
रावन सदंभ पर, रघुकुल राज हैं।

पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाह पर राम-द्विजराज हैं॥

दावा द्रुम दंड पर, चीता मृगझुंड पर,
'भूषन वितुंड पर, जैसे मृगराज हैं।

तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यौं मलिच्छ बंस पर, सेर शिवराज हैं॥ (शिवराज भूषण से)

डॉ० कमला शर्मा ने चतुर प्रकाश की ऐतिहासिक प्रामाणिकता के परिवेश में लिखा है कि--- लाल कवि ने अपने नायक के शत्रु पक्ष की आंतरिक अवस्था को ठीक ठीक समझने और उसे पूर्ण ईमानदारी के साथ अंकित करने में एक इतिहासकार के दायित्व को भी पूरा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी है।.... मैं कभी होने के साथ-साथ एक कुशल योद्धा भी थे। कलम और तलवार कादरी कोई विरला ही मिलता है इसलिए उन्होंने यथार्थ के आधार पर छत्रसाल से संबंधित सभी घटनाओं को बढ़ा चढ़ाकर नहीं लिखा है क्योंकि उन्होंने रक्त रंजित रणभूमि को स्वयं देखा था, इसलिए युद्ध की विभीषिका का यथार्थ चित्रण किया है।

छत्रप्रकाश सम सामयिक ऐतिहासिक रचना है, जिसमें महाराज के शौर्य एवं असीमित व्यक्तित्व का वास्तविक चित्रण है। लाल किताब में तत्कालीन समय के इतिहास का अवलोकन आज भी पैनी दृष्टि से किया जा सकता है। इसी परिवेश में प्रस्तुत हैं कुछ अंश--

संवत् सत्रह सै लिखे, आठ आगरे बीस।

लगत बरस बाईसईं, उमड़ि चल्यौ अवनीश॥

(पृष्ठ 99)

उपर्युक्त पंक्तियों में वि.सं. 1706 में जन्मे छत्रसाल को अवनीश कहा गया है और। और विद्रोह के समय महाराजा छत्रसाल की उम्र 22 वर्ष थी।

बाकी खां सौं मिलि छत्ता, दई दुन्द की नींव।

लंक लैंन को राम ज्यों, किए मित्र सुग्रीव॥

(पृष्ठ 104)

उपर्युक्त है कि जिस प्रकार राम ने लंका पर विजय पाने के लिए सुग्रीव से मित्रता की थी उसी प्रकार से छत्रसाल ने और अत्याचारों से जनमानस को बचाने के लिए एक प्रसिद्ध साला की खां से मित्रता की थी (जिसका परिणाम निकला था)।

गंगात्रिपथ गामिनी जैसी, छत्रसाल की कीरति तैसी।

तो गुन छत्रसाल के गैयै, कैयक सहस जीभ जो पैयै॥ (अ. 7)

छत्रसाल के चरित उज्यारे, मेटल कुल कलिकाल अंध्यारे।

छत्रसाल चम्पत के ऐसे, बरने कस्यप के रवि जैसे।

कस्यप कौ रवि गाइये, कै दसरथ के राम।

कै चम्पत कौ चक्कवै, छत्रसाल छविधाम॥

छत्रप्रकाश के उपर्युक्त वचन महाराजा छत्रसाल के दैवीय चरित्र को चित्रित कर रहे हैं, अतैवलाल कवि ने उनको महावीर की संख्या ठीक ही दी है।

(क्षत्रप्रकाश)

क्षत्रिय धर्म के प्रति पालक एवं पुनर्स्थापित महावीर छत्रसाल ही हैं। इसी स्वरूप का बीज रूप कुमार छत्रसाल में देखकर शिवाजी के मुख से निम्न आशीष वचन प्रकटे थे---

छत्र धरम धुर लै उठयो, महाबीर छत्रसाल।

रीति बड़ेन की विपत्ति में, धीरज धरत विसाल॥

(छत्रप्रकाश)

क्षत्रिय धर्म के प्रतिपालक एवं पुनर्स्थापित महावीर छत्रसाल ही हैं। इसी स्वरूप का बीज रूप कुमार छत्रसाल में देखकर शिवाजी के मुख से निम्न आशीष वचन प्रगटे थे---

सिवा किसा सुनि कै कही, तुम क्षत्री सिरताज।

जीति आपनी भूम कौ, करौ देस कौ राज॥

(छत्रप्रकाश)

छत्रप्रकाश में महाराजा छत्रसाल के पराक्रम का उल्लेख निम्न प्रकार अंकित है--- वज्र तेज जिला शत्रु सरपट पकेला। ऐसो युद्ध खेला बुन्देला छत्रसाल॥ चौकी चौकी शिवा खां अबे कौन छत्रसाल बलवान।

(ब) लाल कवि ने क्षेत्र प्रकाश के अतिरिक्त राज्य विनोद नामक लघु काव्य ग्रंथ भी रचा है। लाल कवि ने पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के अनेक नामों में एक राज नाम को प्रमुखता देकर उनका गुणाअनुवाद किया है। इससे लगता है इस लघु काव्य का नाम राज विनोद उन्होंने रखा होगा। यह ग्रंथ छत्रप्रकाश ग्रंथ के उस अभाव की पूर्ति करता है, जिसमें पाठकों को उसके अपूर्ण होने की प्रतीति सहज में लगती है।

राज विनोद में भी महाराजा छत्रसाल के जीवन पर प्रकाश पड़ा है, क्योंकि पूर्णब्रह्म परमात्मा के तेज स्वरूप निष्कलंक बुध प्राणनाथ जी हैं, जो महाराजा छत्रसाल के सद्गुरु एवं धर्म पिता है, क्योंकि श्री प्राणनाथ जी के नाथ पुत्र छत्रसाल हैं। अतैवइस पुस्तक में महाराजा छत्रसाल का उद्धरण समीचीन है। प्रस्तुत है इसके कुछ सामाजिक अंश---

॥मंगलाचरण॥

ब्रज जल निधि पूरन ससी, राजरसिक चित्त चोर।

धामधनी आनन्द में, जै जै जुगल किशोर॥1॥

छत्रसाल विहरत सदा, तहां सखिन रस-रूप।

खुले भाग जग जनन के, भये आय इत भूप॥2॥

(पृष्ठ 1)

---

1. सम्पादक: पंडित श्री मिश्रीलाल शास्त्री (संन् 1970, बुद्ध जी शाखा 292 शरद पूर्णिमा: 2027)

योद्धा लाल कवि श्री प्राणनाथ जी के शिष्य थे तभी उन्होंने निम्न दोहे में मूल स्वरूप (पूर्ण ब्रह्म परमात्मा) का अभिराम निरूपण किया है---

छके प्रेम रस रंग में, ब्रज बनिता घनश्याम।

भूले मूल स्वरुप कौ, रमत लाल अभिराम॥

(पृष्ठ सं. 31)

महाराजा छत्रसाल बरहमपुर परमधाम की शकल नामक ब्रह्मा के अवतार हैं। श्री प्राणनाथ प्रभु के शुभ आशीष से छत्रसाल (छत्ता) जग में जग में नृप (राजा) हुए ग्राम

इन्होंने वेदर मियों का हनन कर धर्म की रक्षा की है इसका अनूठा चित्रण लाल कवि ने राज विनोद में निम्न प्रकार किया है---

॥छन्द पाधरी॥

बाढ़यो उमंड दुहु दीन सारे, नर बुद्धि जोर मोरे अमोरे।

जीते मलेच्छ खोले कुरान पंडित बुलाइ मिलिये पुरान।

इहि भांति कुल हेरौ जहान, छत्रसाल अंग जगो निदान।

जे कही सकुंडल[2] सरूप धाम, ते भये आई छत्रसाल नाम॥

किए प्राननाथ इनको सनाथ, दीन्हें जगाई गही आप हाथ।

जानो सरूप अपनों बनाई, हुलसे प्रसन्न प्रभु दरस पाई॥

स्यामा अरु स्याम सिरदार, दोई इन्द्रावती[3] जूइन अंग जोई।

तीनों सरूप झल झलति अंग, छत्रसाल मध्य राजति अभंग,

दिस-दिवस धाम देखत अखण्ड, दीनों उडाइ कलजुग उदंड॥

राखी उमंडि हिन्दुवान मेंड, वाचत न मलेच्छ डर बंधि ऐड,

जीते अनेक उमराव चन्द, डंडान, मार डंडे उदण्ड।

धक पकत धाक धाकत जहांन, कीरत उमंड चहूंचक्क आन,

लह लंहत लोह लहरानि गाह, जय लच्छ लेत रणसिंध थाह।

अरिमुंड माल हर को चढ़ाई, दीन्हों प्रताप जग में बढ़ाई,

सुख पाय राज दियौ तिलक भाल, भुवि अटल राज दिन दिन विसाल।

पूरन प्रभाव अति उच्च भाल, गुन-गुन अनंत नृप छत्रसाल॥

(राजविनोद, पृष्ठ सं. 41- 42)

---

1. परमधाम बिहारी अनादि अक्षरा तीर्थ श्री कृष्ण (श्री राजश्यामा) परमात्मा
2. महाराजा छत्रसाल की पर आत्म का नाम
3. महामति श्री प्राणनाथ जी के लिए प्रयुक्त

लालकवि के उक्त शब्दों को जो भी जिन चित्र में धारण करेगा, उसे महाराजा छत्रसाल, श्री प्राणनाथ प्रभु एवं श्री कृष्ण प्रणामी आधी श्रीमन निजानन्द संप्रदाय के प्रति निम्न धारणा से मुक्ति मिलेगी क्योंकि शत-प्रतिशत प्रामाणिक तथ्य पूर्वाग्रहों को सम्मान करने में पूर्ण सक्षम होते हैं बस।

उनका (छत्रसाल) कहना है कि उन्होंने जवाब (प्राणनाथ) को अपने यहां रखकर उनकी आलमगीर (औरंगज़ेब) से रक्षा की थी। जिसकी रक्षा की, उसके भक्त भला वे कैसे होंगे? भक्त तो वे राधा कृष्ण के ही थे। पन्ना नरेश आस्थावान थे। उन्होंने राम और कृष्ण की आराधना की। महाराजा छत्रसाल ने वैष्णव धर्म के इन राज्यों की वंदना स्वरचित छंदों में की थी। पंडित श्री निवास शुक्ल ने तो बड़े और पीड़ा के साथ लिखा है कि जो वीर पुरुष अपने धर्म संस्कृति और मातृभूमि की गौरव गरिमा के रक्षार्थ जीवन भर पराक्रम पूर्वक स्वाभिमान से और आस्था- विश्वासों के संदर्भ में परम वैष्णव, परम भागवत हो, उसे किसी भी जाती है अथवा विजाती शंकर संप्रदाय से बांध दिया जाए, यह उस महापुरुष के साथ और विशेषता है इतिहास के साथ कितना बड़ा अन्याय है।---(डॉ गंगा प्रसाद बसैया के लेख का अंश)

(राष्ट्र गौरव: छत्रसाल स्मारिका, छत्रप्रकाश: 3 जून उन्नीस सौ बयान में, पृष्ठ संख्या 28)

लाल कवि रचित राज विनोद में उल्लिखित रचनाओं से स्वस्थ प्रमाणित होता है कि महाराजा छत्रसाल परब्रह्म श्री कृष्ण अर्थात श्री राज परमात्मा के उपासक हैं और निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी उनके सद्गुरु हैं उन्हें पन्ना में हीरो का वरदान महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी से मिला था। वेद देव पुरुष हैं, छत्रसाल की महिमा भक्ति का बखां लाल कवि ने राज विनोद लघु काव्य ग्रंथ में निम्न प्रकार किया है, जो कि ब्रहम नाशक एवं ज्ञान दायक है---

॥लालकवि उवाच॥ ***परमधाम विहार वर्णनम्***

॥दोहा॥

गुन गन अनंत छत्रसाल कै, फैले सकल जहान।

एक जीभ मुख एक सों, क्यूं कवि करे बखान?

॥छंद तोटक॥

कवि क्यों लघु बुद्धि बखान करे, रसना मुख मंडल एक भरे।

गुनवृंद हियो हुलसात हैं, महि माफक सों कहि आवत हैं।

कुल मंडल श्री छत्रसाल भये, जिनके उरनित्य विलास छये।

नित राज सखिन को खेल जहां, परिपूरन ब्रह्म अखंड तहां।

---

1. छत्रसाल

पल को न विछोह तहां कबहूं, रस रंग सवाद लहें सबहु।

तिहि ठौर सकुंडल रूप धरे, उमगे छत्रसाल विलास करे।

नृप रूप धरे हम देखतु हैं, जग में धन जीवन लेखतु हैं।

कहि बुद्धि अनेक लड़ावतु हैं, कालि काल कराल निकंदन है।

सिर पै विज्याभिनंदन है, कालि काल कराल निकंदन है।

जन जो जिहि भांति भजे मन में, तिह को तिहि भांति फले छिन में।

सत शील सुधारस को दरिया, सु कवित्त जवाहिर को जरिया।

सरनागत भूपन को तकिया, पारब्रहम के प्रेम सदा छकिया।

(पृ. 42-44)

वास्तव में लाल कवि ने उक्त रचना में महाराजा छत्रसाल के आध्यात्मिक स्वरूप का समीचीन चित्रण किया है। जनमानस का एक पक्ष भले उन्हें (महाराजा छत्रसाल को) सामान्य आदमी वह मात्र वीर पुरुष ही मानता हो, परंतु वह (महाराजा छत्रसाल) परमात्मा की एक विशिष्ट अंगना हैं। जगत ईतल पर उनका प्रादुर्भाव नर रूप में धर्म स्थापन हेतु हुआ है। कल्कि अवतार महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी की उन पर अपार कृपा है।

लाल कवि ने महाराजा छत्रसाल के बल और उसका टोटक क्षणों में बड़ा ही हृदय ग्राही वर्णन किया है, समालोचक इतिहासकारों को समकालीन लाल कवि के इस वर्णन को इतिहास की अमूल्य निधि माननी चाहिए और अंतरात्मा में धारण कर लेना चाहिए।

॥छन्द तोटक॥

वट पार मवास उसालत हैं, ध्रुव धर्म सदा प्रति पालत है।

अमनैकन के घर खालत हैं, छत्र धारिन के डर सालत हैं।

रवि सो परताप पसारतु हैं, तम-तोम-मलिच्छ उसारतु हैं।

द्विज दीनन देख निमाजतु हैं, सब भूपन ऊपर राजतु हैं॥

दीन दान के खेत खरो न डगे, वर-वारन देत न वार लगे।

बगसे बहु देस कविन्द्रन कौं, मन भावत ते न नरेंद्रन कौं।

लखि भिक्षुक भीर हियो उमगै, घमसान में भानु सी ज्योति जगे।

जिहिं ओर दया करि नेक ढरै, कलपद्रुम से तिहि और फुकै।

---

2. छत्रसाल
3. निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ
4. निष्कलंक प्राणनाथ जी, (महाराजा छत्रसाल के सद्गुरु)
5. सकुंडल
6. यवनों
7. कविगण:

रन में जब तेग धरै विचरै, तब संभु जटा फटकारि नचैं।

परताप की झारन सो झुरसें, वरि बैर मिटे मधुसे मुर सें।

परचंड उदंड निदंडतु हैं, जसु उज्जल सों जगु मंडित हैं।

रन सिंधु विलोबनि मन्दर है, महि मंडल मध्य पुरन्दर हैं।

जिहि ओर घनी भट भीर परै. तिहि ओर उमंडि फतहु करै।

भट भीर लखें हिय में हर से, वर-वान धनञ्जय ज्यौ वरसै

दिगपाल दुरे चित्त चौंकतु हैं, द्रगदंत द्रिगदंत दौकतु हैं।

जग पार न पावे विक्रम को, बढ़े जिमि तेज छता नृप को।

जग जीवन जाग जगावतु हैं, परि ब्रह्म सरूप बतावतु हैं।

इमि लाल सदा गुन गावतु हैं, हिए और सरूप न ल्यावतु हैं।

(राजविनोदः पृष्ठ सं. 44-45)

लाल कवि रचित छात्र प्रकाश एवं राज विनोद में महाराजा छत्रसाल के जीवन- चरित्र को दर्शाया गया है। छत्रप्रकाश महाराजा छत्रसाल- चरित्र प्रधान है जबकि राज विनोद आध्यात्मिक ग्रंथ हैं। लाल कवि महान योद्धा एवं महान कवि थे, उनमें प्रेम लक्ष्णा भक्ति का भी विपुल अंकुर था, अतैववह पूर्ण ब्रह्म श्री राज परमात्मा के परम भक्त हैं 1 ग्राम श्री राज- परमात्मा के स्वरूप की जुगल झांकी को हृदय में बसाने की लालसा उनमें विद्यमान है, वह किसी समय भी छत्रसाल महाराजा को विस्मृत नहीं करना चाहते हैं। प्रस्तुत है राज विनोद की उप संहार रचना---

॥छप्पय कलस॥

इच्छा हैं अछिरन सखिय ब्रजमाँह बसाइय।

बाल विलास दिखाई रास रंग रमाइय।

अच्छर कहँ परतच्छ, धाम लीला दरसाइय।

सखियन विरह जगाय, जोगमाया उड़राइय।

सुरतें भ्रमाइ भ्रम जाल मह, लाल हेरि प्रेमन पग्यउ।

सखियन समेत छत्रसाल उर, सु जुगल सरूप जुग जुग जग्यउ॥

(राजविनोदः पृ. 45)

वस्तुतः लाल कवि की उक्त दोनों कृतियां क्रमशः ऐतिहासिक एवं धार्मिक हैं। इनका अनुशीलन हर मानव को करना चाहिए, जिससे ब्रह्म का निवारण होगा और इससे लौकिक एवं पारलौकिक सुख की अनुभूति होगी। इतना ही नहीं आसान बस हुई ऐतिहासिक भूलों का भी शमन होगा।

कवि मुरलीधर

कभी मुरलीधर महाराजा छत्रसाल के अप्रतिम व्यक्तित्व पर असीम स्नेह एवं श्रद्धा रखने वाले कवि गणों की श्रेणी में आते हैं। महाराजा छत्रसाल के आसींद व्यक्तित्व का प्रभाव कभी मुरलीधर पर उस समय पड़ा था, जब एक बार महाराजा छत्रसाल प्रयाग में त्रिवेणी संगम पर कवि गोष्ठी में पधारे थे। कभी मुरलीधर जी वस्तुतः प्रयाग के निवासी थे, वह भक्त हृदय वाले कवि थे, पर उनके अंतः करण में वीरों के प्रति आत्मीय लगाव था। इन्होंने महाराजा छत्रसाल का दर्शन जिस रूप में किया, उसका दर्द दर्शन निम्न कविता में है। यह समकालीन कवि थे, अतैवइनके कथन का ऐतिहासिक महत्व है।

ब्रह्म गुण बांधो एक नाम ही सों नांधों,

कुल आलम की शोभा, जग जालिम को शाल है।

देख आलम की शोभा, जग जालिम को शाल है।

देख दल दबि रहे औरंग से बादशाह,

कहै मुरलीधर याको याचक निहाल है॥

बल के विहिद्ध जोट बन्दन के रद्ध सब,

हिन्दुअन को हद्द (हृदय) एक चम्पति को लाल है।

जेते महिपाल ते ते देखियत, बीचमाल,

ताए-फेर फेर देखों तो सुमेर छत्रसाल है॥

॥कवित्त॥

वेद न पावत भेद कछू, मुरलीधर कैसे परे सो बखानो।

ये यह जान परी मत ते, जग तारन कारन सो डर आनो॥

आये कृपाल कृपा कर पूरन, बाल सखा छत्रसाल को जानो।

गोकुल ज्यों तबके अबके, परना झरना निज को मनमानो॥

दान कवि

दान कभी महाराजा छत्रसाल के समकालीन कवि हैं। इन्होंने एक लघु प्रबंध काव्य की रचना की है जिसका नाम छत्रसाल जूदेव को कटक बंद है। इस प्रबंध काव्य में महाराजा छत्रसाल का तीसरे बंगस-युद्ध में हुई विजय का वर्णन भी प्रमुखता से दिया गया है। बुन्देली सेना के बलिदानी वीरों को भी इसमें श्रद्धांजलि अर्पित की गई है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह काव्य प्रबंध अति उपयोगी है। कुछ एक इतिहासकार इसे छत्रप्रकाश का पूरक ग्रंथ मानते हैं। प्रस्तुत है इस प्रबंध काव्य के कुछ अंश---

जो यह कथा चित्त दै सुनै, छत्रसाल की नामा गुनै।

होत विहानी जपि है जाप ताकौ बाढ़े बड़ों प्रताप।

---

1. (i) संवत् सत्रह सै बरस, चौरासी की साल। चौथ सनीचर जेठ सुदि, जंग जुरौ छत्रसाल॥
   (ii) डॉक्टर बी डी गुप्ता के अनुसार 12 वर्ष 1727 ई.

दान कवि के इस प्रबंध काव्य में तत्कालीन राजनीति का भी खुलासा होता है। प्रस्तुत अंश शोधनीय है--

लै कें वरदान छत्रसाल महीप सौं।

करी दगाबाजी मुहम्मदखां गुर सौं

ओरछे को राजा और दतिया को राऊ।

संग करै प्रीति भाऊ हेतु राखत असुर सौं॥

बंगस ने इस युद्ध के बीच में दिल्ली नरेश मुहम्मद शाह से जब सहायता मांगी थी,तब उसके जवाब को पढ़कर बंगश के पैर उखड़ गए थे। यथा---

पातसाह को लिखी नवाब (बंगस), मैरौ सबै घटो असवाब।

जूझि गये संगी उमराऊ, क्यों करि टिकै हमारे पांव॥

फेरि जवाब लिखै सुल्तान, मारे जैहो महमद खान।

आबत बनै हजूरै आऊ, नातर बसर करौ मरिजाऊ॥

बुन्देला विषहर की जाति, को लै आबै तेरी भांति॥...

(कटकबंध)

युद्ध में परास्त बंगश ने जब महाराजा छत्रसाल से भेंट की थी, इस संदर्भ में कटक बंद में जो उल्लेख मिलता है, वह इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। यथा:--

दीन हीन पाइन परो, छोर धरै हथियार। महंमद खां मांगी विदा, उतरै पैलेपार॥

आयामलु आए सनमुख बुलवाये तिन्हैं। आगै दै ल्याये मिले उकलाई उर सौ॥

बावन हजारी उमराई में महमद खां खोई, जैतवारी जेऊ पाई बौई कुरर में॥

धोकें और गढ़नि कौ लखौ आनि। बीत गै बरसैं जगतराज धूर सौं॥

जानी सब जग में पानी गयौ बंगस कौ। यारौ निरबारौ हम हारे जैतपुर में॥

दख्खिनी दलु विदा हो कै गयौ अपने देस, लेहू जसकौ तिलकु याकौ छत्रसाल नरेस॥

कवि-मण्डल 283

(ब) वीतक काव्य

श्रीमन्निजानंद संप्रदाय के वीतक साहित्य में

महाराजा छत्रसाल

प्राक्कथन

महाराज ने अपने सदगुरु श्री प्राणनाथ महाप्रभु को अपनी राजधानी पटना में अविचल प्रवास दिया था और उनकी सेवा साक्षात परमात्मा जानकर की थी। महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के साथ रहने वाले ब्रह्म मुनि सुंदर 7 से महाराजा छत्रसाल जी का आत्मीय संबंध रहा है। अटैक निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी का जीवन चरित्र लिखने वाले ब्रह्म मुनियों ने महाराजा छत्रसाल जी के अलौकिक जीवन पर भी प्रकाश डाला है (परंतु उनके अलौकिक चरित्र पर नहीं)।

श्रीमन्निजानंद संप्रदाय मैं जीवन चरित्र लिखने की अच्छी परंपरा रही है। इन ग्रंथों को वित्त को के नाम से जाना जाता है। यह सभी मृतक कार महाराजा छत्रसाल कालीन हैं अतैवइनकी वितरकों को आंखों देखा हाल अथवा समकालीन डायरी कहां जा सकता है, इनमें यत्र तत्र तत्कालीन देश काल परिस्थिति की भी झलक देखी जा सकती है। प्राय इन्हीं तक ग्रंथों में श्री प्राणनाथ-छत्रसाल मिलाप

(वि.सं. 1739- 40) से श्री जी के अंतर्ध्यान (वि.सं. 1751) तक ही महाराजा छत्रसाल की गतिविधियों का भान किया जा सकता है। कुछ प्रमुख वित्त के निम्न हैं---

1. स्वामी लाल दास कृत वीतक
2. स्वामी नवरंग कृत तक
3. स्नेही सखी कृत अभी तक लीलारस सागर
4. स्वामी वृज भूषण पृथ्वी तक वृतांतमुक्तावली
5. मक्सी हंस राज कृत वितक महाराज चरित्र;

1. स्वामी लालदास जी

स्वामी लालदास जी का प्रादुर्भाव पोरबन्दर (गुजराती) में 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था (इतिहास इनके जन्म तिथि पर मौन है)।इनका अवसान वि.सं. 1751 में बी तक लिखने के उपरांत माना जाता है, लेकिन इनके लिखित अन्य ग्रंथ भी हैं, अतैवइनका अवसान कॉल मी तक पूर्ण होने के कुछ वर्ष बाद ही मानना चाहिए, क्योंकि लिखे गए ग्रंथ प्रकार के हैं। स्वामी लाल दास जी ने अभी तक ग्रंथ वि.सं. 1751 शर्मा कृष्णा पंचमी से लिखना प्रारंभ किया था और वि.सं. 1751 की ही भादो कृष्ण अष्टमी

को पूरा कर दिया था। अल्प दिनों में लिखा गया यह व्रत ग्रंथ विश्व का अनूठा एवं एकमात्र प्रमाणिक अभी तक ग्रंथ है। स्वामी लाल दास जी की मुलाकात महाराजा छत्रसाल से वि.सं. 1739 के माघ मास में मऊ (सहानियां) में हुई थी, तभी से यह दोनों दो त न थे पर आत्मा से एक थे, गुरु भाई के रूप में अभिन्न रहे हैं। स्वामी लाल दास जी ने छत्रसाल एवं श्री प्राणनाथ जी के प्रथम मिलाप का वर्णन निम्न प्रकार किया है---

तब चले आप परने से, मऊ पहुंचे जाए॥20॥

मऊ में तिदुनी दरवाजे, डेरा किया वाहिं ॥21॥

महाराजा छत्रसाल जी की श्री प्राणनाथ जी पर अपार श्रद्धा थी, इसका उल्लेख भी तक के निम्न दोहे से मिलता है---

और बात हमारी ए सुनो, जो ए बात सुन ल्यावे ईमान।

छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरवान॥90॥ (वीतक, प्रक. 60)

बी तक ग्रंथ एक समकालीन इतिहास- वृत्त (डायरी) है, इनमें स्वामी लाल दास जी ने महाराजा छत्रसाल के आध्यात्मिक जीवन पर प्रकाश डाला है, फिर भी बुन्देलखण्ड की तत्कालीन राजनीति के अंश स्वतः ही घटनाओं के जिक्र में रेखांकित हुए हैं। यथा---

जब आए रामनगर में, तब पुरदल खान।

कुफर दिल में लेय के, जाए कहो राजा के कान॥12॥

जब मारी लड़तपुर, तब हुआ असवार।

आवत भेंटा राह में, तब भागा हुआ खुवार॥16॥

बाईस असवारो मारी, फौज तीन हजार।

भागा जाए भेड़ ज्यों, बिना तेज देखा खुवार॥17॥

फौज लेके आइया, गौर सों करी मुलाकात।

लड़ाई सफजंग की, नाम निसान न रही कछु आस॥18॥

त्यों ही मिठ्ठू दौडिया, मारा उन्हें चमार।

खुवार दुनियां मिने, छुट गया अख्तार॥20॥

---

1. वि.सं. 1739 में
2. औरंगज़ेब का एक सिपहसालार उर्दल खां
3. औरंगज़ेब
4. छत्रसाल के 22 अश्व आरोही
5. भीड़ बनकर प्रदर खां का भागना
6. उदल कहां का एक साथ ही जागृत आर गॉड
7. मिट्ठू पीरजादा मुग़ल सेनापति
8. वि.सं. 1744-1745 में

लै मुहिम खटोला की, राजा ओरछे के।

उतही पटक्या हुकुमें, जड़ समेत उखाड़े॥21॥

फेर जेतपुर के राजा ने, यहां आए मुहिम करी।

ताको खुवार ऐसा किया, पूरी लानत उतरी॥22॥

फेर ओरछा के राजा का, आया दौवा खटोले पर।

खुवार हुआ भली भांत सो, फिरा स्याह मुंह लेकर॥23॥

फेर राजा के मुलक लिए की, पहुंची खबर नौरंगाबाद।

सुन साह ने रणमस्तखां को, फौज लेके भेजा विवाद॥24॥

फेर रनमस्त खां ने, पातसाह के हुकुम।

सात मजल आइया, लिखा के फेर जाओ तुम॥26॥

फेर पंडित ओरछे के चढ़ आए लड़ने।

तब मारा मुलक ओरछे का, मुस्किल हुआ रखना अपने॥27॥

फेर राणा परतासिंह ने, बुरी करी नजर।

तो ख्वारी आपस में भई, हे क्यामत की फजर॥29॥

वि.सं. 1739-1745 के बीच बुन्देलखण्ड में जो कुछ घटा था, उसका यह सारांश स्वामी लाल दास जी ने अभी तक में लिखा है। इसके गहन विवेचन से तत्कालीन राजनीतिक क्षेत्र को इतिहास के गर्भ से प्रकाशित किया जा सकता है। अभी तक में लिखी घटनाएं मौजूदा इतिहास से मेल खाती हैं, अभी तक ग्रंथ ऐतिहासिक ग्रंथों की कोटि का है। अस्तु इसमें वर्णित महाराजा छत्रसाल के चरित्र को नकारा नहीं जा सकता है। छत्रसाल 14 लोगों के सरदार हैं, जिनकी राजधानी पटना में है--- यह कथन पूर्णतया सत्य है, जिसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। यथा---

तब लिया हकें दिल में, ए जो चोदह तबक।

तिनमें जंबूद्वीप में, भरत खण्ड बुजरक॥4॥ पृ. 62

तिनमें विसेख देख के, ए जो खण्ड बुन्देल।

कायम सिफत तिनको, जो तीसरा तकरार लैल॥5॥

तामें सिरे सिरदार की, ए जो परना ठौर।

तिनमें सिफत छत्रसाल की, नहीं पटन्तर और॥6॥

महाराजा छत्रसाल, अपने सद्‌गुरु महाप्रभु प्राणनाथ जी की सेवा में समय पाकर अवश्य उपस्थित होते थे, अभी तक में उनके द्‌वारा ढोल आने की सेवा का उल्लेख मिलता है।

---

1. वि.सं. 1744 में
2. यहां पर निर्वाचित औरंगज़ेब रह रहा था
3. पूर्ण ब्रहम परमात्मा श्री राज जी महाराज

संकर हाथ में रहत हैं, हमेसा ही बिजने।

जब महाराजा आवत, वाऊ ढोलें इन समे॥13॥

और साथी सब ढुलावत, जहां लग पैढ़त श्री राज॥14॥

महाराजा छत्रसाल ने अपनी आस्था को सद्‌गुरु के प्रति निम्न रूप में व्यक्त किया है---

एही टीका एही पांवडा, एही निछावर आए।

श्रीप्राणनाथ के चरन पर, छत्ता बलि-बलि जाए॥56॥

साथ समस्त के बीच में, जुगल धनी बैठाए।

कही तुम साक्षात अक्षरातीत हो, हम चीन्हें तुमें बनाए॥58॥

पहिले दाता हम भए, गुरु को दीनो सीस।

पीछे दाता गुरु भए, सब कुछ कियो बकसीस॥63॥

(प्रकरण 60)

महाराजा छत्रसाल जी को जो शोभा इस संसार में मिली, वह न भूतो न भविष्यति वाली है। निसंदेह तक में यह चरित अति पावन है। निम्न अभी तक वचन इतिहास की अमूल्य धरोहर है।

विज्याभिनंदन बुद्‌ध जी, ब्रहम सृष्टि सिरताज।

हाथ हुकम छत्रसाल के. कही आप बैठो महाराज॥65॥

बजी बधाई नृपति के, करी आरती प्रान।

सब जनसों महाराज जू, करयो प्रणाम प्रमान॥66॥

सकुंडल सोभा भई, प्रगट भई पहिचान।

छत्रसाल छत्ता हुआ, कव्हा सुन्दरबाई जोए।

आप दिखावत अपनी, कही सकुंडल सोए॥68॥

स्वामी लालदास पृथ्वी तक में महाराजा छत्रसाल जी के परिवेश में हृदय ग्राही नीर चीर्वत विवेचन विद्यमान है। महाराजा छत्रसाल जी ने श्री प्राणनाथ जी की सेवा

---

1. महाराजा छत्रसाल,
2. विजई अभिनंदन बुद्ध का लेख महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी,
3. जैसे शुक्ला तृतीया,वि.सं. 1740 की गोधूलि बेला के समय महाराजा छत्रसाल को राज्य तिलक किए जाने के समय के वचन हैं।
4. महाप्रभु प्राणनाथ जी के सद्गुरु निजानन्द स्वामी शनि देव चंद्र जी की वासना का नाम:
5. महाराजा छत्रसाल की परम था मस्त वासना (आत्मा) का नाम:

किस प्रकार की है, उसका भी तक में निम्न प्रकार का उल्लेख है

श्रीमहाराजा आवत बैठत चरचा में।

श्रवना देत सनेह सौ नफा पावत खलक इनसे॥

जब महाराजा पहुंचही, उठावत पकड़ हाथ।

महाराजा मोर छल किये, बाजू चंवर ढोराये।

इन समै आये पहुंचे श्री महाराजा जब।

अंग पोछन हाथ पकड़न की सेवा करत हैं तब॥12॥

इत महाराजा आवत पहिनावत हैं सिनगार।

पहिनावत पीटी बदलें, दई अपने हाथ उतार॥

महाराजा अरोगावहीं, अपने हाथ तम्बोल।

श्रीराज-रीझ के कहत हैं, कोई नहीं सेवा इन तौल॥

(वीतक: अष्ट प्रहर)

2. स्वामी नवरंग जी

स्वामी नवरंग जी का जन्म 1705 संवत् में सूरत नगरी में जेटली नवमी बुधवार को श्री राघव जी के घर श्री कुंवर बाई के कोख से हुआ था। वह 25 वर्ष की आयु में निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी के साथ घर द्वार छोड़कर जागरण अभियान पर चल पड़े थे और श्री प्राणनाथ जी के संग ही पन्ना पधारे थे।स्वामी नवरंग (मूल नाम मुकुल जी महाराजा छत्रसाल के प्रमुख सलाहकार भी कहे गए हैं। यह महान विद्वान थे तथा हिंदी के अलावा संस्कृत गुजराती अरबी के भी एक अद्वितीय विद्वान थे। कहा जाता है कि इन्होंने 33 ग्रंथों के अतिरिक्त नवरंग सागर नामक एक विशाल ग्रंथ भी लिखा है जिसमें 26000 चौपाइयां हैं। इन्होंने अपने एक लघु ग्रंथ बैठक में तत्कालीन परिवेश में महाराजा छत्रसाल और उनकी परिस्थिति का वर्णन भी किया है

स्वामी नवरंग जी को महाराजा छत्रसाल ने अपना धर्म दूत बनाकर धर्म प्रचार हेतु राजस्थान प्रांत भेजा था। उन्होंने 23- 24 वर्ष उदयपुर रहकर वि.सं. 1775 की माघ बदी दशमी को शरीर त्यागा था। वहीं पर उनकी समाधि भी बनी है।

---

1. वृत्त, 2. कीर्तन वृत्त, 3. कीर्तन जन्मोत्सव, 4. केदार गुजराती, 5. योगारंभ, 6. कीर्तन, 7. रोशननामा, 8. हिंडोला, 9. तांत्रिक मत, 10. अष्टपदी, 11. गुरु शिष्य संवाद, 12. छांदोग्योपनिषद, 13. गीता रहस्य, 14. काजी की जकड़ी, 15. जकड़ी, 16. रेखता, 17. रामत मूला, 18. स्फूट पद, 19. चिद विलास, 20. षटशास्त्र, 21. सुंदर सागर, 22. लीला प्रकाश, 23. वीतक, 24. रास, 25. रस सागर, 26. भगवत गीता, 27. खोज के कीर्तन, 28. रोशननामा, 29. कीर्तन ठकुराणी जी के जन्म, 30. पंद्रह आंकड़ी, 31. तारतम प्रणालिका, 32. कबीर की खोज, 33. मूल संबंध तथा, 34. नवरंग सागर।

नवरंग स्वामी ने अपनी रचित तक में दिल्ली से पन्ना छत्रसाल थर्ड नामक प्रकरण में महाराजा छत्रसाल की समकालीन परिस्थिति पर प्रकाश डाला है जो इतिहासिक धरोहर है। किया था---

दिलीपति ने द्वंद मचाए, तब हम मूलेर मध्य जो आए॥36॥

अब हुकम धनी को पाऊं, राजा छत्रसाल पें जांऊ।

करी आग्या आप जो जैसी, हुई देवकरन से तैसी॥43॥

पहिले बलदीवान मिले आई, चरचा सुनत वस्तु लखि पाई॥46॥

॥**दोहा**॥

श्रीजी से जयराम करी, बैठे तितहीं दूर।

बाबा आ आवो यहां कहि, लिए बुलाए हजूर॥

राजा चरणो आए तब आगे, देखत प्रेम परम रंग पागे।

जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को जो ज्ञान सुनाया था उसे व्यास जी ने लिपिबद्ध गीता के रूप में किया था। उसी प्रकार से निष्कलंक परमात्मा श्री प्राणनाथ जी ने बुन्देलखण्ड (पन्ना में छत्रसाल को जो ब्रह्म ज्ञान सुनाया था, उसे स्वामी नवरंग ने लिपिबद्ध गीता रहस्य के नाम से किया है। इसमें 18 अध्याय और 400 दोहे हैं (जबकि गीता में 700 श्लोक हैं। गीता के मूल रहस्य को गीता रहस्य में प्रमुखता के साथ खोला (स्पष्ट किया गया है।

परमहंस नवरंग स्वामी ने अभी तक के संप्रदाय विवेचन अध्याय में निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी के महाराजा छत्रसाल के ऊपर रखे वरद हस्त का वर्णन इस प्रकार किया है।

यथा---

1. औरंगज़ेब
2. स्वामी नवरंग जी (वीतक-रचनाकार)
3. एक स्थान
4. महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी
5. हिंदू कुल गौरव चम्पत सुअन महाराज
6. आज्ञा
7. अंगद राय के पुत्र एवं महाराजा छत्रसाल के भतीजे
8. खास परिवारी जन
9. महाप्रभु प्राणनाथ जी
10. महाराजा छत्रसाल के लिए प्रत्युत्तर में प्रयुक्त शब्द
11. महाप्रभु प्राणनाथ जी
12. दीक्षा मंत्र
13. महाराजा छत्रसाल जी

॥चौपाई॥

निजनाथ वृन्दावनचन्द सोई, तारतम ल्यायो सतगुर सोई।

सो सुनायो श्री आप देवचन्दे, दियो भेद मूल मंत्र आनन्द कन्दे॥12॥

भये ताके दोऊ विंदनाद धारी, जी साहेब नाद बिंद बिहारी।

निज विन्द नौतनपुरी में राजे, निज नाद श्री परने विराजे॥13॥

जिने करी कृपा छत्रसाल साथे, धरयो तेज नवरंग नाथे॥14॥

॥दोहा॥ जेने छत्रसाल महाराजा, कियो अभ्यानन्द दई।

तेने अथर्वन वेद विस्तार, कियो पुरी परना जई॥9॥

(वीतक प्रकरण 26)

स्नेह सखी

स्नेह सखी कृत अभी तक लीला रस सागर का श्री मंदिर जा नंद संप्रदाय में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इनके लौकिक जीवन संदर्भ में कोई जानकारी नहीं मिलती है। हां, इनकी आत्मा का नाम स्त्री सकी है, जिसे उन्होंने स्वयं लिखा है। स्नेह सखी के सद्गुरु महाराजा छत्रसाल जी हैं। अतैवइनकी भी तक का महत्व में ऐतिहासिक कोटि का है।

स्नेह सखी ने श्री प्राणनाथ एवं छत्रसाल का दिव्य मिलन (वि.सं. 1739-40 एवं पन्ना की हकीकत का स्वरचित कविता के उत्तरार्ध में चित्रण किया है। सारांश में, यह अभी तक अध्यात्म तत्वों के साथ-साथ तत्कालीन इतिहास पर भी निष्पक्ष रूप से प्रकाश डालती है। यथा--

मऊ में तिदुनी दरवाजो जाहीं, डेरा कियो आपने ताहीं।

राजा भेष बदल के तित, दर्शन कीन्हो आए के इत॥18॥

एक हकीकत कही आगे राज, उठे तहां से श्री महाराज।

गए जब अपने मोहोल के माँही, कही वीतक आज मैं यो ताहीं॥25॥

इन विध अंदर जाय के कही, सुनी बात सबन ने सही।

रानी देवकुंवरि थी मऊ मांहीं, सुनी मुख महाराज से ताहीं॥26॥

1. श्री निजानन्द स्वामी श्री देवचंद्र (बुद्धा अवतार के नाम पुत्र श्री प्राणनाथ प्रभु:
2. महामद हुकुम में कछु गायी, कृपा कर सा कुंडल दमोह दर्शाइए
   बाद में
3. छत्रसाल महाराजा
4. महाराजा छत्रसाल के धर्मगुरु श्री प्राणनाथ जी
5. चम्पत सुमन छत्रसाल
6. महाराजा छत्रसाल कीजिए थी रानी

बाल दीवान महाराज इत आए, करी श्रीराज से भेंट बनाए।

श्री महाराज को समै जो तिन, हती महुम ऊपर अफगन ॥28॥ (प्रक. 70)

उपर्युक्त कथन वि.सं. 1739 की समापन बेला का है।

॥सखी॥

साकुंडल शोभा भई, प्रगट भई पहिचान।

छत्रसाल छत्ता हुआ, छिपे सबे सुल्तान॥72॥

हस्ती पर चढ़ाए श्रीराज, आगे सेना चलाई महाराज।

राठ खड़ोत जलालपुर जे, नजीक कालपी के आए पहुंचे॥77॥

जब ओड़छे के राजा खटोला लियो, हुकमें ताहि उलटाए दियो।

श्री महामत हुकमें कहायके, कीन्हों रहस प्रकास।

सखी साकुंडल ने दयो, सनेह को सुख अविनास॥135॥

अतैव प्रस्तुत ग्रंथ के माध्यम से संन् हे सखी ने महाराजा छत्रसाल की उत्तम भक्ति का यथार्थ निरूपण किया है।

ग्रंथ के प्रत्येक प्रकरण के अंत में उसने सखी ने से कुंडल सखी का नाम (महाराजा छत्रसाल के आध्यात्मिक नाम का उल्लेख विविध रूपों में किया है, जिससे स्पष्ट होता है कि यह रचना इन्होंने छत्रसाल महाराजा के सानिध्य में रहकर की है। इस ग्रंथ का रचनाकाल वि.सं. 1755 के आसपास है।

श्रीमद्भागवत के 12/1/37 में वर्णित भविष्यवाणी की पूर्ति महाराजा छत्रसाल के प्रादुर्भाव से पूर्ण हुई है, ऐसा भी तक कार्य निम्न वत दर्शाया है---

---

1. महाराजा छत्रसाल के परिवारी जन
2. औरंगज़ेब का एक सेनापति
3. छत्रसाल की आत्मा का नाम
4. छत्रपति
5. सम्राट अर्थात राजा गण
6. महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी
7. तत्कालीन समय में उत्तर भारत से बुन्देलखण्ड का यह प्रवेश द्वार, यह नगर यमुना तट पर स्थित है
8. ओरछा राज्य
9. राजा भगवंतसिंह ओरछा नरेश
10. महाराजा छत्रसाल के अधीनस्थ एक परगना (कस्बा)
11.

वीर्यवान क्षत्री सोई, उत्पन्न होय जो ताहि।

राज्य करे अरि नासकर, रत परब्रह्म के माहिं॥33॥

अनुगंगा जो नर्मदा, तहां से प्रयाग लौं जान।

राज करे देवी को, तहां ब्रह्ममुनि को बास।

पुरी करे ता देस को, तहां ब्रह्ममुनि को बास।

पुरी पद्मावती में रहे, पुरुष अखंड अविनास ॥37॥

(लीलारससागर, प्र० 71)

स्वामी बृजभूषण जी

स्वामी श्री बृजभूषण जी का प्रादुर्भाव ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता एवं पिता महा महाप्रभु प्राणनाथ जी के ब्रह्म ज्ञान से प्रभावित हुए थे पूर्व राम शास्त्रार्थ में परास्त अपने पिताजी का बदला लेने वह पन्ना पधारे, तब उन्होंने महाराजा छत्रसाल से शास्त्रार्थ किया था। महाराजा छत्रसाल के दिव्य ज्ञान को सुनकर वह नतमस्तक हुए थे और उन्हें अपना सद्गुरु बनाया था। यह घटना वि.सं. 1751 में महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी के भ्रम योग में लीन होने के उपरांत की है। उन्होंने महाराजा छत्रसाल जी के आदेश पर एक व्रत ग्रंथ की रचना की है, जिसका नाम श्री वृतांतमुक्तावली है जो भी

तक परंपरा के अनुरूप है। उन्होंने अनेकों ग्रंथों की रचनाएं की हैं आप संस्कृत के उद्भव विद्वान थे। काशी में लंबे समय तक रहकर आपने विद्द्याध्यन किया था।

वृतांतमुक्तावली में बुन्देलखण्ड के तत्कालीन देश काल का भी सामाजिक उल्लेख मिलता है। तत्कालीन समय में समग्र परिवेश महाराजा छत्रसाल मैं था, बात चाहे गंग- जमुना ज्ञान सरिता की हो अथवा धर्म पुनरुत्थान की। इस समय देव- राज्य की स्थापना हो चुकी थी। महाराजा छत्रसाल ने मलेच्छ उन्मूलन कर डाला था। सर्वत्र सुख समृद्धि का वातावरण छाया हुआ था। चक्रवती नरेंद्र महाराजा छत्रसाल इंद्र की भांति बुन्देलखण्ड में स्थापित थे।

---

12. छत्रपति छत्रसाल महाराजा
13. कुंडल अर्थात महाराजा छत्रसाल
14. बुन्देलखण्ड
15. कालजई महाराजा छत्रसाल के सद्गुरु निष्कलंक महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी
16. सदगुरु श्री छत्रसाल को, विमल सुखद संवाद।
    ब्रजभूषण सद्गुरु कृपा, वर्ण भेद अनाद॥ (वृतांतमुक्तावली, प्रकरण 78/ 61)
17. स्वामी बृज भूषण, महाराजा छत्रसाल के कुल पुरोहित पूरनलाल शास्त्री के दत्तक पुत्र थे और पंडित बद्री दास इनके पिता महा थे। काशी में रहकर इन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की थी।

कलि दज्जाल कप्यो यहां, करयो जनन मिलि सोर।

भये एकतें दोइ ये, चलै न मेरो जोर ॥24॥

छत्रसाल सेवा करी, निज परना में आइ।

भयो न आगे होइगो, समझौ हिये मिलाइ ॥25॥

महाराजा अधिपति भये, महाराजा छत्रसाल।

राजन में राजा भये, असुरन केरे काल ॥26॥

(प्रकरण 65)

उक्त वचन महाराजा छत्रसाल के परिवेश में इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। महाराजा छत्रसाल की असीम सेवा भाव के कारण एवं राज्य के सुचारू पूर्वक संचालन हेतु श्री प्राणनाथ प्रभु ने इन्हें हीरो का

वरदान दिया था, तभी से पन्ना के इर्द-गिर्द हीरो की खाने आज भी बहुमूल्य संपदा उगल रही हैं। इसी परिवेश में प्रस्तुत हैं निम्न वचन (वृतांतमुक्तावली प्रकरण 79)। यथा---

॥प्राणनाथ उवाच॥

तुम तें प्रगट भयो फल सोई। दिन दिन प्रताप अति होई ॥

सेवा काज साथ फल धीरा। उगलै बसुधा तब बहु हीरा ॥10॥

चित्त नहिं होइ सेव में ऊनौ। बढ़े प्रताप दिनोदिन दूनौ ॥

कुल तें घटै साथ की सेवा। जाइ खड़ग बल कर तें भेवा ॥11॥

हानि द्रव्य की अति बहु होई। घर घर कुटुम फिरै सब जोई ॥

फिर तुमसे कुल हुहै ऐसो। लेहै धर्म यथारथ जैसो ॥12॥

देहै मेटि सकल पाखण्डा। वाक्य जोर कुल करै प्रचंडा ॥

इहि बिध ज्ञान खड़ग को धरि है। ब्रह्मसृष्टि को प्रगट सु करि है ॥14॥

स्वामी ब्रजभूषण जी ने उक्त भविष्यवाणी में महाराजा छत्रसाल की कुल परंपरा की सेवा पर प्रकाश डाला है। परब्रह्म परमात्मा के तेज स्वरूप प्राणनाथ जी के मुख से निकली उक्त भविष्यवाणी है, जिस पर रंच मात्र भी संदेह की संभावना नहीं है।

स्वामी बृज भूषण जी ने महाराजा छत्रसाल जी के आध्यात्मिक स्वरूप का ही चित्रण प्राथमिकता से किया है पर लौकिक जीवन- चरित्र का लेखन उन्होंने नहीं किया है, वस्तुतः परमहंस स्वामी जन तो परमात्मा- भक्त में अखण्ड डूबे रहते हैं, उन्हें संसारी चित्रण करने में राग नहीं रहता है। निम्न दोहे में उनके भावों की अभिव्यक्ति परिलक्षित रही है--

छत्रसाल पूरन सकल, समझ धरी उर मांहि।

बरन्यो ताको एक लव, ब्रजभूषण लखि तांहि ॥ (प्र. 91/11)

स्वामी ब्रजभूषण जी ने संभवत है संदर्भित ग्रंथ (वृतांतमुक्तावली) की रचना वि.सं. 1755 के आसपास की है।

बखशी हंसराज जी

बख्शी हंसराज महाराज का जन्म वि.सं. 1740 में हुआ था। महाराजा छत्रसाल जी, महाराजा हृदयशाह, महाराजा सभासिंह एवं महाराजा मानसिंह के समय तक यह दरबारी कवि रहे हैं। इन्होंने वि.सं. 1803 में मिहिर राज चरित्र (मिहचरित्र) की रचना की है। इस ग्रंथ की रचना में उन्होंने पूर्ववर्ती वितरकों का सहारा लिया है, खासकर स्वामी लाल दास रचित तक का। बक्शी हंसराज जी के पिता पन्ना में दीवान थी। इनका नाम मुरलीधर था, इन्हें पन्ना राज्य की ओर से बख्शी का खिताब मिला हुआ था। अतैवइन्हें बख्शी हंसराज के नाम से प्रसिद्धि मिली थी।

बक्शी हंसराज रचित मिहराज चरित्र में महाराजा छत्रसाल के जीवन- चरित्र पर विस्तृत चर्चा नहीं है, अपितु पूर्ववर्ती भी तक कारों की भांति उनके आध्यात्मिक जीवन को दर्शाया गया है। उन्होंने श्रीजी से श्री छत्रसाल का मिलाप निम्न प्रकार किया है---

गहिरवार छत्रसाल बुन्देला। अति प्रसिद्ध जग में जनु बेला ॥50॥

सूरज मऊ प्राणपति आये। सुनत खबर राजा उठि धाये

आदर करि आगे दै लीनो। दर्शन देखि प्रेम रस भीनो ॥60॥

पायन लागि दण्डवत् कीन्हीं। निसंदेह ये धनी हमारे ॥62॥

बलदिवान आये तिहिबारा। लिए संग बहुतक सिरदारा।

केतिक और भतीजे भाई। तिन सों नृपति भेंट करवाई ॥69॥

सब मिल प्रभु के पायन लागे। पूरन परम प्रेम अनुरागे ॥70॥ (प्रक. 55)

मिहराज चरित्र में महाराजा छत्रसाल के जीवन के उत्तरार्ध की झलक नहीं मिलती है जबकि ग्रंथ की रचना निष्कलंक प्रभु श्री प्राणनाथ जी के समाधि स्थल (वि.सं. 1751) होने के (52) बावन वर्ष बाद (वि.सं. 1803) में हुई है। इस रचना काल के समय में महाराजा छत्रसाल के प्रपौत्र महाराजा मानसिंह बन्ना की गाड़ी पर विराजमान थे।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास में बक्शी हंसराज का उल्लेख किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनके जन्म संवत् गुरुगादी आदि का उल्लेख गलत किया है, जबकि स्वरचित ग्रंथों से स्पष्ट है कि इनका जन्म संवत् है 1740 में हुआ है, इस गादी का प्रचार प्रसार स्वयं महाराजा छत्रसाल जी ने किया था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनके रचित ग्रंथ चंद्रिका को रामचंद्रिका करके लिखा है। इन भ्रांतियों का प्रमुख कारण यह रहा है-- आचार्य रामचंद्र शुक्ल को प्रणामी-साहित्य उपलब्ध ना हो पाना।

बक्शी हंसराज जी ने महाराजा छत्रसाल के वंश का वर्णन राज्य चंद्रिका प्र. 1 में निम्न प्रकार किया है---

कासीसुर पंचम प्रबल, गहिवार रवि वंश।

छितपति चंपत राई हुव, कुल बुन्देल अवतंस ॥11॥

हुव नृप चंपति राई सुअ, छत्रसाल भुवपाल।

जिहि डर डरपति नित रहत, जग्यो कठिन कलिकाल।

जग अधार अवतार हुव, छत्रसाल छितपाल ॥14॥

तप्यौ तरनि सम तेज अति, अवरंग साहि अमान।

छत्रसाल छित छत्र वै, लिए बचाई हिंदवान ॥15॥

तप्यौ अवनि पर तरनि लगि, जालिम आलमगीर।

भयौ छ्ता ता तखत कौ, दावन दावगीर ॥16॥

औअल समूद्र समुद्र लति, आयो उमड कराल।

गयौ अचै करवाल कर, वै अगस्त छत्रसाल ॥20॥

निरखि-निरखि जिहि लहत जगु, द्रग चकोर आनंद।

अवनि और उडगनि नृपति, छत्रसाल पूरन चन्द ॥21॥

बक्शी हंसराज महाराज गुरु शिष्य के आत्मबोध पर भी प्रकाश डाला है। सिदूनी दरवाजे (मऊ) पर प्रथम मुलाकात के पश्चात महाराजा छत्रसाल अपने निवास से चोपड़ा (पन्ना के समीप) मैं महाप्रभु प्राणनाथ जी को ले गए थे। मऊ में तारतम में ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत यहां कुछ समय विशेष निकालकर महाराज ने ब्रहम चर्चा की अभिलाषा प्रकट की थी, उसी का दिग्दर्शन मिहराज चरित्र प्र. 56 में निम्न प्रकार है---

॥चौ.॥

ढूंढे जहं तहं देश विदेशा, साकुण्डल तुम मिले नरेशा।

अब अखण्ड लीला समझाऊं, मोह नीद तें तुरत जगाऊं ॥6॥

1. रचनाकाल: माघ शुक्ला पंचमी वि.सं. 1789 (महाराजा हृदयशाह के शासंन्काल में)
2. भूषण
3. शेष साईं श्री नारायण भगवान
4. पृथ्वी के रक्षक- सम्राट अर्थात छितीश
5. सूर्य
6. पी लिया
7. एक ऋषि का नाम जो समुद्र पी गए थे।
8. धन्य धन्य सुन नरेश के वचन सुहाये, श्रीजी अति आनन्द उरछाये ॥3॥
   धन्य धन्य तुम नृपति छतारे, सुनौ श्रवण दै बचन हमारे ॥4॥ प्र. 56

(मिहराज चरित्र)

छंद गीतिका

श्रीराज नृप छत्रसाल को पट तारतम्य दिखाइयो,

निज अर्थ वेद कतेब के प्रगट सबै समझाइयो।

कह असल ज्ञान निदान सब सत असत के निर्णय करे,

सब मैटि वाद विवाद झगड़ो हृदय के संशय हरै ॥7॥

अज्ञान तिमर उड़ायके हिय ज्ञान रवि प्रगट कियो,

समझान बानी धाम की पट खोल अन्तर को दियो।

कर कृपा पूरन नृपति पर निज बुद्धि जग जाग्रत करी,

हद छोड़ बेहद पार की लीला ललित दिल में धरी

॥दोहा॥

हाथ जोरि छत्रसाल नृप,विनती करी बनाय।

कहौ आज अति प्रीत सों, तारतम्य समझाय ॥1॥

महाराजा छत्रसाल के प्रति, बक्शी हंसराज महाराज ने देवतुल्य भावना रखी है और उन्हें जग आधार अवतार हुव माना है। यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत (गीता)। महाराजा छत्रसाल अवतारी पुरुष हैं, उनका प्रादुर्भाव धरा पर धर्म की पुनर्स्थापना एवं देव- राज्य की स्थापना के लिए हुआ था। उनका निष्कलंक प्रभु से मिलना, इसी का प्रतीक है। कल्कि अवतार (महाप्रभुश्री प्राणनाथ) एवं जगा धार अवतार (छत्रसाल) का प्रादुर्भाव इसी के निमित्त है।

महाराजा छत्रसाल का जब अपने सद्गुरु से मिला हुआ था और जब वह अंतिम समय एकादश वर्ष (1740- 1751 वि.सं. तक पन्ना (श्री पद्मावती पुरी) धाम में रहे थे, उस समय का वर्णन बक्शी हंसराज जी ने प्रकरण 5461 में किया है, जो अति आत्म सुख दायक है।

॥**छंद-गीतिका**॥

श्रीराज सकल समाज लै बानी अपूरब गावही,
सब छोड़ गति मति नेम की निज प्रेम राह बतावहीं।
जो सुनत चित दे बचन में सो अमित उस आनन्द भरे,
कर जोर शीश नवाय के अति प्रेम सों पायन परे ॥22॥
आई सखी निजधाम तें संसार में भूली फिरै,
श्रीराज चरण जहाज बिन भव सिंधु ते केहि विध तरै।
जागहिं न कोई जोर करि भ्रम नींद नैनन में छई,
ल्यावहिं न जाग्रत बुद्ध हिये सब विसर सुध घर की गई ॥23॥
आये धनी इत आपही कहि तारतम्य जगा वहीं,
करि बोध जाग्रत बुद्धि दै भव को विरोध मिटावहीं।

उग्यो सकल भुवलोक अति, जगयो कठिन कलिकाल।
जग अधार अवतार हुव, छत्रसाल छितपाल ॥1/14॥ (श्रीराज चंद्रिका)

औरंग सखत अकस अति चरचा सुनत यह दीन की,
भूलयो सरीयत खेल में कछु खबर नहिं यकीन की ॥24॥

॥छन्द-गीतिक॥

श्रीराज सकल समाज ले परना पुरी कहं आइयो,

महाराज आतुर खबर सुनि पुरजन सहित उठि धाइयो।

अति प्रीतरीत बढ़ाय के कर जोर के पायन करे,

करि कृपा पूरन-प्रेम सों प्रभु हाथ सिर ऊपर धरे ॥2॥

श्रीराज श्री छत्रसाल के गुन जात नहि प्रगट कहे,

हिल-हिल हिये निज प्रेम सों चाव चाह मुख हित सों रहे।

कीने कलश अरु पावड़े फिर भवन भीतर ल्याइयो,

कहं लगि कहों सुख वरनि के उमंगि आनन्द छाइयो ॥3॥ (प्र.62)

यथार्थ में, महाराज बक्शी हंसराज का समूचा साहित्य--- श्री कृष्ण जी, निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी एवं महाराजा छत्रसाल जी के पावन चरित्र पर आधारित है।

बक्शी हंसराज महाराज रचित निम्न ग्रंथ पाए जाते हैं जो महाराजा छत्रसाल द्वारा प्रसारित जागने की अमूल्य निधि है और हिंदी साहित्य इतिहास में अभिवृद्धिदायक हैं---

1. स्नेह सागर,

इसमें सागर श्री राज चंद्रिका गिरिराज चरित्र बारहमासा कृष्ण जी की पाती श्री हरि लीला भाग तरंगिणी युगल स्वरूप पत्रिका 13 मार्च अभिलाष

इनमें श्री राज्यचंद्रिका और अमीर राज चरित्र में महाराजा छत्रसाल जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

1. ॥दोहा॥ हंसराज ब्रजराज के, चरण कमल उर आन।

2. प्रेम प्रीत की रीत सों,विरह

(शेष अगले पृष्ठ पर)

[स]

श्रीमुखवाणी-तारतम सागर में महाराजा छत्रसाल

प्राक्कथन

महाराजा छत्रसाल जी आध्यात्मिक जगत की अनमोल धरोहर हैं। जगत में ऐसा कोई राजा नहीं हुआ जिसको ऐसा सम्मान मिला हो जैसा कि महाराजा छत्रसाल को मिला हुआ था। एक तरफ से संसार में महाराजा के रूप में पूछे गए हैं और दूसरी तरफ उनकी वंदना- आराधना परमात्मा के साथ में महाराजा छत्रसाल जूदेव की जय के रूप में निशदिन होती है।

महाराजा छत्रसाल के इन रूपों का सम्यक दर्शन श्री मंदिर जा नंद संप्रदाय के पूज्य ग्रंथ श्री मुख वाणी- स्वयं वेद में वर्णित है। वैदिक जगत में श्री मुख वाणी को चैंवेद कहा गया है, करण की- यह वाणी परमात्मा प्रदत है। इसमें हिंदुस्तानी भाषा में 300 69 प्रकरण और 14981 चौपाइयां, गुजराती भाषा में 138 प्रकरण और 3169 चौपाइयां, सिंधी भाषा में 15 प्रकरण और 578 चौपाइयां तथा अरबी भाषा में 2 प्रकरण और 30 चौपाइयां हैं अर्थात कुल प्रकरण 524 तथा 18758 चौपाइयां हैं। इसमें परब्रह्म परमात्मा ने अपनी कृपा दृष्टि से नाम की शोभा श्री मेहराज, श्री इंद्र, श्री महामति, श्री छत्रसाल, श्री महेंद्र, श्री जसिया और श्री ललिता को दी है। इस ग्रंथ में 14 स्कंध हैं जिसके

(पिछले पृष्ठ का शेष)

द्वे सुत माधवदास के, जिमि लछमन रघुराय।

जेठे मुरलीधर* उदित, लहुरे केशव-राय॥26॥

इंदु इंदु वसु इंदु धरि, संवतु यह निरधार।

माघ सुकल कवि पंचमी, कीन्हों ग्रन्थ निरधार।

माघ सुकल कवि पंचमी, कीन्हों ग्रन्थ विचार॥31॥

सद्गुरू गुरु की कृपा तें, प्रगटो प्रेम प्रकाश।

प्रेम प्रीत की रीत सों, वरनौं विरह-विलास॥32॥ (प्रथमोध्याय:)

मुरलीधर के लाहुरे सुमन हंसराज महाराज थे।

1. स्वसंवेदो स्वादिष्ट: अमृत विहार कम (महेश्वर तंत्र पटेल: 28)
2. क्रमशः 6 प्रकरण 106 प्रकरण 263 प्रकरण 10 प्रकरण प्रकरण एक प्रकरण और एक प्रकरण। 130 प्रकरणों में नाम की कोई छाप नहीं है। इसमें रचना स्वर परब्रह्म परमात्मा की अडानी शक्ति श्यामा जी का और श्री इंद्रावती के श्री मुख से प्रकट हुई है।
3. राज प्रकाश म्यूजिक कलश ही शट रितु कलश प्रकाश ही सानंद किरतन खुलासा खिलवट परिक्रमा सागर सिंगार सिंधी मार्फत सागर कयामतनामा

किरन्तन एवं बड़ा क्यामतनामा के अंतर्गत महाराजा छत्रसाल को क्रमशः 2 प्रकरणों एवं 9 प्रकरणों में नाम की शोभा मिली है।

पूज्य वांग्मय ग्रंथ श्री मुख वाणी को परमात्मा का साक्षात स्वरूप माना जाता है। यह ग्रंथ आध्यात्मिक जगत की सर्वोत्तम नदी है। निष्कलंका अवतार महामति प्राणनाथ जी के मुख से प्रकट यह वाणी मानी जाती है। महाराजा छत्रसाल ने इन्हीं के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित कर धरा धाम से पापा चरण का समूल नाश किया था।

अनुशीलन

श्री मुख वाणी के किरन्तन ग्रंथ एवं बड़ा कयामत नामा में महाराजा छत्रसाल का उल्लेख विशिष्ट रूप में हुआ है। परमात्मा ने इन्हें कलिकाल की बहुत बड़ी शोभा बख्शीश की है। अतैवसंदर्भ ग्रंथों का इस परिवेश में अनुशीलन किया जाना समीचीन है।

महाराजा छत्रसाल के वांग में जीवन- दर्शन का अनुशीलन इसके बिना अधूरा रहेगा, नाम ध्वनि को रखने में उतना आनंद नहीं मिलता है जितना कि उसके हृदय अंगम करने में प्राप्त होता है, फतेह लौकिक पारलौकिक पहिचान किए बिना दिग्दर्शन अपूर्ण बना रहता है और ग्राम श्री मुख वाणी: ट्रेन सोमव्हेयर है। इसमें निहित वाणी परमात्मा पदार्थ है। अतैवइसका मातम में सर्वोपरि है। इसमें उल्लेखित वचनों को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं रहती।

(अ) किरन्तन में---

प्रस्तुत ग्रंथ में प्रकरण 58, 61, भाग एवं 118 में महाराजा छत्रसाल का प्रत्यक्ष रूप से उल्लेख आया है। निष्कलंक महाप्रभु श्री प्राणनाथ जी ने धर्म रक्षक के रूप में छत्रसाल जी का दिग्दर्शन कराया है। द्वापर में कृष्ण जी ने अर्जुन को महाभारत के मध्य ज्ञान उपदेश दिया था, उसी प्रकार कलिकाल में निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी ने छत्रसाल को पर ब्रह्म का ज्ञान देकर जवानों का अत्याचार समाप्त करा कर धर्म राज्य की स्थापना करवाई थी।

(1) प्रकरण 58--

भारत वसुंधरा परिजनों का अत्याचार चरम सीमा को पार कर रहा था, तब कल्कि अवतार श्री प्राणनाथ जी ने निम्न उद्घोष कर छत्रसाल को जागृत किया था।

राजा ने मलोरे राणें राए तणों, धरम जातां रे कोई दौड़ो।

जागोने जोधारे उठ खड़े रहो, नीद निगोड़ी रे छोड़ो॥1॥

छूटत है रे खड़ग छत्रियों से, धरम जात हिंदुआन।

सत न छोड़ो रे सतवादियों, जोर बढ़यो तुरकान॥2॥

कुलिएं छकाय रे दिलड़ें जुदे किए, मोह अहं के मद माते।

असुर माते रे असुराई करे, तो भी न मिलो रे धरम जाते॥3॥

त्रेलोकी में उत्तम खण्ड भरत को, तामें उत्तम हिन्दू धरम।

ताकी छत्रपतियों के सिर, आए रही इत सरम॥4॥

पन ने धारी रे पन इत ले चढ़या, कोई उपज्यो असुर घर अंश।

जुध ने करने उठया धरमसों, सब देखें खड़े राज बंस॥5॥

भरतखंड रे हिन्दू धरम जान के, मांगे विष्णु संग्राम अरथ।

फिरत आप रे ढ़ीढोरा पुकारत, है कोई देव रे समरथ॥6॥

असुर सत रे धरम जुध दिए मांगही, सुर केहेलाए जो न दीजे।

पूछो ने पंडित रे जुध दिए बिना,धरमराज कैसे कहीजे॥7॥

राज कुली रे रखन रजवट, जो न आया इन अवसर।

धरम जाते जो न दौड़ीया, ताए सुर कहिए क्यों कर॥8॥

वेद ने व्याकरणी रे पंडित पढ़वैयौ, गछ दीन इष्ट आचार।

पीछे रे बल कब करोगे, होत है एका-कार॥9॥

सिध ने साधो रे संतो महंतो, वैस्नव भेष दरसन।

धरम उछेदे रे असुरें सबन के, पीछे परचा देओगे किस दिन॥10॥

सुनियो पुकार रे स्याने संत जनों, जो न दौड़या जाते सत।

गए ने अवसर पीछे कहा करोगे, कहां गई करामात॥11॥

लश्कर असुरों का चहुंदिस फैलया, बाढ़यो अति विस्तार।

बन ने जंगल रे हिन्दू रहें परवतों, और कर लिए सब धुंधकार॥12॥

हरद्वार ढहाय उठाए तपसी तीरथ, गौ बध कैयों बिघन।

ऐसा ज़ुलम हुआ जग में जाहेर, पर कंमर न बांधी रे किन॥13॥

सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुर की, जो दारुबाए उड़ावे देहुर।

हिन्दू नाम रे सेन्या तिनकी होए खड़ी, ऐसा कुलिएं किया रे कहेरे॥14॥

प्रभु प्रतिमा रे गज पांउ बांध के, घसीट के खंडित कराए।

फरसबंदी ताकी करके, तापर खलक चलाए॥15॥

असुरें लगाया रे हिंदुओं पर जेजिया, वाको मिले नहीं खानपान।

जो गरीब न दे सके जेजिया, ताए मार करें मुसलमान॥16॥

सास्त्रे आवरदा कही कलिजुग की, चार लाख बत्तीस हजार।

काटे दिन पायें लिख्या मांहे सास्त्रों, सो पाइए अर्थ अंदर के विचार॥17॥

सोले लै लगे रे साका सालवाहन का, संवत् सत्रह सै पैंतीस।

बैठा रे साका विजया अभिनन्दन का, यों कहें सास्त्र और जोतीस॥18॥

कलिजुगे चेहेन रे अंत के सब किए, लोक बतावें अंजू दूर अंत।

अर्थ अन्दर का कोई न पावे, बारे अरथ बहिर के ले डूबत॥19॥

बात ने सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तलवार।

सेवा ने लेई रे सारी सिर खैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार॥20॥

प्रगटे निसांन रे धूमकेरत क्षयमास, पर सुध न करे अंजू कोई इत।

बेगेने पधारो रे बुधजी या समे, पुकार कहें महामत॥21॥

उक्त प्रकरण से स्पष्ट है कि तत्कालीन परिवेश में उपजी मार्मिक पुकार का दुंदुभी नाम सुनकर केवल एक वीर बुन्देला छत्रसाल की निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़ा हुआ

था। उसने तलवार को धारण कर प्रभु की अधीनता स्वीकार की थी। बुन्देला छत्रसाल के इस भाग को पढ़कर इस रणबांकुरे को महामति प्राणनाथ ने समूची धर्म रक्षक सेना का सेनापति नियुक्त किया था। प्रस्तुत है इस उद्घोष का निम्न पंक्ति भारतीय इतिहास के स्वर्ण पंक्ति है:---

बात ने सुनीरे बुन्देले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तलवार।

सेवा ने लेई रे सारी सिर खैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार॥

निसंदेह, श्री मुख वाणी अंतर्गत चिरंतन ग्रंथ में नहीं है पुकार (उद्घोष) महाराजा छत्रसाल के रोम रोम में बस गई थी, पलता है काला जय महाराजा छत्रसाल की अजय तलवार ने कालांतर में असुरों की समस्त मानवता को समूल नष्ट कर डाला था। पृथ्वी का समस्त बाहर हरण करने के कारण छत्रसाल को विघ्न हरण मंगल करने वाले देव के रूप में पूजा जाता है, आखिर-- यह सौभाग्य महाराजा छत्रसाल को क्यों ना मिले, जब उन्हें एवं धर्म राज्य की स्थापना का दायित्व सौंपा है।

(2) प्रकरण 61

प्रस्तुत प्रकरण में 27 है, जिसमें कतेब पक्षीय शैली में वर्णन किया गया है इतिहास द्वारा है दिग्दर्शन इसमें विद्यमान है लिस्ट ऑफ प्रभु श्री प्राणनाथ जी ने इस प्रकरण में बड़ी दरगाह (पन्ना) मैं राजा Pradhanअली छत्रसाल का निम्न प्रकार उद्धरण किया है:--

अली बली सेर दरगाह का, जो दरगाह बड़ी खुदाए।

अव्वल से किन पाई नहीं, सो आखर प्रगटी आए॥9॥

जाहिरी अर्थ में उक्त वाणी का तात्पर्य अली नाम के राजा से है जो एक बहुत बड़ी दरगाह (रियासत) देश का धार्मिक बादशाह है, जिसके यहां अंत में खुदा के यहां से उतरी हैं। पता है इसका बातें नहीं अर्थ निम्न प्रकार है:---

बुन्देलखण्ड (दरगाह) के एक शूर (शेर) वीर (बली) सम्राट छत्रसाल (अली) है, जिनके यहां श्री 5 पद्मावती पुरी धाम (बड़ी दरगाह में परमात्मा का वास है अर्थात यह परमात्मा द्वारा स्थापित महान पूरी है। प्रारंभ से लेकर आज तक जो शोभा किसी को नहीं मिली, वह अब (अंत में छत्रसाल के यहां प्रकट हुई है। अथवा

वीर बुन्देल भूमि (शेर दरगाह के उत्तराधिकारी (वाली छत्रसाल अली हैं उन। पावन भूमि बुन्देलखण्ड में स्थित पद्मावती पुरी (पन्ना श्री प्राणनाथ प्रभु द्वारा स्थापित महान धाम है।, सृष्टि के प्रारंभ से लेकर अब तक जो मातम में (श्रेय किसी को प्राप्त नहीं हुआ है वह आखिर में अब यहां प्रकट हुआ है। अथवा

छत्रसाल (अली पद्मावती पुरी) धाम (शेरे दरगाह के वारिस हैं। आज तक इस दरगाह का जलवा ए- नूर किसी ने नहीं देखा था। वह अब अंतिम समय पर कटे परब्रह्म (इमाम महेदी- खुदा की दरगाह में छत्रसाल ने देखा।

वस्तुतः संदर्भित दिव्य वाणी में अली अली शेर दरगाह के रूप में महाराजा छत्रसाल जी को स्थापित करके परब्रह्म परमात्मा ने उन्हें भी शोभा प्रदान की है। इसी प्रकरण की निम्न वाणी में अवलोकन है--

दई बड़ी बड़ाई आपसी, दियो सो अपनों नाम।

करनी अपनी दे थापी, दे साहिदी अल्लाकलाम॥17॥

संसार में धर्म राज्य की स्थापना हेतु छत्रसाल का प्रादुर्भाव हुआ है, जिनका शुरू मार्गदर्शन देता रहता है पूनम राम प्रस्तुत है यह सब परब्रह्म परमात्मा की असीम साहिबी का स्वरूप है यथा:---

साहेब तेरी साहेबी भारी।

कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी॥1॥

त्रैलोकी तिमर नसाइयो, कर रोसन अति जहूर।

चौदे लोक चारों तरफ़ों, बरस्या खुदाए का नूर॥20॥

ऐसी बढ़ाई कै सिर मेरे, दे दे लई जो दाब।

सब दुनियां के दिल में आनी, दे साहेदी सब किताब॥27॥

(किरन्तन: प्रकरण 61)

प्रस्तुत प्रकरण में महाराजा छत्रसाल के गैबी स्वरूप की झांकी का भी दर्शन कराया गया है। महाराजा छत्रसाल की परमात्मा परम धाम की है, जिसका "धरा धाम पर देव राज्य धर्म राज्य की स्थापना हेतु हुआ है।

---

1. साहिब तेरी साहिबी भारी (प्रकरण 61 किरण

(3) प्रकरण 72

किरन्तन के प्रस्तुत प्रकरण में परमात्मा ने नाम की शोभा जैकेट छाप छत्रसाल के नाम दी है। इस प्रकरण में पांच दिव्य वाणी या हैं। यथा:--

जंजीरा मुसाफ की, मोतियों में पिरोइए जब।

जिनसें जिनस मिलाइए, पाइए मगज माएने तब॥1॥

देऊं हरफ हरफ की आयतें, जो हादिएं खोले द्वार।

सब खिफत खास गिरोह की, लिखी विध विध बेसुमार॥2॥

कलाम अल्ला की इमारतें, खोल दैयां खसम।

महामत पर मेहरे मेहेबूबे, करी इसे का इलम॥3॥

ब्रह्मसृष्टि वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान।

कै विध की बुजरगियां, देखो साहेबी-कुरान॥4॥

कहे छत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीर जोर।

सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर॥5॥

अर्थात समस्त धर्म ग्रंथों में लिखें असंबद्ध बातों को करियर के रूप में मोतियों की तरह एक माला के धागे में पिरो कर और उनके आंसुओं से अंश मिलाकर पढ़ा जाए तभी उनके मूल अर्थ व रहस्य समझ में आते हैं ॥1॥

मैं एक एक शब्द का रहस्य वाणी से प्रकट कर लूंगा, जिनके द्वारा सदगुरुदेव चंद्र जी ने परमधाम के द्वार खोले हैं। इसमें ब्रह्म सृष्टि की प्रशंसा विशेषताएं विविध प्रकार से असंख्य रूपों में लिखी हैं ॥2॥

परब्रह्म की वाणी के संकेत प्रियतम ने खोल दिए हैं अर्थात बता दिए हैं। सद्गुरु धनी श्री देवचंद्र के ज्ञान के प्रभाव से महामति श्री प्राणनाथ जी पर प्रियतम की कृपा दृष्टि हुई है ॥3॥

भ्रम को वेदों और पुराणों में ब्रह्म के समान कहा गया है। इमाम कुरान अर्थात तारतम वाणी में इन भ्रम सरस्वती अनेक प्रकार से महिमा लिखी है 4

छत्रसाल कहते हैं कि धर्म ग्रंथों के रहस्य खुलने से एवं उनके आंसुओं को कड़ियों के रूप में मिलाने से भ्रम सृष्टि की विशेषता प्रकट हुई है उनके रचनात्मक शब्दों को केवल ब्रहम आत्माएं ही समझ सकेंगे 5

---

1. कड़ियां, 2. धर्मग्रंथ, 3-4. अंश (भाग) 5. रहस्य 6.अर्थ 7. शब्द, 8.परब्रहम की वाणी 9.संकेत, 10. न .महामति श्री प्राणनाथ जी, 11.प्रियतम (प्रीतम) 12. सतगुरु धनी श्री देवचंद्र जी 13. ज्ञान, 14. महिमा-प्रशंसा, 15. इमाम कुरान (तारतम वाणी) 16. छत्रसाल, 17. रहस्य, 18. धर्मग्रंथ, 19.अंश, 20. कड़ियां, 21. प्रशंसा तथा 22. ब्रहमात्माएं।

(4) प्रकरण 118

प्रस्तुत प्रकरण में 19 दिव्य वाणीयां हैं। इस प्रकरण में नाम की शोभा 18वीं चौपाई में महामद को मिली है जबकि 19 में चौपाई (वाणी में छत्रसाल का नाम उल्लेख हुआ है तब यह प्रकरण पूरा हुआ है। इस प्रकरण में ब्रहम सृष्टि (मोमिन की पहचान, उनके लक्षण एवं मातम में को प्रकट किया गया है। छत्रसाल कुंडल नाम की भ्रम प्रिया ब्राहमण हैं और वह महामति (के धर्म (दीन पर पूर्ण रूप से समर्पित (कुर्बान हैं। दुनिया में एक जैसी कोई शोभा प्राप्त आत्मा नहीं है अतैवपरमात्मा ने अंतिम चौपाई (प्रकरण अट्ठारह उन्नीस में संसार के जगजीवन के लिए एक छत्रसाल जैसा बनने के लिए मार्गदर्शन है। महाराजा छात्रसाल, इस जगत की असाधारण विभूति हैं जिन्होंने अपना तन मन धन सर्वस्व परमात्मा के प्रति समर्पित कर दिया था। इसी कारण से कल्कि अवतार में परब्रहम परमात्मा छत्रसाल के घर पधारे और वही एक विशाल मेला ब्रहम आत्माओं का हुआ जिसमें से चराचर जगत के जीवों में भाग लेकर अपने अपने जीवन को कृतार्थ किया। प्रस्तुत प्रकरण में महाराजा छत्रसाल का जो नाम उल्लेख हुआ है वह समीचीन, पथ प्रदर्शक एवं प्रेरणादायक है प्रस्तुत है इस प्रकरण की कुछ दिव्य वाणियां:---

मोमन लिखे मोमन को, कहो तो आवें इत।

ए अचरज देखो मोमनों, कैसा समया हुआ सखत॥1॥

जब मेला होसी मोमनों, तब देखसी सब कोए।

और कोई ना कर सके, जो मोमनों से होए॥5॥

सखत बखत ऐसा हुआ, ईमान छोड़या सबन।

तब अरवाहें करे कुरबानियाँ, यह होवें मोमन॥3॥

जीव देते न सकुचें, मोमन राह इक पर।

दुनियां जीव ना दे सके, अरस रुहों बिगर॥14॥

अरस तब रूह मोमन, लोभ न झूठा ताए।

मोमन जुदागी ना सहें, ज्यों दूध मिसरी मिल जाए॥15॥

लिखी फकीरी ताले मिने, अपने हादी के।

कदम पर कदम धरें, मोमन कहिए ए॥16॥

एक हक बिना कहु ना रखें, दुनी करी मुरदार।

अरस किया दिल मोमन, पोहोंचे नूर के पार॥17॥

महामत कहें ऐ मोमनों, ए है अपनी विगत।

झूठ वास्ते जुदे ना पड़े, मोमन अरस वाहेदत॥18॥

इन महंमद के दीन पर, जो ल्यावेगा ईमान।

छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान॥19॥

वस्तुतः प्रस्तुत प्रकरण में महाराजा छत्रसाल के जीवन कृतियों की झांकी प्रदर्शित है 1 ग्राम महाराजा छत्रसाल एक परिपूर्ण स्वरूप थे, जिनके अंदर समस्त मानवीय एवं दैवीय गुण समाहित रहे। इसी कारण से वह राजाओं में महाराजा और मुनियों में ब्रहम मुनि के रूप में पूजे गए।

समग्र संसार को महामति की वाणी से अखण्ड ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हो रहा है, अतैवमहाराजा छत्रसाल ने इसे अंतरात्मा में धारण करने के लिए समस्त जीवो को आहान किया है और भरोसा एवं विश्वास दिलाया है कि---

छत्रसाल तेलुगु पर, तन मन धन कुर्बान अर्थात महामति के सत्य धर्म पर जो भी श्रद्धा पूर्वक विश्वास लाएगा, पर छत्रसाल अपना तन मन धन सर्वस्व न्योछावर कर देंगे।

(ब) बड़ा क्यामतनामा में

प्रस्तुत ग्रंथ में 28 प्रकरण एवं 531 दिव्य बढ़िया हैं। परमात्मा ने इसके 9 प्रकरणों में स्पष्ट रूप से नाम की शोभा छत्रसाल को, दो मैं मेहमान को तथा शेष 13 में नाम की शोभा किसी को नहीं है।

कहा जाता है कि महाराजा छत्रसाल में सत्य धर्म का निसंकोच प्रचार प्रसार का उत्साह देखकर महामति श्री प्राणनाथ प्रभु ने बड़ा कयामत नामा में कयामत (जागने सत्या धर्म का संदेश बुन्देला छत्रसाल के नाम से क्षत्रिय उचित भाषा में दिया है जबकि रचना स्वर श्री प्राणनाथ प्रभु के श्री मुख से अवतरित प्रकट प्रस्फुटित है। इस ग्रंथ का प्राकट्य वि.सं. 1744 में चित्रकूट में हुआ है।

प्रोफेसर माता बदल जायसवाल ने इस ग्रंथ के प्राक्कथन में लिखा है कि--

पुराने युग की समाप्ति अथवा अंत और नए युग के प्रभात की विचारधारा को समझने के लिए महामति प्राणनाथ ने कयामत नामा की रचना की। कयामत नामा नाम से कोई गम में दो ग्रंथ मिलते हैं--- एक छोटा कयामत मामा जिसमें महामद की छाप स्पष्ट है, दो बड़ा कयामत रामा कहा जाता है जिसमें महाराजा छत्रसाल की छाप है। प्रणाम ही परंपरा से अपरिचित कोई भी साधारण पाठक इसे महाराजा छत्रसाल की रचना मान सकता है किंतु प्रणामी परंपरा में यह माना जाता है कि महाप्रभु प्राणनाथ ने ही अपने प्रमुख शिष्य महाराजा छत्रसाल के नाम से ही यह ग्रंथ लिखा है। महामती प्राणनाथ ही मध्य काल के प्रथम और अंतिम धर्म प्रवर्तक हैं जिन्होंने कयामत नामा द्वारा हिंदू- बौद्ध- इस्लाम आदि समस्त धर्म एवं तथा संबंधित समस्त साहित्य सागर

---

* श्रीमुखवाणी--- तारतम सागर।

को मथकर नए युग का संदेशवाहक यह ग्रंथ रत्न खोज निकाला है।.... इस रतन का पाखी वही जौहरी होगा जिसे समस्त धर्मों के मूल तत्वों की परख है-- इस प्रकार कयामत नामा विश्व धर्म का एक महारत्न है।

(1) प्रकरण 1:---

धर्म राज्य में सत्य धर्म की प्रतिष्ठा होती है और सारे जगत को उससे दिव्य प्रकाश मिलता है। संसार के सारे धर्म- मजहब एकाकार हो जाते हैं, जाति- भाषावाद देश की सीमाएं टूट जाती हैं, तब सारे संसार के लोग परब्रह्म परमात्मा के दिव्य ज्ञान से सराबोर हो उठते हैं। ऐसा ही सबकुछ महाराजा छत्रसाल के सम्मुख निष्कलंक महाप्रभु प्राणनाथ जी के माध्यम से हुआ। इसकी झलक प्रस्तुत प्रकरण में गूंज रही है। यथा:---

खास उमत सें कहियो जाई, उठो मोमनों क्यामत आई।

केहेती हूँ माफक कुरान, तुमारे आगे करों बयान ॥1॥

जो कोई खास उमत सिरदार, खड़े रहो होए हुसियार।

वसीयत नामें देवें साख, अगयारै सदी होसी बेबाक ॥2॥....

भिस्त दोजख जाहेर भई, नफा किसी को न देवे कोई।

ले हिरदे हादी के पाए, छत्रसाल यों कहे बजाए ॥41॥

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि मुक्ति (बेस्ट पाने के लिए सत्य धर्म की आवश्यकता अपेक्षित है जो धर्म राज्य में और भी सुगम है। धर्म राज्य के संस्थापक महाराजाधिराज छत्रसाल अपने हृदय में सद्‌गुरु (हाथी के चरण अरविंद स्थापित करके इस बात को डंका बजाकर उस घोषित कर रहे हैं।

(2) प्रकरण 2:---

भिस्ता बांट दइयां इन विध, काम सबों के किए यों सिध।

कहे छ्त्ता पहेले ज्यो ल्यावे ईमान, खास उमत का सोई जान ॥11॥

अर्थात इस प्रकार सभी को मुखिया (बहिश्तें) प्रदान कर दीं। इस तरह सब के कार्य सिद्ध किए और सबको अपने कर्मों के अनुसार फल दिया संग्राम छत्रसाल महाराजा कहते हैं कि सर्वप्रथम जो विश्वास (इमान लाएगा, उनको ही ब्रह्म सृष्टि (खास उम्र जानू।

(3) प्रकरण 3:---

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज-लों न खोले किन।

बातून जो कुरात के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल॥27॥

अर्थात इतने दिन तक जो कुरान के वास्तविक अर्थ गुप्त थे जिन्हें आज तक किसी ने नहीं खोला था। महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि उन (कुरान के बातूनी प्रश्नों का (महामति श्री प्राणनाथ प्रभु हादी द्वारा स्पष्टीकरण हो गया है।

(4) प्रकरण 4:---

प्रस्तुत प्रकरण में महामति श्री प्राणनाथ जी ने स्पष्ट किया है कि इतिहास की गुजरी बातों को मात्र बीता हुआ मत मानो अब तो भविष्य में इसका अब उन्हें प्रगति करण हुआ है, ऐसा समझकर (उनमें दिव्य चेतना का साक्षात्कार करो तथा श्रद्धा पूर्वक विश्वास (ईमान लाओ।

॥चौ.1॥

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर।

सो महमूद गजनबी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान॥1॥

अर्थात कुरान के तीसरे से पारे में बड़ा अच्छा वृतांत आया है। जिसमें एक फकीर इमाम और एक बादशाह (सुल्तान) की चर्चा लिखी है।गजनी का महमूद सुल्तान जब नेक दिल इमाम से मिला तब सारे संसार को बहुत दुख हुआ संग्राम इस वृतांत का वास्तविक (बातें अर्थ यह है कि जब महाराजा छत्रसाल (सुल्तान महामती श्री

प्राणनाथजी (इमाम महेदी से मिले तब समग्र संसार को अतिशय दुख हुआ। गजनी का आशय बुन्देलखण्ड से है। इसी भूभाग पर इन दोनों का महामिलन हुआ। वह सत्य धर्म में राज्य की स्थापना हुई।

॥चौ.2॥

लागन हिंदू मुसलमान, महमूद गजनबी सुलतान।

ढ़ाए हिंदुओं के खाने-बुत, दिल में इमाम की जारत॥2॥

अर्थात हिंदू मुसलमान की लड़ाई शुरू से चली आ रही है। महमूद गजनबी ने हिंदुओं के पुत्र खानों (मंदिरों और मूर्तियों को नष्ट कर डाला था क्योंकि उसे इमाम के दर्शन (ज्ञान आदि की चाहत थी (महमूद का मानना था कि ऐसा करने से उसे शीघ्र ही इमाम की जारत मुलाकात होगी। इसका वर्तनी अर्थ यह है कि कयामत (जागने के समय में महाराजा छत्रसाल ने हिंदुओं से मूर्ति पूजा और कर्म कार्ड छुड़वा दिया था क्योंकि उन (छत्रसाल के दिल में निष्कलंक बुध (इमाम महदी के दर्शन की अभिलाषा है। निष्कलंक जी के दर्शन में कर्मकांड बाधक हैं ब्रह्म ज्ञान द्वारा ही उनकी पहचान होती है।

॥चौ.3॥

अपने जमाने था उस्तवार, कुतब औलियों का सिरदार।

बंदगी माहें था बड़ा, सफ तलेकी रेहेता खड़ा॥3॥

अर्थात इस दिव्य वाणी का बातें नहीं अर्थ यह है कि महाराजा छत्रसाल जी अपने समय में एकमात्र धर्म आचरण पथ पर आरोप बादशाह हैं। वह ब्रह्म विद्या में निपुण (विद्वान मनीषी 12000 ब्रह्म स्त्रियों के सरदार हैं। वह (छत्रसाल, बंदगी करने में बहुत ही निपुण हैं और दक्षित होकर तथा गरीबी में रहकर तन मन धन अर्पण करने में सदा खड़े रहते हैं।

॥चौ.4॥

तलब द्वा फातियाओं की कर, चाहता था तो अजमंतिसा अवसर।

फ़कीर सुलतान सों बातें भई, तब आकीन आया सही॥4॥

अर्थात् महमूद प्रकट (गजनी बादशाह) ने बड़ी चाहना से खुदा की स्तुति-प्रार्थना की थी। अजंता आयत में जिक्र है कि खुदा जिसे चाहता है इज्जत देता है और उसे अल्लाह के खास बंदों से भी इज्जत मिलती है उन विराम इस सत्य का ज्ञान उसे अभी हुआ था जब इमाम (फकीर से उसकी मुलाकात हुई थी। इस वाणी का वादन अर्थ है कि जब महाराजा छत्रसाल का मिलाप महामति श्री प्राणनाथ जी (इमाम महदी से हुआ था तभी महाराजा छत्रसाल को विश्वास आया था कि यही बुध निष्कलंक (इमाम महदी के अवतार हैं।

॥चौ.5॥

इमामें कह्या यों कर, पेसकसी ल्यावें हम घर।

बस्ती कोस पाँच हजार, मुलक मदीने कै सेहेर बाजार॥5॥

अर्थात तब महामति प्राणनाथ (इमाम ने राजा छत्रसाल (बादशा से इस तरह कहा-- कि हमारे लिए क्या बेड (नजराना लाए हो तब महाराजा छत्रसाल ने कहा कि 5000 कोस की बस्ती यानी पांच तत्व का शरीर जो यह है वही आपको समर्पित कर दिया है। मुल्क मदीना के शहर बाजार अर्थात बुन्देलखण्ड बस्ती (वर्तनी अर्थ में--- शरीर में कई शहर बाजार जो कुछ भी है सभी आपको अर्पित है।

॥चौ.6॥

एक हजार सात सै हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी।

एती आए के पेसकसी करी, ओढ़के पुरानी कमरी॥6॥

अर्थात 17 तत्व का जो सुकून शरीर है जिसमें 10 इंद्रिय, पांच प्राण मन और बुद्धि है यही 17 साथी हैं। मन लाख को शिक्षण में जाता है उसके अहंकार आदि बलशाली साथी हैं। इन वस्तुओं का महाराजा छत्रसाल (राजा

ने नजराना स्वरूप श्री प्राणनाथ प्रभु (इमाम को स्वयं गरीबी और आधी नेता रुपी पुरानी कमली ओढ़ कर किया था। पूरा

॥चौ.7॥

आप हो एके नंगे पाए, तलेकी सफमें खड़ा आए।

आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बकसीस॥7॥

पाठक नंगे पांव यानी राजद छोड़कर (महाराजा छत्रसाल अपने आप को लघुत्तम मानकर आत्माओं (मोमो की सबसे पिछली कतार में सभी से पीछे खड़ा हो गया। दीन भावना से ओतप्रोत होकर सिर झुकाकर प्रार्थना करने लगा कि हे प्रभु-- (इमाम आप मेरे अवगुण दूर कर मुझ पर कृपा रूपी शुभाशीष प्रदान बख्शीश कर दो।

॥चौ.8॥

कहे मोको सबूरी देओ, फकीरो के मिलावे में लेओ।

दुनियां थे आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया॥8॥

अर्थात (महाराजा छत्रसाल ने प्रार्थना की कि मुझे आप धैर्य (सब्र प्रदान करो 1 ग्राम उत्तम सृष्टि (फकीर जो ब्रह्म आत्माएं (मोहन हैं उनके साथ में सम्मिलित करो। (तब उन्हें माया के पद दे से (निष्कलंक परब्रह्म इमाम ने स्वतंत्र कर दिया और (महाराजा छत्रसाल को ब्रह्म ऋषि यों (फकीरों के समुदाय में ले लिया।

॥चौ. 9॥

तो अजमंतिसामें सही, गजनबी को बखसीस भई।

इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊँ सबन॥9॥

अर्थात आज मंत्री सा में लिखा है कि गजनी (बुन्देलखण्ड के सुल्तान (राजा छत्रसाल को मोमिनो (ब्रह्म आत्माओं में सरदार की उपाधि (बख्शीश मिली है। महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि बुध- निष्कलंक परब्रह्म (इमाम की पहचान करो, (तब उनकी ज्ञान की रोशनी से समग्र ब्रह्म का निवारण हो जाएगा। [वस्तुतः गजनी के सुल्तान का प्राकट्य बुन्देलखण्ड में महाराजा छत्रसाल के रूप में हुआ है उनके सानिध्य से सभी संशय दूर हुए हैं।]

॥चौ.15॥

असराफील इत बीच इमाम, ए नुस्खे इलम की किताबें कलाम।

एक रोज आए खाने किताब, कहया पोहोंचाओ नुस्खा सिताब॥15॥

अर्थात अशराफुल इमाम मेहंदी के बीच बैठकर का रतन रूपी नुस्खा से 14 किताबों वाली श्री मुख वाणी (श्री तारतम वाणी- शिवा सॉन्ग प्रगट की। 1 दिन गढ़ा की मंजिल में (किताब खाना- यहां मिल बैठकर ब्रह्मचर्य धर्म ग्रंथों की कड़ियां मिला रहे थे लालदास जी से श्रीजी महाराज (महामति श्री प्राणनाथ ने कहा कि- जाओ, औरंगज़ेब को फिर संदेश पहुंचाओ। तब लाल दास जी ने कुरान में शगुन (पाल देखा, तो 16 में से पारे

में मूसा पैगंबर और फिरौन बादशाह का किस्सा मिला। वहां मूसा ने फिर उनको जीता था उन भ्रम इस कथानक से फल निकला कि देवकरण जिस राजा (छत्रसाल की चर्चा कर रहे हैं, उसे जल्दी मिलाप होगा। तब श्री जी महाराज ने औरंगज़ेब के बजाय छत्रसाल के पास नुस्खा पैगाम (संदेश पहुंचाने की आज्ञा लाल दास जी को दी [यही इस चौपाई का बातूनी रहस्य है।]

॥चौ.16॥

महंमद गजनबी सुल्तान, और नुस्खा हासिल करे परवान।

जब नुस्खा उनने सही किया, पंद्रह रोज सामें आएके लिया॥16॥

प्रताप महमूद गजनी बादशाह (बुन्देलखण्ड के बादशाह छत्रसाल संदेश (नुस्खा पैगाम को जल्दी स्वीकार करेंगे। जब सुल्तान (महाराजा छत्रसाल ने संदेश को सत्य मान लिया। इस घटना के 15 रोज पहले से ही अपने भतीजे श्री देवकरण जी को श्री जी महाराज के पास बुलाने के लिए भेज दिया था।

॥चौ.17॥

तब अव्वल आखर की मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान।

और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुस्खा करे विख्यात॥17॥

अर्थात महामति श्री प्राणनाथ (इमाम के पास पूरी दुनिया आई हिंदू और मुसलमान सब आकर मिले, इतना ही नहीं और भी अनेक जातियों और धर्मों के लोग वहां (बुन्देलखण्ड में शामिल हुए। सब कोई (महाराजा छत्रसाल के साथ मिलकर सर्वत्र नुस्खे अर्थात तारतम का प्रकाश फैलाने लगे।

॥चौ.18॥

केतोंक अपना किया कुरवान, करे निछावर बुजरग जान।

इत पांच सै जुलजुलाटहु, संग रसूल के असलू रूह॥18॥

अर्थात महाराजा छत्रसाल आदि कितनों ने ही अपना तन मन धन सब कुछ इमाम (बुध निष्कलंका पर कुर्बान कर डाला। अनेकों ने उन्हें अपना समझ कर कर दिया था 500 बड़े तेज धारी ब्रहम ऋषि यहां बुन्देलखण्ड गजनी श्री जी महाराज के साथ में थे यह सभी असली रूप वाले थे

॥चौ.19॥

ए बखत हुआ कही कयामत, दोस्तखाना दाना पोहोंची सरत।

गुनाह सुल्तान के किए सब माफ, लिया नुस्खा हुआ साफ॥19॥

अर्थात ऐसा कहां गया था कि जब ऐसा होगा, तो जानू कयामत (जागनी आ

गयी। दोस्त जो ब्रह्म सृष्टि रैकेट मोमन हैं उनको परमधाम की निधि यानी नीलम वाणी रूपी खाना दाना पहुंचा। सुल्तान के महाराजा छत्रसाल जी हैं उनको पिछले सभी दोषों से मुक्त कर दिया, कारण कि जब नुस्खा अर्थात तारतम मंत्र दिया तो वह सब तरह से निर्मल एवं स्वच्छ हो गए उनको राम

॥चौ.26॥

ल्याओ आकीन कहें छत्रसाल, असल पाक हुए निहाल॥26॥

महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि जो परब्रह्म परमात्मा है तो वह अब जग में जाहिर हो गए हैं उन्हें पहचान कर उन पर विश्वास लाओ। असल पार्क जबरन है कब दर्शन करके धन्य धन्य हो गए।

(5) प्रकरण 5

प्रस्तुत प्रकरण में 42 दिव्य वाणियाँ हैं। जेल में अनेकानेक गूढ़ रहस्यों का प्रकटीकरण हुआ है। इन के ज्ञान से दुनिया का कोई भी ज्ञान जानने को ऑफ शेष नहीं रहता पूर्णब्रह्म परमात्मा उसे बहुत बड़प्पन देते हैं।

एक मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान।

जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरगी देत॥41॥

अर्थात कुरान के समग्र रहस्य खुल गए हैं। तुम हिंदू या मुसलमान (सभी सुन लो। जो इन राशियों को ग्रहण कर दी (धर्म के मार्ग पर उठ खड़ा होगा वहां महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि साहिब (परब्रह्म परमात्मा उसे बहुत सम्मान (बुजुर्ग बड़प्पन देते हैं, उसका परमधाम प्राप्ति का मार्ग खुल जाता है।

कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर॥42॥

महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि तिनके अंकुर के रोशनी परमधाम (सूरत जिल्ला में प्रकट होगी।

(6) प्रकरण 6

प्रस्तुत प्रकरण में 44 दिव्य वाणी या हैं जिनमें विविध प्रकार का दिव्य ज्ञान वर्णित है। यथा:--

हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम।

इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी॥१॥

---

1. त्यों ही प्राणनाथ प्रभु आये, दिल के कुल संदेह मिटाये।
2. उन ऐसो कछु ज्ञान बखानयौ, अपनी करि जातै जग जान्यौ॥

छत्रसाल जी कहते हैं कि श्री जी महाराज (इमाम के बचन हैं कि-- यह सखियों हम परमधाम से संदेश लेकर तुम्हारे लिए आए हैं उनका राम जो हम अट्ठारह हजार वाणी लाए हैं, इनमें तुम्हारे संपूर्ण समाचार हैं। इसकी सच्चाई (वास्तविकता देखो।

कह्यो न जाए धनी को विलास, पूरी साथ सकल की आस।

लीला विनोद करसी हांस, ए सुख उमत लेसी खास॥39॥

छत्रसाल जी कहते हैं कि-- परंपराएं धाम धनि से जैसा हास्य विनोद कर रही हैं वह अन्य है। धाम धनी ने सबकी मनोकामनाएं पूर्ण की हैं उन्हें राम लीला विनोद का सुख, खास उम्मत ब्रिकेट बनती है और लेगीं।

नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए॥45॥

अपनी-अपनी प्रार्थना के अनुरूप सभी आत्माएं फल पाएंगी। यह हुकुम धाम धनि छत्रसाल महाराजा के हाथ सुपुर्द कर दिया है

(7) प्रकरण 7

प्रकरण में 38 दिव्य वाणी या हैं, प्रस्तुत है उनके कुछ

हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबा न जाए बरनियां।

ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां॥1॥

अर्थात निष्कलंक श्री प्राणनाथ प्रभु कहते हैं कि हर साल तक उनकी बड़ी शोभा हुई है। इस जब बात जुबान से उसका वर्णन नहीं किया जा सकता ग्राम प्रधानों का यह जो मिला बुन्देलखण्ड में हुआ है इसके लिए रामधनी ने तुझे बहुत बड़ी शोभा बढ़ाई दी है

सबको सुख महंमदें दिए, भिस्त में नूर नजर तले लिए।

कहे छत्ता अपनाएत कर, जिन कोई भूलो ए अवसर॥37॥

अर्थात बुध निष्कलंक परमात्मा ने सबको (वाणी के द्वारा सुख प्रदान किया है। जगजीवन को ब्रिगेड 8 प्रकार की युक्तियां अक्षर ब्रह्म के अंतर्गत देकर उन्हें अपनी नजर में लिया है। महाराजा छात्रसाल

छत्रसाल अपना अब कोई मत भूलो।

हुई फजर मिट गयी रात, भूले बड़ो करसी पछताप॥38॥

महाराजा छत्रसाल कहते हैं कि--- ब्रह्म ज्ञान के प्रकाश से अब रात समाप्त होकर सुबह हो गया है। जो इस समय भूलेगा वह बहुत पछताएगा

---

1. वाणी के द्वारा आज भी प्रदान कर रहे हैं।

(8) प्रकरण 8

प्रस्तुत प्रकरण 81 गाड़ियों का होने से सबसे वृद्ध है। इसमें ब्रह्म ज्ञान का सागर उम्र रहा है। प्रत्येक दिव्य वाणी ज्ञान से सराबोर है विराम इस प्रकरण के कुछ अंश अवलोकन है:-

अब दरिया हुआ हक, इनमें न रहे किसी की सक।

दरिया हक बीच मजकूर, कहया जाहेर खुसाली नूर॥11॥

बुन्देलखण्ड (पन्ना) में अठारह हजार वाणी रूपी सत्य ज्ञान समुद्र के समान उम्र रहा है। इस सत्य ज्ञान के जाने से अब किसी की कोई शंका बाकी नहीं रही। छत्रसाल कहते हैं कि-- परमात्मा के परम धाम का ज्ञान सागर परंपराओं के अंदर समाहित हो गया है। (परब्रह्म) नूर तेज रोशनी (प्रकाश) की खुशहाली (सौंदर्य) स्वयं (श्री जी महाराज के रूप में आकर) जग में जाहिर कर रहे हैं।

और दुनियां ने सब फसल पाई, उमत बाग हासल आई।

एह खुदाए का बरस्या नूर, देखो छत्ते का जहूर॥80॥

जगजीवन ए श्री तारतम वाणी की फसल रूपी अलौकिक निधि प्राप्त की है। भ्रम सृष्टि के प्रताप से संसार को मुक्ति का फल मिला है। यहां (बुन्देलखण्ड में बुध निष्कलंक प्रभु श्री प्राणनाथ जी के मुख से अखण्ड ब्रहम ज्ञान की वर्षा हुई (हो रही है 17 साल का यह जरूर (सौभाग्य देखो कि उसने दुनिया यानी माया का सिर फोड़ कर अखण्ड परमधाम का सुख पाया है।

हुआ खुदाए के हजूर, बात याही की हुई मंजूर॥81॥

छत्रसाल राजपाट की ममता छोड़कर श्री जी महाराज के चरणों में उपस्थित हुए और उनके सम्मुख इनकी क्षेत्र साल बाद दुनिया में सब ने स्वीकार की

(9) प्रकरण 13

प्रस्तुत प्रकरण में 8 देवानिया हैं जिनकी अंतिम दो सपाइयों से स्पष्ट होता है की महाराजा छत्रसाल के सद्‌गुरु ने परब्रह्म से याचना करके एक उत्तराधिकारी (नाथ पुत्र चाहा था, इस याचना की पूर्ति परब्रह्म ने महाराजा छत्रसाल के रूप में की है पूरा यथा---

फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए।

लेवे मिरास इमामत, लेवे मुझ से हकीकत॥7॥

हे मेरे परब्रह्म परमात्मा- मेरा बेटा ऐसा हो जो मेरे धर्म का वारिस अपने पूर्व ग्राम इमामत अर्थात नसीहत देने की और संसार को राह दिखाने का उत्तराधिकार संभाले तथा मुझसे हकीकत लेकर सारे जग में पहला वे।

एह मिरास कही मिलकर, इलम का लेव हिकमत॥8॥

हमारा समुदाय जो ब्रहम आत्माओं (मोमिनो) का है, उनमें सरदारी लेवे तथा परब्रहम के हुकुम कि मुझसे एकमत (चातुर्य था सीखे। (श्रीजी महाराज श्री प्राणनाथ प्रभु ने नाथ पुत्र के रूप में 17 साल को अपनाकर उन्हें बहुत बड़ी शोभा दी है ऐसी शोभा जगत में आज तक ना तो किसी को मिली है और ना मिलेगी।]

(10) प्रकरण 23:

प्रस्तुत प्रकरण की अंतिम चौपाई में परमात्मा ने छत्रसाल जी को जो शोभा प्रदान की है वह बहुत महान है। उसकी समग्रता का बयान इस मुख से नहीं किया जा सकता है। संदर्भ दिव्य वाणी से महाराजा छत्रसाल का मातम में स्वर मुखरित होता है:--

जब जाहेर हुआ रोजा और हज्ज,

तब काजिएं खोल्या मुसाफ मगज।

ए बात साहेबे छत्रसाल सों कही,

घर इमाम बिलंदी छत्ता को दई॥9॥

अर्थात परब्रहम परमात्मा ने ब्रहम प्रयोग को ब्रहम ज्ञान द्वारा पहचान कराई, तब तारतम ज्ञान रूपी रोजा और श्री 5 पद्मावती पुरी धाम रूपी हज का मुकाम संसार में जाहिर हो गया। काजी जॉकी शोरूम निष्कलंक श्री जी महाराज हैं उन्होंने समस्त धर्म ग्रंथों के वर्तनी (मूल अर्थ खोलकर ब्रहम ज्ञान का प्रतिक्रिया है यही बातें हकीकत साहिब आखिरी स्वरूप श्री जी महाराज छत्रसाल को सुनाएं हैं। घर अखण्ड परमधाम की बुजुर्ग (बुलंदी की श्रीजी महाराज इमाम मेहदी ने महाराजा छत्रसाल को दी है।

उपसंहार

महाराजा छत्रसाल का नाम उल्लेख श्रीमुखवाणी- तारतम सागर में निष्कलंक प्रभु श्री प्राणनाथ जी ने पति शोभा देकर किया है पूरा किया है। महाराजा छत्रसाल की पर-आत्म दिव्या अखण्ड परमधाम की है, जिसका नाम से कुंडल है, जो वहां की प्रधान आत्माओं में से एक है। इसी कारण श्री मुख वाणी में इन्हें " खली बली शेर दरगाह" तथा

" सो महमूद गजनबी सुल्तान" के रूप में उद्धृत किया गया है। महाप्रभु प्राणनाथ जी ने महाराजा छत्रसाल को इस संसार का सेनापतियों के सरदार के रूप में सर्वोत्तम प्रतिष्ठा प्रदान की है। हटाए बिना सारे संसार में धर्म रक्षक अवतार के रूप में माना गया है। सदा अमर रहने का वरदान मिला है, भक्तगण नित्य निरंतर महाराजा छत्रसाल देव की जय धोनी बोलते रहते हैं

श्री श्री मुख वाणी में अपार शोभा को प्राप्त किए परमावतार महाराजा छत्रसाल की उज्जवल कीर्ति युगप्रवर्तक बनकर समूचे संसार में व्याप्त है।

(द)

परवर्ती कवियों द्वारा प्रशस्ति गायन

प्रस्तावना

महाराजा छत्रसाल जी केवल महाराजा ही नहीं थे अपितु में महावीर का कवियों में महाकवि, ऋषियों में महान ब्रहम ऋषि थे। महाराजा छत्रसाल जी की प्रशंसा में तत्कालीन कवियों के अतिरिक्त परवर्ती कवियों ने भी उनका यशोगान किया है। त्रिकालदर्शी महाराजा छत्रसाल विद्युत गुण संपन्न देव मूर्ति हैं। जिस ने जिस रूप में उन्हें रखा रखा उसे उसी रूप में उनकी छवि का दर्शन मिला है गौमाता कवियों ने उनकी प्रशस्ति विविध ढंग से की है फिर भी वीर रस में उनकी प्रस्तुति प्रदान है। अज्ञात नामा कवियों की अनेक प्रचलित रचनाएं भी उनका यशोगान करती दिखाई देती हैं।

कवि पुरुषोत्तम-- इन्होंने महाराजा छत्रसाल की युद्ध कौशल का चित्रण किया है प्रस्तुत है एक उदाहरण--

॥कवित्त॥

कवि पुरुषोत्तम तमासे लाग रहे मान,

बीर छत्रसाल अद्भुत जुद्ध ठाते हैं।

नादर नरेश के सवाब रजपूत लड़ें,

मारै तलवारै गज बादर से बादर से फाटे हैं॥

सिंध लोहू कुंडन, गगन झुंड झुंडन तें,

रिपु रुण्ड मुंडन ते खण्ड सबै पाटे हैं।

चरबी चखैयन के परबी समर बीच,

गरबी मगरबी से करबी से काटे हैं॥

कवि रत्नाकर--- कवि जगन्नाथदास रत्नाकर ने निम्न कविताओं में महाराजा छत्रसाल के बल पौरुष का निरूपण किया है।

॥कवित्त॥

*देव-द्विज-द्रोहिन के उसासनि सौं,

मातृ भूमि गात को संताप सियराऊं मैं।

कहै रतनाकर बुन्देला भट मानी महा,

जवन-निसानी-असि-पानी सों बहाऊं मैं।

श्री पति सहाय सों दिलीपति को छत्रसालि,

छत्रसाल नाम निज सारथ बनाऊं मैं।

चपल चकत्ता की महत्ता अरु सत्ता चांपि,

चंपत को नन्दन अमंद कहवाऊं मैं॥

*कढ़त बुन्देलनि के रेलनि के नारा रन,
बलख बुखारा जिमि पारा थरहत हैं।
कहैं रतनाकर सपीर पीरजादिन के,
मीर मीरजादनि के धीर भहरत हैं॥
निपट निसंक बंक बैरिन के जूथनि के,
सूथन ससंक लंक त्यागि ढ़हरत हैं।
मुग़ल पठाननि की सत्ता की महत्ता मिटै,
कत्ता कढ़े छत्ता के चकत्ता ठहरत हैं॥
जानि निज संपति सिरानी तत्काल सबै,
हाल चाहि चंपति के लाल रन रत्ता कौ।
कहै रतनाकर विचारै माथ धरे हाथ,
मानि अपमान महर मुग़ल-महत्ता कौ॥
खीसत खिसात दांत पीसत अमीरन पै,
देखत तुरन्त अन्त होत मलेच्छ सत्ता कौ।
सुनि गुनि धीर वीर छत्ता की विजै पै विजै,
लत्ता अवसान भयो चकित चकत्ता कौ॥

कवि अम्बकेश-- इन्हें बुन्देलखण्ड का भूषण कवि कहा जाता है, यथा नाम उपाधि सदृश्य उनके निम्न कविता में महाराजा छत्रसाल की वीरता का हृदय ग्राही चित्रण है---

॥कवित्त॥

हौंसले हिराती दहलाती दिल दंभियो के,

छक्के छुड़वाती छल छोभिन छकाती थी।

कहैं अम्बिकेश अवलोक बैरियों को वेग,

समर समच्छ शत्रु रक्त से नहाती थी॥

मान-मद मेटती थी मुग़ल मलेच्छन के,

जग जोमियों को जंग जौहर दिखाती थी।

वीर छत्रसाल की करारी करवाल कोप,

कट्ट मुंड रुडन को झुंडन झराती थी॥

कवि सेवकेंद्र-- छत्रसाल बावनी के रचीयता भाषा अचार्य श्री सेवा केंद्र स्तर पार्टी हैं, इनकी रचनाओं में भूषण कवि के समान रोचता है। प्रस्तुत है उनके रचित कुछ कवित्त---

॥कवित्त॥

*कौंधा देख व्योमा जाकी सुधि उर आवति ही,

कंपित सदा ही होत दिल्ली दीह दरबार॥

सेवकेंद्र एकै बार एकै बार देखै जौन,

हौंसला समस्त अस्त ताको होत हरबार॥

मुक्त होत म्यान ही तें मुकति मियांन देति,

पल में छुड़ावति है परिवार घरवार,

लंठित करै भू खलकंठ उत्कंठित ह्वे,

कुंठित न होवै छत्रसाल तीव्र तरवार॥

*धसकि धरा में जैहै उन्नत उतुंग ध्वज,

खैहै डरयो धूर मोर-तखत विशेष री।

सेवकेन्द्र अवरंग शाही भदरंग ह्वेहै,

भंग ह्वेहै दिल्ली और आगरौ सुदेश री॥

वन-वन डोलि हैं ह्वे गमगीन बेगमहूं,

दीन-हीन क्लेशलीन वदन विशेष री।

लेश मुग़लेश आन बान शान रैहै नहीं,

बंकिम चितैहै जो बुन्देलखण्ड केशरी॥

*भाला भव्य-भाल की भलाई की ललाई कहा,

खायौ खरौ पान-म्लेच्छ वंश अंश ढाने कौ।

भारत की आरती उतार रती फेर दई,

सेवकेंद्र जंत्र भौ स्वतंत्रता बुलाने कौ।

ताज नवरंग कौ धरयौ सो वीर पायन पै,

ऊंचौ करयौ भाल छत्रसाल मरदाने कौ।

करयौ सो चिराग गुल मुगुल घराने कौ॥

*वीरता को विटप विलोकि विध्वंश होत,

पावन पियूष वरसैया वन आ गयौ,

सेवकेन्द्र भारत स्वतन्त्रता सिखैया स्वच्छ,

भगत कन्हैया को कन्हैया वन आ गयौ,

चंपत करैया यश चंपत अरिन्दन को,

रैया राव चंपत को छैया बन आ गयौ,

भैया, द्विज गैया को रखैया छत्रसाल वीर,

देश लाज नैया को खिबैया बन आ गयौ॥

कवि व्यास -- महाराजा छत्रसाल के अप्रतिम शौर्य एवं क्या थी से घबराकर यवन और अन्य ने हत्या करने के उद्देश्य से छल पूर्वक इन्हें आज, पुलिस जिस प्रकार कंस उसी प्रकार से औरंगाबाद मौत के रूप में कॉल अजय छत्रसाल महाराजा को निहारता था, अतैवउसने यह एक षड्यंत्र सोचा था।

एक जनश्रुति है कि एक बार महाराजा छत्रसाल औरंगज़ेब के बुलाने पर जब आगरा गए तब उन्हें यह नौ रंग की यह चाल समझ में आ गई। महाराजा छत्रसाल अपने अनुच्छेदों सहित आगरा के दुर्ग में प्रविष्ट हो गए औरंग ने छत्रसाल को आया देखकर क्रोधित होकर महाराजा छत्रसाल ने तबले भाई को इशारा कर दिया। पल भर में घोड़ा कि दोनों टपरिया वन औरंग के राज्य शासंन् पर पहुंच गई और महाराजा छत्रसाल के भाले की नोक उसकी छाती पर रखी गई। महाबली हिंद केसरी धर्म रक्षक महाराजा छत्रसाल ने उसे देख कर आ और बोले अरे नहीं चौरंग तुझे क्या दंड दूं तेरे ऐसे कृतज्ञ काम पर तू मेरा हैवान है, वध करने योग्य है। यवन औरंग प्राणों की भीख मांगने लगा और। र निवास में भी याचना के स्वर गूंजने लगे। औरंग की बेगम की याचना के स्वर कवि व्यास ने निम्न कवित्त में प्रकट किए हैं।

मानो पिया बात रार ठानो न,

प्रबल प्रताप तेज तपत उजागरौ।

जानो जीव कालहूको विकराल महा

विक्रम विशाल छत्रसाल नर नागरौ॥

व्यास कहै जो पै कहूं पलक उधार दैहे,

तौ पै कर छार देहे गजब गुजार दैहै,

जार दैहै दिल्ली उजार दैहै आगरौ॥

महाराजा छत्रसाल ने बेगम की याचना एवं नियमन और अंग की प्राण भी को स्वीकार करके अदम औरंगज़ेब को प्राण दान दे दिया।

कविवर विशाल-- कविवर विशाल जी का पूरा नाम विशालसिंह शाक्य है, इन्हें कविवर विशाल के नाम से पुकारा जाता है। इन के संबंध में निम्न में प्रचलित हैं--

द्वय सहस्त्र से द्वय अधिक, विक्रम प्रचलित साल।

चैत बदी तिथि दौज को, प्रकटे कवी विशाल॥

चित्रवती तव माता हैं, पिता तारतम जान।

सूर्यवंश में शक्य कुल, तामें उपजे आन॥..

परमहंस मोतीदास जी, इनके हैं गुरुदेव।

तारतम्य समझाय के, खोल दिये सब भेव॥

कविवर विशाल ने लघु काव्य ग्रंथों के अलावा एक वृत्त महाकाव्य की रचना की है, जिसका नाम श्री कृष्ण आनंद सागर है। कबीर देव श्री विशाल जी ने महाराजा छत्रसाल को एक देव पुरुष मानते हुए उनकी 40 चौपाइयों और 32 में जो स्थिति की है, वह जनप्रिय, भक्ति प्रिय एवं मनोकामना पूर्ति कराने में सहायक होने के कारण अति प्रसिद्ध है।

छत्रसाल स्तुति

॥दोहा॥

पूरण ब्रहम श्री कृष्ण जी, अक्षरातीत अनूप।

निज जन की रक्षा करहु, छत्रसाल कुल भूप॥

विघन हरण मंगल करन, चंपत सुत छत्रसाल।

दीन जान जन आपनो, मेटहु जग जंजाल॥

॥चौपाई॥

जय जय जय छत्रसाल नरेशा। दूर करहु मन मांहि कलेशा॥1॥

ज्ञान विवेक बुद्धि बलधामा। तुमको कोटि कोटि परनामा॥2॥

कृपा करहु तुम निज जन जाना। नाशे भाव भय उपजे ज्ञाना॥3॥

दया दृष्टि कीजे मम ओरी। होवे विमल बुद्धि अति मोरी॥4॥

साकुण्डल यह विनय हमारी। भव विपदा टारो मम भारी॥5॥

चंपत सुअन वीर छत्रसाला। लाड़कुंवरि माता को लाला॥6॥

ब्रहम सिन्धु नभ शास्त्र प्रमाना। विक्रम प्रचलित साल बखाना॥7॥

जेठ शुक्ल तिथि तीज सुहाई। प्रकटी साकुंडल सखि आई॥8॥

जब अवतार आप कर भयऊ। तब तहं अस कौतुक ह्वे गयऊ॥9॥

रानी लाड़कुंवरि के तीरा। आय नेवला इक गम्भीरा॥10॥

मोहरें पांच धरी तहां लाई।श्री प्राणनाथ की छाप सुहाई॥11॥

जासु छाप सु सिक्का मांही। सोई आचार्य होय तुम आंही॥12॥

प्रभु शक्ति सुप्रेरित कीन्हा। यह आभास आपको दीन्हा॥13॥

प्रभु इच्छा बस तुम परतापा। यश बुन्देल सुदेश व्यापा॥14॥

सुन्दर समय सु पहुंचा आई। श्री प्राणनाथ के दर्शन पाई॥15॥

भूपति सादर कीन्हा प्रणामा। दीन्ह अशीष तबहिं सुखधामा॥16॥

अब तो दास भये तुम राजा। तब उस बिहंस कहेउ महाराजा॥17॥

हे स्वामी! ताके हम होई। दूजी मोहर मिलावे जोई॥18॥

आसन से बहु मोहर निकारी। प्राणनाथ नृप सम्मुख डारी॥19॥

देखी एकहि छाप भूआला। चरनन परे तबहि छत्रसाला॥20॥

कीन्ही विनय विविध कर जोरी। कीजै कृपा नाथ मम ओरी॥21॥

प्राणनाथ प्रभु कीन्ही दया। मन्त्र तारतम तबहि सुनाया॥22॥

धर्म युद्ध हित प्रेरित कीनहा। आशीष भूत को दीना॥23॥
सकल सुविधा भये निधाना। धर्म सुधीर बीरबल वाला॥24॥
असुर मार कीन्हे सब ढ़ेरी। जेहि दिशि दृष्टि आपने हेरी॥25॥
धर्मध्वजा चहुंदिशि फहराई। विप्र संत सुर अति हरषाई॥26॥
इन्द्रकोप से ज्यों ब्रजराई। डूबत ते ब्रज लियो बचाई॥27॥
त्यों तुम निज भुजबल प्रभुताई। लीन्हो हिंदू धर्म बचाई॥28॥
असुर निकंदन धर्म प्रकाशी। कीन्हों सकल खलन कर नासी ॥29॥

सुदृढ़ राज्य कीन्ह निज भारी। प्राणनाथ प्रभु तिन हितकारी॥30॥
भये आप राजन के राजा। मिली उपाधि श्री महाराजा॥31॥
प्रातहि लेहिं आपकर नामा। ताकत सिद्ध होहिं सब कामा ॥32॥
ब्रह्मज्ञान के तुम अनुरागी। निशदिन राज चरण लौ लागी ॥33॥
जो जन छत्रसाल गुण गावैं। दारुण दुख दूरह्वे जावैं॥34॥
ताके उर नहिं भय संचरही। आप नाम उच्चारण करही॥35॥
ब्रह्मसृष्टि में तुम हो ऐसे। तारागढ़ बिच शशि छवि जैसे॥36॥
होउ दास पर सदा सहाई। भव से देवो पार लगाई॥37॥
टेर सुनो मेरी छत्रसाला। हरहु विषम भव ताप विशाला॥38॥
जो जन चालीसा चित्तलाई। ताकर आवागमन नशाई॥39॥
मम उर अंदर करहु बसेरा। विपद विशाल होय निरबेरा॥40॥

॥दोहा॥

बार-बार विनवौ चरण, उर में बसहू स्वरूप।
मेरी तुम रक्षा करहु, छत्रसाल कुल भूप॥

सोबरनसिंह यादव सर्वोदय-- जनपद इटावा के पूर्वांचल सीमा पर स्थित नगला पूरे गांव में क्षत्रिय परिवार में जन्मे सर्वोदय महाभारत में 17 साल के जीवन वृत्त पर जो प्रकाश डाला है, बहन निम्न पदों में विद्यमान है--

(1)

दुनियां वालो तुम्हें सुनाऊं, गाथा वीर महान की।
भारत मां के शूर शिरोमणि, छत्रसाल बलवान की॥

पावन भू बुंदेलखंड की धर्मदूत जहं डोला था,
मुगलों की ताकत को जिसने आखिर आप टटोला था,
साकुण्डल प्रणधीर वीर ने द्वार मुक्ति का खोला था,
बोली जय श्री प्राणनाथ की रंग बसंती चोला था,
श्रीपरना में सुंदर झांकी धर्मवीर सुज्ञान की॥ भारत मां के.....
औरंगी अत्याचारों से जब बसुंधरा अकुराई थी,
पाप और अन्याय जुल्म की जग में फिरी दुहाई थी,
भारत भू से धर्म सनातन की (जब) हो रही सफाई थी,
तब महाबाहु श्री छत्रसाल ने आकर लाज बचाई थी,
परवाह नहीं कि सारे जीवन इस्लामी तूफान की॥ भारत मां के.......

विंध्यपीठ पर जिसने सुंदर कैसा साज सजाया है,
अपने बल पौरुष से जिसने सुंदर साथ बुलाया है,
आजादी का जिसने वीरो! सच्चा बिगुल बजाया है,
तन मन धन कुर्बानी देकर हिंदू धर्म बचाया है,
देशभक्त नरवीर केसरी के सच्चे अरमान की॥ भारत मां के........
जनमानस से सदा निभाया प्रेम प्रीति का नाता है,
बसुधा तल पर नाम वीर का प्रेम सुधा बरसाता है,
स्वर लहरी से अखिल विश्व गुनगान तुम्हारे गाता है,
सर्वोदय श्रद्धेय आपको हितकर शीश झुकाता है,
यह है सच्ची अमर कहानी छत्ता के सम्मान की॥ भारत मां के......

(2)

जो पै प्रणवीर छत्रसाल नहि आवतो॥
भारत अखण्ड के शौर्य पुञ्ज योद्धा वीर।
केशरी बुंदेल शूर और को कहाउतो॥
जननी जन्मभूमि पर, रिपुदल भगाउतो कौन।
कौन धरा धाम पै सुधा सिंधु लाउतो॥
सर्वोदय कहे सकल साथ में प्रबोध कर।
धनी प्राणनाथ के कवन मन भाउतो॥
स्वदेश धर्म प्रेम की जोत को जगाउतो कौन।
जो पै प्रणवीर छत्रसाल नहि आउतो॥

कवि श्याम परनामी--- जनपद औरैया (उ. प्र.) के बल्लामपुर में संवत् 2019 को आषाढ़ माह में जन्मे श्याम प्रणामी का पूरा नाम श्याम किशोर राजपूत है। इन्हें महाराजा

छत्रसाल पर असीम श्रद्धा है, महाराजा छत्रसाल प्रणामी संप्रदाय के धर्मदूत हैं। कवि का उपनाम श्याम परनामी है जो राजपूत क्षत्रिय हैं। इन्होंने क्षत्रिय धर्म रक्षक प्रातः स्मरणीय हिंद केसरी महाराजा छत्रसाल जू देव का कविताओं में यशोगान किया है। इनके कवित्त साहित्य एवं ऐतिहासिकता से परिपूर्ण है। प्रस्तुत है कुछ कविताओं का दिग्दर्शन--

बिलखी मां भारती यवन आघात सों, मानव द्रोपदी की लाज पै संकट पुनि छायो तो।
बैठे सब सपूत मौन धर्मराज से, मानो दुःशासन धर औरंग रूप आयो तो।
बढ़ायो लो मुग़लराज शक्ति देग धारसों, भ्रष्ट कर सनातन धर्म, इस्लाम चलायो तो।
सुनत पुकार श्याम लगत ना बार याम, छता मिल प्राणनाथ धर्म मचायो तो॥
पूजत परनामी जाकों, बंदत हैं वीरता ताकों, चंपत सुअन नाम ताको छत्रसाल है।
शत्रुअन सालत है विहालत है बैरियन को, खिलायो है दीनन को ऐसो प्रतिपाल है।
कहत परनामी श्याम पूजात परनामी धाम, नाम लेत आठो याम-साथ निहाल है।
प्राणनाथ प्यारो शिष्य मातृभूमि रखवारो नित, सारंधा दुलारो ऐसो, नाहर छत्रसाल है॥

आवत छ्त्ता जबहिं युद्ध करन रनभूमि, देख तहिं यवनन के गात मुरझावत हैं।
सूखत है प्रान जान निकसत न व्यान वान, दबाय दुम श्वान सी खुदा को मनावत हैं।
क़हत परनामी श्याम छत्ता की कृपाण सों, कट कट रुण्ड मुंड छिति पै झरावत हैं॥
पीठ दे दे भागत बचावत निज प्रान को, ताय देख सुल्तान विकट रोस खावत है॥
मुक्त होत जबहिं छ्त्ता की कृपान रन, नागिन सी देख ताहि मुग़ल दहलावत हैं।
आवत है याद इन्हें पीर परिजादिन की, मीर मरिजादिन को बार-बार धिक्कारत हैं।
समर बिच्च बुंदेलनि के जौहर को देख देख, सौहर सी मनाय सब प्रसूता से चिंघारत हैं।
कहत परनामी श्याम छत्ता को केहरि जान, फता को भूल सब सियार से रंभावत हैं॥
विषम ज्वाल धार सी बनी छत्ता की असि, दामिनी सी दमकच मानो प्रलय मचावत है।
चलत हूंकार भरि भलो भाई सान से, करत न वार मानो पवन लजावत है।
पहुंचत है रन खेत छ्त्ता न करत देर, रुण्ड मुंड काटि श्याम ढेरहु लगावत है।
भागत हैं झकमार सेनापति हार मान, छोड़ गुमानशान खुदा को मनावत हैं॥
देखो न सुनो कबहू जहान में ऐसो वीर, चंपत सुअन नाम ताको छत्रसाल है।
राजन में महाराज महाराजन में सरताज, प्रजा भक्त वत्सल ऐसो महिपाल है।
दानिन में दानी अरु ज्ञानिन में ब्रह्मज्ञानी, सानी नाही कोउ वाको कवियन को भाल है।
नाम लेत जाको ही टर जात विघ्न सब, देत अखंड पद श्याम को रसाल है॥

दयाराम कवि--

धरा सौ ना धीर गंगा जल सौ न नीर और,
सिंधु सौ गंभीर न कुपीर महाकाल सौ।
शिव सौ न योगी कामदेव सौ न भोगी कहूं,

राम सौ वियोगी न संयोगी नंदलाल सौ॥
लोभ सौ न भारी न कुबेर सौ भंडारी,
दयाराम सौ विचारी न पसारी मोहजाल सौ।
गुरु सौ मंत्री पन्नगार सौ न पक्षी कहूं,
जन्मो नहिं छत्री जग दूजो छत्रसाल सौ॥

घासीराम व्यास---

आन राखी अजब अनोखी छवि छान राखी,
ठान राखी ठसक सुठीक ठाकुरने की।
आन राखी कुल की बुंदेलन की बान राखी,

शान राखी सौगुनी सपूत कहलाने की॥
व्यास कहें क्षत्रि कुल छत्र क्षिति छत्रसाल,
टेक राखी चंपत सुजान मनमाने की।
खोटी राखी खलन के तन पै लंगोटी राखी,
चोटी राखी ऊंची मूछ मोटी हिंदुवाने की॥

पंडित कृष्णादास---

वीर छत्रसाल जन्म धन्य जगति तल पै,
जाके यश गाये होत सुकवि निहाल है।
प्रजा पतिपाल भयौ भक्ति उरमाल भयौ,
कर करवाल भयौ दीन को दयाल है॥
कृष्ण यश थाल भयौ भव्य दान हाल भयौ,
मगन को भाल भयौ परम कृपाल है।
शत्रुन को साल भयौ तुरकुन को काल भयौ,
हिंदुन की ढाल भयौ चंपत को लाल है॥

नवलशाह कवि---

आये तहब्बर बब्बर खान समद ने आपुनी खोय दई है।
शेर अफगन मारिव भगाय के शेर मुहम्मद दिल्ली लई है।
छत्रपति छत्रसाल की भूमि यहां नहीं काहू के पेस भई है।
जाहु नवाब लै आपुनी आव इते कैई नवाबन की आव गई है॥

घनश्याम दास देशपांडे---

चंपत के लाल छत्रसाल ने बुंदेलन की,
विरुद बढ़ायो निज कीरति की बौल के।

क्षीर सिन्धु धार धौत मुक्तावलि हार सम,
धारत दिग्भागिनी उपस्थल पै डौल कें॥
विप्र घनश्याम तृप्त कियो है मही को हियो,
दियो रक्तदान बैरिबृंद-क्रूर पौल कें। .
जेते दिये श्रोणित के बिंदु तासु बदले में,
पन्ना की पुहुमि देत हीरा तौल तौल कें॥

राजकवि हरनाथ---

भोज के समान गुण ग्राहक गुनी को दिव्य,
दान वीर कर्ण सो असंख्य द्रव्य दै गयो।

पालन प्रजा को वीर विक्रम वली सो देव,
भीष्म सो प्रतिज्ञा दृढ़ शत्रुन सो नै नयो॥
भाशै हरनाथ सत्यवादी हरिश्चद्र सम,
भक्त अंबरीश सो अनन्य भक्ति में छयो।
परम स्वतंत्र देश बंधन के छोरी वे को,
छत्रधारी छत्रसाल छिति पै भयो॥

पीयूष नगाइच---

जमुना से नर्मदा लौ चंबल से टौंस तक, चारों ओर फैला यश चंपत के लाल का
जाकि गौरवीय महिमा थी पूजने के योग्य, जिसने लिखा बुंदेलखंड भाल का॥
भूषण ने मुक्त कंठ से किया प्रशस्ति गान, राष्ट्र के महासपूत पन्ना महिपाल का॥
और राव राजन की कौन थी विसात जब, दिल्ली दरबार भय माने छत्रसाल का॥

प्रभा विधु---

बांकुरा बुंदेला रणधीर अलबेला यदि हो तो ना तौ भारत को मान को बढ़ाओ तो।
सत्य धर्म वारो उजियारो गुनवारो छत्रसाल बिन औरंग की शान को घटाउतो॥
चंपत को लाल देश द्रोहियों का काल और दीन प्रतिपाल नरनाह को कहाउतो।
माता लाल कुंवरि के लाल बिन कौन विधु गौरव बुंदेलखंड भूमि को बचाउतो॥

लोक कवि प्रेमी---

रणबांकुरे बुंदेला वीर छत्रसाल तोरी, घात गहरात घनघोर घटा छाई है।
मुग़ल पठान तुरकान सब जोर करे, नेकऊ डरात तोरी नाम धौस पाई है।
प्राण प्रताप तोरी कहां लौ बखान करौ, हीरन की खान आशीर्वाद रूप पाई है।
प्रेमी प्रताप तोरी कहां लौ बखान करौ, हिंदू धर्म रक्षक तुम तो रंक के सहाई है।

भैयालाल व्यास

श्री भैयालाल व्यास जी ने नौटंकी: कीरत वट महाबली छत्रसाल की प्रस्तुत की है। यह प्रस्तुति काव्य में है, इसके कुछ अंश प्रस्तुत हैं:--

क्षीर सागर से सागर बनै सैकरन, बाउरी अरु कुआ नीर निरमल भरे।

बाग-बगियन में कूकन लगीं कोकिलै, खेत खेतन खुसी के गवै राछरे॥

छैऊ रितुयँ समै पै सवई, राम के राज से मन भरे पांव रे।

न डर चोर कौ, म ठगी जुर्म कौ, सब कहै कै छत्रसाल को राज रे॥...

छत्रसाल उवाच

बोल बोले--

मैं सेवक हौं राजा नई, प्राण के नाथ सै पा पली प्रेरना।

पूज्य गुरु वर के हाथों सबई सध गऔ, राज के काज कारन मिली चेतना॥

हौ जगत के ह्रदय तुम भले सुत मेरे, राज प्रजा को है नित नई सोचना।

सात सुख सै सुखी होवै सारौ कटक, राजपूतन के ऐसे हो कृत पूतना॥...

मंडन कवि—

वौ देत जन्म जौ जन्म के पालवे कों, गरीबन मांझ मानो चंपत के लाल कौ।

वौ देत मुक्त जौ देत नौऊ रिद्‌ध सिद्‌ध, दोनों हू दरिद्र मार करत विहाल कौ।

वौ देत करम जौ भरम भगाय डारे, मंडन कवि क़हत यश भारी बड़े भाल कौ।

वौ है त्रिभुवन पति जौ है हिन्दुआन पति, हमें राज कौ भरोसो के भरोसो छत्रसाल कौ॥

सुश्री कमला स्मृति--

बुंदेलखंड वारो, बल-बुद्‌धि मेन विशाल,

वीर दुष्टन दलन हेतु पन्ना महिपाल है।

माता लाल कुंअरि कौ लाड़लौ सबल पूत,

जासौ भयो गवौन्न्त भारती को भाल है॥

सत्य धर्म त्याग तप आन-बान वारौ धीर,

राष्ट्रनायकों में श्रेष्ठ चंपत को लाल है।

जाकी समता कौ और दूसरो नहीं है कोऊ

धन्य वो बुंदेलखण्ड धन्य छत्रसाल है।

कवि गंगाधर व्यास—

सहज पयान होत जा दिन समूह साज,

ता दिन अरि दलन की छाती थहराती है।

तोपन की धांके शूरवीरन की हांके सुन,

झांके सुभट वीरन की हिम्मत हिआती है॥

गंगाधर देख देख पछारे बाज,

झारे कर नगारे की घटा सी घहराती है।

छत्रपुर महाराजा छत्रसाल तेरे यश,

पावन सुयश की पताका फहराती है।

कवि राज बिहारी--

एक वेर तेग के तमासे लगे जाके सिर,

फेर नहीं जग केर रंग अभिलाखे हैं।

कहत बिहारी वाह वाह वा बुंदेल वीर,

वीरता के विश्व में चलाएसिंह साखे हैं॥

दिल्ली दरम्यान के पठान खान खानदानी,

डोलत बजार हाट-बाट मन माखे हैं।

ग्रीष्म के घत्ता तौउ लत्ता शीस डारे फिरें,

छत्ता के डरन धरे छ्त्ता लौ न राखे हैं॥

रामनाथ गुप्त हरिदेव---

आदि शनि वर्ण फेरि अग्नि में तपी तो रवि,

शान पै चढ़ी तो चन्द्र चमक दिखाई तू।

नीली परिवार में लखाई राहू के समान,

रिपु रक्त रंजित भू-सुत सी सुहाई तू॥

मज्जा भेद वलित सुआभा बुध की सी भई,

विश्व पूजनीय है कि लिन्ही गुरुताई तू।

शक्ति वाहिनी सो शुक्र शीशी काटने में केतु,

छत्रसाल तेग नव-ग्रह बनि आई तू॥

कवि वासुदेव गोस्वामी---

जाही के प्रताप को बुंदेलखंड मानो जात, छ्त्ता जाहि जानो जात, संस्कृति की ढाल है।

जाने सब धर्मन समान सनमान दे कैं, वासदेव उंचौं करो भारत को भाल है॥

पालक प्रजा कौ पालकी में लागौ भूषण की, सुकवि समर्थ सूर वीर विकराल है,

कूरन कौ काल, राज चंपत को लाल, महा-मानव महेबा कौ छितीस छत्रसाल है॥

कभी प्रवीण गुप्त---

आर्यखण्ड मध्य मार्तण्ड सौ बुंदेलखंड,

गरिमा हमें दी जाके गौरव विशाल ने।

दिल्ली दरबार का किया था अभिमान चूर,

चंपत के लाड़ले सपूत से,ल ने॥

वाणी और शक्ति के स्नेह का मिला था फल,

पाला पुत्र सा प्रजा को पन्ना महिपाल ने।

भारत बसुन्धरा की आन बान शान राखी।

गौरवीय गरिमा के धनी छत्रसाल ने॥

कवि ललितेश---

चंपत के लाल छत्रसाल वीर बाहुबली,
धन्य वो घड़ी थी जब शीश क्षत्र थारो है।
जौन जौन दुर्ग पै गई है दिव्यदृष्टि तेरी है,
तौन तौन दुर्ग जीत सुयश पसारो है॥
जोर-जोर सैन्य बल भट शूरवीरन को,
शत्रुन को मोरचा हजार बार मारो है।
ललितेश दिव्य भारतनड सो प्रचंड वारो,
बैरिन घमंड खंड खंड कर डारो है॥

कवि रत्नेश---

छत्रसाल जैसे सूर्यवीर नहीं होते यदि,
भारत की आन बान शान को दिखाता कौन।
बाजू में विक्रम विशाल नहीं होता गर,
जंग में भुजंगनी की प्यास को बुझाता कौन॥
अपना बुंदेलखंड बनता महान कैसे,
देशद्रोहियों के दुर्ग पै ध्वज फहराता कौन।
कौन छलकाता दृग मंदिर गोविंद देख,
गिरी सी उठा के ढाल ब्रज को बचाता कौन॥

उपसंहार

महाराजा छत्रसाल के प्रशस्ति में सैकड़ों कवियों ने गीत गाए और लेखकों ने उसका इतिहास लिखा है। कभी होगा लेखकों का एक ही विषय रहा रहा है परंतु दोनों के विचारों में काफी अंतर रहा है। जहां कवियों ने उनके उद्धार चरित्र का गायन किया है वहीं कुछेक लेखकों खासकर इतिहासकारों ने अनेक गलत ग्रंथियों को जन्म

दिया है। वस्तुतः यही एक चिंतन का विषय है। जगजाहिर है कि किसी भी पूर्वाग्रह की भावना से ग्रसित नहीं रहे हैं जबकि इतिहासकारों की पृष्ठभूमि यहीं से उपजती है। तत्कालीन परिवेश में कवियों की भावना का सही चित्रण महाराजा छत्रसाल की काव्य पंक्ति से हो रहा है---

यथार्थ में बुन्देलखण्ड एवं महाराजा छत्रसाल को सम्यक रूप से जानने के लिए समकालीन कवियों के काव्य का अनुशीलन करना नितांत समीचीन है परवर्ती कवियों के काव्य को भी सहभागी बनाया जा सकता है।

अनेक इतिहासकारों ने महामति श्री प्राणनाथ प्रभु एवं महाराजा छत्रसाल के संबंध में गलत तथ्यों का लेखन करके उसे प्रभावित करने का भी प्रयास किया है, भला रवि रश्मि को कौन रख सकता है अर्थात कोई कभी नहीं। को हृदय से, जो महाराजा छत्रसाल के पुत्र हैं, उन्होंने हृदय प्रकाश में इस परिवेश में जो कुछ लिखा है, वह सत्य एवं इतिहास की धरोहर है। यथा:--

॥दोहा॥

चंपति के छत्रसाल हुव, ता गुन अपरंपार।

मारन कलि दज्जाल को, भयो बुद्ध अवतार॥3॥

श्री प्राणनाथ सनाथ किय, छत्रसाल सुत जान।

हिरदै हिरदैसाहि के, दीन्ही भक्ति निदान॥4॥

पुरी परम पद्मावती, सो परना को जानि।

श्री प्राणनाथ छत्रसाल कौ, मिले आपु पहिचानि॥13॥

मारयो कलि दज्जाल कौ, ब्रह्मसृष्टि के काज।

श्री प्राणनाथ छत्रसाल को, दियो सो आफ्नो राज॥14॥ (हृदयप्रकाश)

वस्तुतः काव्य रचना एक दुरु कार्य है। इसका प्रणब, मानसिक ना होकर जब आत्मिक होता है तभी उसमें सत्यता झलकती है जबकि इतिहास लेखन की आत्मिक पृष्ठभूमि पर रहने लगते हैं सत्यता दूर चटकने लगती है कवि हृदय

---

1. वेद भेद जाने सबै, तारतम्य उज्जास
   तातें कीन्हों ग्रन्थ यह, भाषा हदै प्रकास॥15॥ (हृदय प्रकाश)
2. महाराजा छत्रसाल को महामति प्राणनाथ ने अपनी शक्ति देकर प्रतिद्वंद्वियों पर विजय प्राप्त करवाई तथा महाराजाधिराज श्री हिंद बना कर सम्मानित किया। महाराजा ने वह राज्य श्री प्राणनाथ जी को अर्पित किया और स्वयं उनकी आज्ञा में रहकर राज्य का संचालन किया। (हृदय प्रकाश पर टिप्पणी)

भावुक होता है, उसके अंदर पूर्वाग्रह शीघ्रता से पैर नहीं जमा पाता है, गलत है पत्र लेखन से काव्य रचना अधिक सटीक होती है पर काव्य रचना कठिन है:--

कविता रीति कठिन रे भाई।

बाहेव समुद पैर नहि जाई॥

कवि व्यक्तियों के प्रेरणा स्रोत होते हैं, इनके द्वारा राष्ट्र व समाज को एक सन्मार्ग मिलता है जो व्यक्ति को आगे बढ़ाने में बहुत सहायक होता है। भूषण के गीतों में शिवाजी को छत्रपति शिवाजी बना दिया गया। वीर रस से परिपूर्ण वाणी (गीत के श्रवण से अंदर सोई हुई वीरता जाग उठती है, नपुंसक हो के भी खून में उबाल आ जाता है। वक्त होता है कभी समाज एवं राष्ट्र का एक अभिन्न अंग है। ऐसा लगता है कि महाराजा छत्रसाल के दरबार में 82 कवियों की उपस्थिति, एक राज्य संचालन का अंग था। अतैवमहाराजा छत्रसाल ने कभी धर्म का व्यापक सम्मान किया है। इस परिवेश में डॉक्टर नर्मदा प्रसाद गुप्त के विचार प्रासंगिक हैं। सांस्कृतिक चेतना

के जागरण और वीर उचित उत्साह के उद्दीपन के लिए छत्रसाल ने अपने राज्य के हर पर रखने का हर नगर में एक एक कवि को सम्मानित अतिथि की आसंदी पर बैठा दिया था। रहने के लिए भवन का पोषण के लिए भूमि पर आने जाने के लिए सवारी--- सभी सुविधाएं राज्य की तरफ से दी गई थी। कवि की बैठक एक तरह का सांस्कृतिक केंद्र था, जिससे जनजागृति आ सके। इसी प्रकार छत्रसाल इस चबूतरे पंचायत और न्याय के संस्थान थे। मेरा मतलब यह है कि राज्य धर्म संस्कृति केंद्र स्थापित कर दिए थे इस रूप में जन्म और राष्ट्रीयता की भावना से संपर्क हो रहा था पर यह छत्रसाल की बहुमूल्य सफलता थी।

यथार्थ में महाराजा छत्रसाल ने राष्ट्र के नवनिर्माण में विविध पहलुओं पर विचार किया और जनमानस के कल्याण में उसे लागू किया, इसी कारण से जनमानस के अंतः करण से निम्न अनुभूतियां मुखरित हुई हैं:--

(अ) छत्रसाल महाबली करियो भली भली

(ब) हमें राम कौ भरोसो के भरोसो छत्रसाल कौ

(स) राज में भरोसो या भरोसो छत्रसाल में

(द) जो जन छत्रसाल गुण गावै, दारुण दुःख दूर हुवे जावै।

---

1. तेज ज्यों तम पर, कान्ह ज्यों कंस पर। त्यों म्लेच्छ वंश पर, शेर शिवराज है॥ (भूषण)
2. छत्रप्रकाश में छत्रसाल चबूतरा एक ऐतिहासिक धरोहर है, जिसके द्वितीय तल में एक चौकी पर छत्रसाल की गति तकिया चित्र एवं समर स्थापित हैं और पार्षद भाग में एक विशाल ध्वज पर आता है।
3. राष्ट्र गौरव: छत्रसाल स्मारिका-- 3 जून 1992, पृष्ठ 61

(य) टेर सुनो मेरी छत्रसाला, हरहु विषम भव ताप विशाला।

(र) मेरी तुम रक्षा करहु, छत्रसाल कुल भूप।

आदि काल से लेकर अब तक ऐसा कोई भी राजा पृथ्वी पर नहीं पैदा हुआ, जिसका यश महाराजा छत्रसाल के सामान धरा पर फैला हो ग्राम वस्तुतः वह न भूतो न भविष्यति के पर्याय हैं, कालजई देव हैं। उन्हें कवियों ने नारायण को मारना अवनीश जगदीश आदि अवतार नामों से पुकारा है।

राष्ट्र गौरव महाराजा छत्रसाल ने अपने राज्य में कवियों को की मूर्ति एवं पंचों को परमेश्वर की संज्ञा दी है। यथा:--

(अ) छत्रसाल, सत्य भलो भाषिबो सुकब कौ।

(ब) फूल में गंध बसै महि कंचन, पंचनि त्यों परमेसुर बोलै।

महाराजा छत्रसाल में मानवता के समस्त गुणों में हारकर एवं दैवीय लक्षण विद्यमान देखकर समकालीन एवं परवर्ती कवियों ने उनकी जो यशोगाथा गाई है वह यथार्थ एवं समीचीन है उनकी याचना अनुकरणीय एवं अमूल्य निधि है:---

सातौ द्वीप सातहु समूद्र पारावार लगि,

जाकौ यश जाहिर उजियारो अंधकाल को।

गुणन को ग्राहक जो चाहक कवीजन को,

दिल्ली दल दाहक दिवैया दानि हाल को॥

कहै कवि पान कुल्ल कामना पुजैवे काज,

चंपत को लाल वरदाई नन्द लाल को।

दीजिये ये भीख मोह ईश पर मांगत हों,

कीजियो तौ कीजियो भिखारी छत्रसाल को॥

कवि पान की रचना की अंतिम पंक्तियों से कवि रसखां की निम्न रचना अंतः करण में उभरने लगती है

॥सवैया॥

मानुष हौं तो वही रसखान, बसौं बृज गोकुल गांव के ग्वारन।

जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो? चरौं नितनंद की धेनु मंझारन॥

पाहन हौं तो वही गिरि को, जो कियो हरि छत्र पुरंदर धारन।

जौ खग हौं तो बसेरो करौं, मिली कालिंदी कूल कदम्ब की डारन॥

निसंदेह जैसे अनेकों अज्ञात कवि हैं जिन्होंने महाराजा छत्रसाल के प्रति एक देवर उनकी स्तुति की है। वस्तु तथा व्यक्तित्व के अक्षय कोष प्रातः

स्मरणीय भूमा पुरुष महाराजा छत्रसाल हैं, अतैवज्ञानी, ध्यान- पूरा, सिद्ध, सा, जत्ती, राज, राव, साहू और शहजादे प्रातः काल उठकर इनका नाम ध्यान करते हैं। इस परिवेश में एक अज्ञात नामा कवि की निम्न रचना प्रस्तुत है:--

॥कवित्त॥

ज्ञानी लेत ध्यानी लेत, पण्डित पुरानी लेत,

लेत बढ़े दौलत घटै दिन-काल कौ।

सिद्ध लेत साधु लेत, जती और सती लेत,

लेत फल पावै ज्यों दर्श नन्द-लाल कौ।

भनत प्रचण्ड शूर वीर रणधीर लेत,

जीतत समय मुख देखत न चाल कौ।

राजा लेत राव लेत साहु शहजादे लेत,

प्रातः उठ नाम लेत वीर छत्रसाल कौ॥

कभी मनीषियों ने महाराजा छत्रसाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर जो कुछ लिखा है, वह हिंदी साहित्य इतिहास की अनुपम धरोहर तो बनी ही है, साथ ही साथ आत्म तत्व शोधी जिज्ञासु जनों की एक अध्यात्मिक नदी में भी अभी वृद्धि हुई है।

परिशिष्ट

श्री राज परमात्मने नमः

युग प्रवर्तक

महाराजा छत्रसाल

परिशिष्ट

मुग़ल काल और अंग्रेजी काल में जो भी इतिहास लेखन हुआ है वह अधिकांश होता है पूर्व भावना ग्रस्त एवं एकपक्षीय है, पलता है विश्व इतिहास के दर्शन नहीं हुए हैं, आज भी इनकी काली छाया ने साथ नहीं छोड़ा है।सत्य इतिहास के लेखन व पठान हेतु इनका परिमार्जन व परिष्करण होना परम आवश्यक है।

उक्त परिवेश में मूर्धन्य इतिहासकारों के विचार इस परिशिष्ट में संकलित किए गए हैं गौ माता की महाराजा छत्रसाल कालीन इतिहास के निष्पक्ष पुनर्गठन की आवश्यकता को हृदय निगम कराया जा सके बस।

प्रस्तावना

महाराजा छत्रसालकालीन इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं तब पता चलता है कि शायद किसी इतिहासकार ने, जो मुग़ल सत्ता के हिमायती व उनकी पोशाक भावनाओं से प्रेरित हैं, सही इतिहास की तस्वीर पेश की हो। हिंदू जाति के प्रति दुर्भावना ही इनके लेखन में हावी रही है। पारसी और अंग्रेजी भाषा के इतिहासकारों ने मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब की तारीफ के पुल बांधे हैं परंतु वह भूल गए थे कि (i यह वही शख्स है जिसने सत्ता के लिए भाइयों का वध किया था पिता को कैद में डालकर सत्ता की लगाम ली थी। बेचारा बाप घुट घुट कर मरा था इतना ही नहीं, ii जब औरंगज़ेब के कुकृत्य का विरोध स्रोत है उसके तीन पुत्रों (एक पुत्र को छोड़कर ने किया था तब उन्हें भी इसने नजर बंद करवाया था। iii उसने हिंदुओं पर जबरदस्ती जजिया लगा दिया था उन। iv औरंगज़ेब अपनी राजधानी दिल्ली से लगातार 27 वर्षों तक निर्वाचित रहकर दक्षिण भारत में पढ़ा रहा और दफन भी वही हुआ। आखिर क्यों? हां एक बात अवश्य है कि सावन के अंधे को जेठ मास में भी हरा हरा है। बस यही हाल इन इतिहासकारों का है।

इतिहासकारों ने महाराजा छत्रसाल को अनदेखा किया है। इन्हें बुन्देल पति छत्रसाल जी महाराजा दिखाई दिए--- एक लूटमार करने वाले लुटेरे के रूप में। वस्तुतः उल्लू को दिन के प्रकाश में सूर्य भी एक जुगनू की तरह दिखाई देता है रात के अंधेरे में उसे तारे सूरज की भांति दिखाई देते हैं, ऐसे इतिहासकारों को क्या कहा जाए? इन इतिहासकारों को जब दिन में ही रतौंधी आ रही है, तब इनसे किसी भी तरह के मार्गदर्शन की कोई आशा नहीं रखनी चाहिए।

दिसंबर 1710 (संवत् 1767) में अजय दुर्ग लोहागढ़ को महाराज नए घंटा भर में जीत लिया था। बहादुर शाह के शासंन्काल में दिसंबर 1710 में चाहे सेना ने आक्रमण किया था। इस सेना में खांखाना मुनीम था उसके दो पुत्र साथ में थे। इसी सेना के साथ 17 साल भी थे। 17 साल हरावल (सबसे अग्रिम दस्ते में थे (लेमूर 113... मुनीम की सेना दोपहर के समय के लिए तक पहुंची थी और तीसरे पहर (जोहर की नमाज के समय किले में संघर्ष हुआ। किले की विजय के बाद उसके भीतर से कुछ लुटेरे भी निकले (देले लुटेरे कौन थे? मुनीम का और उसके गुटके वाक्यांशों छत्रसाल की प्रतिष्ठा को दबाने के लिए उसके आदमियों को ही लुटेरों की संज्ञा दे दी। ईर्ष्या और यंत्रों की भूमिका को समझ लेने के पश्चात इन इतिहासकारों की घटिया मानसिकता का रूप सामने आ जाता है

1. ऐतिहासिक प्रमाण आवली और छत्रसाल: पृ. 159;

लोकमानस के अंतरण में व्याप्त श्रद्धा एवं पूज्य सम्मान का भाव आज भी बुन्देलखण्ड में, महाराजा छत्रसाल के संबंध में विद्यमान है जो घटिया मानसिकता वाले इतिहासकारों के मुंह पर एक तमाचा (मारता है। हिंदू मुस्लिम समाज के प्रति एक के भाव रखने वाले देव पुरुष महाराजा छत्रसाल पर एक युगप्रवर्तक पुरुष है। इतिहासकारों को इस तथ्य को हमेशा ध्यान में रखकर लेखन करना चाहिए था और उल्लेख करना चाहिए था।

निजी स्वार्थ के कारण हर वर्ग और जाति के लोग अच्छे बुरे के रूप में विद्यमान रहे हैं। इसी कारण सतीश चंद्र जैसे इतिहासकार भी हैं जिन्हें फारसी और अंग्रेज इतिहासकारों के अलावा कोई भी अंधविश्वासी इतिहास यज्ञ नहीं दिखाई दिया। काश! बेनाम को तो सार्थक करते?

आज भारतीय इतिहास के पुणे लेखन की आवश्यकता इसी कारण से है। 100 इतिहास ही सुसंस्कृत समाज की स्थापना में सहभागी होता है। समाज और राष्ट्र विश्व की अमूल्य धरोहर इतिहास ही है इतिहास का चिंतन मनन करके ही भावी भविष्य का निर्धारण किया जाता है अर्थात अनुभव ही जीवन देते हैं--- यह अकाट्य तत्व हैं, जीवन महल की आधारशिला हैं। इनके दूषित ओमा कमजोर अशुद्ध होने से समग्र व्यर्थ हो जाता है अतैवआप सभी के सम्मुख नीर चीर्वत इतिहास का दिग्दर्शन कराया जाना आवश्यक है, लाभकारी है और समय की जरूरत है।

आज के परिवेश और तत्कालीन (छत्रसाल युगीन परिवेश के सम्यक दर्शन हेतु आवश्यकता है-- इतिहास के अवलोकन की और इस सत्र में विश्व इतिहास को हर व्यक्ति के दिमाग में गतिमान बनाने की।

परिशिष्ट---1

<u>ऐतिहासिक प्रमाणावली और छत्रसाल 1649-- 1731 A.D.</u>

--- डॉ महेंद्र प्रतापसिंह

अपने जन्म से लेकर मृत्यु की अंतिम घड़ी के बीच पहली 8082 वर्ष की संगत जिंदगी में वह अपने युग की जनचेतना के इतिहास को समेटे हुए हैं। अतैवकह सकते हैं कि छत्रसाल जैसे जनचेतना के बिंब की अवहेलना करके लिखा गया 17वीं और 18वीं शताब्दी का इतिहास अपनी नैसर्गिक प्रभाव से ही वंचित हो गया है। पृष्ठ 32

इतिहास की पुनर्रचना की दिशा में सोच-विचार करना राष्ट्र के मेरुदंड की खोज के समान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस विरोध की खोज किए बिना राष्ट्र और चल फिर नहीं सकता और। खासकर मूल्यों के इस संकट काल में जब राष्ट्र आतम प्रवचना का तेजी से शिकार होता जा रहा है केवल इतिहास का मेरुदंड ही उसे वैज्ञानिक जीवन दृष्टि एवं शक्ति सामर्थ्य प्रदान कर सकता है। पृष्ठ 35

औरंगज़ेब के शासंन्काल में जब राज्य सत्ता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई थी उसी समय छत्रसाल जैसे जनसामान्य ने बुन्देलखण्ड के एक बहुत बड़े भूभाग से औरंगज़ेब की राज्य सत्ता को हटाकर उसके स्थान पर एक सत्ता की स्थापना की थी इसी प्रदेश की भौगोलिक स्थिति के अनुकूल चंद्र साल की शासंन् व्यवस्था में नए रूपों में इतिहास को नया मोड़ प्रदान किया था। यदि इस क्षेत्र की तत्कालीन गांव की पंचायती न्याय व्यवस्था की गहरी जड़ों को ऐतिहासिक अध्ययनों द्वारा प्रकाश में लाया जाए तो इतिहास के आते हैं तो महत्वपूर्ण पक्ष पर प्रकाश पड़ेगा। 42

औरंगज़ेब के जीवन के मध्यान काल में ही दिल्ली डूबने और टूटने लगी थी। डूबती है दिल्ली सोच संभालो क्यों न दिल्ली पति तथा विद्रोह के कारण राज्य कोष को दिवाले को लक्ष्य करके कहा गया-- सांचे कहावत है पहले अब आलमगीर फकीर से सांचे का अर्थ इतिहास के संदर्भ में ही स्पष्ट हो सकता है। हिंदी वालों ने इतिहास पढ़ा इतिहास वालों ने हिंदी को माथे सत्र में और 18वीं शताब्दी के इतिहास की दशा एक ना सुनाई एक नहीं देखा हो गई। पृष्ठ 75-76

छत्रसाल की शासंन् व्यवस्था और उसकी राजनीति की गुणवत्ता एवं उसके आंदोलन की आदर्श प्रवणता को समझने के लिए समस्त परिस्थितियों पर अत्यंत सूक्ष्म और नवीन

दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता इसलिए है कि इस दवे हुए इतिहास को सामने लाए बिना हमारे देश की राष्ट्रीयता का इतिहास नहीं लिखा जा सकता।... प्राणनाथ और छत्रसाल के व्यक्तित्व को एक साथ मिलाकर इस युग का जो इतिहास रचा जाएगा वही इतिहास जनचेतना और राष्ट्र की आत्मा का संवाहक सिद्ध हो सकता है। प्राणनाथ ने विचार दिए थे और छत्रसाल ने अपने कर्म के योग से प्राणनाथ के विचारों को काया दी थी बस। नर और नारायण की सत्ता को प्रमाणित करने वाला यही इतिहास बहुत हमारी जन संस्कृति की चेतना और आत्मा कहला सकेगा। ऊंट की आड़ में पहाड़ को कब तक छुपाया जा सकता है? पृष्ठ 90…. 91

छत्रसाल की राजनीतिक और सैनिक शक्ति इतनी हो गई थी कि मनमाने ढंग से छत्रसाल की राज्य सीमा में मुग़ल प्रवेश नहीं कर सकते थे चाहे सेनाओं में उन्हें तलब करने की बात तो दरकिनार है।... इतिहासकारों का यह ज्ञान विद्या है कि मुग़ल साम्राज्य मुहम्मद शाह के राज्य काल में मगन होना शुरू हुआ था। गलत इतिहास का पठन पाठन कब तक चलेगा?--- पृष्ठ संख्या 126

छत्रसाल की राजनीतिक और सैनिक शक्ति इसने शूद्र हो गई थी कि मनमाने ढंग से छत्रसाल की राज्य सीमा में मंगल प्रवेश नहीं कर सकते थे। चाही सेनाओं में उन्हें तलब करने की बात तो दरकिनार है।... इतिहासकारों का यह ज्ञान क्या है कि मुग़ल साम्राज्य मुहम्मद शाह के राज्य काल में बंद होना शुरू हुआ था। गलत इतिहास का पठन-पाठन कब तक चलेगा?--- पृष्ठ संख्या 126

बुन्देलखण्ड के तत्कालीन इतिहास के साधनों को देखें तो स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो जाता है कि इस प्रदेश में आलमगीर की शक्ति का पूरी तरह से सफाया करके छत्रसाल ने जनशक्ति की विजय पताका हो इस प्रदेश के आसपास में पैरा दिया था। पांच घोड़ों और 25 आदमियों की जमात लेकर आलमगीर सेवर मोड़ लेने वाले छत्रसाल को कहां से शक्ति मिली? कौन था उसकी पीठ के पीछे? उसके भाई बंधु तथा बुन्देलखण्ड के अन्य बुन्देली राजे तो उसके शत्रु थे। कुल पुरोहित भानू पंडित ने तो छत्रसाल से सीधे मुंह बात करने से भी इनकार कर दिया था। सगे भाई भी पहले साथ में नहीं खड़े हुए थे। फिर भी उसकी विजय हो गई और मुग़ल सत्ता बुन्देलखण्ड से उखड़ गई। यह कैसे संभव हुआ? क्या यह संघर्ष उसी की भूखी जनता का संघर्ष नहीं था जिस की दुर्दशा पर विदेशियों को उनके हाल पर रोना आया है? स्वयं सत्र साल भी इसी शोषित जनता के बीच से और राजद्रोही के पुत्र होने के नाते उतने ही बेसहारा थे जितना बेसहारा कोई सामान्य जन हो सकता था। जिस भाई की बहन ने अपने घर में अपने भाई को राज्य को के डर से ठहराने की हिम्मत नहीं कि उसी बेसहारा भाई ने उस

शक्तिशाली साम्राज्य को रुई की तरह ढक कर तार तार कैसे डाला? किस के बलबूते पर वह एक स्वतंत्र (क्वेश्चन मार्क और शक्तिशाली राज्य बना था? छत्रसाल को सफल होने का श्रेय मिलता है वह जनता की सामूहिक और संगठित शक्ति का प्रतीक होने की वजह से ही मिल सकता है जिस तरह महिषासुर को पराजित करने के लिए पराजित और सर्वहारा देवताओं ने इकट्ठा होकर अपनी शक्ति से इंद्र आदि को आगे करके अपने मनोरथ की सिद्धि की थी उसी तरह बुन्देलखण्ड की जनता

ने छत्रसाल को आगे लाकर औरंगज़ेब को उखाड़ कर फेंक ने में सफलता पाई थी। छत्रसाल के व्यक्तित्व को इतिहास में जनचेतना के बिंब की खोज करने वाली दृष्टि के माध्यम से ही ढूंढा जा सकता है। संख्या 72-73

सामान्यतया विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों ने हिंदी में प्राप्त सामग्री के महत्व का अवमूल्यन करने का ही काम किया है। पृथ्वीराज रासो और पद्मावत को केंद्र में रखकर बहुदा इसी आशय के प्रश्न पूछे जाते रहे हैं कि यह दोनों काव्य अन्य ऐतिहासिक रचनाएं हैं। इस अ दूरदर्शिता के फलस्वरूप हिंदी के विद्यार्थी के अंतर्मन में हीन भावना उत्पन्न होती रही है तथा बाहरी दुनिया में भी यही धारणा बनती रही है कि हिंदी भाषा और काव्य में इतिहास के नाम पर लिखा हुआ सभी कुछ सिमर का फूल है। इस मिथ्या धारणा को जब तक दूर नहीं किया जाएगा तब तक हिंदी और हिंदी भाषी क्षेत्रों का इतिहास फारसी और अंग्रेजी भाषा के इतिहासकारों की काल पत्रिय रैलियों में ही दबा रहेगा।

[परिशिष्ट 2(क) पृष्ठ 315]

परिशिष्ट: 2

औरंगज़ेब काल का चित्रण

(पार्टी निष्ठा के लिए तथ्यों की अनदेखी)

--- अरुण शौरी

इतिहासकारों की एक के बाद एक किताबें पढ़ते हुए सबसे पहले जिस बात पर ध्यान दीया जाता है वह निश्चय ही उनके दोहरे मानदंड हैं। याद कीजिए रत्ती भर प्रमाण के बगैर हमारे प्रतिष्ठित इतिहासकारों ने प्राचीन भारत के बारे में कैसे-कैसे अत्यंत दूरगामी महत्व के दावे किए थे। वह तनाव गैर बराबरी और अत्याचारों से तत्काल था जबकि औरंगज़ेब और सल्तनत के मामलों में ठीक इन्हीं इतिहासकारों ने किस तरह तथ्यों की तरफ से अपनी आंखें मूंद ली थी जो उनके सामने उपस्थित थे। संक्षेप में, उनका तरीका एक फार्मूले से शुरू होता है और उस टॉप पूर्व इस्लामी भारत की अनिवार्यता है एक ऐसे देश के रूप में तस्वीर पेश की जाए जो अंतर कलह से तार तार था, जो ऐसी सामाजिक और राजनीतिक प्रणाली की गिरफ्त में था जिसकी खूबी ही थी अन्याय, चरम असमानता और दमन; और इस्लामी काल की एक ऐसे काल के रूप में तस्वीर पेश की जाए जिसमें साझा संस्कृति पुलिस फली जिसमें व्यापक सहिष्णुता की नीति ही प्रतिमान थी और इस नीति से विपरीत आचरण के जो दुस्तान मिलते हैं उन व्यक्तियों के भटकाव मात्र थे वह भी ऐसे भटकाव जिनकी जड़ें नितांत धर्मनिरपेक्ष कारणों में खोजी जा सकती हैं।

दूसरी बात यह है कि हमारे इतिहासकार कितने निर्भयता से प्रमाण को दबाते हैं और ऐसा कर चुकने के बाद आहिस्ता से झूठ का सहारा लेते हैं। केवल एक उदाहरण लें, याद कीजिए कि मंदिरों के बरस औरंगज़ेब के कृत्यों का वर्णन समाप्त करते हुए सतीश चंद्रा कहते हैं: मंदिरों को नष्ट करने का आदेश कोई नया आदेश नहीं था, आदेश ने मंदिरों तक सीमित था और विद्‌यमान मंदिरों के दांतों के बारे में नहीं था, आदेश में स्थानीय अधिकारियों को भारी गुंजाइश दी गई थी, औरंगज़ेब ने एक नया रवैया सिर्फ तभी अख्तियार किया जब राजनीतिक शत्रुता से वह 24 हुआ और जब उसने पाया कि मंदिर विद्रोही विचारों को फैलाने का केंद्र बन गए थे, मंदिरों का विध्वंस का मुकेश लड़ाई यों के दौरे तक ही सीमित था और अंत में यह कि ऐसा लगता है, मंदिरों को तोड़ने का औरंगज़ेब का उत्साह 1679 के बाद शांत पड़ गया क्योंकि 1681 से 1707 में उसकी मौत के बीच दक्षिण में बड़े पैमाने पर मंदिरों के विनाश के बारे में हम नहीं सुनते यह दावा उसके आगे कहां ठहरता है जो खुद औरंगज़ेब की अकबर आर्ट मैं बयान है, साथ ही उस वक्त के अन्य प्रांतों में भी दर्ज है? यहां कुछ ब्योरें हैं।

25 मई 1679: खान-ए-जहां बहादुर जोधपुर से वहां के मंदिरों को ढहा कर लौटे और अपने साथ मूर्तियों की कई गाड़ियां भरकर लाए। सम्राट ने हुक्म दिया कि मूर्तियों को, जो ज्यादातर सोने, चांदी, पीतल, तांबे या पत्थर की थी और हीरे जवाहरात से सुसज्जित थी, पैरों के नीचे कुचलने के लिए दरबार के चौक में और जामा मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे डाल दिया जाए।

जनवरी 1680: (उदयपुर में) महाराजा की हवेली के सामने भव्य मंदिर, जो उस युग की एक अद्भुत इमारत थी, जिस पर काफिरों ने काफी धन लगाया था, नष्ट कर दिया गया और उसकी मूर्तियां तोड़ दी गई।

24 जनवरी को सम्राट उदय सागर झील देखने गया और वहां उसने उसके किनारे पर खड़े तीन मंदिरों को गिराने का हुक्म दिया। 29 जनवरी को हसंन् अली खां है इत्यादि की उदयपुर के आसपास 172 अन्य मंदिर तोड़ दिए गए। 22 फरवरी को सम्राट चित्तौड़ देखने गया और उसके हुकुम से वहां के 63 मंदिर नष्ट कर दिए गए

2 अगस्त 1680: पश्चिम मेवाड़ के सोमेश्वर मंदिर को नष्ट करने का हुक्म दिया गया। 10 अगस्त 1680: अब्बू तो राज ने दरबार में लौट कर बताया कि उसने आमिर के 66 मंदिरों को गिरा दिया। सितंबर 1687: गोलकुंडा पर कब्जा करके सम्राट ने अब्दुल रहीम खां को हैदराबाद शहर का नियंत्रक नियुक्त किया और आदेश किया कि काफिर रीति-रिवाजों और (विधर्मी नवा चारों को नेस्तनाबूद कर दिया जाए और मंदिरों को नष्ट करके उनके स्थान पर मस्जिदें खड़ी कर दी जाए। 1690 के आसपास: औरंगज़ेब के द्वारा एलोरा केश्वर नरसिंहपुर में रखो पशुओं व अन्य विषैले जंतुओं के द्वारा विट्ठल पंढरपुर जेजुरी में (देवता द्वारा विफल और यवत भूलेश्वर में मंदिरों के विनाश के दृष्टांत के इंसान एक ईशक 1838 के लिए वार्षिक रिटर्न 133- 135 में दिए गए हैं।

1693: सम्राट नगर ब्राहमणों के विशेष अभिभावक बड़नगर खेतेश्वर मंदिर को नष्ट करने का हुक्म दिया।

3 अप्रैल 1694: सम्राट को दिल्ली के खुफिया खबर नवीस से पता चला कि जयसिंह पुरा में बैरागी मूर्तियों की पूजा किया करते थे और नियंत्रक यह सुनने के बाद वहां गया था, वह श्री कृष्ण बैरागी को गिरफ्तार करके 15 मूर्तियों के साथ अपने घर ले आया था मामा इस पर राजपूत इकट्ठा हो गए, उन्होंने नियंत्रक के घर भीड़ लगा दी, नियंत्रक के तीन पैदल सैनिकों को घायल कर दिया और नियंत्रक पर जो पढ़ने की कोशिश की; लिहाजा नियंत्रक ने बैरागी को छोड़ दिया पर तांबे की मूर्तियां स्थानीय सूबेदार को भेज दीं।

1698 के मध्य: हमीद-उद-दीन हां बहादुर, जिन्हें बीजापुर का मंदिर नष्ट करने और (वहां मस्जिद बनाने का काम सौंपा गया था, हुकमपुरा कर के दरबार में लौटे और सम्राट ने उनकी तारीफ की। मंदिर को किसी भी समय नष्ट करना मुमकिन है, क्योंकि वह अपनी जगह से चलकर नहीं जा सकता... औरंगज़ेब से जुल्फिकार खां और मुग़ल खाने कहा। इस मुल्क (महाराष्ट्र के मकान बेहद मजबूत और निकाल इस पत्थर और लोहे के बने हैं उन। मेरी कुछ के दौरान सरकार के कार्यों के पास इतनी पर्याप्त को बतौर ताकत (ज़ानी वक्त नहीं होता की राह पर नजर के सामने पड़ने वाले काफिरों के मंदिरों को बर्बाद पर तहस-नहस कर सकें। तुम्हें एक कट्टर दरोगा तैनात करना चाहिए, जो बाद में उन्हें इत्मीनान से नष्ट कर सके और उनकी नी में खुद सके... उल्ला खां को संबोधित करते हुए औरंगज़ेब: कालीमात ए औरंगज़ेब में।

1 जनवरी 1705: सम्राट ने दरोगा मुहम्मद खलील और राय को बुलाकर उन्हें हुक्म दिया कि पंढरपुर के मंदिर को ध्वस्त कर दिया जाए और काफिले के कसाई को वहां ले जाकर मंदिर में गाय काटी जाए... ऐसा किया गया। प्रतिष्ठित इतिहासकार को प्राथमिक स्रोत तक जाने की जहमत उठाने की जरूरत नहीं थी। उसे यह और अन्य ब्यौरे सर जदुनाथ सरकार की जानी-मानी पुस्तक को मा हिस्ट्री ऑफ औरंगज़ेब औरंगज़ेब का इतिहास के तीसरे खण्ड में एक ही संबंध परिशिष्ट में मिल सकते हैं यह इतिहास 1928 से ही अनवरत उपलब्ध है। हमारा लेखक 1996 में लिखते हुए उस प्रमाण को सुविधा पूर्वक भूल जाता है जो औरंगज़ेब काल के प्राथमिक विद्यार्थी को भी आसानी से मिल पाते।

हालांकि इसमें राज की कोई बात नहीं है क्योंकि भारत में प्रगतिशील इतिहास लेखन के दो स्तंभ हैं। एक तो यह कि ऐसे प्रमाण पढ़ना ही चाहिए जिनसे हिंदुओं को असहिष्णु साबित किया जा सके। दूसरे को मां इस्लामी सांप्रदायिकता के प्रति सम्मान और सहानुभूति प्रदर्शित अवश्य की ही जानी चाहिए और परक की कसौटी वहीं। क्या आप औरंगज़ेब की तरफदारी करने के लिए हैं? इन इतिहास और व्यवस्थाओं में जिस तीसरी बात पर बरबस ध्यान जाता है, वह यह कि यह इश्तियाक हुसैन कुरेशी जैसे एक व्यक्ति की बातों को किस कदर हूबहू तोते की तरह दौरा देती हैं। जैसा की सुविध इस है, कुरेशी दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ाते थे और फिर पाकिस्तान चले गए। वहां वह इस्लामीकरण के शुरुआती और कट्टर प्रस्ताव आंखों में से एक हुए। 1949 में पाकिस्तान की संविधान सभा ने जो ऑब्जेक्टिव रेजोल्यूशन (उद्देश्य प्रस्ताव पारित किया था और जो

इस्लामीकरण का मूल स्त्रोत हो गया उन्हें उसका एक मुख्य प्रारूप कार होने का श्रेय हासिल है। वह लियाकत अली खां की सरकार में मंत्री बने और बाद में पाकिस्तान स्टोरी कल सोसाइटी के अध्यक्ष। अंततः उन्हें पाकिस्तान के सर्वोच्च सम्मान सितारा--

ए-पाकिस्तान से सुशोभित किया गया।

अपनी पुस्तक द मुस्लिम कम्युनिटी ऑफ indo-pak सबकॉन्टिनेंट ब्रेड भारत-पाकिस्तान उपमहाद्वीप का मुस्लिम समुदाय मैं कुरेशी औरंगज़ेब द्वारा जजिया लगाने के बारे में जो टिप्पणियां करते हैं इस प्रकार हैं

जब आलमगीर प्रथम ने 115 साल की अवधि बीतने के बाद दोबारा जजिया लगाया तब धर्मांतरण की संख्या में कोई अचानक उछाल दर्ज नहीं की गई। आंकड़े चुनाव नहीं होने से किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंच पाना कठिन है, किंतु यहां तक कि मुझे ईमेल पानी जैसे जजिया दोबारा लगाने के कट्टर समर्थक के धर्म पत्रों में भी यह दलील नहीं दी गई थी कि जजिया को खत्म करने से इस्लाम के प्रचार-प्रसार पर किसी भी तरह कोई प्रभाव पड़ा था; नाही बदायूनी को मां जिसने रूढ़िवाद से अकबर के च** होने पर ब्लॉक किया था और जिसने न सिर्फ जजिया की समाप्ति, बल्कि साम्राज्य के मामलों में हिंदू प्रभाव की बढ़ोतरी को भी ना पसंद किया था, कहता है कि जजिया की समाप्ति से इस्लाम के प्रचार में बाधा पड़ी थी। जजिया को खत्म करने या दोबारा लगाने के नतीजतन धर्मांतरण की दर में किसी अर्थ पूर्ण पक्का कोई लिखित प्रमाण नहीं है...।

अगर जजिया गैर मुसलमानों पर बहुत भारी बोझ होता तो उसके कारण धर्मांतरण बहुत हो सकते थे लेकिन वह कोई बहुत भारी बोझ नहीं था। यह केवल शरीर से सक्षम पुरुष बालिगों पर लगाया था, जिनके पास जरूरी खर्चों को पूरा करने और अपना व अपने परिवार का भरण पोषण करने के बाद अतिरिक्त आमदनी होती थी। पुरोहितों और बिट्टू को जैसे धार्मिक वर्गों को छूट दी गई थी...। कर निर्धारण दया और उदारता के साथ किया गया जान पड़ता है, क्योंकि किसी भी समय जजिया राजस्व का महत्वपूर्ण स्त्रोत नहीं था और गैर मुसलमान आबादी के बहुत बड़े हिस्से को एक या दूसरे कारण से छूट दे दी गई थी। अगर कोई कर भारी किंतु बर्दाश्त करने लायक भी हो तब भी लोग उससे बचने के लिए धर्म बदलने के अनुच्छेद होते हैं; किंतु जब वह भारी नहीं होगा तब वह वह

धर्मांतरण के लिए कोई प्रलोभन ही नहीं होता इसलिए ऐसा संभव नहीं जान पड़ता कि जजिया ने, किसी भी महत्वपूर्ण तरीके से इस्लाम में धर्मांतरण में मदद की थी। और हमारा प्रतिष्ठित इतिहासकार कहता है--

हमें बताया जाता है कि ताजपोशी के बाद औरंगज़ेब ने एकाधिक अवसरों पर जजिया को पुनर्जीवित करने का विचार किया था लेकिन राजनीतिक विरोध के भय से वह ऐसा नहीं कर सका। आखिरकार 1679 में अपने शासंन्काल के 22 साल में उसने यह दोबारा लगाया इस कदम के पीछे औरंगज़ेब का क्या प्रयोजन रहा होगा इस बारे में इतिहासकारों के बीच काफी बहस हुई है पहले यह देखा जाए कि क्या

प्रयोजन नहीं था। इसका मकसद हिंदुओं को इस्लाम अपनाने को मजबूर करने के लिए आर्थिक भार डालना नहीं था क्योंकि यह कर बाहर काफी हल्का था-- औरतों को, बच्चों को, विकलांगों को और गरीबों को, यानी उन्हें यानी उन्हें, जिनकी आमदनी गुजारे से कम थी, छूट दी गई थी, जैसा कि उन्हें भी दी गई थी, जो सरकारी सेवा में थे।

न ही, दरअसल, इस कर के कारण हिंदुओं के किसी बड़े हिस्से ने अपना धर्म बदला। दूसरे को इसका मकसद कठिन वित्तीय स्थिति से पार पाना भी नहीं था। हालाकी जजिया अहमद ने काफी हुई बताई जाती है, लेकिन बड़ी संख्या में उप करो का त्याग करके जिन्हें अबवाव कहा जाता है था, जो शराब द्वारा स्वीकृत नहीं थे और इसलिए गैरकानूनी माने जाते थे, औरंगज़ेब ने काफी धनराशि कुर्बान कर दी। जजिया दोबारा लगाना, दरअसल अपनी प्रकृति में राजनीतिक और विचारधारा दोनों था। इसका प्रयोजन विद्रोह पर उतारू मराठों और राजपूतों के खिलाफ और संभवत के मुस्लिम राज्यों खासकर गोलकुंडा के खिलाफ जो काफिरों के साथ मिला हुआ था राज्य के रक्षा के लिए मुसलमानों को एकजुट करना था। दूसरे जजिया ईमानदार अल्लाह से डरने वाले मुसलमानों द्वारा एकत्र किया जाना था जो इस उद्देश्य के लिए खास तौर पर नियुक्त किए गए थे और इससे होने वाली आय को उलेमा के लिए सुरक्षित रखा गया था। इस तरह यह उन धर्म शास्त्रों के लिए बड़ी रिश्वत थी जिनमें से बहुत सारे उस वक्त बेरोजगार थे।

इतिहासकार पर जजिया पर अमल में खामियों का जिक्र करता है, लेकिन उसका अंतिम फैसला उतना ही सुविचार इत रहता है, जितना कुरैशी का था। कुछ आधुनिक लेखकों का मत है कि औरंगज़ेब के उपायों के पीछे

योजना भारत को दारुल हर्ब काफिरों की भूमि से बदलकर दारुल इस्लाम और मुसलमानों से आबाद भूमि बनाने की थी। हालांकि और इस्लाम में धर्मांतरण को प्रोत्साहित करना जायज मानता था लेकिन योजना बड़े पैमाने पर जबरन धर्मांतरण की कोशिशों के प्रमाण मौजूद नहीं थे। नाही हिंदू अभी जनों के खिलाफ भेदभाव हुआ था... इसी प्रकार उमा कुरैशी अपनी किताब में इस बात में इस बात पर जोर देते हैं कि औरंगज़ेब के सामने गोलकुंडा और बीजापुर के खिलाफ अभियान छेड़ने के अलावा कोई चारा नहीं था। वह लिखते हैं:

सल्तनत है अपने राज्य क्षेत्रों के भीतर शांति बनाए रखने में भी असमर्थ थी। मराठों ने उन्हें लूट कर युद्ध का बल और संसाधन प्राप्त किए थे। इसके अलावा,सल्तनत हैं उनकी कीमत पर मराठा शक्ति में वृद्धि के बावजूद गुप्त रूप से उनके साथ मिली हुई थी और धनौरा कुर्तियों से उनका मदद करती थी। गोलकुंडा में तो स्थिति और भी बदतर थी, क्योंकि वास्तविक सत्ता दो ब्राह्मण अधिकारियों-- मदन ना और अकड़ना के हाथों में थी, जिनके गणित शासंन् से सल्तनत की मुस्लिम आबादी रूचि थी और जो मराठों के

और भी उत्साही समर्थक थे। ऐसी परिस्थितियों में संतों को अकेला छोड़ देना बेवकूफी ही होती।

अपनी पुस्तक उलेमा इन पॉलिटिक्स (राजनीति में उलेमा) में कुरेशी इस विषय पर लौट कर आते हैं और लिखते हैं: टेकन ओं की संतानों को मराठों ने इतना कमजोर कर दिया था कि वे तेजी से अराजकता की हालत में धंसी जा रही थी, जिन्होंने उनके राज्य क्षेत्रों में हर उस चीज को हथिया लिया था जिसकी उन्हें जरूरत थी पुलिस और इसके अलावा मराठों से उनका गठजोड़ था, क्योंकि वे अतार्किक और विकृत ढंग से यह सोचती थी कि मुगलों की चुनौती से निपटने के बाद मराठों से कहीं ज्यादा आसानी से निपटा जा सकेगा मराठा गतिविधियों की संभावना और क्षमता को यह बहुत कम करके आंकना था। जहां तक आलमगीर का संबंध था उसके सामने कोई चारा नहीं था। मराठा और सल्तनत एक ही समस्या थे और उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता था। जो लोग सोचते हैं कि संतों को मराठों के विरुद्ध कार्रवाई के लिए समझाया बुझाया जा सकता था या मराठा विस्तार के खिलाफ आर्थिक स्थिति की भाषाओं को अनदेखा करते हैं।

हमारे प्रतिष्ठित इतिहासकार का फैसला भी इसी के समान है। वह कहता है: औरंगज़ेब की इस बात के लिए आलोचना की जाती है कि वह मराठों के खिलाफ 1 राज्यों को एक बंद करने में विफल रहा या उसने उसको पता

करके साम्राज्य को इतना बड़ा बना लिया कि वह अपने बॉस से धराशाई हो गया पुलिस और एक बार जब 1636 की संधि का परित्याग कर दिया गया और यह घटना खुद शाहजहां के शासंन्काल में ही घटी थी तब औरंगज़ेब और राज्यों के बीच हार्दिक एकता मनोविज्ञान रूप से असंभव थी। अपनी ताजपोशी के बाद औरंगज़ेब ने डेक्कन में जोशीली आक्रामक नीति पर चलने से परहेज बरता। दरअसल उसने डेक्कनी राज्यों को फतह करके अपने में मिलाने के निर्णय को जितना संभव हो सकता था, स्थगित किया रखा। जिस चीज ने औरंगज़ेब को वस्तुतः विवश कर दिया, तो वह थी मराठों की बढ़ती शक्ति, गोलकुंडा से मदद ना और अकड़ना का शिवाजी को दिया गया समर्थन और यह डर की बीजापुर भी शिवाजी और मराठों के प्रभुत्व वाले गोलकुंडा के आधिपत्य में जा सकता है। बाद में, विद्रोही राजकुमार अकबर को आश्रय देकर संभाजी ने औरंगज़ेब को वस्तुतः चुनौती दे दी, जिससे उसे फौरन यह एहसास हुआ कि पहले बीजापुर और संभवत गोलकुंडा को आधीन किए बगैर मराठों से नहीं निपटा जा सकता।

और हालाकी सतीश चंद्रा यह स्वीकार करने को तैयार नहीं दिखाई देते कि काश औरंगज़ेब को यह बेहतर सलाह दी गई होती कि व्यक्ति अपने सबसे बड़े बेटे, शाह आलम द्वारा दिए गए सुझाव को स्वीकार चरके बीजापुर और गोलकुंडा के साथ

संधि कर ले और राज्य क्षेत्रों के एक हिस्से पर ही कब्जा करके दक्षिण कर्नाटक पर उन्हें राज करने दे, जो वैसे भी बहुत दूर और निगरानी के लिए आज से मुश्किल था, लेकिन औरंगज़ेब की मजबूरियों के प्रति उनके सहानुभूति कुरैशी से जरा भी कम नहीं है।

कुरेशी बड़ी मेहनत से इस बात पर जोर देते हैं कि औरंगज़ेब ने कोई नए कानून स्थापित नहीं किए पर यह भी कि इसलिए उसके बाद साम्राज्य के पतन के लिए उसकी धार्मिक नीतियों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। वह लिखते हैं:

मुस्लिम साम्राज्य उपमहाद्वीप में अनेक सदियों से कायम था। इस्लाम के रूढ़िवादी कानून कम या ज्यादा पूर्णता के साथ आरोपित किए जाते रहे थे। आलमगीर प्रथम नए कानूनों को अस्तित्व में नहीं लाया। इन सारी सदियों के दौरान जजिया केवल 115 साल की अवधि के लिए ही सुसुप्त अवस्था में रहा था। अनाधिकृत मंदिरों

को गिराने का आदेश शाहजहां की आधी नहीं दिया गया था और वह आलमगीर ने कोई पहली बार लागू नहीं किया था। आलमगीर प्रथम की मौत के बाद साम्राज्य ताश के पत्तों की तरह ढह गया, तो उसके मुख्य कारण उस सम्राट की धार्मिक नीतियों की वजह कहीं और खोजने चाहिए, हालांकि उन्होंने भी उसके विघटन में कुछ न कुछ भूमिका तो निभाई ही थी।

हमारा प्रतिष्ठित इतिहासकार इसी बात पर करीब करीब इन्हीं शब्दों में एक के बाद एक संदर्भ में जोड़ देता है: मंदिरों के बारे में औरंगज़ेब का आदेश कोई नया आदेश नहीं था। इसमें उसी स्थिति की दोबारा पुष्टि, जो सल्तनत काल के दौरान मौजूद थी और जिसे शाहजहां ने अपनी हुकूमत के प्रारंभिक वर्षों में दोहराया था... और हां जजिया भी कोई पहली बार नहीं लगाया गया था...यह 115 सालों के अंतराल के बाद दोबारा लगाया गया था।

और इसी तरह आगे भी। इस तरह औरंगज़ेब की नीतियों के पक्ष में जो सफाई आदि जाती हैं, वह बिल्कुल एक ही हैं, कमी है तो सिर्फ उस श्रद्धा की जो कुरैशी के मन में औरंगज़ेब के प्रति है। या तो यह इस बात के उदाहरण हैं कि महान मस्तिष्क एक ही जैसा सोचते हैं या यह तथ्य के कि उनके दिमाग में बौद्धिक साहस और धर्मनिरपेक्षता की कसौटी यह है कि वह अपने पूर्ववर्ती के दावों को आत्मसात करके दोहरा सकते हैं या नहीं? साभार…

(30 अक्टूबर 1998: दैनिक जागरण, कानपुर)

परिशिष्ट: 3

सेक्युलर नेताओं की समझ

--- दीनानाथ मिश्र

राज्यों के शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन के संदर्भ में अखबारी तल पर जॉब आवेला खड़ा हुआ उसे अखबारी शिक्षकों और रपटों से कुछ परे जाकर गहराई से देखने की जरूरत है। इस संबंध में ले देकर एक पीढ़ी चितलांगिया को

विवाद का केंद्र बनाया गया। कहा गया कि उनका प्रपत्र और उनके विचार संघ परिवार का एजेंडा है और शिक्षा के भगवाकरण के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने उन्हें राज्यों के शिक्षा मंत्रियों और शिक्षा सचिवों के सम्मेलन में अपना प्रपत्र पेश करने का प्रस्ताव किया था। अगर यह सच है तो दुनिया में कुछ भी झूठ हो ही नहीं सकता। चितलांगिया कभी संघ की शाखाओं में नहीं गए। यह उन्होंने जरूर कहा कि भले ही वह संघ के सारे विचारों से सहमत नहीं हैं लेकिन वह संघ के प्रशंसक जरूर हैं।

चितलांगिया पेंट शॉप ट्राईबल सोसायटी के अध्यक्ष हैं। जनजातियों के शैक्षिक क्षेत्र के लिए इस संस्था का निर्माण उन्होंने 1989 में किया था। इस समय वह काम खर्चे पर आधारित प्राथमिक शिक्षा के गुरुकुल प्रणाली से 300 प्राथमिक विद्यालय इतने ही दामों में चला रहे हैं। अगले 3 वर्षों में उनके गुरुकुल विद्यालयों का यह आंकड़ा 5000 तक पहुंच जाएगा। चितलांगिया के इस महा प्रकल्प का कोई सरकारी या अंतरराष्ट्रीय सहायता नहीं मिलती। वह स्थानीय साधनों से ही प्राथमिक शिक्षा वनवासी समाज में प्रसार कर रहे हैं पुलिस अब तक 40000 विद्यार्थियों को वह प्राथमिक शिक्षा दे चुके हैं वह कहते हैं कि सरकार के प्रयास से प्राथमिक शिक्षा के लिए गांवों में 1 शिक्षक वाले स्कूल भी अपेक्षित आया खड़े हैं। 52 स्टेशनरी अध्यापक मिलाकर खर्चा एक लाख से अधिक आता है उन्होंने जो पद्धति विकसित की है उससे साडे ₹300 छात्र के हिसाब से बच्चे को प्राथमिक शिक्षा दी जा सकती है और वह दे रहे हैं। शिक्षा शास्त्री और नेतागण ईच वन टीच वन अर्थात हर आदमी को शिक्षित करें जैसे नारे देते हैं लेकिन ऐसा अभी तक हुआ नहीं है।

... भारत की सांप्रदायिक राजनीति का चरित्र है इस्लामी है और वह आज से नहीं, शताब्दियों से है। 1947 के पहले 30 वर्षों में मुस्लिम सांप्रदायिकता भयानक आकार लेती गई। 1934 में काफी नोएडा में अखिल भारतीय कांग्रेस का सम्मेलन हो रहा था। विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने मंच से वंदे मातरम का वह गीत गाया जो स्वतंत्रता सेनानियों का राष्ट्रभक्ति और स्वतंत्रता की प्रखर चेतना को प्रवाहित करता था। इसमें

भारत माता के दुर्गा स्वरूप की पूजा का भाव भी है। उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना मुहम्मद अली थे वह यह कहकर वाकआउट कर गए कि यह तो मूर्ति पूजा है पुलिस ऑफ मुहम्मद अली का वाकआउट मुस्लिम सांप्रदायिकता का तत्कालीन तापक्रम बताने वाला था। यही आगे चलकर जो राष्ट्रवाद के रूप में प्रकट हुआ। इसी कारण भारत का विभाजन हुआ। बीसीए लाख लोग मारे गए। विभाजन जन्नत सैकड़ों समस्याओं से

आज भी भारत जूझ रहा है। शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में वोट बैंक की जो राजनीति प्रकट हुई वह भी उसी में दिशा है। यह उस देश के मूल हिंदू समाज और उसके संस्कृति व सांस्कृतिक प्रतीकों का विरोध है।

इसकी हास्यास्पद पराकाष्ठा देखिए। राज्यों के शिक्षा मंत्रियों और शिक्षा सचिवों का सम्मेलन का शुभारंभ सरस्वती वंदना से होता था। दो राज्य के मार्क्सवादी मंत्रियों ने इसका विरोध किया। फिर क्या था? कांग्रेस और अन्य गैर भाजपा दलों ने सर सरस्वती वंदना का उसी तेवर में विरोध करना चालू कर दिया। यहां ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि पिछले वर्ष राज्यों के ऐसे ही मंत्रियों के सम्मेलन में, जिसमें राष्ट्रपति केआर नारायणन और तब के प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल भी थे को मां सरस्वती वंदना हुई थी तब इसका विरोध किसी ने नहीं किया था। कोई और सरस्वती वंदना करें तो वह सर्कुलर होती है, भाजपा करे तो सांप्रदायिक हो जाती है देश के अनेक भागों में बसंत पंचमी के दिन सरस्वती पूजा होती है बिहार और बंगाल में तो धूमधाम से होती है। बंगाल में मार्क्सवादी पार्टी के मंत्री और नेता बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। बंगाल में तो इस दिन छुट्टी भी रहती है लेकिन शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में मार्क्सवादी और कांग्रेस पार्टी के प्रतिनिधियों ने सरस्वती वंदना का भी जमकर विरोध किया। यह भी है कि नेता जी सुभाष चंद्र बोस ने तीस के दशक में कोलकाता कॉलेज के सामने विद्यार्थियों के सरस्वती पूजा के अधिकार के लिए धरने का नेतृत्व किया था।   धन्य है वोट बैंक की राजनीति जो सरस्वती वंदना संप्रदायिकता का की चलती रही है

जोशी ने अपने पत्र में माध्यमिक शिक्षा तक संस्कृति की अनिवार्य शिक्षा का भी उल्लेख किया है बी ग्रेड के मंत्रियों ने इसका भी जमकर विरोध किया है। इसे भी भगवाकरण के इरादे का प्रमाण बताया जिस देश में 82% हिंदुओं को मां की प्राचीन विज्ञान की भाषा संस्कृत हो और जो संस्कृत विश्व की नितांत परिष्कृत भाषाओं में से परिपूर्ण मानी जाती हो जिसे कंप्यूटर साइंस के लिए सर्वोत्तम भाषा स्वीकार किया गया होगा जिसमें प्राचीन ज्ञान विज्ञान का अथाह भंडार भरा हो, उस संस्कृत का विरोध भी सेकुलर राजनेताओं का परम उद्देश्य बन जाना कम विडंबना पूर्ण नहीं है।…. महात्मा गादी ने कहा है-- हर हिंदू को संस्कृत पढ़नी चाहिए।   हिंदुओं को

ही नहीं, मुसलमानों को भी संस्कृत पढ़नी चाहिए क्योंकि राम और कृष्ण उनके भी पूर्वज थे और अपने पूर्वजों को जानने के लिए संस्कृत पढ़ना आवश्यक है। (दैनिक नवजीवन 23 मार्च 1927)...

इन उदाहरणों से मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि हमारे धार्मिक ग्रंथों में पारिवारिक मूल्यों के पाठ भरे पड़े हैं। उनकी उपेक्षा से पहले ही बहुत नुकसान हो चुका है। बड़े-बड़े शिक्षा शास्त्री नैतिक शिक्षा के पक्षधर रहे हैं। नैतिक शिक्षा 0 में से नहीं निकलती। धार्मिक ग्रंथों में से निकल सकती है। लेकिन सेकुलर ब्रिगेड राजनीति के कारण इसका विरोध करता है। अमेरिका भी धर्म हीनता केकू परिणामों को समझने लगा है। कोई यह नहीं कहेगा कि अमेरिका पंथ निरपेक्ष देश नहीं है। भारत में सेकुलर वादी वेद पुराण, गीता रामायण का वगैरा को सांप्रदायिकता के खाने में डाल देते हैं। लेकिन पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने 1983 को बाइबिल वर्ष के रूप में मनाया था इसकी घोषणा करते हुए उन्होंने कहा था इसलिए अब मैं रोनाल्ड रीगन अमेरिका का राष्ट्रपति का हमारे गणतंत्र और आम लोगों के लिए बाइबल के योगदान और प्रभाव को मान्यता देते हुए इस वर्ष को बाइबल वर्ष मनाने का करता हूं। में अमेरिका के सभी नागरिकों से (यहां उन्होंने नागरिकों की बात नहीं की थी।) बाइबल के अमूल्य और कालातीत मूल्यों को फिर से ढूंढने और उनका परीक्षण करने का आग्रह करता हूं। जरा कल्पना कीजिए कि अगर प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई उसी तर्ज में किसी वर्ष को गीता वर्ष मनाने का आग्रह करें तो सेकुलर राजनेता कितना आवेला मचाएंगे?...

साभार: (30 अक्टूबर 1998: दैनिक जागरण, कानपुर)

परिशिष्ट:4

भारतीय इतिहास के पुनर लेखन की आवश्यकता

-- डॉ देवर्षि शर्मा

एक इतिहासकार को निष्पक्षता से न्याय पूर्वक इतिहास लेखन करना चाहिए और ग्राम अपने देश के इतिहास लेखन में विदेशी इतिहासकारों ने दुर्भाग्य से अपने रुचि, दृष्टिकोण और स्वार्थ के अनुरूप लेखन किया है। यह और भी विडंबना का विषय है कि भारतीय इतिहासकारों ने 14 के अन्वेषण पर कम और विदेशी तौर-तरीकों को

मां उनके साधनों तथा उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों पर आश्रित होना अधिक अच्छा समझा। परिणाम तो है प्राचीनतम वैदिक संस्कृति तथा तत्कालीन विकसित सभ्यता का सही सही स्वरूप हमारे समक्ष आज तक नहीं आ सका है। अंग्रेज इतिहासकार अधिकांशत है किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थापित किए गए थे। हमारे धर्म ग्रंथों का अध्ययन भी उनके द्वारा इसी उद्देश्य से किया गया था। फिर ऐसे रंगीन चश्मा धारकों को ऐतिहासिक तथ्य अपने मौलिक रूप में कैसे दिखाई पड़ सकते थे। ऐसे लेखकों को वास्तविकता ओं की अनदेखी करनी पड़ी ऐसा सोच समझकर तथा जानबूझकर नीतिगत तरीकों से किया गया। वैदिक साहित्य और दर्शन तथा वैदिक संस्कृति के विलक्षण उत्कृष्ट स्वरूप को देखकर विदेशी इतिहासकार हीन भावना से ग्रस्त हो गए और वह भारत को ऐसी संस्कृति के जन्म स्थान का श्रेय लेने से वंचित करने की उधेड़बुन में फंसकर आर्य और वैदिक संस्कृति को मध्य एशिया से आयातित स्थापित करने में प्राण-प्रण से एकजुट हो गए। जिसका आधार आज तक बताने में पूर्णत असफल रहे हैं। पुरातन वैदिक संस्कृति और वैदिक ज्ञान को समझने का सर्वोत्तम साधन क्या है? इसे समझने हेतु हमें वह स्वीकारना चाहिए जो सोते वेद लाते हैं या की जो रंगीन चश्मा धारा के इतिहासकार बतलाते हैं? स्पष्ट है, तब तक पहुंचने हेतु इसे समझना आवश्यक है।

छात्रों को छोड़कर वैदिक काल में समझने हेतु अलग से कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं है क्योंकि हजारों वर्षों तक भारतीय मूल के लोग अपना ढोल सोते हैं पीटने तथा इतिहास लिखने व उसे सुरक्षित करने में विश्वास ही नहीं रखते थे। इतिहास सुरक्षित रखने के प्रति सर्वदा उदासीन थे जैसा अन्यत्र नहीं देखा जाता। शास्त्रों को ही उन्होंने पर्याप्त माना तथा अलग से इतिहास लेखन को उचित नहीं माना। प्रणाम तहे विदेशी लेखकों ने मनमानी करने की चेष्टा की तथा अपने हितों को देखते हुए काल निर्धारित कर डाला और हमने बिना नानुकु किए चौथे खोज के उसे स्वीकार भी कर लिया। आर्य मध्य एशिया से भारत में युद्ध करते हुए प्रविष्ट हुए? उन्हें अपने साथ ही वैदिक साहित्य और संस्कृति लाए? यह कहां से आए?

उनकी संस्कृति का उद्भव कहां हुआ? उस का उद्गम स्थान कहां है? भारत में घुसपैठ करते समय उनका युद्ध किससे हुआ और कहां हुआ तथा उन युद्धों के साक्ष्य रूप प्रमाण क्या है? इन अनेकों प्रश्नों का उत्तर इन सजाने इतिहासकारों के पास कुछ भी नहीं है। साथ ही, प्राचीन देश को प्राणहीन बनाने की सुनियोजित कूटनीति के अंतर्गत गौरव ने श्रीराम और श्रीकृष्ण को काल्पनिक के विद्यार्थियों पर आधारित घोषित कर डाला ग्राम प्रत्येक

घर परिवार को झंकृत करने वाले इन दो नामों से हमसे अलग करने का कुत्सित प्रयास किया गया, जिनके जीवन ने श्रीलंका को इंडोनेशिया के जावा सुमात्रा तथा पूर्व एशिया के देशों को युद्ध से नहीं, आस्था व प्रेरणा से प्रभावित किया था उन्होंने तत्वों के सर्वथा अभाव में भी इतनी बड़ी बात हमारे इतिहासकारों से मनवा दिल्ली के आर्य भारत के मूलनिवासी ही नहीं हैं वेद और वैदिक संस्कृति आयातित है पराकाष्ठा ही है कि हमें भी आक्रमणकारी और लुटेरा बताने की धूर्तता की और इतिहास रच डाला।

 वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले इतिहासकार शास्त्रों को प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं करते।   युगांतर ओ पुराने हमारे इतिहास का प्रारंभ वह लगभग बुध की मृत्यु काल, 483 ईसा पूर्व से मानते हैं वे यह तो स्वीकारते हैं कि वैदिक काल ईसा से हजारों वर्ष पूर्व का है किंतु वे इसके समय निर्धारण को जानबूझकर सुरक्षित नहीं मानते। प्रमुख भारतीय दर्शन अध्ययन करता, मैक्स मूलर वैदिक संस्कृति का समय निर्धारण करते हुए उसे,, ब्राह्मण और सूत्र चार भागों में विभक्त करते हैं। डॉक्टर राधाकृष्णन भारतीय इतिहास की व्यापक विभक्ति वैदिक महाकाव्य 1 सूत्र एवं प्राकृतिक-- इन चार भागो में विभक्त करते हैं एक अन्य विद्वानों का मत है कि वैदिक काल का कोई भी समय निर्धारण प्रयास सदैव अवैज्ञानिक होगा।उनके अनुसार वर्तमान उपलब्ध ज्ञान के आधार पर   (वैदिक समय निर्धारण किस प्रकार का कोई भी प्रयास सफल होगा, पर काल्पनिक निधि या समय निर्धारण एक धोखा है जो हानि अधिक और लाभ कम देने वाला होगा। अतैवनिष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि मौलिक भारतीय वैदिक सभ्यता का कोई इतिहास कम से कम आज के इतिहास नेताओं के पास उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में पुरातन भारतीय सभ्यता और संस्कृति को मात्र 6 या 5000 वर्षों में समेट देना धूर्तता और मूर्खता नहीं तो और क्या है।

 ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना भारत लूटो अभियान का प्रथम चरण था।   गौरव ने इसी व्यापारिक संस्था के सहारे भारत में अपने पैर पसारे थे। पर भारत के अर्वाचीन इतिहास के खोज के इस कंपनी द्वारा प्रायोजित इतिहासकारों के निष्कर्षों को स्वीकारना कहां तक तर्कसंगत होगा और उसे क्यों स्वीकार आ जाए? इस कंपनी के विद्वानों द्वारा 1830 में सम्राट अशोक के शिलालेखों का स्पष्टीकरण कर भारतीय सभ्यता का समय निर्धारण 300 ईसा पूर्व निर्धारित कर दिया गया। उन्हें बीसवीं सदी के प्रारंभ में 1920 में इतिहासकार सर जॉन,

मार्शल के देखरेख में सिंध प्रांत के निकट हड़प्पा और मोहन जोदड़ो नगरों का प्राकट्य हुआ। यह नगर विकसित शहरी समुदाय के जीवन शैली को प्रकाशित करने वाले हैं। तत्काल 300 ईसा पूर्व से भारतीय सभ्यता 3,000 ईसा पूर्व पुरानी हो गई। फिर भी वैदिक काल का समय निर्धारण नहीं हो सका। उन्हें 1967 में भोपाल मध्य प्रदेश के निकट उपलब्ध गुफाओं में प्रागैतिहासिक पेंटिंग्स देखी जा सकती हैं जिसे भी मेट के नाम से जाना जाता है। अभी तक किसी ने कलापूर्ण पेंटिंग्स का आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अध्ययन नहीं किया इसे वहां के लोग एक लाख वर्ष पुराना मानते हैं तथा स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफिस द्वारा प्रकाशित ग्रंथ ए सर्वे आफ हिंदुस एस थे 30000 वर्ष ईसा पूर्व का स्वीकार करता है कोई इतिहासकार स्पष्ट करें भारत की सभ्यता का आकलन किस क्षेत्र से कैसे किया जाए और कब से किया जाए? क्या अर्थ निकाला जा सकता है-- भारतीय संस्कृति और सभ्यता 300 ईसवी पूर्व की है या तीन हजार ईसा पूर्व का है या 30,000 वर्ष पूर्व की है या और कुछ खोज निकाली और निर्धारित करें 30,000 वर्ष ईसा पूर्व की। प्रश्न है भारत के साथ इतिहास निर्धारण में स्पष्ट करने तथा काल निर्धारण करने में बेईमानी और अटकल बाजी क्यों की जाती है? गोरे लेखक वैदिक काल निर्धारण में सच लिखने से क्यों कतराते हैं? अपने को भारतीय सभ्यता के समक्ष बोना स्वीकारने से घबराते क्यों हैं? अन्य किसी प्रमाण की खोज में समय क्यों नष्ट करते हैं तथा भारतीय शास्त्रों को ही प्रमाण क्यों नहीं मानते? एक और महत्वपूर्ण और गंभीर प्रश्न यहां यह उठता है कि पाश्चात्य गोरे इतिहासकार इसे माने या ना माने, हमारे अपने देश के विद्वान इसे क्यों नहीं मानते, क्यों नहीं खोजते शास्त्रों में प्राचीन भारत का स्वर्णिम इतिहास? जिसकी नियत में ही खोट है-- ऐसे गोरे इतिहासकार या लेखक की क्या मान्यता? यह समझने का विषय है-- जिस शिक्षक या इतिहासकार में भेद बुद्धि से युक्ति का अभाव है तथा वह विद्यार्थियों के मध्य भेदभाव करता है या अपनी लेखनी से पूर्व आग्रह पूर्वक इतिहास लेखन करता है? ऐसे शिक्षक को शिक्षा देने का तथा इतिहासकार को लेखन का नैतिक अधिकार नहीं है। यह दोनों ही मानवता के शत्रु हैं और निंदनीय और दंडनीय है।

भारत वर्ष के इतिहास लेखन में गोरे इतिहासकारों की नियत तथा उनके पूर्वाग्रहों के संबंध में यह बात में प्रमाण कहना चाहता हूं। सर विलियम जॉन्स (1746- 1794) चार्ल्स विलिकंस   (1749- 1836), और थॉमस स्कूल बुक (1765- 1837) को भारतीय दार्शनिक ज्ञान का जनक माना जाता है। सर विलियम जोंस को 1783 में कोलकाता स्थित भारतीय सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त किया गया था। उन्होंने संस्कृत के अनेक ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद किया किंतु उनका दृष्टिकोण एक कट्टर आस्था वाला एसआई का था। उन्होंने श्रीमद्भागवतपुराण को एक मातटले स्टोरी (इधर उधर की आसमान बातों की कहानी) बतलाया है। साथ ही वह

यह भी कहते हैं कि भागवत का जन्म क्रिश्चियन घायल (ईसा के उपदेश) से हुआ है जो भारत में लाया गया तथा जैसे हिंदुओं के मध्य बारंबार दोहराया

गया जिन्होंने ग्रीस के अपोलो, केशव (अंग्रेजी स्पेलिंग में सी.ई. एस. ए.वी. ए.) की कहानियों पर आधारित (केशव कृष्ण का अन्य नाम) बनाकर इसकी रचना कर डाली। कहां कृष्ण का काल, कहां क्राइस्ट का समय-- है ना बे सिर पैर की बेतुकी बात-- इन्हें सर विलियम कहते हैं। इन की शिक्षा ऑक्सफोर्ड में हुई थी-- इन्हें लगाया गया था भारतीय धर्म ग्रंथों का अनर्थ करने के लिए। दूसरे हैं एचएस विल्सन ने अपने समय का संस्कृत का महानतम विद्वान माना जाता है (यह अपने आप ही मानवता बन जाया करते थे) वह भी ईस्ट इंडिया कंपनी की मेडिकल सेवा में भारत भेजे गए। उन्होंने विष्णु पुराण का लेक्चर ऑन द रिलीजन एंड क्लासिकल सिस्टम ऑफ द हिंदू तथा ऋग्वेद-- तीन ग्रंथ लिखे। उन्होंने क्रेजी, राठी आदि (विक्षिप्त सड़ागला) शब्दों का भारतीय ग्रंथों के लिए प्रयोग किया। वह विद्वान नहीं ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रवक्ता था जिस ने कहा कि वैदिक सभ्यता का स्थान स्थाई सभ्यता द्वारा ले लिया जाना चाहिए। उसने इस उद्देश्य से भाषण देने भी प्रारंभ किए थे। उन्हें अब देखें मैक्सम्यूलर 123 अन्य को जिसे भारत में वेदों का भाषा करने वाला,भारतीय शास्त्रों का अंग्रेजी में अनुवाद करने वाला और इस प्रकार भारतीय संस्कृति की सेवा करने वाला एक महान व्यक्ति समझा जाता है। ज्ञातव्य है कि यह महाशय भी ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा ही लगाए गए भाड़े के व्यक्ति थे। उन्होंने हितोपदेश तथा ऋग्वेद का भाषा अंग्रेजी में किया। उन्होंने 50 खंडों में सैक्रेड बुक्स ऑफ दिस लिखा। उन्होंने अट्ठारह सौ 76 में अपने एक मित्र को लिखा-- सेंट पॉल का समय के रूम का ग्रीस की तुलना में क्रिश्चियनिटी के (प्रचार हेतु लिए भारत अधिक परिपक्व है।) (नीरज सी. चौधरी, कॉलर एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी, 325। मैक्स मूलर) लिखते हैं कि... फिर मैं यह देखना चाहता हूं कि क्या मैं ऐसे काम के योग्य हूं जिसके द्वारा प्राचीन, शरारत पूर्ण भारतीय पूजा पद्धति को बाहर से खा जा सके तथा सरल ईसाइयत की शिक्षा का मार्ग खोला जा सके। उसके अनुसार वैदिक दर्शन आर यू की चली आने वाली कहानियां तथा अमित (चली आने वाली मान्य कहानी है।) उनके ही अनुसार विश्व के पुराने धर्म भाइयों द्वारा की गई गलतियों से क्वेश्चन आस्था तथा ईसु को सहायता पहुंची है। ऐसे ही थे मान्य- विलियम्स (अट्ठारह सौ 1999) जिसने संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी लिखी है वह कहते हैं कि-- हमारी मिशनरी को... झूठी आस्था के लोगों के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। एक और

लेखक थियोडोर बोलकर (1821-1872) अपनी पुस्तक डिक्शनरी ऑफ इंडियन बायोग्राफी में कहता है कि भारत के लोग वैदिक धर्म के बोझ से दबे पड़े हैं जिसके कारण उन्हें सारे विश्व में घृणा और उपहास के पात्र के रूप में देखा जाता है। उसने अन्य पुस्तक इंस्पायर्ड राइटिंग ऑफ़ हिंदू में वैदिक साहित्य की भर्त्सना तो की है साथ ही कहता है कि वैदिक आस्था के लोगों को वह यह बताना चाहता है कि उसने अपने अभूतपूर्व विद्वता से वैदिक ग्रंथों को तहस-नहस कर डाला है ताकि लोग यूरोपियन आस्था मानकर अपना चरित्र विकसित करें। कितने पूर्वाग्रही, दुराग्रही व धूर्त

थे यह सारे के सारे अपने मुंह मियां मिट्ठू तथाकथित विद्वान लेखक जिन्हें इंडोलॉजिस्ट कहते हैं। कितनी खोट थी इनकी नियत में।

इंडोलॉजिस्ट लेखक की एक और भारी शरारत भी समझने योग्य है। अरे कौन है उनके अनुसार लगभग 15 वर्ष पूर्व वैदिक धर्म और संस्कृति से मंडित आर्य समाज के लोग ईरान- अफगानिस्तान के मार्ग से होकर भारत में आए उन्होंने, मध्य एशिया तथा दक्षिण रूस जो उनका मूल निवास स्थान था, यहां से चलते हुए ईरान और भारत पर आक्रमण किए। उनके अनुसार आर्यों द्वारा ही हड़प्पा सभ्यता को नष्ट किया गया उनके अनुसार ही ऋग्वेद में वर्णित युद्धों का संबंध और श्याम वर्ण के मूल निवासी हड़प्पा के निवासी थे से है। आर्यों ने इस युद्ध को लड़कर सिंधु घाटी की सभ्यता को नष्ट कर दिया।

इसे समझना चाहिए, वास्तविकता है क्या? सर्वाधिक महत्वपूर्ण साक्ष्य सरस्वती नदी के लुप्त होने के समय से मिलता है। ऋग्वेद में वर्णित इस नदी के किनारों पर बसे जन स्थानोंतथा सिंधु सभ्यता के अनेक विकसित ठिकानों का वर्णन उपलब्ध है। सेटेलाइट के माध्यम से नासा के वैज्ञानिकों ने इस नदी के पूरे मार्ग का पता लगा लिया है तथा इसका इलेक्ट्रोमैगनेटिक विधि से सूक्ष्म अध्ययन भी किया है। उनके अध्ययन के अनुसार 19 वर्ष ईसा पूर्व में इस नदी में जल प्रभाव पूर्णतया समाप्त हो गया था।

यदि मैक्सी म्यूलर के तरक्की 15 वर्ष ईसा पूर्व आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया,, ना जाए तो उनका तर्क करता नहीं, कारण की पूरी तरह सूखी हुई नदी के तट पर किनगांव और उन में निवास करने वालों की कल्पना वह करते हैं क्योंकि इससे 400 वर्ष पूर्व ही आसपास चल का कहीं अता पता ही नहीं था, फिर बस्ती कैसी? सिंधु

घाटी सभ्यता का अंत किनारे का आक्रमण के कारणों से नहीं हुआ, जिन्हें आर्यों से शरारत पूर्ण तरीकों से जोड़ा जाता है, बल्कि भौगोलिक कारणों से वैसे ही हुआ जैसे मेसोपोटामिया तथा मिस्र की सभ्यता ओं का हुआ। भूविज्ञान के तथ्य बताते हैं उत्तर भारत के सिंध प्रांत में नदियों के मार्ग बदले, भूमि में उथल-पुथल के कारण अनेक स्थानों की ऊंचाई ऊंचाई बदली जो राजस्थान के मरुस्थल के निर्माण का कारण तथा सिंधु सभ्यता के नष्ट होने के कारण बने। उन्होंने सरस्वती नदी का मुख्य केरल में आया जहां आज थार है और जो वैदिक काल में हरा भरा प्रदेश था। के. प्लास्टर मां का कथा डेविड फ्राले, जो इस काल के अध्ययन के विशेषज्ञ हैं सिंधु सभ्यता की धार्मिक आस्था वैदिक आस्था ही मानते हैं तथा आर्यों के आक्रमण की कहानी गोरों की मात्र झूठी चाल। भारतीय इतिहास के साथ इतने बड़े धोखे का विश्लेषण होना परम आवश्यक है तथा भारत के इतिहास का पुनर लेखन करने की आवश्यकता है।

ऐसे प्रश्नों पर बाद का ढोंग पसारना देश हित में नहीं है।

साभारः (17 अगस्त 1998, दैनिक जागरण कानपुर)

परिशिष्ट: 5

इतिहासकारों की तरकीबें

--अरुण शौरी

जैसा कि हम देख चुके हैं, पश्चिम बंगाल सरकार ने 1989 में इतिहास की पाठ्य पुस्तकों के बारे में जो परिपत्र जारी किया था, उसका साफ-साफ आशय यह था कि भारत में इस्लामी हुकूमत के बारे में कोई प्रतिकूल उल्लेख सदा पर नहीं किया जाना चाहिए। हालांकि यह बिल्कुल वही बातें थी, जिनका समकालीन इस्लामिक लेखकों ने गुणगान किया था, लेकिन मुसलमान शासकों द्वारा मंदिरों के विनाश पर कोई जिक्र नहीं होना चाहिए, हिंदुओं के जबरिया धर्मांतरण का कोई जिक्र नहीं होना चाहिए। इस परिपत्र के साथ उन अंशों की तहरीर दी गई है, जिन्हें

हटाया जाना था और जिन्हें उनकी जगह जोड़ा जाना था। जिन अंशु को हटाने का आदेश दिया गया था वह सच्चाई और तथ्यों को बहुत कम करके बताते थे। दूसरी ओर उनकी जगह जो अंश जोड़ने की चेष्टा की गई थी, वे नितांत झूठ थे। मसलन यह कि इस्लामी शासंन् के अधीन हिंदू जजिया अदा करके सामान्य जीवन बिता सकते थे। आज पश्चिम बंगाल सरकार की सत्ता के अधीन जिन पाठ्यक्रमों का प्रयोग किया जा रहा है उनके घनिष्ठ अध्ययन से पता चलता है कि यह केवल इस्लामी हुकूमत हो कि करोड़ों को मिटाने का ही षड्यंत्र नहीं था बल्कि उससे कहीं ज्यादा व्यापक कहीं ज्यादा योजना काम कर रही थी। इस्लामी हुकूमतों की क्रूरता ओं का तो खैर कोई जिक्र नहीं है। लेकिन इसके अलावा, अलीगढ़ आंदोलन का विकास और उसके उद्देश्य, इस, मुस्लिम लीग की भूमिका, ब्रिटिश हुकूमत से उसके नजदीकी संबंध, दो राष्ट्र के सिद्धांत की उसकी वकालत, इस सबको उन आधा दर्जन पाठ्य पुस्तकों से करीब-करीब पूरी तरह मिटा दिया गया है, जो कोलकाता के शिक्षकों ने कृपा पूर्वक भेजी हैं। सिर्फ एक किताब थी, कक्षा 8 के लिए अतुल चंद्र द्वारा लिखित सभ्यता इतिहास (सभ्यता का इतिहास, प्रति, 1998, जिसमें मुस्लिम लीग का, अल्लाह और प्रस्ताव का, दो राष्ट्र सिद्धांत का, और जिया की सीधी कार्रवाई का जिक्र था। यहां तक कि इस किताब में भी सर सैयद अहमद का एकमात्र उल्लेख इस रूप में था कि वह महान, प्रगतिशील धार्मिक सुधारक थे। सारी जिंदगी उन्होंने अंधविश्वास और परंपरा, पारंपरिक रूढ़ियों, रीति-रिवाजों और अज्ञान के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने अलीगढ़ आंदोलन की स्थापना की, वह दो राष्ट्र सिद्धांत के मूल प्रस्तावक थे, उन्होंने मुसलमानों को कांग्रेस से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित किया, उन्होंने निबंध पर निबंध और किताबें लिखी ताकि

ब्रिटिश हुकूमत की नजर में यह साबित कर सकें कि 18 सो 57 के विद्रोह के दौरान मुसलमान ब्रिटिश हुकूमत के प्रति कितने वफादार रहे थे और यह कि अपने स्वभाव और अपने धर्म के कारण वे ब्रिटिश हुकूमत के प्रति हमेशा वफादार थे और रहेंगे उन्होंने कुरान के उद्धरण की बहुत खास व्याख्या की थीं ताकि यह साबित कर सके कि ब्रिटिश हुकूमत की तरफदारी और समर्थन करना मुसलमानों का धार्मिक फर्ज था-- इनमें से किसी भी बात का कतई कोई जिक्र नहीं।

इसी प्रकार, इस सभ्यता का इतिहास में जहां राममोहन राय का जिक्र है, जहां केशव चंद्र सेन का जिक्र है, जिनमें मैक्स मूलर ने भारत को ईसाई बनाने की इतनी उम्मीद है देखी थी जहां देवेंद्र नाथ दुबे का जिक्र है वही

बंकिमचंद्र का कोई जिक्र नहीं है आखिरकार हमारे धर्मनिरपेक्ष मार्क्सवादी जिससे वोट बैंक को लुभाते रहे हैं उसके लिए बंकिमचंद्र वंदे मातरम आनंदमठ के लेखक होने के नाते, अभिशाप हैं। कई लोग स्वाभाविक ही यह सोचेंगे क्योंकि ऐसे विश्व सभ्यता के इतिहास बंगाल में और बंगाल के लिए लिखे जाते हैं इसलिए उनमें बंगाल से बाहर के सुधार को और नेताओं के बजाय बंगाली महापुरुषों का... केशव चंद्र सेन सहित... ज्यादा प्रमुखता से उल्लेख होना ही चाहिए लेकिन उन्हें भी यह जानकर आश्चर्य होगा   (यद्यपि मुझसे अब इस आश्चर्य की अपेक्षानहीं होनी चाहिए; जैसा कि सबसे ज्यादा प्रयोग में लाई जाने वाली पाठ्यपुस्तक के संदर्भ में कोलकाता के शिक्षकों ने ध्यान दिलाया है, की जहां स्वामी विवेकानंद के बारे में केवल एक पंक्ति है, वही कार्ल मार्क्स के बारे में 42 पंक्तियां हैं।

हमारे धर्म के संबंध में चालाकी टिहरी है। यह पाठ्य पुस्तकें हमारे धर्म को नियंत्रित और बदनाम करती हैं, उसे ऐसी बुराइयों के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं को माझी ने जोर-शोर से रखने से उनका उद्देश्य सताता है। दूसरे, इनमें से प्रत्येक दृष्टांत ओं में जो उदाहरण दे देते हैं, उन्हें हिंदू धर्म से जोड़ दिया जाता है। तीसरे धर्मों में इस्लाम को हमेशा एक प्रगतिशील और उद्धार करने वाले धर्म के रूप में पेश किया जाता है। अलबत्ता निर्णायक मुक्ति तो 1917 कि सोवियत क्रांति के रूप में ही आती है।

इतिहास और भूगोल का प्रथम भाग, पश्चिम बंगाल शिक्षा अधिकार कोलकाता, 1993 कक्षा 3 के लिए एक पाठ्यपुस्तक है। इसमें बदस्तूर व्यक्तिगत संपत्ति और दास प्रथा पर एक अध्याय है और यह बदस्तूर मार्क्सवादी प्रतिपा दानों से भरा पड़ा है। दो वर्गों का अमीर और गरीब के अद्भुत के लिए निजी संपत्ति और मुनाफे के लोग को उत्तरदाई ठहराया जा सकता है... अपनी वृद्धि को प्रबल करने के लिए समाज का एक वर्ग दूसरे वर्ग से लड़ता है... कुछ अपनी संपत्ति कर बैठते हैं, अन्य उनकी तमाम चीजों पर कब्जा कर लेते हैं... जो गंवा बैठते हैं, उन्हें कैदी बना लिया जाता है और उनसे मजदूरी करवाई जाती है वेदास बन जाते हैं, वह बिल्कुल कंगाल हो जाते हैं... जो उनसे इस तरह काम

करवाते हैं, वह मालिक बन जाते हैं... धीरे-धीरे वे मालिक, बगैर कोई काम किए, दातों की मेहनत के पलों का उपभोग करने लगते हैं... इस तरह समाज अमीर और गरीब में, मालिकों और दातों में बढ़ जाता है; अमीर और मालिकों और कारीगरों का खून छोड़ना शुरू कर देते हैं; न सिर्फ दांतो को उनके हक नहीं दिए जाते, उन पर

अत्याचार भी किए जाते हैं... यह गरीब और यह दास जब अत्याचार को और ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर पाते, तो कभी विद्रोह कर दिया करते हैं, उन्हें अनुशासंन् में रखने के लिए अमीरों ने कानून, पुलिस और अदालतों की रचना...।

कक्षा तीन के बच्चे को कानून के मुताबिक चलना सिखाने के लिए क्या खूब शिक्षा है। अगले पन्ने पर यह विवरण अभी खत्म भी नहीं होता है कि समाज के रीति रिवाज और अनुष्ठान पर दूसरा विवरण शुरू हो जाता है। इस पन्ने पर एक रेखाचित्र है, जिसमें अग्नि के समक्ष बैठे हिंदू पंडित दिखाए गए हैं, पर नीचे लिखा है यज्ञ करते हुए ऋषि। यह पाठ्यपुस्तक दो वर्गों का, उनमें से एक वर्ग के दमन का और उसकी दास मजदूर बने पर विवश कर दिए जाने का तो वर्णन कर ही चुकी थी, वह कानून, पुलिस और अदालतों को इस दमन का औजार भी बता चुकी थी, अब वह कक्षा 3 के बच्चों को बताती हैं कि पुरोहितों ने पूजा के विधि विधान और अनुष्ठानों का आविष्कार किया और उनकी रचना के काम में लग गए। इस तरह से धर्म ग्रंथ लिखे गए। और वह बच्चों को इन धर्म ग्रंथों से शिक्षा देने लगे और वे स्वयं शिक्षक हो गए। धीरे-धीरे उन्होंने अपने आप को सामाजिक शिर्डी पर सबसे ऊपर स्थापित कर लिया। इस तरह वे समाज के नेता बन गए और वे उन लोगों के साथ ही और सहायक बन गए जो दुनिया में शासंन् कर रहे थे।

यह सिर्फ ढर्रे की मार्क्सवादी बकवास नहीं है, यह मैकाले की योजना का मार्क्सवादी तजुर्बा भी है। उन में उन तीनों चीजों के बारे में शर्मिंदगी पैदा करो, जिनके प्रति उनके मन में श्रद्धा है, ज्ञान, उनके धर्म ग्रंथ और उनकी भाषा, संस्कृति, और उस एक वर्ग के प्रति उनमें नफरत पैदा करो, जिस को जारी रखने का दायित्व सौंपा गया है। कक्षा 4 के छात्रों के लिए मुकर्रर, इतिहास, भाग 2 (पश्चिम बंगाल विद्यालय शिक्षा अधिकार 1995, कोलकाता, में यही थीम जारी रहती है और हर एक बुराई को हिंदू धर्म के साथ जोड़ देने की प्रवृत्ति और भी गहरी हो जाती है। पेज 10 पर ऐसा एक आदर्श विवरण दिया गया है, जिसे संप्रति विद्वानों ने गंभीर चुनौती दी है। आर्य उत्तर-पश्चिम से आते हैं...। वे चार वर्णों की स्थापना करते हैं, शुद्र सबसे निचली जाति के रूप में अभिशप्त कर दिए जाते हैं। इस भूभाग के मूल बाशिंदे थे और काले वर्ण के थे। उन्हें शिक्षा का कोई अधिकार नहीं था..। यह पेज 10 पर है।

पेज 17 पर हमें महान उद्धारक घटना का पता चलता है। मुहम्मद का जन्म होता है। वह इस्लाम की स्थापना करते हैं...। इस्लाम एक महान सभ्यता की रचना करता है, एक ऐसी सभ्यता की, जो शैक्षणिक और सांस्कृतिक से अत्यंत उन्नत है। यह एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करता, लेकिन विभिन्न हिस्सों में लड़ाई ओं के कारण यह साम्राज्य विभिन्न राज्यों के उभार के आगे समर्पण कर देता है। दो पन्नों बाद फिर मुहम्मद का जन्म होता है…, एक महान महापुरुष…, उनके धर्म इस्लाम का अर्थ है--- शांति। उन्होंने सभी को यही शिक्षा दी कि गरीब को दीक्षा दो और मजदूर को वाजिब मेहनत आना अदा करो। उन्होंने सिखाया कि गुलामों को दुख और तकलीफ मत दो, कर्ज पर ब्याज वसूल मत करो। उन्होंने मूर्ति पूजा पर रोक लगा दी। यह मुहम्मद के प्रमुख सिद्धांत थे। कईयों ने मुहम्मद का धर्म स्वीकार कर लिया...। और फिर कटाक्ष; सभी महापुरुषों ने शांति का पाठ पढ़ाया... लेकिन लोग उनके संदेश भूल गए हैं और लड़ झगड़ रहे हैं। अमीरों ने गरीबों की मदद करने के बजाय उन्हें धोखा दिया और खुद अपनी संपत्ति में इजाफा किया। वेद धर्म के नाम पर लूटपाट करते हैं और खून बहाते हैं। भारत में जब जैन और बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ, तो ब्राह्मण पंडितों को खतरा दिखाई देने लगा पुलिस फॉर्म उन्होंने सोचा कि अगर लोग रीति-रिवाजों का पालन नहीं करेंगे तो वे उनकी आज्ञा का पालन और परवाह भी नहीं कर सकते हैं। लिहाजा, हिंदू धर्म को बचाने की आड़ में और समाज पर अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए अधीर हो उठे। कई राजाओं ने उनकी मदद की। इस तरह जैन और बौद्ध धर्म का प्रभाव कम होता चला गया और हिंदू धर्म का प्रभाव बड़ा। यह पेज 20 पर है।

पेज 25 और 26 पर इन्हीं आरोपित बातों का और भी विस्तार दिया गया है। घिसी पिटी मार्क्सवादी थीसिस एक बार फिर बच्चे के गले उतारी जाती है। किसानों का शोषण हुआ... अधिशेष या मुनाफे को हड़प लिया गया... उनके पशु जमीन का मालिकाना हथिया लिया गया.. कष्ट पीड़ा... दिन प्रतिदिन उत्तरोत्तर दुर्दशा... और फिर, भगवान के नाम पर पंडितों ने पूजा और उत्सवों के लिए खूब उपहार वसूले। पंडित अत्याचारी बन गए और शोषक और अत्याचारी बनकर दूसरों की मेहनत पर जीवन बसर करने लगे पुलिस फॉर्म राजाओं और जमींदारों ने उनकी मदद की। शुद्र, दातों और गरीबों को धार्मिक उत्पीड़न का सबसे ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा है। इस तरह उच्च और नीच में समाज का विभाजन हूं शुरू हुआ। रूद्र अछूत बन गए, किंतु उनकी सेवाओं का शोषण करने पर कोई रोक टोक नहीं थी और ऊंची जातियों के लोगों के लिए शूद्रों का शोषण और उत्पीड़न करने पर कोई भी बहाना उचित था...। ऊंची जाति के लोग किसी जरा से भी बहाने से शूद्रों को मार दिया करते थे और पूरे के पूरे गांव का सफाया कर देते थे।

बच्चों के दिमाग में यह संदेश मजबूत करने के लिए इस पेज पर एक रेखाचित्र भी है, जिसका शीर्षक है, धर्म या उत्पीड़न। इस समय पूर्व शर्ट पहने एक आदमी है, जो एक गरीब

आदमी को कोड़े से पीट रहा है, अगर बाद में एक ब्राह्मण है धोती पहने, चुटिया धारी, गुस्से से देवरिया चढ़ाए, जो उसे ऐसा करने का निर्देश दे रहा है। इसके विपरीत इतिहास (प्राचीन, पश्चिम बंगाल शिक्षा परिषद कॉम 1994 के पेज 94 पर नालंदा के खण्डहर का एक रेखाचित्र दिया गया है, इसमें कहा गया है कि यह शिक्षा केंद्र कितने महत्वपूर्ण थे। लेकिन इस बारे में यह शायद खामोश है कि इसे नष्ट कैसे किया गया था। आखिरकार इस बारे में कुछ भी कहने से सरकार के उस परिपत्रक का उल्लंघन जो होता।

कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक, इतिहास और भूगोल, प्रथम भाग, के पेज 32 पर बच्चे को पढ़ाया जाता है, निजी संपत्ति के अभ्युदय के बाद एक वर्ग दूसरे को उस से वंचित करता रहा है। अमीर और गरीब के बीच फर्क बढ़ते गए। तकलीफ है पैदा की जाती रही। गरीब- ग्रुपों को सारे अधिकारों से वंचित कर दिया गया। उन्हें कई अपमान और तिरस्कार सहने पड़े। अभी लोग एक दूसरे को मार रहे हैं, अब भी मनुष्य अपने साथ ही मनुष्य का शोषण करता है, आप भी युद्ध और लड़ाई होती हैं। अगर इस पृथ्वी पर कभी शांति आ जाती है, अगर शोषण और अत्याचार बंद हो जाता है, अगर हर एक मनुष्य को बराबर से खुशी और शांति प्राप्त हो, तो यह धरती कितनी अदभुत बन जाएगी। यह पैटर्न यानी हालात के खिलाफ गुस्से के बीज बोना और इन हालात के लिए हर उस चीज को दोषी ठहराना, जिसे कम्युनिस्ट निशाना बनाना चाहते हैं यह पैटर्न साल दर साल जारी रहता है। इतिहास भाग 3 (पश्चिम बंगाल शिक्षा अधिनियम 1996) में यही सिलसिला और आने के बाद और शोषण के समाज के विभाजन की, धर्म के शोषण का औजार होने की इन्हीं सीटों के बाद एक नई चेतना के अध्याय का उल्लेख आ जाता है। एक शोषणकारी व्यवस्था...। ब्राह्मणों का भारी प्रभाव और वर्चस्व...। श्रमिक वर्ग का विद्रोह का दमन... न कोई अधिकार और ना कोई इज्जत।

शूद्र यहां तक कि धार्मिक अनुष्ठान तक नहीं कर सकते थे...। शोषण...। ईसाई देशों का विद्रोह... स्पार्टाकस... उससे रोमन साम्राज्य की नींव हिल जाती हैं... ईसा के 600 साल बाद,एक नया धार्मिक पंत की हर एक आदमी को बराबर अधिकार हूं। इस धार्मिक पंत का उपदेश हजरत मुहम्मद ने दिया था...। इस महान आदमी के विचारों को त्याग दिया गया...। शोषण जारी रहता है। आखिर में। लेनिन, बोल्शेविक पार्टी...। इस तरह नवंबर 1917 में

जनसाधारण के विद्रोह ने आकार लिया और सर्वहारा वर्ग के शोषण मुक्त समाज की स्थापना की गई। टैगोर ने 1930 में रूस की यात्रा की और कहा कि यदि उन्होंने रूस की यात्रा न की होती तो वह सबसे पवित्र तीर्थ स्थल की यात्रा से वंचित रह जाते...। चीनी क्रांति...। इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति…. मालिक संपत्ति का हरण कर लेते हैं...। मजदूरों की उत्तरोत्तर दुर्गति...। देश अमीर हो जाता है, किंतु उस पर कुछ एक लोगों का कब्जा; बाकी लोग गरीबी और तंगहाली में देते जाते हैं, उन्हें मुश्किल से

ही कुछ मिल पाता है, यहां तक कि दो वक्त की रोटी भी नहीं...। और फिर पेज 32 पर, रूसी क्रांति: नवंबर 1917 में प्रथम विश्व युद्ध के पहले रूसी साम्राज्य के किसानों और मजदूरों ने लेनिन और उनकी बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में क्रांति को अंजाम दिया और जा रही को उखाड़ फेंका और इस तरह सोवियत रूस में किसानों और मजदूरों के प्रथम शोषण मुक्त समाज की स्थापना की गई..। और फिर द्वितीय विश्व युद्ध: हिटलर जापान और इटली मिल गए। जापान भी बहुत लालची और महत्वकांक्षी था और एशिया में साम्राज्य स्थापित करने के मंसूबे बांधता था। इन तीनों की दूरी का ब्रिटेन फ्रांस और अमेरिकी साम्राज्यवाद यों के साथ टकराव हो गया। बच्चों को पढ़ाया जाता है कि मुद्दा यह था कि दुनिया का शोषण और लूट कौन करेगा। इस तरह द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ...। बंगाल का अकाल...। 1941 में जर्मनी ने सोवियत रूस पर आक्रमण कर दिया। रूसी जनता ने अपनी मातृभूमि को बचाने के लिए लड़ाई लड़ी और अंततः हिटलर ने जर्मनी को परास्त किया, हिरोशिमा और नागासाकी पर बमबारी...। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उपनिवेश ओं में स्वतंत्रता के संघर्ष ने जोर पकड़ लिया।

इस पुस्तक की तरह, सभ्यतार इतिहास, सभ्यता का इतिहास, 1998 में भी रूसी क्रांति को इस विकास क्रम के चरमोत्कर्ष के रूप में पेश किया गया है। एक असाधारण, समग्र क्रांति...। यह किताबें 1995, 1998 में प्रकाशित की गई थी, किंतु इनमें स्टालिन के कत्लेआम ओं के बारे में 1 शब्द भी नहीं है कि किस तरह उनके अधीन कम से कम 2.8 करोड़ सोवियत नागरिक मार डाले गए थे ओमा ना ही इस तथ्य का कोई जिक्र है कि चीन की माओवादी हुकूमत के अधीन करीब 6 करोड़ लोग मार डाले गए थे इन शासंन् व्यवस्थाओं के दांत मजदूर शिविरों के बारे में इन में एक भी शब्द नहीं है। और हां, इस बात का तो खैर कोई जिक्र नहीं है कि बाद में सोवियत संघ का, पूर्वी यूरोप का क्या हुआ ना ही इस बात का कि दिवालिया कम्युनिस्ट आर्थिक व्यवस्था से निजात पाने के लिए चीन ने कैसी उचित छलांग लगाई। लिहाजा इरादा और योजना सिर्फ वही नहीं है जो उस परिपत्र से उजागर

होती है यानी यह कि इस्लामी शासकों ने भारत और भारतीयों के साथ जो दुराचार किए थे उनका नामोनिशान मिटा दिया जाए। इरादा यह भी है कि दुराचार का दोष हमारे देश के धर्म हिंदू धर्म के मत्थे मढ़ दिया जाए इस्लाम को महान प्रगतिशील शक्ति के रूप में पेश किया जाए; इस बात का अफसोस किया जाए कि मानव जाति ने मुहम्मद जैसे प्रगतिशील महापुरुष की शिक्षाओं को नहीं सुना... और तब 1917 में वह असाधारण और समग्र रूसी क्रांति संपन्न हुई। इस इरादे और योजना को आप निकलने के अलावा कुछ भी करते हैं, यहां तक कि इसे ब्यौरे वार लिखकर उजागर भर करते है,तो आप संप्रदायिक हैं, संकीर्णता वादी हैं, फासीवादी हैं।

साभार: (4 दिसंबर 1998, दैनिक जागरण: कानपुर)

उपसंहार

औरंगज़ेब कालीन इतिहास का खुला अवलोकन परिशिष्ट आलेखों में विद्यमान है। जिस के अध्ययन से दोहरे मापदंडों वाले स्थानों की आहट मिलती है। प्रस्तुत आलेखों में निष्पक्ष भाव से भारतीय इतिहास के पुनर लेखन की बात कही गई है जो न्याय उचित एवं सटीक है। औरंगज़ेब के शासंन् को महामति प्राणनाथ जी [वि.सं. 1700 (1600 A.D.)] ने देखा और पढ़ता था कामा जिसका वर्णन तत्कालीन वित्त ग्रंथ (स्वामी लाल दास जी कृत में अक्षर से है अंकित है। [वि.सं. 1700 (1600 A.D.)] में महामति प्राणनाथ जी स्वयं दिल्ली पधारे थे और औरंगज़ेब को एक वृद्ध पत्र (आनंद ग्रंथ लेकर 12 संदेशवा को के माध्यम से भेजा था जिसमें उन्होंने जुल्मों को त्यागने एवं सत मार्ग पर चलने का संदेश भिजवाया था। महामति प्राणनाथ जी वेद और देव पक्ष के समान हिमायती थे, अतैवउन्होंने उक्त पत्र के माध्यम से औरंगज़ेब का ध्यान आकर्षित किया था। बादशाह को फटकार ते हुए उन्होंने सावधान किया था और स्टार्ट किया था। यथा:--

कुफ़्र न काढ़े आपनो और देखे सब कुफ़्रान।

अपना औगुन न देखहिं, कहैं हम (औरंगज़ेब) मुसलमान॥

करें जुलम गरीब पर, कोई ना काहू फरियाद।

कर सुन्नत गोस्त खिलावहीं, कहें हमें होत सवाब॥

(सनंध, पृ. 39)

अतैव इस काल (छत्रसाल औरंगज़ेबकालीन) का इतिहास रूप में दम करने के लिए समकालीन वितरण एवं आनंद ग्रंथ का अवलोकन करना चाहिए। इसके अवलोकन करने से तत्कालीन इतिहास के शुद्ध दर्शन होते हैं और लिखे गए गलत इतिहास का पता चल जाता है। श्री अरुण शौरी शर्मा महेंद्र प्रतापसिंह आदि के संगठनों की पुष्टि होती है इतना ही नहीं संदर्भित ग्रंथों में और अनेकों ऐतिहासिक घटनाओं की भी तस्वीर देखने को मिलती है, जिसकी खोज में अभी भी इतिहासकार हैं। 1682- 83 1739 40 के आसपास जैसा कुछ घटित हो रहा था उसका आंखों देखा विवरण महामती प्राणनाथजी (संवत् 1675 1751 ने श्री तारतम सागर कृत श्री मुख वाणी--कुल्जमस्वरूप के अंत में निम्न प्रकार

---

1. सुन सावेचेत होइये, जिन करो गफलत। जो कौल तुम सौं किया था, सो आया फरदा रोज क्यामत ॥11॥

   बिन सुने इन रुक्के को, जो बैठे इन दरबार। तिनको लानत खुदा की, पहुंचे न परवरदिगार ॥12॥

   हम अपने सिर का, उतारत है फरज। सो हमको ढूंढ, लाजियो, जाको होए गरज ॥13॥

   प्रकरण 42

   औरंग (औरंगज़ेब) अकस राखत है, है लड़ाई इसलाम।

   दावत सब ठौरों करो, बुलाओ अपने ठाम ॥5॥ प्र. 60 (वीतक)

लिखा है, जो इतिहास का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यथा--

राजा ने मलो रे राणे तणो, धर्म जातां रे कोई दौड़ो।

जागो ने जोधा रे उठ खड़े रहो, नींद निगोड़ी रे छोड़ो॥1॥

छूटत है रे खड्ग छत्रियों से, धरमजात हिंदूआन।

सत न छोड़ो रे सतवादियो, जोर बढ़यो तुरकान॥2॥

कुलिए छ्काए रे दिलड़े जुदे किए, मोह अहं के मदमाते।

असुर माते रे असुराई करे, तो भी न मिलो रे धरम जाते॥3॥

पन ने धारी रे पन इत ले चढ़या, कोई उपज्यो असुर घर अंस।

जुध ने करने उठया धरम सो, सब देखे खड़े राज बंस ॥4॥

असुर सत रे धरम जुध मांग ही, सुर केहेलाये जो न दीजे।

पूछो ने पंडित रे जुध मांग ही, धरमराज कैसे कही जे ॥9॥

सिध रे साधो रे संतो महंतो, वैस्नव भेष दरसन।

धरम उछेदे रे असुरें सबन, के पीछे परचा देओगे किस दिन॥10॥

लसकर असुरों का चहूं दिस फैलया, बाढ़यो अति विस्तार।

बन रे जंगल रे हिंदू रहे परवतों, और कर लिए सब धुंधकार॥11॥

हरद्वार ढहाए उठाए तापसी तीरथ, गौबध कैयों विधन।

ऐसा जुलम हुआ जग जाहेर, पर कम्मर न बांधी रे किन ॥13॥

सुर ने केहेलाए रे सेवा करे असुर की, जो दारुबाए उड़ावे दे हूर।

हिंदू नाम रे सेन्या तिनकी होए खड़ी, ऐसा कुलिएं किया रे केहेर ॥14॥

प्रभु प्रतिमा रे गज पांउ बांध के, घसीट के खंडित कराए।

फरस बन्दी ताकी करके, तापर खलक चलाए ॥15॥

असुरें लगाया रे हिंदूओं पर जेजिया, बाको मिले नहीं खानपान।

जो गरीब न दे सके जजिया, ताए मार करे मुसलमान ॥16॥

सोले सै लगो रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैंतीस।

बैठा रे साका विजया अभिनंदन का, यों कहें सास्त्र और जोतिस ॥18॥

बात ने सुनी रे बुन्देले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तलवार।

सेवा ने लेई रे सारी सिर खैंच के, सांइए किया सैन्यापति सिरदार ॥20॥

प्रगटे निसान रे धूमकेत क्षयमास, पर सुध न करे अंजू कोई इत।

वेगे ने पधारो रे बुध जी या समे, पुकार कहें महामत ॥21॥ प्रक. 58

उपर्युक्त चित्रण से, औरंगज़ेब की काली करतूतों का पता चलता है। धार्मिक उत्पीड़न तो था ही, क्रूर यात्राओं के भय से लोगों (हिंदुओं ने घरों से पलायन कर जंगलों को मां पहाड़ों में निर्जन स्थानों पर रहना प्रारंभ कर दिया था, जजिया कर ना देने वाले गरीब

जन मुसलमान बना लिए जाते थे, तीर ब्रेक का ढाया जाना, संतोष तपस्वी जनों को प्रताड़ित किया जाना, गोवध आदि दुष्कर्म की आंधी चल रही थी, क्या कुछ नहीं हो रहा था... यह सब वरना अतीत है। महामति प्राणनाथ जी ने हृदय विदारक दृश्य दर्शाया है, वह उन इतिहासकारों के लिए पर्याप्त है जो अंधे होकर आज भी औरंगज़ेब ई सत्ता के प्रशंसक हैं। उन्हें आज आंखें खोलकर इतिहास का बोध करना चाहिए। इसी समय बुन्देलखण्ड में रंगी जेबी आक्रमणों की झड़ी लगी हुई थी, जिसे कालाजाई महाराजा छत्रसाल ने दृढ़ता से मुकाबला करते हुए मध्य भारत से उसकी क्रूरता ओं का अंत कर दिया था। दक्षिण भारत में ठहरा हुआ औरंगज़ेब उत्तर भारत में दक्षिणी भूभाग की हताशा की भड़ास निकाल रहा था। वि.सं. 1735 में महामति प्राणनाथ जी का संदेश ठुकराए जाने के बाद औरंगज़ेब को ऐसी लानत लगी, बेचारे को दिल्ली से निर्वाचित होना पड़ा और दक्षिण भारत में ही दफन होना पड़ा। वित्त ग्रंथों में इस तथ्य का उल्लेख मिलता है।

उत्तर भारत में भी और अंग्रेजी सत्ता को छोड़कर दिल्ली के आसपास ही रह गई हिंदू वाणी के सूरज महाराजा छत्रसाल ने जो स्वतंत्र बुन्देलखण्ड की आधारशिला रखी थी, वह तट के समान हुई थी। उन जैसा धर्म रक्षक और प्रजा पालक राजा जगत में कोई नहीं हुआ। प्रस्तुत है वह राजाओं के भी राजा, छत्रपति ओकेबी छत्रपति थे। समूची मानव जाति को उन पर गर्व है।

अभी तक ग्रंथों (समकालीन इतिहास डायरिया में वर्णित कथन पूर्णतया सत्य है, जिसके कारण युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल विश्वनधाम प्रातः स्मरणीय हैं।

इतिश्री युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल

भये आप राजन के राजा। मिली उपाधि श्री महाराजा ॥31॥ (चालीसा)

1. सकुंडल सोभा भई प्रगट भई पहिचान।
   छत्रसाल छता हुआ, छिपे सबे सुल्तान ॥60/67 (वीतक)

   यथार्थ में, प्रजापत वत्सल युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल को इतिहास में चक्रवर्ती महाराजा का स्थान मिलना चाहिए, जिसके लिए वह हकदार हैं।

   महाराजा अधिपति भये, महाराजा छत्रसाल।

   राजन में राजा भये, असुरन केरे काल॥ (॥65/60॥ वृतांतमुक्तावली)

सहायक ग्रंथों की सूची

श्री मुख वाणी श्री तारतम सागर : निष्कलंक प्रभु प्राणनाथ जी

वीतक : स्वामी लाल दास जी

वीतक : स्वामी नवरंग जी (मुकंददास)

छत्रसाल काव्यांजलि : सं० धर्म भूषण कुंज बिहारीसिंह

वृतांतमुक्तावली : स्वामी बृज भूषण जी महाराज

मिहराजचरित्र : बक्शी हंसराज जी

राजचंद्रिका : बक्शी हंसराज जी

स्नेह सखीकृत वीतक : स्नेही सखी

वर्तमान दीपक (वीतक गुजराती) : लल्लू जी महाराज (लालसखी)

कवितावली : महंत गोपालदास

ब्रज लीला : हरिकेश

हृदय प्रकाश : महाराज हिर्दयशाह

निजानन्द सरितामृत पंडित कृष्णदत्त शास्त्री:

मुक्ति पीठ (खण्डकाव्य : पंडित मिश्रीलाल शास्त्री

कालजई छत्रसाल : धर्म भूषण कुंज बिहारीसिंह

विज्ञान सरोवर : महंत कृष्ण दास शास्त्री

इस्लाम धर्म की रूपरेखा : राहुल सांकृत्यायन

चरित्र दिग्दर्शन : आचार्य धर्म दास जी महाराज

छत्रप्रकाश : लाल कवि

राज विनोद : लाल कवि

छत्रसाल बावनी राज कवि पंडित हरनाथ

श्री प्राणनाथ जी और उनका साहित्य डॉक्टर राजबाला चंदाना

प्राणनाथ: संप्रदाय एवं साहित्य डॉ नरेश पंड्या

बुन्देल केसरी महाराजा छत्रसाल बुन्देला डॉक्टर भगवान दास गुप्ता

बुन्देल का भाग भाग 3 गौरी शंकर द्विवेदी

गुरु भक्त शौर्य पूंजी छत्रसाल विमला मेहता

सहायक ग्रंथों की सूची 265

हिंदी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचंद्र शुक्ल

ऐतिहासिक प्रमाण आवली और छत्रसाल डॉक्टर महेंद्र प्रतापसिंह

बुन्देलखण्ड का इतिहास कृष्ण कवि

छत्रसाल ग्रंथावली सं० वियोगी हरि

जगतराज दिग्विजय कभी हरिकेश

धूम घाट   (खण्डकाव्य धर्म भूषण कुंज बिहारीसिंह

प्रजा क्षेत्र प्रदेश: महाराजा छत्रसाल कृष्ण कभी

बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास पंडित गोरेलाल तिवारी

ओरछा का इतिहास डा० लक्ष्मणसिंह गौर

राष्ट्र गौरव: : राज नायक छत्रसाल महोत्सव समिति

छत्रसाल स्मारिका-- 3 जून 1992 छत्रप्रकाश   (मध्य प्रदेश

प्रगामी दर्शन: विशेषांक- युग पुरुष सं. गुलशन राय भगत, दिल्ली

महाराजा छत्रसाल [मई 1996]

कटक बंद   (लघु प्रबंध काव्य: दान कवि

छत्रसाल दशक कवि भूषण

वीर चम्पत भक्त छत्रसाल पंडित शंकर प्रसाद त्रिपाठी

बुन्देलखण्ड के इतिहास के 12 खण्ड दीवान प्रतिपाल से

शक्तिपुत्र छत्रसाल पंडित सोम दत्त त्रिपाठी

बुन्देलखण्ड का सूरज छत्रसाल इंदिरा शॉपिंग

श्री सिद्धांत दर्पण परमहंस महाराज

सर्वोदया प्रकाश मा. सोबरनसिंह सर्वोदय

श्री छत्रसाल चालीसा कविवर विशालसिंह शाक्य

श्री निजानन्द पुष्पांजलि श्याम किशोर प्रणामी

बुन्देलखण्ड का इतिहास डॉक्टर के पी त्रिपाठी

बुन्देल केसरी छत्रसाल गोवर्धन दास त्रिपाठी

बुन्देल वैभव, भाग-1,2 पंडित गौरीशंकर द्विवेदी

मिश्र बंधु विनोद, भाग-1,2 मिश्र बंधु

बुन्देलखण्ड केसरी छत्रसाल कुंवर कन्हैया जी

बुन्देलखण्ड की संस्कृति : राम चरण ह. मिश्र

बुन्देली लोक साहित्य डॉक्टर रामस्वरूप रंजन

मुग़लकालीन बुन्देलखण्ड ज्ञान प्रकाश गुप्ता

बुन्देल केसरी वीर छत्रसाल विश्व कल्पित

बुन्देलखण्ड का इतिहास महाराजसिंह

जी, भाग1,2,3 पंडित प्रताप नारायण मिश्र

हिंदू कुल गौरव: वीर छत्रसाल परशुराम गोस्वामी

स्वामी ब्रह्मानंद जन्मशती ब्रह्मानंद महाविद्यालय राठ

स्मृति- विशेषांक: 1995

अथ श्री छत्रसाल नीति धर्म भूषण कुंज बिहारीसिंह

हिस्ट्री ऑफ द बुन्देललाज डब्लू. आर. पार

हिस्ट्री ऑफ शाहजहां और दिल्ली बनारसी प्रसाद

हिस्ट्री ऑफ औरंगज़ेब 5 पार्ट्स सर जदुनाथ सरकार

चंडी इन औरंगज़ेब या जादू नाथ सरकार

शिवाजी एंड हिस टाइम्स सर जदुनाथ सरकार

हाउस ऑफ शिवाजी सर जदुनाथ सरकार

मुग़ल एडमिनिस्ट्रेशन सर जदुनाथ सरकार

बंगश नवाब्स ऑफ फर्रुखाबाद इर्विन

ए हिस्ट्री ऑफ द प्राइस एंड डॉक्टर भगवान दास गुप्ता

पाल मराठा इन बुन्देलखण्ड

[वि.सं. 1700 (1600 A.D.)] ई बुन्देलखण्ड मुंशी श्यामलाल

वाणी गुरु नानक सिख पंथ

हिस्ट्री ऑफ बुन्देल राज के.पेग्सन

मुग़ल नोबिलिटी अंडर औरंगज़ेब डॉ अथर अली

पार्टीज एंड पॉलिटिक्स

आठ मुग़ल कोर्ट डॉ सतीश चंद्र

सिक्स सिस्टम्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी मैक्स मूलर

सहायक ग्रंथों की सूची 367

मुग़ल गवर्नमेंट एंड एडमिनिस्ट्रेशन श्रीराम शर्मा

तारतम्य जागने माला श्री कृष्ण प्रणामी धर्म परिषद जनपद इटावा (पंजी

विराट दर्शन पंडित कृष्ण दत्त शास्त्री

अत मुक्ति मार्ग धर्म भूषण कुंज बिहारीसिंह

श्रीमद् गीता वेद व्यास

श्रीमद्भागवत पुराण वेद व्यास

छत्रसाल रचित सेवा- पूजा धर्म भूषण कुंज बिहारीसिंह

श्री राज परमात्मने नमः

युगप्रवर्तक महाराजा छत्रसाल

महाराजा छत्रसाल जू देव

विजय ही विजय के साक्षात स्वरूप महाराजा छत्रसाल के साथ यह जो देवी ध्वज दृष्टिगोचर हो रहा है। वह संकट मोचक, मंगल कारक एवं विजय श्री का प्रतीक है। महाराजा छत्रसाल जी के ऐसे स्वरूप के चिंतन से प्रीता को से मुक्ति मिलती है तथा मृत्यु भय से भी छुटकारा मिल जाता है।

श्री प्राणनाथ मिशन (रजि.) के प्रकाशन

७२ सिद्धार्थ एनक्लेव, आश्रम चौक, नई दिल्ली ११० ०१४, दूरभाष: ६८४५२३०

संपर्क: श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर, हक, माल रोड, दिल्ली-११० ००७

श्री तारतम वाणी: कुल जम स्वरूप (श्री मुखवाणी), महामती प्राणनाथ प्रणामी 16 ग्रंथों का प्रमाणिक संकलन: देवनागरी लिपि में,१६ हजार चौपाइयां २५१/-

किरन्तन (महामती प्रणीत) संपादक: डा. रंजीत साहा, मूल पाठ, हिंदी रूपांतर ८०/-

सनंध (महामती प्रणीत) मूल, अर्थ संपादक विमला मेहता, डॉक्टर रंजीत शाह ४०

महामती प्राणनाथ प्रेरित श्री कृष्ण प्रणामी वांग्मय: डॉक्टर सुचित नारायण प्रसाद ३०

खुलासा (महामती प्रणीत) संपादक: डॉक्टर रंजीत शाह, विमला मेहता ४०

मार्फत सागर: कियामत नामा अर्थ सहित: सं. विमला मेहता, डॉ रंजीत साह ६०

सृष्टि विज्ञान: श्री रणछोड़ जी वीर जी १०

खलवत: अर्थ सहित, संपादक: डॉ रंजीत साहा, विमला मेहता ४०

धर्म समन्वय उद्गाता: डॉक्टर कमला शर्मा ५०

निजानन्द संगीत: श्री प्राणनाथ एवं प्रणामी संतवाणी संग्रह ५०

श्रीरास,(महामती प्रणीत) संपादक: डॉ रंजीत साह एवं डॉ हरेंद्र वर्मा अप्राप्य

बीतक (स्वामी लालदास कृत) अर्थ परिशिष्टसह, माणिकलाल दुबे १५०

महामती प्राणनाथ: सचित्र गाथा-- विमला मेहता १०

प्रकाश हिंदुस्तानी (महामती प्रणीत) मूल एवं अर्थ सहित अप्राप्य

विरह प्रकाश-शटऋतू, सिंधी, विरह वाणी, संपादन: विमला मेहता ५०

आनंद की ओर (तीन भाग) बच्चों के लिए, संकलन: विमला मेहता ३०

नवरंग गीता रहस्य अर्थ सहित: विमला मेहता १०

श्री कलश हिंदुस्तानी (महामती प्रणीत) अमृतलाल शर्मा अप्राप्य

जागनी: संचयन-- जागने के अंको से चुने हुए लेख १००

जागनी: कुल जम परिचय-- संपूर्ण कुलजम सार १००

जागनी (पुराने अंक, प्रति अंक) १०

आत्म तत्व दर्शन: धर्म रहस्य- विमला मेहता ५०

नित्य पाठ, प्रार्थना, संक्षिप्त सेवा पूजा, संकलन: विमला मेहता १५

विश्व धर्म दर्शन: गुलजारी लाल सिडाना ७०

श्रीमद्भागवत और श्री प्राणनाथ वाणी: गुलजारी लाल सिडाना ७०

श्री लाल दास बीतक का ऐतिहासिक महत्व: डा. शिवसिंह सरोज १००

स्वामी बृजभूषण रचित वृतांतमुक्तावली: अर्थ सहित डॉक्टर वाजपेई (८०० पृ.): १००

नवरंग वाणी परिचय: विमला मेहता १००

महामती प्राणनाथ और सर्वधर्म समन्वय: डा. पी.एस. मुखारिया १००

किरन्तन पदावली: महाराज मोहन प्रियाचार्य १०

प्रथम प्रणाम: डा. माताबदल जायसवाल ३५

Mahamati prannath: the saviour: Sudarshan Sharma 10

search within: doctor Anil Mehta 50

the meeting point Dr Anil Mehta 50

mahanati e the supreme wisdom Dr BP bajpei 25:

secret doctrine of guitar Dr B P Bajpai 15

Shri prannath Vani Kiran English (translation doctor RK Arora) 250

daily prayer Shri Mohan Aacharya (translation doctor RK Arora) 15

jumps from mahamantri I   translation KK Mehta 10

jumps from mahamantri II E translation KK Mehta 10

प्राप्ति एवं सूचना केंद्र

निजानन्द पुस्तकालय, खोजड़ा मंदिर, जामनगर, गुजरात

श्री खेमराज शर्मा, धाम मोहल्ला, पन्ना, मध्य प्रदेश

श्री कृष्ण प्रणामी जन कल्याण आश्रम, दादरी रोड, भिवानी, हरियाणा

श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर, हैदर पाड़ा, सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर, मंगल धाम कालिमपोंग, पश्चिम बंगाल

Dr. Anil Mehta, 4780, panorama drive, Bakersfield,

California (USA) 93306. Tel : 661-872-7784

श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर, मॉडल टाउन, करनाल हरियाणा

श्री मणिलाल कुमार जी, राज महल होटल, फाफा जी चौक, रायपुर, मध्य प्रदेश

महाराज सूर्य नारायण जी, श्री कृष्ण प्रणामी मोटा मंदिर, प्राणनाथ नगर, बेड रोड, सूरत

श्री कृष्ण प्रणामी जन कल्याण भवन, जी-२०, सेक्टर ७, रोहिणी, दिल्ली

श्री कैलाश चंद्र अग्रवाल, २ नज़ीर वाड़ी, जुहू रोड, मुम्बई.